92
खुतबात का
हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

जिल्द सोअम

तालीफ़

अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती
अनवार अहमद कादरी साहब क़िब्ला

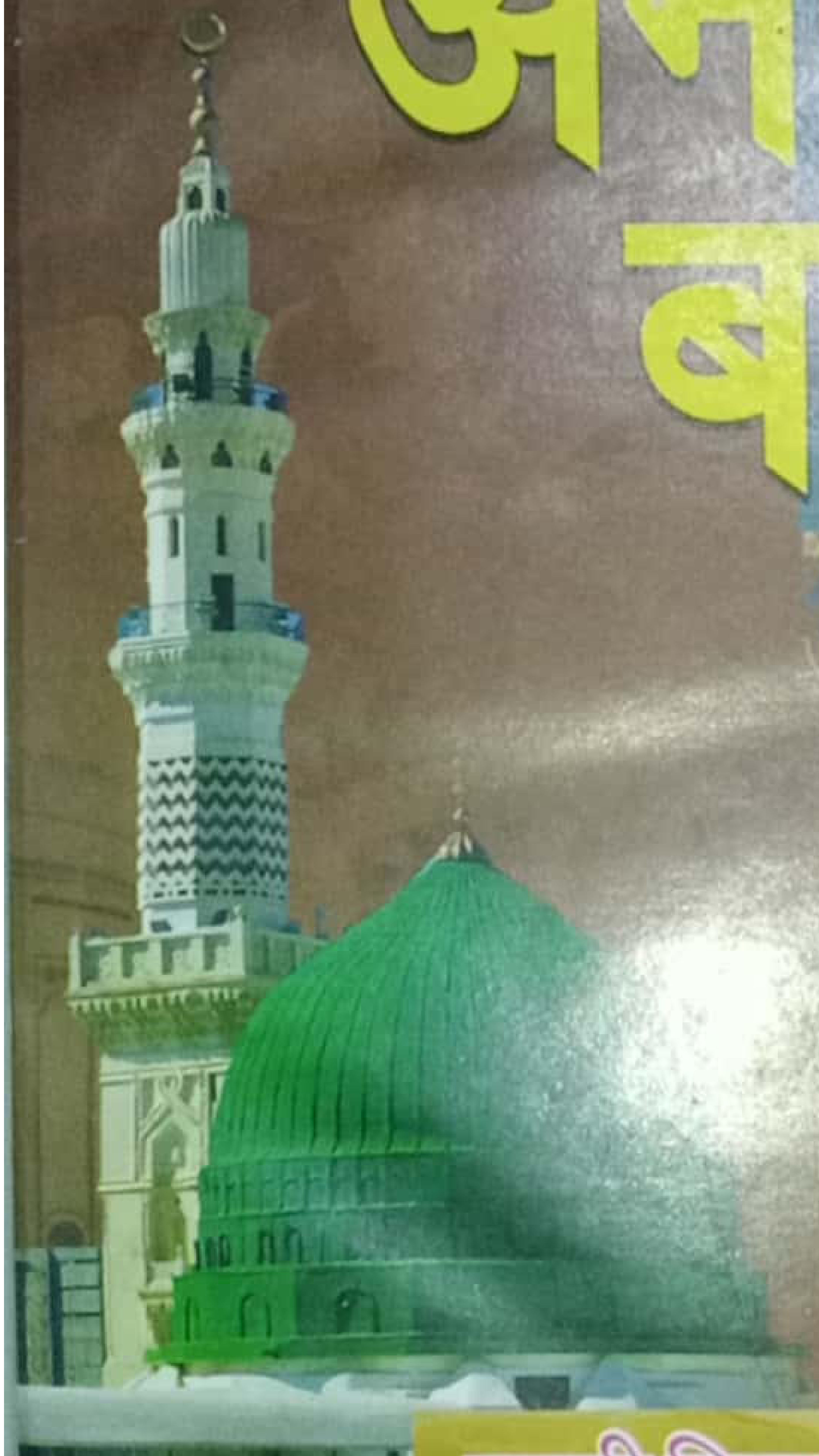
रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद देहली-6

92

खुतबात का
हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान



तालीफ़

अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती
अनवार अहमद क़ादरी साहब किब्ला

रज़वी किताब घर
423, मटिया महल जामा मस्जिद देहली-6
Ph.: 011-23264524

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اُدۡعُ اِلٰى سَبِيۡلِ رَبِّكَ بِالۡحِكۡمَةِ وَالۡمَوۡعِظَةِ الۡحَسَنَةِ (پ۱۴، ع۲۲)

92

ख़ुतबात का हसीन गुलदस्ता

बनाम

अनवारुल बयान

जिल्द सोम (3)

तालीफ़

नमूनए अस्लाफ़, अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना

मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी

साहब क़िब्ला दामत बरकातुहुमुल कुदसिया

बानी व सरबराहे आला : अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़

खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

नाशिर

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद दिल्ली-6 फोन : 011-23264524

सिलसिला –ए– इशाअत (64)

किताब : अनवारुल बयान (जिल्द 3)

तालीफ़ : अताए ख़्वाजा, हज़रत अल्लामा मौलाना
मुफ़्ती अनवार अहमद क़ादरी साहब क़िब्ला
दामत बरकातुहुमुल क़ुदसिया
बानी व सर-राहे आला अल जामिअतुल ग़ौसिया ग़रीब नवाज़,
खजराना, इन्दौर (म.प्र.)

प्रुफ़ रीडिंग : हाफ़िज़ शौकत हुसैन क़ादरी बरकाती
(एडीटर– माहनामा पैग़ामे रसूल, इन्दौर)

ऑप्रेटर : नज़ाफ़त हुसैन रज़वी (सोहेल)

कम्पोज़िंग : रज़वी कम्प्यूटर, इन्दौर (म.प्र.) (मोबा : 9827014799)

सने इशाअत (हिन्दी)– 1437 हिजरी मुताबिक़ 2016 ईसवी (बारे अव्वल)

तादाद : (1100) ग्यारह सौ

नाशिर : रज़वी किताब घर, दिल्ली-6

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

इन्तिसाब

महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ)
और
आपके चारों खुलफ़ाए राशेदीन
और
आपकी ज़ौजा सय्यद खदीजा और सय्यदा आएशा
और
आपकी प्यारी बेटी सय्यदा फ़ातिमतुज़्ज़ेहरा
और
आपके नूरे ऐन इमाम हसन और इमाम हुसैन
और
आपकी आल मेरे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म व
हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़
और
आपके आशिक़ आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा
व मुर्शिदे आज़म मुस्तफ़ा रज़ा
और
आपकी उम्मत के वली मेरे पीरो मुर्शिद मौलाना शाह
मुफ़्ती बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी
व
मेरे करीम, मजज़ूब बुज़ुर्ग हुज़ूर दरिया शाह बाबा
(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन)
के नाम
जिनकी दुआओं का अबरे करम मुझ पर बरस रहा है।
और
क़ियामत तक बरसता रहेगा.........इंशाअल्लाहु तआला

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा
अनवार अहमद क़ादरी बरकाती रज़वी

कलिमाते दुआ

शहज़ादए आला हजरत, पेशवाए अहले सुन्नत, वारिसे उलूमे मुजद्दिदे आज़म, जानशीने हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द, शैखुल इस्लाम वल मुस्लिमीन, क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात, ताजुश्शरीआ, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती, मुहद्दिस, फ़क़ीह, अल्हाज अश्शाह मुहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान क़ादरी अज़हरी दामत बरकातुहुमुल कुदसिया, बरैली शरीफ़ (यू.पी.)

۷۸۶
۹۲

میں نے عزیز القدر مولانا انوار احمد قادری رضوی سلمہ کی تالیف کردہ کتاب مسمی بہ

«انوار البیان»

کے کچھ ابواب پڑھوا کر سنے خوب سے خوب تر پائے مولیٰ تعالیٰ انکی یہ کوشش اپنی بارگاہ میں

مقبول فرماکر مفید انام فرمائے (آمین بجاہ النبی الامین علیہ وعلی الہ وصحبہ افضل الصلاۃ

واکمل التسلیم

فقیر محمد اختر رضا قادری ازہری غفرلہ



मैंने अज़ीज़ुल क़द्र मौलाना अनवार अहमद क़ादरी रज़वी सल्लम्हु की तालीफ़ कर्दा किताब मुसम्मा बह ''अनवारुल बयान'' के कुछ अबवाब पढ़वाकर सुने, ख़ूब से ख़ूब तर पाए। मौला तआला इनकी यह कोशिश अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमाकर मुफ़ीदे अनाम फ़रमाए। आमीन। बिजाहिन्नबिय्यिल अमीन अलैहि व अला आलिही व सहबिही अफ़ज़लुस्सलातु व अक्मलुत्तसलीम ०

फ़क़ीर मुहम्मद अख़्तर रज़ा क़ादरी अज़हरी ग़ुफ़िरा लहू
26 मुहर्रमुल हराम 1434 हि. मुताबिक़
11 दिसम्बर 2012 ई. बरोज़ शंबा

अर्ज़े हाल

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِیْنَ امابعد!

एक मुद्दत दराज़ से मेरी ख़्वाहिश थी और अहबाब का भी तक़ाज़ा था कि वअ़ज़ व नसीहत और तक़रीर व ख़िताबत के लिये एक ऐसी किताब तरतीब दूँ जो आयाते करीमा और अहादीसे तैय्यिबा और मुस्तनद रिवायात व वाक़िआत पर मुश्तमिल हो और दीनी मालूमात का बेश बहा ख़ज़ाना भी हो और ज़बान व बयान के लिहाज़ से आम फ़हम और आसान हो, ताकि उलमा व तलबा व अवाम और ख़ासकर अइम्मए मसाजिद सभी उससे मुस्तफ़ीद हो सकें। लेकिन यह काम आसान न था मगर अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़ज़्लो करम और मेरे बुज़ुर्गों की इनायतों व ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा और मुर्शिद रज़ियल्लाहो तआला अन्हुम की दुआओं ने आसान कर दिया कि साल के 48 जुमों के लिये 92 तक़रीरों का हसीनो जमील मजमुआ तरतीब पाया जिसके लिये वक़्त तक़रीबन पाँच साल लगा और इस तरतीब का नाम हुज़ूर बहरुल उलूम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अश्शाह अब्दुल मन्नान साहेब क़िब्ला साबिक़ शैख़ुल हदीस जामिआ अशरफ़िया, मुबारकपूर रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अनवारुल बयान मुन्तख़ब फ़रमाया।

हुज़ूर बहरुल उलूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस सफ़र में हमारे ख़ास रहनुमा और मुशीर थे। सब कुछ करके, किताब की इशाअत से क़ब्ल 14 मुहर्रम शरीफ़ सन् 1434 हि. मुताबिक़ 29 नवम्बर जुमा मुबारका की शब में 9 बजकर 20 मिनट पर दाग़े मुफ़ारिक़त देकर विसाल फ़रमा गए।

मुद्दत के बाद होते हैं पैदा कहीं वह लोग
मिटते नहीं हैं दहर से जिनके निशां कभी

ख़ुदा रहमत कुनद.......ई पाक तीनत रा। आमीन।

(1) इस किताब की ख़ुसूसियत यह है कि मैंने फ़ज़ाइले हज के बयान की कुछ हदीसें कअ़बए मुअज़्ज़मा के सामने मस्जिदे हराम में मक़ामे उम्मे हानी (मेअ़राज शरीफ़ की जगह) पर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। और फ़ज़ाइले मदीना तैय्यिबा की कुछ हदीसें मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अस्हाबे सुफ़्फ़ा के चूबतरे पर लिखा।

फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन और इस किताब यानी अनवारुल बयान के कुछ हिस्से अजमेर शरीफ़ में हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में जन्नती दरवाज़ा के अन्दुरुनी हिस्से में बैठकर लिखा। फ़लहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। इन मुबारक निस्बतों के फ़ैज़ान पर मुकम्मल यक़ीन है कि किताब मक़बूले ख़ुदा और मक़बूले अनाम होगी।

(2) मुहक़्क़िके मसाइले जदीदा, फ़क़ीहुल अस्र, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहेब क़िब्ला रज़वी मिस्बाही दामा ज़िल्लुहुल आली, सदर शोअ़बए इफ़्ता जामिआ अशरफ़िया मुबारकपूर का ममनून हूँ जिन्होंने चार दिन का अपना क़ीमती वक़्त सर्फ़ फ़रमाया और इन्दौर तशरीफ़ लाए और उलमाए जामिआ के साथ हर महीने के हिसाब से उनवान मुन्तख़ब फ़रमाए। और उन तमाम हज़रात का शुक्रिया जिन्होंने हमारे साथ मोहब्बत की और थोड़ा भी साथ दिया है जैसे फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अफ़ज़ाल अहमद साहेब क़िब्ला रज़वी दाम ज़िल्लुहुल आली (मुफ़्ती मरकज़ी दारुल इफ़्ता बरैली शरीफ़) ख़ास कर हज़रत मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब क़ादरी बरकाती जिन्होंने किताब की तस्हीह करने में न रात देखी न दिन, शुरू से आख़िर तक जिद्दो जहद करते रहे। अल्लाह तआला मौलाना रज़ियुद्दीन साहेब को दोनों जहांन में ख़ुश रखे और ख़ैरे कसीर अता करे और अज़ीज़ी हज़रत मौलाना मोहम्मद आरिफ़ साहेब बरकाती सदरुल मुदर्रेसीन जामिआ और अज़ीज़म हज़रत मौलाना अमीन अहमद क़ादरी और हज़रत मौलाना मुफ़्ती रफ़ीकुल इस्लाम साहेब और जामिआ के जुमला वह उलमाए किराम और हुफ़्फ़ाज़े इज़ाम जिनकी ख़िदमत व मोहब्बत हमारे साथ रही और मोहतरम हाजी मोहम्मद सिद्दीक़ बिन मोहम्मद जमील साहेब ठेकेदार और मेरे भाई मोहतरम हाजी मोहम्मद मक़सूद साहब ग़ोरी रज़वी और मोहतरम हाजी मोहम्मद इक़बाल साहब ग़ोरी रज़वी जिनकी मोहब्बत हमेशा हमारे साथ रही।

दुआ है कि अल्लाह तआला रहमानो रहीम मौला हमको, हमारे मां बाप को, हमारे बच्चों को, हमारे साथियों और तमाम क़ादरी, चिश्ती, बरकाती, रज़वी, सुन्नी भाइयों को ईमान पर ख़ातिमा अता फ़रमाए और इस किताब अनवारुल बयान को हम सबके लिये निजात व बख़्शिश का ज़रीआ बनाए। आमीन। सुम्मा आमीन। बिजाहि सय्येदुल मुरसलीन अलैहि व आलिही व अस्हाबिही अजमईन। फ़क़त

गदाए ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा

अनवार अहमद क़ादरी

21 मुहर्रमुल हराम 1434 हि.

6 दिसम्बर 2012 ई.

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(1) मुहर्रमुल हराम

(2) सफ़रुल मुज़फ़्फ़र

(3) रबीउल अव्वल शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द अव्वल (1)

(4) रबीउल आख़िर शरीफ़

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (2)

(5) जुमादल ऊला

(6) जुमादल उख़रा

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (2)

(7) रजब शरीफ़

(8) शाबानुल मुअज़्ज़म

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (3)

(9) रमज़ानुल मुबारक

इज्माली फ़हरिस्त जिल्द दोम (3)

(10) शव्वालुल मुकर्रम

(11) ज़िल क़अ्दह

(12) ज़िल हिज्जह

फ़हरिस्ते मज़ामीन जिल्द दोम (3)

रमज़ानुल मुबारक

पहला जुमा .... पहला बयान

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

शव्वालुल मुकर्रम

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

ज़िल क़अ्दह शरीफ़

पहले जुमे का बयान

ज़िल क़अ्दह शरीफ़

दूसरे जुमे का बयान

ज़िल क़अ्दह शरीफ़

तीसरे जुमे का बयान

ज़िल क़अ्दह शरीफ़

चौथे जुमे का बयान

ज़िल हिज्जा शरीफ़

ज़िल हिज्जा शरीफ़

ज़िल हिज्जा शरीफ़

दूसरा जुमा .... पहला बयान

ज़िल हिज्जा शरीफ़

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

ज़िल हिज्जा शरीफ़

तीसरा जुमा .... पहला बयान

ज़िल हिज्जा शरीफ़

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

ज़िल हिज्जा शरीफ़

ज़िल हिज्जा शरीफ़

(9)

रमज़ानुल मुबारक

पहला जुमा .... पहला बयान

क़ुरआने करीम का फ़ैज़ान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ
وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيِّ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ
الْخَوَاجَهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيِّ اَجْمَعِيْنَ ٥

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ

तर्जमा : रमज़ान का महीना जिस में कुरआन उतरा। (पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! रमज़ान शरीफ़ का महीना बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात का हामिल है। इस माहे मुबारक की एक ख़ास फ़ज़ीलत यह है कि अल्लाह तआला ने अपनी प्यारी किताब कुरआने मजीद को रमज़ान शरीफ़ में नाज़िल फ़रमाया। रमज़ान और कुरआन में एक ख़ास निस्बत है इस माहे मुबारक रमज़ान शरीफ़ में ईमान वाले कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करते हैं और तरावीह की नमाज़ में कुरआने करीम का ख़त्म शरीफ़ भी होता है इस लिये आज हम फ़ैज़ाने कुरआन और अज़मते कुरआन के मोज़ूअ पर बयान करेंगे। अल्लाह तआला हम सब को आमिले कुरआन बनाए और फ़ैज़ाने कुरआन से मालामाल फ़रमाए।

कुरआन हिदायत और शिफ़ा व रहमत है मोमिनों के लिये

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ٥ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ٥

तर्जमा : ऐ लोगो ! तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आई और दिलों की सेहत और हिदायत और रहमत ईमान वालों के लिये। (पारा 11, रुकू 11, तर्जमा कन्जुल ईमान)

हमारे हुज़ूर साहिबे कुरआन, हबीबे रहमान, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जिस ज़माने में तशरीफ़ लाए वह दौरे जाहिलियत का था। अरब के लोग अक़्लीमे कलाम व सुख़न के ताजदार और मैदाने फ़साहत व बलाग़त के शहसवार समझे जाते थे। अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ऐसी कामिल व अकमल किताब अता फ़रमाई जिस में हर ज़माने के लिये और हर क़ौम के लिये तमाम रूहानी व जिस्मानी अमराज़ (बीमारियों) के लिये नुसख़ए शिफ़ा है।

अल्लाह तआला का पाक कलाम : कुरआने मजीद को आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने लोगों को सुनाया तो फ़साहत व बलाग़त के ताजदारों की गरदनें झुक गईं और ज़बानें गूंगीं हो गईं।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे आगे यूँ हैं दबे लचे फ़ुसहा अरब के बड़े बड़े
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जां नहीं

कुरआने करीम की अज़मत फ़ुसहाए अरब पर : फ़ुसहाए अरब ने जब कलामे रब्बानी को सुना तो उस की फ़साहत व बलाग़त के आगे उन की गरदनें झुक गईं और ज़बानें ख़ामोश हो गईं। कुरआने मजीद की अज़मते फ़साहत व बलाग़त के सामने लरज़ा बरन्दाम हो कर या तो कुरआने करीम के कलामे इलाही होने का इक़रार करके मुशर्रफ़ बा सलाम हो जाते। या कुरआन की शाने फ़साहत व बलाग़त का एतिराफ़ कर के अपनी आजिज़ी का ऐलान कर देते थे। हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो फ़ुसहाए अरब में शुमार किये जाते थे। एक दिन हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़े फ़ज्र में सूरए तूर तिलावत फ़रमा रहे थे। जबीर बिन मुतईम कलामे रब्बानी को बग़ौर सुनते रहे जब :

اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝

तर्जमा : बे शक तेरे रब का अज़ाब ज़रूर होना है उसे कोई टालने वाला नहीं।
(पारा 27, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

की आयत सुनी तो आप का बयान है कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि गोया अल्लाह तआला का अज़ाब मेरी तरफ़ आ रहा है। ख़ौफ़ से जिस्म का बाल बाल लरज़ने और कांपने लगा। कुरआने करीम की अज़मत का दिल से मोअतरिफ़ हो कर कलमा पढ़ा और मुसलमान हो गया। (एजाज़ुल कुरआन, अबू बक्र बाक़लानी, स. 40)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कितने सख़्त दुश्मन थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़त्ल के इरादे से घर से चले थे मगर सूरए ताहा की तिलावत

सुनी तो कुफ़्र का अन्धेरा जाता रहा और दिल की दुनिया बदल गई और इस्लाम ले आए।

उतबा बिन रबीआ ख़तीबे क़ुरैश और अज़ीम साहिरुल बयान व फ़सीहुल लिसान शख़्स था जब हमारे हुज़ूर रहमते दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने नुबुव्वत से सूरए हा मीम की इब्तिदाई आयतें उस ने सुनीं तो ख़ौफ़ व दहशत से उछल पड़ा। घबराहट के आलम में क़ुरैश के सनादीद के पास आया और कहने लगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो कुछ पढ़ते हैं ख़ुदा की क़सम न वह शेअर है, न जादू है, न कहानत है, उन के लफ़्ज़, लफ़्ज़ में ऐसी पुर तासीर लज़्ज़त और लरज़ा बरन्दाम कर देने वाली हैबत है जो दिलों को मोह लेती है और क़ुलूब (दिलों) में ख़ौफ़े ख़ुदा का सैलाब लाती है और ख़ुदा की क़सम उन के किसी लफ़्ज़ का भी जवाब हमारे पास नहीं है। (एजाज़ुल क़ुरआन, स. 41)

हज़रत ज़माद बिन सअलबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक हाज़िक़ हकीम व तबीब थे मक्का मुकर्रमा आए, सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे पीछे कुछ लड़के थे। कुफ़्फ़ारे मक्का आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मजनून कहा करते थे लड़कों का झुन्ड देख कर ज़मान बिन सअलबा ने भी यही गुमान किया और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में आकर कहने लगे। ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं जुनून का इलाज जानता हूँ और कर सकता हूँ। हमारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला की हम्दो सना बयान की और क़ुरआने करीम की चन्द आयतों को तिलावत फ़रमाया। जमाद बिन सअलबा बयान करते हैं कि मुझ पर इस क़दर असर हुआ कि मेरा दिल कांप उठा और उसी वक़्त मैंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

(मुस्नद इमाम अहमद, जि. 1, स. 202)

ऐ ईमान वालो! क़ुरआने करीम की तिलावत के फ़ैज़ान व बरकात के बारे में आप हज़रात ने सुन लिया कि क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत की तासीर से, कुफ़्र के अन्धेरों में भटकने वाले, इस्लाम के उजाले में आ गए और मुसलमान हो गए। यह है क़ुरआने मजीद का फ़ैज़ान।

क़ुरआन में हर सवाल का जवाब मौजूद है : आज दुनिया में बे शुमार मज़ाहिब मौजूद हैं और हर मज़हब में किताब भी मौजूद है। हर मज़हब वाला अपने मज़हब की हक़्क़ानियत व सचाई के सुबूत में कोई न कोई किताब पेश करता है और कहता है कि हमारे मज़हब की किताबें हक़ और सच है।

ज़ुबूर शरीफ़, तौरात शरीफ़, इन्जील शरीफ़ बेशक مُنَزَّلٌ مِّنَ السَّمَاءِ हैं मगर मौजूदा ज़ुबूर, तौरात, इन्जील, ख़ल्त, मल्त (मिलावट) से पाक नहीं हैं इन आसमानी किताबों में तहरीफ़ कर दी गई हैं इस लिये यह किताबें भी क़ाबिले एतिबार न रहीं अब इस दौर में कोई किताब हक़ और सच नहीं है सिर्फ़ क़ुरआने मजीद ही एक ऐसी किताब है जो हक़ और सच है। चौदह सौ बरस से आज तक क़ुरआने मजीद का एक एक हर्फ़ महफ़ूज़ है न बदला गया है और न ही बदला जाएगा।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक : إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ٥

तर्जमा : बे शक हम ने उतारा है यह कुरआन और बे शक हम ख़ुद इसके निगेहबान हैं।

(पारा 14, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! कुरआने मजीद ही एक ऐसी किताब है जो हमेशा हर शख़्स के लिये हिदायत थी और हमेशा हर एक के लिये हिदायत रहेगी। मज़हबे इस्लाम की हक़्क़ानियत और सचाई के लिये कुरआने करीम एक मज़बूत और अज़ीम दलील है और हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बे शुमार मोअजिज़ात में से एक अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा है।

हज़रात ! दुनिया की तमाम किताबें सामने रखो और सवाल करो कि तुम्हारा नाम क्या है। तुम कहाँ से आए तुम किस की तरफ़ आए। तुम क्यों आए तुम कब आए तो तमाम किताबें ख़ामोश नज़र आएंगी और किसी किताब के पास भी इन तमाम सवालों का जवाब नहीं मिलेगा। लेकिन कुरआने करीम अल्लाह तआला की वह हक़ और सच किताब है जिस में तमाम सवालों का मुफ़स्सल और मुदल्लल जवाब मौजूद है।

आइये कुरआन करीम से ही पूछें और सवाल करें ऐ कुरआन बता आप का नाम क्या है। तो कुरआने करीम जवाब देता है।

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ٥ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ यानी मेरा नाम कुरआन है। (पारा 30, सूरतुल बुरूज, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ कुरआन बता कि आप कहाँ से तशरीफ़ लाए ? तो कुरआने करीम जवाब देता है।

تَنْزِيلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ यानी रब्बुल आलमीन की तरफ़ से आया हूँ।

(पारा 27, रुकू 16, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ कुरआन बता कि आप किस की तरफ़ तशरीफ़ लाए ? तो क़ुरआने करीम जवाब देता है। نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ यानी मैं मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास आया हूँ। (पारा 26, रुकू 5, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ कुरआन तू बता कि आप के आने का मक़सद किया है ? आप क्यों तशरीफ़ लाए हो ? तो कुरआने करीम जवाब देता है। هُدًى لِّلنَّاسِ यानी लोगों की हिदायत व रहनुमाई के लिये आया हूँ। (पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ कुरआन बता कि आप किस महीने में तशरीफ़ लाए ? तो कुरआने करीम जवाब देता है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْآنُ

यानी रमज़ान शरीफ़ के महीने में आया हूँ। (पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ कुरआन बता कि दिन में आप तशरीफ़ लाए या रात में अर उस रात का नाम क्या है ? तो कुरअआने करीम जवाब देता है : إِنَّا أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ

यानी शबे क़द्र में आया हूँ। (पारा 30, रुकू 22, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! सुन लिया आप लोगों ने कि कुरआने पाक ने तमाम सवालों का मुकम्मल जवाब अता किया और यह साबित कर दिया कि अल्लाह तआला की किताब कुरआने मजीद

हक़ और सच है ऐसी हक़ और सच किताब हमारे पास है मगर एक हम हैं जो कुरआने करीम से दूर हैं, घर में कुरआन शरीफ़ मौजूद है मगर ताक़ों में रखा हुआ है, लेकिन मुसलमानों को कुरआन शरीफ़ की तिलावत की फ़ुरसत नहीं और कुरआने करीम पर अमल करना तो मुसलमानों ने छोड़ ही रखा है। (अल अमान वल हफ़ीज़)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुन लो यह एक सच्ची हक़ीक़त है कि दोनों जहाँ की कामयाबी का राज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत के साथ कुरआने करीम की तालीमात पर अमल करने में है। इज़्ज़त व अज़मत, रिज़्क़ व दौलत, हिफ़्ज़ व अमान किसी और के पास नहीं है बल्कि कुरआने करीम के पास है। लिहाज़ा कुरआने करीम को दिलों में उतारो, कुरआन शरीफ़ को पढ़ो और पढ़ाओ और उस की मुक़द्दस तालीमात पर अमल कर के सच्चे मुसलमान हो जाओ, मुसलमानों की नाकामी व बरबादी का सब से बड़ा सबब यह है कि मुसलमानों ने कुरआने करीम के बताए हुए रास्ते को छोड़ दिया और यहूदो नसारा मुशरेकीन की राहों पर चल पड़े। सच कहा है डाक्टर इक़बाल ने

हर कोई मस्त मए ज़ौक़े तन आसानी है
तुम मुसलमां हो ? यह अन्दाज़े मुसलमानी है
हैदरी फ़क्र है न दौलते उस्मानी है
तुम को अस्लाफ़ से क्या निस्बते रूहानी है
वह ज़माने में मुअज़्ज़ज़ थे मुसलमां होकर
और तुम ख़्वार हुए तारिके कुरआं होकर

रमज़ान शरीफ़ में तौरात, ज़ुबूर, इन्ज़ील नाज़िल हुई

अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम पर आसमानी किताबें इसी माहे मुबारक में नाज़िल की गई हैं, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर सहीफ़े रमज़ान शरीफ़ की पहली तारीख़ में नाज़िल हुए तौरात छः रमज़ान शरीफ़ में, ज़ुबूर और इन्जील तेरह रमज़ान शरीफ़ में नाज़िल हुई। (तफसीर इब्ने कसीर)

कुरआन सीखने और सिखाने वाला सब से अफ़ज़ल है

हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : خَيْرُكُمْ مَّنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ

तुम में बेहतर वह शख़्स है जो कुरआन सीखे और सिखाए।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 752, मिश्कात शरीफ़, स. 183)

आलिमे कुरआन फ़रिश्तों के साथ होगा : नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَلْمَاهِرُ بِالْقُرْاٰنِ مَعَ السَّفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ

कुरआन का आलिम मुअज़्ज़ज़ फ़रिश्तों के साथ होगा।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 1125, तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 118, मिश्कात, स. 184)

कुरआन शरीफ़ के एक हर्फ़ पढ़ने से दस नेकियाँ लिखी जाती हैं

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कुरआन शरीफ़ के एक हर्फ़ की तिलावत करने पर दस नेकियाँ मिलती हैं और दस गुनाह मुआफ़ होते हैं और फ़रमाया : الم لَيْسَ بِحَرْفٍ بَلْ اَلِفٌ حَرْفٌ وَلَامٌ حَرْفٌ وَمِيْمٌ حَرْفٌ

यानी मैं नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़, लाम एक हर्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ और मीम एक हर्फ़ है। अलिफ़ लाम मीम तीन हर्फ़ हैं । पढ़ने वाले को अल्लाह तआला तीस नेकियाँ देता है और तीन गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और कुरआन शरीफ़ जिस जगह पढ़ा जाए वहाँ रहमतों की बारिश होती है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 119, मिश्कात, स. 186)

वीरान घर : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस के सीने में कुरआन नहीं वह वीरान घर की तरह है।

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 119, मिश्कात, स. 186)

जिस ने हाफ़िज़े कुरआन की इ़ज़्ज़त की उस ने नबी की इ़ज़्ज़त की

प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमया हाफ़िज़े कुरआन की इ़ज़्ज़त करो। فَمَنْ اَكْرَمَهُمْ فَقَدْ اَكْرَمَنِيْ.

जिस ने उन की इ़ज़्ज़त की उस ने मेरी इ़ज़्ज़त की। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 2, स. 258)

हाफ़िज़े कुरआन और उन के मां, बाप की इ़ज़्ज़त

हमारे सरकार, अहमदे मुख़्तार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने कुरआन पढ़ा और सीखा और उस पर अमल किया क़ियामत के दिन उस को ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की रोशनी चाँद जैसी होगी और उस के मां, बाप को ऐसा लिबास पहनाया जाएगा जिस के मुक़ाबले में दुनिया की कोई हक़ीक़त न होगी। कुरआन के (हाफ़िज़) क़ारी के मां, बाप कहेंगे यह हमें किस वजह से लिबास पहनाया गया है तो उन से कहा जाएगा यह तुम्हारे बच्चे के कुरआन पढ़ने की वजह से है।

(अबू दाऊद, जि. 1, स. 205, हाकिम, जि. 1, स. 756)

हाफ़िज़े कुरआन दस रिश्तेदारों गुनाहगारों को बख़्शवाएगा

हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस ने कुरआन पढ़ा और उस को याद कर लिया उस के हलाल को हलाल जाना और हराम को हराम समझा उस के घर वालों में से उन दस लोगों के बारे में अल्लाह तआला

उस की शफ़ाअत कुबूल फ़रमाएगा जिस पर जहन्नम वाजिब हो चुकी थी।

(तिर्मिज़ी शरीफ, जि. 2, स. 118, इब्ने माजह)

ऐ ईमान वालो ! जब हाफ़िज़े कुरआन दस गुनाहगार रिश्तेदार की शफ़ाअत करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी है तो हमारे सरकार शफ़ीए रोज़े शुमार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत का आलम क्या होगा।

आशिके मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

पेशे हक़ मुज़्दा शफ़ाअत का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएँगे हम को हंसाते जाएँगे
वुसअतें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाएँगे और वह छुपाते जाएँगे

दुरूद शरीफ़ :

तिहाई कुरआन का सवाब : हमारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम इस से आजिज़ हो कि रात में तिहाई कुरआन पढ़ लिया करो ? लोगों ने अर्ज़ किया कि तिहाई कुरआन कोई कैसे पढ़ सकता है तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: कुल हुवल्लाहु अहद (पूरी सूरह) तिहाई कुरआन के बराबर है।

(बुख़ारी, जि. 2, स. 750, मुस्लिम, जि. 1, स. 271, इब्ने माजह, स. 268)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर पता चला कि एक मरतबा कुल हुवल्लाहु अहद (पूरी सूरह) पढने से एक तिहाई कुरआन का सवाब मिलता है और जिस ने तीन बार कुल हुवल्लाहु अहद पूरी सूरत पढ़ी उस को पूरे कुरआन की तिलावत का सवाब मिलेगा।

शैतान उस घर से दूर भागता है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे नबी, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अपने घरों को कब्रिस्तान न बनाओ, शैतान उस घर से भागता है जिस में सूरह बक़रह पढी जाए।

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 115, मिश्कात शरीफ़, स. 184)

ऐ ईमान वालो ! जिस घर में कुरआन न पढ़ा जाए वह घर क़ब्रिस्तान की तरह है और जिस सीने में कुरआन न हो वह वीरान घर की तरह है। आइये ! हम सब अहद करें कि कुरआने करीम की तिलावत करेंगे और उस पर अमल भी करेंगे।

आबाद है वह दिल जिस में तेरी याद है
जो याद से ग़ाफ़िल हो वीरान है बरबाद है

दिलों का ज़ंग कैसे दूर करें : हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा करीम, महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि दिल ज़ंग आलूद होते हैं ज़ैसे लोहा पानी लगने से ज़ंग आलूद हो जाता है अर्ज किया गया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस ज़ंग को कैसे दूर किया जाए ?

قَالَ كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ फ़रमाया मौत को कसरत से याद करने और कुरआन की तिलावत करने से। (मिश्कात, स. 189)

कुरआन की तिलावत नूर है : हमारे आक़ा सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कुरआने करीम की तिलावत करो यह तुम्हारे लिये दुनिया में नूर होगा और आसमान में तुम्हारे लिये बे शुमार नेकियों का ज़ख़ीरा होगा। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 1, स. 268)

कुरआन शफ़ाअत करेगा : अल्लाह तआला के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِقْرَؤُا الْقُرْآنَ فَاِنَّهٗ يَاْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَفِيْعًا لِّاَصْحَابِهٖ

कुरआने पाक पढ़ा करो इस लिये कि कुरआन अपने पढ़ने वालों की क़ियामत के दिन शफ़ाअत करेगा। (मुस्लिम, जि. 1, स. 270)

कुल हुवल्लाहु अहद पढ़ने वाले पर जन्नत वाजिब हो गई

हमारे सरकार महबूबे परवरदिगार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक मरतबा एक शख़्स को कुल हुवल्लाहु अहद (पूरी सूरत) पढ़ते देखा इरशाद फ़रमाया : وَجَبَتْ (वाजिब हो गई) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : فَقُلْتُ مَا وَجَبَتْ (यानी मैं ने अर्ज़ किया कि) क्या वाजिब हो गई ? قَالَ اَلْجَنَّةُ (तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जन्नत (वाजिब हो गई) (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 117, मिश्कात शरीफ़, स. 188)

सूरह फ़ातिहा की शान : हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि सिदरह के मकीन हज़रत जिब्रीले अमीन हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की क़सम ! जिस ने आप को रसूल बना कर भेजा है अगर रूए ज़मीन के तमाम दरया के पानी स्याही हो जाएं और तमाम दरख़्त क़लम बन जाएं और सातों ज़मीन और आसमान सब काग़ज़ हो जाएं और इब्तिदाए आलम से लेकर आज तक तमाम फ़रिश्ते और सारे इन्सन मिल कर उस के फ़ज़ाइल लिखना चाहें तो नहीं लिख सकते। (हश्त बहिश्त)

हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इरशाद

अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुस्सादात मेरे आक़ा हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : अगर मैं चाहूँ और सूरए फ़ातिहा की तफ़सीर लिखने लगूँ तो इतनी ज़ख़ीम लिख दूँ कि सत्तर ऊंटों का बोझ तय्यार हो जाए। (हाशिया अद्दौलतुल मक्कियह, स. 37)

सूरए फ़ातिहा ला इलाज बीमारी का इलाज है

हिन्द के राजा, मेरे प्यारे ख़्वाजा, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सूरए फ़ातिहा हर तरह की बीमारी का इलाज है जो बीमारी किसी इलाज से दुरुस्त न होती हो तो सुबह की नमाज़ के बाद सुन्नत और फ़र्ज़ के दरमियान इक्तालीस मरतबा सूरए फ़ातिहा बिस्मिल्लाह के साथ पढ़ कर दम करने से ला इलाज बीमारी का इलाज हो जाता है और मेरे प्यारे ख़्वाजा बन्दा नवाज़, करम नवाज़, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : اَلْفَاتِحَةُ شِفَاءٌ مِّنْ كُلِّ دَاءٍ यानी सूरए फ़ातिहा हर मर्ज़ के लिये शिफ़ा है और हर दर्द के लिये दवा है और फ़रमाते हैं सूरए फ़ातिहा पढ़ने वाले को अल्लाह तआला एक लाख चौबीस हज़ार अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम का सवाब अता फ़रमाता है।

(सुननुद्दारमी, जि. 2, स. 538, हश्त बहिश्त)

हुज़ूर आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : हमारे आक़ा, जाने जान, साहिबे कुरआन मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उलमा कुरआन से कभी आसूदा नहीं होंगे और कितना ज़्यादा भी बार बार कुरआन को पढ़ा जाए मगर कुरआन पुराना नहीं होगा और उस के अजाइब कभी ख़त्म न होंगे।

तिर्मिज़ी शरीफ़ और अशिअतुल लमआत में है यानी कुरआन के मआनी व उलूम कभी ख़त्म न होंगे इस लिये उलमा कुरआने मजीद से कभी आसूदा न होंगे।

(हाशिया अद्दौलतुल मक्कियह, स. 37)

अन्धा आँख वाला हो गया : हिन्द के राजा, मेरे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जो शख़्स कुरआन को देखता है अल्लाह तआला के करम से उस के आँख की रौशनी बढ़ जाती है और उस की आँख कभी नहीं दुखती और न ख़ुश्क होती है और मेरे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मरतबा एक नाबीना शख़्स एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी बीनाई के बारे में अर्ज़ किया तो उस बुज़ुर्ग अल्लाह वाले ने सूरए फ़ातिहा पढ़ी और कुरआन शरीफ़ उस शख़्स की दोनों आँखों पर मला जिस से उस शख़्स की दोनों आँखें रौशन हो गईं। (दलीलुल आरेफ़ीन)

कुरआने करीम का अदब करने वाला जन्नत में फ़रिश्तों के साथ होगा

हिन्द के राजा, मेरे प्यारे ख़्वाजा, सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं की एक शख़्स बड़ा गुनाहगार फ़ासिक़ व फ़ाजिर था और लोग उस के फ़िस्क़ व फुजूर (गुनाहों के सबब उस से नफ़रत करते थे उस गुनाहगार शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उस को ख़्वाब में देखा कि उस के सर पर ताज है और जन्नती लिबास पहने हुए फ़रिश्तों के साथ जन्नत में दाख़िल हो रहा है उस शख़्स से पूछा गया, तू बदकार, गुनाहगार था यह दौलत कहाँ से नसीब

हुई तो उस शख़्स ने जवाब दिया कि बे शक मैं बदकार व गुनाहगार था मगर एक नेकी करता था वह यह है कि जब भी और जहाँ भी कुरआन शरीफ़ को देखता तो खड़ा हो जाता और बड़े अदब व एहतिराम से देखता रहता। अल्लाह तआला ने कुरआने करीम के अदब व एहतिराम के सबब मुझे बख़्श दिया और फ़रिश्तों के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमाया। (हश्त बहिश्त)

कुरआने करीम का अदब और महमूद ग़ज़नवी

हज़रत महमूद ग़ज़नवी बादशाह रहमतुल्लाहि तआला अलैहि बिस्तर पर दराज़ हुए आराम करने के लिये तो देखा कि कुरआन शरीफ़ ताक़ में रखा हुआ है। बादशाह ने दिल में सोचा कि कुरआन मजीद जहाँ रखा हुआ है वहाँ मैं किस तरह सो सकता हूँ यह अदब के ख़िलाफ़ है। कुरआन शरीफ़ को ताक़ से लिया और दूसरे कमरे में रख दिया फिर ख़याल आया कि मैं ने कुरआने मजीद को अपने आराम के लिये दूसरी जगह रख दिया है यह भी ख़िलाफ़े अदब है फिर उठे और कुरआन शरीफ़ को उसी जगह रख दिया जहाँ पहले रखा हुआ था और ख़ुद बादशाह दूसरे मकान में आराम के लिये चले गए। जब आप का विसाल हो गया तो किसी ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत महमूद ग़ज़नवी बादशाह जन्नत के बाग़ों में टहल रहे हैं। पूछा गया कि आप को यह मक़ाम कैसे मिला तो जवाब दिया कुरआने करीम के अदब व एहतिराम के सबब अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया और मेरा मक़ाम जन्नत में है।

(दलीलुल आरेफ़ीन, स. 21,22)

ऐ ईमान वालो ! आज हमारा यह हाल है कि कुरआन का अदब हम नहीं जानते और न करते हैं जैसे वैसे कुरआने करीम को हाथ में ले लेते हैं न छूने का अदब मालूम है और न पढ़ने का अदब हम करते हैं। हमारे घरों में कुरआने मजीद रखा है गरदो गुबार पड़े हुए हैं धूल जमी हुई है, टी वी का कवर रोज़ साफ़ होता है मगर अल्लाह तआला का मुक़द्दस कलाम कुरआने मजीद को हम हाथ नहीं लगाते तो फिर हमारे घरों में बरकत व रहमत कैसे होगी। अल्लाह तआला कुरआने करीम का अदब करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

कुरआन का दिल सूरए यासीन है

हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हर चीज़ के लिये दिल होता है और कुरआन का दिल सूरए यासीन है जिस ने यासीन पढ़ी अल्लाह तआला उस को दस बार कुरआन पढ़ने का सवाब अता फ़रमाता है और फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिये यासीन पढ़ेगा उस के साबिक़ा गुनाहों की मग़फ़िरत हो जाएगी। लिहाज़ा उस को अपने मुर्दों के पास पढ़ो।

(दारमी, जि. 2, स. 548, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 116, मिश्कात, स. 187)

ऐ ईमान वालो ! जागो और होश में आओ कितने बहरूपिये इस्लामी लिबास में, मुसलमानों की सूरत में कुरआने करीम पढ़ कर कुरआन के ग़लत, सलत मतालिब को बयान कर के तुम्हारे ईमान को बरबाद करने में लगे हैं। ज़रूरत है सही तालीमे कुरआन की, इसी

कुरआन से बहुत से लोग हिदायत याफ़्ता हुए हैं और बहुत से लोग ग़लत मअ़ना व मतलब बयान कर के गुमराह हुए हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا

तर्जमा : अल्लाह बोहतीरों को उस से गुमराह करता है और बोहतीरों को हिदायत फ़रमाता है। (पारा 1, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! कुरआन एक है मगर पढ़ने वाला जिस के सीने में इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है इस कुरआन से हिदायत पाएगा और वह शख़्स जिस का सीना इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है उस कुरआन से हिदायत पाएगा और वह शख़्स जिस का सीना इश्क़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और महब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ख़ाली है इसी कुरआन से गुमराह हो जाएगा। कुरआन पढ़ने वाला हिदायत पाता है और कुछ लोग गुमराह होते हैं।

मुरादे मुस्तफ़ा अमीर मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इस किताब, कुरआने मुक़द्दस से कितने लोगों को बलन्द मरतबा अता फ़रमाता है और कितने लोगों को ज़लील व ख़्वार करता है। (मुस्लिम शरीफ़)

कुरआने करीम का ग़लत मअ़्ना निकालने वाला बद तरीन मख़लूक़ है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ख़ारजियों को बद तरीन मख़लूक़ समझते थे और फ़रमाते हैं : اِنَّهُمْ اِنْطَلَقُوْا اِلٰى اٰيَاتٍ نَزَلَتْ فِى الْكُفَّارِ فَجَعَلُوْهَا عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

यानी बेशक यह लोग उन आयाते कुरआनिया को जो कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई हैं मोमिनों (मुसलमानों) पर चस्पां करते हैं। (बुख़ारी, जि. 2, स. 1024)

ऐ ईमान वालो ! जागो, होश में आओ और अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करो ? कैसा नाज़कु दौर आ गया है कि चेहरे पर दाढ़ी है हाथ में तस्बीह है और ज़बान पर कलमा व नमाज़ है और मुसलमान कहला रहे हैं मगर मुसलमान नहीं हैं। कुरआन पढते हैं हदीसें सुनाते हैं। बुख़ारी बुख़ारी की रट लगाते हैं और कुरआन व हदीस के मआनी व मतालिब को बिगाड़ कर ग़लत अन्दाज़ से पेश करते हैं जिस की वजह से सुन्नी मुसलमान धोका खा जाता है और उन की बातें सुनने लगता है और उन के नक़ली चेहरे को पहचान नहीं पाता। फ़रेब का शिकार हो जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि अपने ईमान को बरबाद कर लेता है और जहन्नम का मुस्तहिक़ करार पाता है।

इसी लिये फ़रमाया गया है कि कुरआन को हाथ में देख कर फ़रेब न खाना, कुरआन का

पढ़ने वाला ज़रूरी नहीं है कि मोमिन ही हो जैसा कि मुस्लिम शरीफ की रिवायत बयान की जा चुकी है कि हजरत उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया है कि कुरआने मुक़द्दस से अल्लाह तआला कितने लोगों को बलन्द मरतबा अता फ़रमाता है और कितने लोगों को ज़लील व ख़्वार करता है और अल्लाह तआला का कुरआन तो साफ़ लफ्ज़ों के साथ आगाह कर रहा है कि कुरआन पढ़ने वाला गुमराह भी होता है और हिदायत याफ़्ता भी होता है अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कितने वाज़ेह अन्दाज़ से बयान फ़रमाया है कि हर कारी ए कुरआन मोमिन नहीं होता बल्कि मुनाफ़िक़ भी कुरआन पढ़ता है और मुनाफिक की पहचान है कि कुरआन व हदीस का ग़लत मतलब निकाले और बयान करे जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत बयान हुई कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ख़ारजियों के बारे में फ़रमाते हैं कि यह लोग बद तरीन मख़लूक़ हैं इस लिये कि उन लोगों ने उस आयाते कुरआनिया को जो कुफ़्फ़ार के हक़ में नाज़िल हुई हैं उन को मुसलमानों पर चस्पां करते हैं।

बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस से साबित हो गया कि वह शख़्स बद तरीन मख़लूक़ है जो कुरआन व हदीस का ग़लत तर्जमा करे और उन के मतलब व मफ़हूम को बिगाड़ कर बयान करे जैसा कि इस ज़माने के वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी करते हैं। यह वह गुमराह तबक़ा है जिन्होंने कुरआन को इस की शाने नुज़ूल और मन्शा मुराद के ख़िलाफ़ इस्तिमाल किया और अहादीसे करीमा के मआनी व मतालिब को ग़लत अन्दाज़ से बयान कर के उम्मत में फ़ितना व फ़साद पैदा कर दिया यानी आयते करीमा तो नाज़िल हुई बुतों और झूटे ख़ुदाओं के बारे में और वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी साबित कर रहा है अल्लाह तआला के महबूबों, नेकों, अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम औलियाए इज़ाम और बुज़ुरगाने दीन अलैहिमुर्रिज़वान के लिये इसी लिये कुरआन का इरशादे पाक है।

يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا (पारा 1, रुकू 3)

मिसाल के तौर पर वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा मुलाहज़ा कीजिये।

वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी का अकीदा कि रसूलुल्लाह को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं है और लिखते हैं कि शैतान और मलकुल मौत के इल्म से रसूलुल्हा का इल्म कम है। और शैतान व मलकुल मौत का इल्म कुरआन से साबित है और रसूल का इल्म कुरआन से साबित नहीं और जो शख़्स रसूलुल्लाह का इल्म साबित करे वह मुश्रिक है। (बराहीने क़ातिआ, स. 51, मतबुआ कानपूर)

हज़रात ! आप ने सुन लिया कि वहाबी, देवबन्दी का अक़ीदा किस क़दर ख़राब है कि शैतान का इल्म तो कुरआन की आयत से साबित है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इल्मे ग़ैब कुरआन से साबित नहीं। (मआज़ल्लाह)

हज़रात ! अब मैं आप हज़रात को बताता हूँ कि अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा करीम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कितना वसीअ इल्म अता फ़रमाया है अब आप ख़ूब ग़ौर से सुनिये और याद रखिये ताकि बद अक़ीदों को जवाब दे सकें कि तमाम उलूम क़ुरआने मजीद में हैं और क़ुरआने मजीद मेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सीने मुबारका में है तो आप हज़रात ख़ुद फ़ैसला करो और वहाबी देवबन्दी को बताओ कि मेरे आक़ा नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तमाम उलूम हासिल हुए हैं क्यों कि क़ुरआन मेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नाज़िल हुआ है और क़ुरआन में सारे उलूम मौजूद हैं तो मानना पड़ेगा कि अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को उलूम का ख़ज़ाना अता फ़रमाया है उस मों इल्मे ग़ैब भी मौजूद है। लेकिन प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इल्मे ग़ैब मोमिन मानता है और मुनाफ़िक़ इनकार करता है।

क़ुरआन में उलूम का ख़ज़ाना है : क़ुरआने मजीद वह बा अज़मत किताब है जिस में तमाम उलूम का ख़ज़ाना है। अल्लाह तआला फ़रमाता है : وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

तर्जमा : और हम ने तुम पर यह क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है।

(पारा 14, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

एक जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है : مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ

तर्जमा : हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा। (पारा 7, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

सय्यिदुल मुफ़स्सेरीन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि : لَوْ ضَاعَ لِيْ عِقَالُ بَعِيْرٍ لَوَجَدْتُهٗ فِيْ كِتَابِ اللّٰه यानी अगर मेरे ऊंट के पांव की रस्सी गुम हो जाए तो मैं उस को क़ुरआन में तलाश कर के पालूँगा। (अतक़ान, जि. 2, स. 126)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया : جَمِيْعُ الْعِلْمِ فِي الْقُرْاٰنِ لٰكِنْ تَقَاصَرَ عَنْهُ اَفْهَامُ الرِّجَالِ यानी तमाम उलूम क़ुरआन के अन्दर मौजूद हैं यह और बात है कि लोगों की कोताह अक़्लें उन के समझने से क़ासिर हैं। (इतक़ान, जि. 2)

आयतुल कुर्सी की फ़ज़ीलत और इल्मे ग़ैब

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे फ़ितराना के ग़ल्ला की हिफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर फ़रमाया। रात हुई तो एक शख़्स आया और ग़ल्ला भरने लगा। मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा मैं तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश करूँगा, उस ने कहा मैं ग़रीब अयाल दार और हाजत मन्द हूँ। मैंने उसे छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : يَا اَبَا هُرَيْرَةَ مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ الْبَارِحَةَ ऐ अबू हुरैरह तुम्हारा रात का क़ैदी क्या हुआ ? मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस ने सख़्त हाजत और अयाल दारी की शिकायत की मुझे रहम आया तो उसे छोड़ दिया। आक़ा सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उस ने तुम से झूट बोला और वह फिर आएगा। मैं ने समझ लिया और मुझे यक़ीन हो गया कि वह (चोर) फिर आएगा, क्यों कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया है। उस के इन्तिज़ार में था कि वह (चोर) फिर आया और ग़ल्ला भरने लगा। मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा, तुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास ले जाऊँगा। उस (चोर) ने कहा, मुझे छोड़ दो मैं मोहताज हूँ और बाल बचे वाला हूँ, अब नहीं आऊँगा मुझे उस पर रहम आ गया और मैं ने उस (चोर) को छोड़ दिया। जब सुबह हुई तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ

ऐ अबू हुरैरह ! तुम्हारा क़ैदी क्या हुआ ? मैं ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस (चोर) ने सख़्त मोहताजी और बाल बचों की शिकायत की तो मुझे फिर उस पर रहम आ गया और मैं ने छोड़ दिया। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَمَا اِنَّهٗ قَدْ كَذَبَكَ وَسَيَعُوْدُ अबू हुरैरह ! याद रखो उस ने तुम से झूट बोला है और वह फिर आएगा। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान पर यक़ीन था कि वह ज़रूर आएगा। मैं इन्तिज़ार में था और वह (चोर) आया और ग़ल्ला भरने लगा मैंने उसे पकड़ लिया और कहा, तुझे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुज़ूर में पेश करूँगा तू हर बार यही कहता है कि फिर नहीं आऊँगा और फिर आ जाता है उस (चोर) ने कहा मुझे छोड़ दो। मैं तुझे ऐसे कलिमात यानी वज़ीफ़ा सिखाता हूँ कि अल्लाह तआला तुम्हें उन से नफ़ा देगा। जब तुम आराम के लिये बिस्तर पर जाओ तो आयतुल कुर्सी पढ़ लो। सुबह तक अल्लाह की तरफ़ से एक मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ता) रहेगा सुबह तक शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आएगा मैं ने उस (चोर) को छोड़ दिया। فَاَصْبَحْتُ فَقَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ مَا فَعَلَ اَسِيْرُكَ सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह ! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ ? मैं ने अर्ज़ किया उस क़ैदी (चोर) ने मुझ से कहा मैं तुम को ऐसे कलिमात सिखाता हूँ जिस से अल्लाह तआला तुम्हें नफ़ा देगा। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اَمَا اِنَّهٗ قَدْ صَدَقَكَ وَهُوَ كَذَّابٌ उस ने सच कहा वैसे वह बड़ा झूटा है और आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरह जिस से तुम तीन रातों से गुफ़्तुगू कर रहे हो, जानते हो वह (चोर) कौन है ? तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की मैं उस (चोर) को नहीं जानता हूँ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ذَاكَ شَيْطَانٌ वह शैतान है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 310, मिश्कात, स. 185)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीसे पाक से दो मस्अले मालूम हुए एक यह कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को

इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है। जभी तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि वह (चोर) कल फिर आएगा और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह भी मालूम है कि वह आने वाला और चोरी करने वाला कोई इन्सान नहीं है बल्कि शैतान है। और यह इल्मे ग़ैब नहीं तो और क्या है। दूसरी बात यह मालूम हुई कि हम सोने से पहले अपने बिस्तर पर आयतुल कुर्सी पढ़ लें तो अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त के लिये फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमाता है जो रात भर हमारी हिफ़ाज़त करता है। यह है आयतुल कुर्सी शरीफ़ की बरकत अल्लाह तआला हम को प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब पर ईमान रखने की और सोने से पहले आयतुल कुर्सी शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत : हमारे आक़ा सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम वुज़ू करो तो बिस्मिल्लाह वलहम्दु लिल्लाह पढ़ लिया करो (उस की बरकत यह होगी) जब तक तुम्हारा वुज़ू बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक फ़रिश्ते तुम्हारे लिये नेकियाँ लिखते रहेंगे। (तबरानी)

बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने से बख़्शिश का परवाना मिलता है

काने विलायत साहिबे ख़िलाफ़त मेरे आक़ा हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अलैह फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम को उम्दगी और अदब से पढ़ा उस शख़्स की बख़्शिश हो गई। (कन्ज़ुल उम्माल)

बेटे ने पढ़ा और बाप बख़्श दिया गया

अल्लाह तआला के नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक क़ब्र से गुज़र हुआ तो देखा कि क़ब्र वाले पर सख़्त अज़ाब हो रहा है। यह मुलाहज़ा फ़रमाने के बाद आप चन्द क़दम आगे तशरीफ़ ले गए और रफ़ए हाजत से फ़ारिग़ हो कर फिर वापस तशरीफ़ लाए और उसी क़ब्र से गुज़रे तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि क़ब्र में नूर ही नूर है और इस क़ब्र पर रहमते इलाही की बारिश हो रही है। आप बहुत हैरान हुए और अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया। या अल्लाह तआला क्या माजरा है। अभी अज़ाब नाज़िल हो रहा था और अब इस क़ब्र में नूर ही नूर है और रहमत की बारिश हो रही है तो इरशाद हुआ। ऐ रूहुल्लाह (अलैहिस्सलाम) यह शख़्स बड़ा गुनाहगार और बदकार था। इस वजह से अज़ाब में गिरफ़्तार था। लेकिन उस ने अपनी बीवी हामिला छोड़ी थी उस के लड़का पैदा हुआ और आज उस लड़के को मदरसा भेजा गया। उस्ताद ने उस लड़के को बिस्मिल्लाह हिर्रमा निर्रहीम पढ़ाई। हमें हया आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस शख़्स को अज़ाब दूँ जिस का बच्चा ज़मीन पर मेरा नाम ले रहा है। (तफ़सीरे नईमी)

ऐ ईमान वालो ! हमारे अस्लाफ पहले के मुसलमान बा इज़्ज़त व कामयाब थे इस लिये कि वह कुरआने करीम से महब्बत करते थे और उस की तालीमात पर अमल पेरा थे। तारीख़ पढ़ो तो पता चलेगा कि वह मुसलमान ही थे जिन्होंने पूरी दुनिया को अपने प्यारे इस्लाम के सामने झुका दिया था।

क़ैसर व किसरा जैसी सुपर ताक़तों को हिला कर रख दिया था। हर मैदान में फ़तह व ज़फ़र कामयाबी व कामरानी ने हमारे बुज़ुर्गों के क़दम चूमे और आज हम हैं कि यहूदो नसारा व मुश्रेकीन के क़दमों में पड़े नज़र आ रहे हैं। ज़िल्लत व रुसवाई हमारी पहचान बनती जा रही है। कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन हम पर ग़ालिब आ रहे हैं और हम उन की हुकूमतों में गुलाम बनते जा रहे हैं मुसलमानों में इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ नहीं। एक दूसरे की बुराई व ग़ीबत में लगे हैं। एक दूसरे से इख़्तिलाफ़ मामूली बात है। आपस में लड़ रहे हैं कट रहे हैं और ज़िल्लत व रुसवाई से दो चार हैं। आओ सब मिल कर तौबह करें और कुरआने करीम के अहकामात पर अमल करना शुरू कर दें और यक़ीन रखें कि वह दिन दूर नहीं कि कामयाबी व कामरानी फिर हमारे क़दम चूमेगी।

दर्स कुरआन गर हम ने न भुलाया होता
यह ज़माना न ज़माने ने दिखाया होता
वह मुअज़्ज़ज़ थे ज़माने में मुसलमां होकर
आज हम ख़्वार हुए तारिके कुरआँ होकर

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(9)

रमज़ानुल मुबारक

पहला जुमा .... दूसरा बयान

रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ीलत व बरकत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا کُتِبَ عَلَیْکُمُ الصِّیَامُ کَمَا کُتِبَ عَلَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِکُمْ لَعَلَّکُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। (पारा 2, रुकूअ् 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

सआदत के जुलू में रहमते परवरदिगार आई
मुसलमानों के घर चल कर ख़ुदा का लुत्फ़े आम आया

और सरकार आला हज़रत, आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

शोर मह सुन कर तुझ तक में दवां आया
साक़ी मैं तेरे सदक़े मए दे रमज़ां आया

रोज़ा फ़र्ज़े इलाही है : हर मुसलमान (मर्द व औरत) आक़िल व बालिग़ पर रमज़ान शरीफ़ के रोज़े फ़र्ज़ हैं और नमाज़ मेअराज की शब फ़र्ज़ हुई जब कि रोज़े 10 शव्वाल 2 हि. को फ़र्ज़ हुए। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, बहारे शरीअत)

रोज़े के लिये रमज़ान का महीना क्यों मुन्तख़ब हुआ

इस्लाम में अकसर आमाल के पीछे किसी न किसी नेक बन्दे की याद मौजूद व मक़सूद है जैसे अरफ़ात के मैदान में हज का फ़रीज़ा हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम की यादगार

हैं। कुरबानी का नेक अमल हजरत इब्राहीम व इस्माईल अलैहिमस्सलाम की सुन्नत है। सफ़ा व मरवा की सई, हज़रत सय्यिदा हाजिरा रजियल्लाहु तआला अन्हा का दोनों पहाड़ों के दरमियान दोड़ने की याद को बाकी रखता है। इसी तरह हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रमज़ान शरीफ़ के महीने में कुछ दिन खाने, पीने से परहेज़ करते थे यानी हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रमज़ान शरीफ़ में भूके और प्यासे रहना पसन्द फ़रमाया तो अल्लाह तआला ने भी रोज़े के लिये माहे रमज़ान शरीफ़ को पसन्द फ़रमा लिया और पूरे रमज़ान शरीफ़ के रोज़े ईमान वालों पर फ़र्ज कर दिये ताकि मेरे हबीब, कौनैन के तबीब मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की यादगार बाकी रहे और मेरे महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत क़ाइम रहे।

रोज़ा उममे साबिक़ा पर भी फर्ज था : हजरत आदम अलैहिस्सलाम हर माह की तेरा, चौदह, पन्द्रह को रोज़ा रखते थे हज़रत नूह अलैहिस्सलाम पूरे साल रोज़ा रखते थे, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम एक दिन छोड़ कर, एक दिन रोज़ा रखते थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक दिन रोज़ा रखते थे और दो दिन नहीं रखते थे।

(तफ़सीरे अजीज़ी, जि. 1, स. 639)

रोज़े का सब से बड़ा फ़ायदा : रोज़ा रखने के सबब रोज़े दार मुत्तक़ी परहेज़गार बन जाता है इसी लिये अल्लाह तआला फ़रमाता है : لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

ताकि तुम (ऐ ईमान वालो) परहेज़गार बन जाओ।

बच्चों को रोज़ा रखने का हुक्म दो : बच्चों को जल्द से जल्द रोज़ा रखने का हुक्म दो यानी आदत डालो। ताकि जब बच्चा बालिग हो जाए तो उसे रोज़ा रखने में दुश्वारी न हो। इसी लिये फुक़हाए किराम फ़रमाते हैं बच्चा की उम्र जब दस साल की हो जाए और उस में रोज़ा रखने की ताक़त हो तो उसे माहे रमज़ान शरीफ़ में रोज़ा रखवाया जाए। अगर ताक़त होते हुए बच्चा रोज़ा न रखे तो मार कर रोज़ा रखवाएं। (रद्दुल मोहतार)

रमज़ान शरीफ़ को पहचानो : हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर बन्दों को मालूम हो जाता कि रमज़ान शरीफ़ की (फ़ज़ीलत व बरकत) क्या चीज़ है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि पूरा साल रमज़ान ही होता (तो बेहतर था) (इब्ने खुज़ैमा, जि. 3, स. 190, अत्तरगीब, जि. 2, स. 102, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 222)

रमज़ान शरीफ़ की पहली रात में अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ पर नज़रे रहमत फ़रमाता है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले मक़बूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब रमज़ान शरीफ़ की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ की तरफ़ नज़रे

करम फ़रमाता है, और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे की जानिब नज़रे करम फ़रमाए तो उसे कभी अज़ाब न देगा और हर दिन दस लाख (गुनाहगारों) को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन की तादाद के बराबर उस रात में आज़ाद करता है फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है तो फ़रिश्ते ईद मनाते हैं (यानी ख़ुशी का एहतिमाम करते हैं) और अल्लाह तआला अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़रिश्तों से अल्लाह तआला फ़रमाता है। ऐ गरोहे मलायका उस मज़दूर को क्या बदला दिया जाए जिस ने काम पूरा कर लिया तो फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह तआला ! उस बन्दे को पूरा अज्र दिया जाए। अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ फ़रिश्तो! मैं तुम सब को गवाह बनाता हूँ कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया।

(असबहानी, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स 98)

रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा रखने वाला सिद्दीक़ीन व शोहदा का सवाब पाता है

हमारे सरकार महबूबे परवरदिगार मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बे कस पनाह में एक शख़्स ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम अगर मैं इस बात की गवाही दूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) और पांचों नमाज़ें पढ़ूँ और ज़कात अदा करूँ और रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखूँ और उस की रातों में क़याम करूँ (यानी नमाज़े तरावीह पढ़ूँगा) तो मैं किन लोगों में से हूँगा तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया तुम सिद्दीक़ीन और शोहदा में से हो जाओगे। (बज़ार, इब्ने ख़ुज़ैमा, इब्ने हब्बान, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 105, 106, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 219)

रमज़ान शरीफ़ में बरकत ही बरकत है

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने माहे शअ़बान के आख़री दिन वअ़ज़ फ़रमाया। ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अज़मत व बरकत वाला महीना आया, वह महीना जिस में एक रात (ऐसी है) जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है (यानी शबे क़द्र) उस महीने के रोज़े अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किये और उस की रात में क़याम (यानी नमाज़े तरावीह) (सुन्नत) है जो उस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस माह में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये। यह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और यह महीना मवासात (यानी ग़मख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है जो इस माह में रोज़ा दार को इफ़्तार कराए उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं और उस की गरदन आग से

आज़ाद कर दी जाती है (यानी दोज़ख़ से आज़ाद कर दिया जाता है) और रोज़ा इफ़्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा। बग़ैर उस के कि उस के अज्र में कुछ कम हो।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि हम ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम हम में से हर शख़्स इतनी ताक़त नहीं रखता कि वह रोज़ा इफ़्तार कराए तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला यह सवाब हर उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्तार कराए और जिस ने रोज़ेदार को पेट भर खिलाया उस को अल्लाह तआला मेरे हौज़ से पिलाए कि कभी वह प्यासा न होगा। यहाँ तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए।

यह वह महीना है कि उस का अव्वल रहमत और उस का औसत (दरमियान) मग़फ़िरत और आख़िर जहन्नम से आज़ादी का है। जो अपने ग़ुलाम (यानी नौकर मुलाज़िम) पर इस महीने में तख़फ़ीफ़ करे (यानी काम कम ले) तो अल्लाह तआला उस शख़्स को बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।

(शअबिल ईमान लिल बैहकी, जि. 3, स. 305, सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा, जि. 3, स. 191)

माहे रमज़ान की हर साअत इबादत है

रमज़ान शरीफ़ वह बरकत वाला महीना है कि उस का दिन हो या रात हर वक़्त इबादत होती है रोज़ा इबादत, इफ़्तार इबादत, तरावीह इबादत, फिर तरावीह पढ़ कर सोना भी इबादत, क्यों कि सहरी के इन्तिज़ार में सोया और सेहरी खाना इबादत, गोया रमज़ान शरीफ़ का दिन हो या रात उस की हर साअत इबादत ही इबादत है। (तफ़सीरे नईमी)

रमज़ान में मरने वाले का हिसाब न होगा

रमज़ान में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और एक फ़र्ज़ का सवाब सत्तर फ़र्ज़ के बराबर होता है और जो शख़्स रमज़ान शरीफ़ में मर जाए तो उस से क़ब्र में सवाल व जवाब न होगा।

(तफ़सीरे नईमी)

रमज़ान शरीफ़ के खाने, पीने का हिसाब न होगा। (रूहुल बयान शरीफ़)

रमज़ान के लिये पूरे साल जन्नत को सजाया जाता है

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि सरकारे दो आलम रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जन्नत इब्तिदाए साल से आइन्दा साल तक रमज़ान शरीफ़ के लिये सजाई जाती है। जब रमज़ान शरीफ़ का पहला दिन आता है तो जन्नत के पत्तों से अर्श के नीचे हवा हूरे ऐन पर चलती है और वह कहती है ऐ रब तआला ! तू अपने बन्दों में से हमारे लिये उन को शोहर बना जिन से हमारी आँखें ठन्डी हों और उन की आँखें हमसे ठन्डी हों। (शअबिल ईमान, लिल बैहकी, जि. 3, स. 312, 313)

रमज़ान शरीफ़ में आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जब रमज़ान आता है तो असामान के दरवाजे खोल दिये जाते हैं एक रिवायत में आता है कि जन्नत के द रवाज़े खोल दिये जाते हैं,. एक रिवायत में है कि रहमत के द रवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन ज़न्जीरों में बाँध दिये जाते हैं।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 262, मुस्लिम, जि. 1, स. 346)

रमज़ान में शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं

हमारे आक़ा व दाता, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं ज़ब रमज़ान की पहली रात होती है तो शयातीन और सरकश जिन्न क़ैद कर दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उन में से कोई दरवाज़े बन्द नहीं किया जाता और मुनादी पुकारता है ऐ ख़ैर ! (यानी भलाई) के चाहने वाले ! मुतवज्जह हो जा और ऐ शर के तलबगार ! बाज रह और कुछ लोग जहन्नम से आज़ाद किये जाते हैं और यह हर रात (रमज़ान) में होता है।

(इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 155, इब्ने माजह, जि. 1, स. 119)

रमज़ान शरीफ़ में हमारे हुज़ूर की ख़ास अता होती है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान शरीफ़ का महीना आता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तमाम क़ैदियों को आज़ाद फ़रमा देते और हर साइल मांगने वाले को अता फ़रमाते।

(शअबिल ईमान लिल बैहकी, जि. 3, स. 311)

ऐ ईमान वालो ! रमज़ान शरीफ़ में हमारे नबी क़ासिमे नेअमत व दौलत मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तमाम क़ैदियों को आज़ाद फ़रमा देते थे तो हम भी आज न जाने कितने ग़म व अलम और मुसीबत व बीमारी के क़ैदी बने हुए हैं। दुश्मानों के नरग़े में फ़ंसे हुए हैं । आओ अपने मुख़्तार नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में इस माहे मुबारक रमज़ान शरीफ़ में अर्ज करें कि आक़ा कल के क़ैदियों को आप ने आज़ाद किया था हम भी ज़माने के सितम के क़ैदी बन चुके हैं एक निगाहे करम डाल दीजिये और क़ैदे ग़म से आजाद फ़रमा दीजिये ! यक़ीनन करम होगा और आज़ादी नसीब होगी और दूसरी बात यह है कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मांगते थे और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मांगने वाले को अता फ़रमाते थे। पता चला और मालूम हुआ कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मांगना सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान की सुन्नत है

और नबी से मांगने को शिर्क व बिदअत कहना बे ईमान वहाबी, देवबन्दी की गन्दी तबीअत है। इसी लिये हम ईमान वाले आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलाम अपने प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मांगते थे और मांगते रहेंगे। (इन्शाअल्लाह) और अल्लाह तआला की देन व अता से हमारे नबी देते थे, देते हैं और देते रहेंगे। ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

दुरूद शरीफ़.

रमज़ान और कुरआन शफ़ाअत करेंगे

क़ियामत में रमज़ान और कुरआन रोज़ेदार की शफ़ाअत करेंगे। रमज़ान अल्लाह तआला की बारगाह में कहेगा या अल्लाह तआला मैं ने उसे दिन में खाने, पीने से रोके रखा था और कुरआन अर्ज़ करेगा कि या रब तआला! मैं उसे रात में तिलावते कुरआन यानी तरावीह के ज़रीए सोने से रोके रखा था। अल्लाह तआला रमज़ान और कुरआन की शफ़ाअत कुबूल करेगा और रोज़ेदार को बख़्श कर जन्नत अता फ़रमाएगा। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 586, तफ़सीरे नईमी)

पिछले तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ صَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

तर्जमा : जो शख़्स ईमान व इख़्लास से रमज़ान के रोज़े रखे अल्लाह तआला उस के पिछले गुनाह बख़्श देता है। (बुख़ारी, जि. 1, स. 658, मुस्लिम, जि. 1, स. 59 सुनने अबू दाऊद, जि. 1, स. 194)

जुमा की हर साअत में दस लाख की बख़्शिश : हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला माहे रमज़ान में हर दिन इफ़्तार के वक़्त दस लाख गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है। जिन पर गुनाहों की वजह से जहन्नम वाजिब हो चुका था और जुमा मुबारका की रात शुरू होने से लेकर जुमा का पूरा दिन सूरज डूबने तक हर साअत में दस लाख गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो जहन्नम के अज़ाब के मुस्तहिक़ हो चुके थे और जब रमज़ान शरीफ़ का आख़री दिन आता है तो पहली रमज़ान से अब तक जितने बख़्शे गए हैं उस की मिक़दार के बराबर उस आख़री एक दिन में बख़्शे जाते हैं। (तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(9)

रमज़ानुल मुबारक

दूसरा जुमा .... पहला बयान

रोज़े के फ़ज़ाइल व मसाइल

और सहर व इफ़्तार की बरकतें

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। (पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ :

रमज़ान बख़्शिश के लिये आया है : हजरत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं अगर अल्लाह तआला को उम्मते मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अजाबे दुनिया मक़सूद होता तो इस उम्मत को रमज़ान और सूरए कुल हुवल्लाहु अहद शरीफ़ न अता फ़रमाता। (नुज़हतुल मजालिस)

एक रोजा छोडने का नुक़सान : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे नबी मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बग़ैर रुख़सत व बग़ैर मर्ज़ के इफ़्तार किया यानी छोड दिया तो ज़माने भर का रोज़ा उस रोज़े का बदला नहीं हो सकते अगरचेह बाद में रख भी ले। (बुख़ारी शरीफ़, इब्ने माजह, स. 120, अबूदाऊद, जि. 1, स. 326)

जन्नत में रोजे दार का दरवाज़ा : हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं ज़न्नत में आठ दरवाज़े हैं। उन में एक दरवाज़े का नाम रय्यान है। उस दरवाजे से (जन्नत में) वही दाख़िल होंगे जो रोजे रखते थे।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 461, व मुस्लिम, जि. 1, स. 34)

रोज़ा ढाल और मज़बूत क़िलआ है : हमारे हुज़ूर सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया रोज़े सिपर यानी ढाल है और दोज़ख से बचने का मज़बूत क़िलआ है। (इमाम अहमद, जि. 3, स. 367, बैहक़ी)

रोज़ह बदन की ज़कात है : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हमारे आक़ा, रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हर शय के लिये ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा निस्फ़ सब्र है। (इब्ने माजह, स. 125)

रोज़ा के बराबर कोई अमल नहीं : हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है अर्ज़ की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे कोई अमल बताइये ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया रोज़े को लाज़िम कर लो कि उस के बराबर कोई अमल नहीं, मैं ने अर्ज़ किया कि मुझे कोई अमल बताइये तो इरशाद फ़रमाया रोज़े को लाज़िम कर लो कि उस के बराबर कोई अमल नहीं। फिर मैं ने (तीसरी बार) अर्ज़ की कि मुझे कोई अमल बताइये तो (तीसरी मरतबा भी) हुक्म हुआ कि रोज़े को लाज़िम कर लो। (नसाई शरीफ़, जि. 1, स. 240, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 52)

रोज़ा दार और जहन्नम के बीच सौ बरस का फ़ासला

हज़रत उमर बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रोज़ादार और दोज़ख के दरमियान सो बरस की दूरी होगी और हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि जो शख़्स ग़ैर रमज़ान में अल्लाह तआला की राह में रोज़ा रखा तो तेज़ घोड़े की रफ़्तार से सो बरस के फ़ासले पर दोज़ख से दूर होगा और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि रोज़ा दार और जहन्नम के दरमयान अल्लाह तआला इतनी बड़ी ख़न्दक़ कर देगा जितना आसमान व ज़मीन के दरमयान फ़ासला है।
(मुस्लिम, जि. 1, स. 364, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 292, इब्ने माजह, तबरानी औसत, जि. 2, स. 268)

ऐ ईमान वालो ! रोज़ादार से अल्लाह तआला बड़ी महब्बत फ़रमाता है और रोज़ेदार पर कोई अज़ाब हो अल्लाह तआला को हर गिज़ गवारा नहीं, इसी लिये तो जहन्नम को अपने रोज़ेदार बन्दे से इतना दूर रखता है जितना फ़ासला आसमान और ज़मीन के बीच है मगर रोज़ेदार का मोमिन सुन्नी मुसलमान होना ज़रूरी है वर्ना यहूदी, ईसाई, शीआ, और वहाबी, देवबन्दी भी रोज़ा रखते हैं और उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

दुरूद शरीफ़ :

रोज़ेदार के मुंह की बू : हमारे आक़ा, रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ाए क़ुदरत में मेरी जान है :

وَلَخُلُوْفُ فَمِ الصَّائِمِ اَطْيَبُ عِنْدَ اللّٰهِ مِنْ رِيْحِ الْمِسْكِ O

रोजेदार के मुंह की बू अल्लाह तआला के नजदीक मुश्क की खुश्बू से ज़्यादा पसन्दीदा है। (बुखारी शरीफ, जि. 1, स. 255, मुस्लिम, जि. 1, स 363)

रोज़ा दार को दो खूशियाँ नसीब होती हैं : لِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ एक खुशी रोज़ेदार को इफ़्तार के वक़्त मिलती है और दूसरी ख़ुशी उस वक़्त मिलेगी जब रब तआला का दीदार करेगा। (बुखारी शरीफ, जि. 1, स. 255, मुस्लिम, जि. 1, स. 262)

इफ़्तार के वक़्त की दुआ रद नहीं होती : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। रोज़ेदार की दुआ इफ़्तार के वक़्त रद नहीं की जाती और हजरत अबू हुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ाए करीम नबी रऊफ़ो रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं तीन शख्स की दुआ रद नहीं की जाती एक रोज़ेदार जिस वक्त इफ़्तार करता है और दूसरा आदिल बादशाह और (तीसरा) मजलूम की दुआ। उस को अल्लाह तआला अब्र (यानी आसमान) से ऊपर बलन्द करता है और उस के लिये आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और अल्लाह तआला फ़रमाता है मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! ज़रूर तेरी मदद करूँगा अगर चेह थोड़े ज़माने के बाद। (इमाम अहमद, तिर्मिज़ी, बेहक़ी, इब्ने माजह, स. 125)

ऐ ईमान वालो ! इफ़्तार का वक़्त बड़ा मक़बूल व मस्ऊद है उस वक़्त अल्लाह तअला की बारगाह करम से ख़ुसूसी इनआम व इकराम की बारिश होती है और रोज़ा दार की हर दुआ इफ़्तार के वक़्त अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमाता है मगर एक हम हैं जो उस मक़बूल वक़्त में फल फ्रूट और दूसरे इफ़्तारी की चीज़ों को इधर से उधर रखने और सजाने में लगे रहते हैं और ऐसी मक़बूल साअत को ज़ाए कर बैठते हैं। आओ हम अहद करें कि इफ़्तार से कम से कम दस मिनट पहले दुआ मांगना शुरू कर देंगे और कोई बात नहीं कोई काम नहीं सिर्फ़ दुआ मांगेंगे सिर्फ़ दुआ मांगेंगे, अल्लाह तआला हमें इफ़्तार के वक़्त तौफ़ीके दुआ अता फ़रमाए।

इफ़्तार कराने वाला बख़्श दिया जाता है : हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ فَطَّرَ فِيْهِ صَائِمًا كَانَ لَهُ مَغْفِرَةً لِّذُنُوْبِهِ

जिस शख्स ने रमज़ान में किसी रोज़ा दार को इफ़्तार कराया उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं ! (मिश्कात, स 174)

और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह भी फ़रमाया जो शख़्स रोज़ेदार को पेट भर खिलाए अल्लाह तआला उस शख़्स को मेरे हौज़ से क़ियामत के दिन पानी पिलाएगा, कि कभी वह प्यासा न होगा तक कि (रोजा इफ़्तार करने वाला) जन्नत में दाख़िल हो जाएगा। (मिश्कात शरीफ, स. 174)

रोज़े दार को पानी पिलाने वाला गुनाहों से पाक हो जाता है

हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जिस शख़्स ने रोज़ेदार को पानी पिलाया तो वह शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसे आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुआ है। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने अर्ज की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यह हुक्म घर पर है, या सफ़र में, या उस जगह जहाँ पानी न मिलता हो ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि यह हुक्म आम है अगरचेह फ़रात (नदी) के कनारे पर भी पानी पिला दे। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

रोज़ा इफ़्तार कराने का सवाब : हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी शाहे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स रोज़ेदार का रोज़ा इफ़्तार कराए या ग़ाज़ी का सामान मुहय्या करा दे तो उसे (यानी रोज़ा इफ़्तार कराने वाले को) भी इतना ही सवाब मिलेगा (यानी जितना रोज़ेदार को सवाब मिलेगा) (नसाई, इब्ने माजह, स. 125, शअबिल ईमान, ज. 3, स. 418)

रोज़ा इफ़्तार कराने वाले से हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम मुसाफ़हा करते हैं

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि सरकारे दो आलम, नबिये मोहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने हलाल खाने या पानी से रोज़ा इफ़्तार कराया, फ़रिश्ते माहे रमज़ान में उस के लिये बख़्शिश की दुआ करते हैं और फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम शबे क़द्र में उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं, एक और रिवायत में आता है कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम उस शख़्स से मुसाफ़हा करते हैं। (तबरानी कबीर, जि. 6, 261, कन्जुल उम्माल, जि. 8, स. 215)

ऐ ईमान वालो ! रोज़ा इफ़्तार कराना कितना महबूब अमल है कि रोज़ेदार के बराबर सवाब भी पाता है और ग़ाज़िये इस्लाम के जैसा सवाब दिया जाता है और फ़रिश्ते रोज़े इफ़्तार कराने वाले के हक़ में बख़्शिश की दुआ करते हैं और फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम उस ख़ुश नसीब से शबे क़द्र में मुसाफ़हा करते हैं। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को रोज़ा इफ़्तार कराया जाए कि रोज़ेदार के बराबर सवाब हासिल हो और फ़रिश्तों की दुआ भी मिले और शबे क़द्र में हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम से मुसाफ़हा की सआदत भी नसीब हो जाए।

खजूर या पानी से इफ़्तार करना सुन्नत है : हज़रत सलमान बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِذَا أَفْطَرَ أَحَدُكُمْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى تَمْرٍ فَإِنَّهُ بَرَكَةٌ فَإِنْ لَمْ يَجِدْ فَلْيُفْطِرْ عَلَى مَاءٍ فَإِنَّهُ طَهُورٌ

जब तुम में कोई रोजा इफ्तार करे तो खजूर से इफ़्तार करे कि उस में बरकत है और अगर न मिले तो पानी से (इफ्तार करे) कि वह पाक करने वाला है। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 149, मिश्कात)

हज़रात ! इस हदीसे पाक से मालूम हुआ कि हमारे आका, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रोज़ा इफ़्तार के लिये खजूर या पानी इस्तिमाल फ़रमाया करते थे इस लिये खजूर या पानी से रोज़ा इफ़्तार करना सुन्नत है।

रोजा जल्दी इफ़्तार करना सुन्नत है : हज़रत सहल बिन सअद रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले आज़म, नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हमेशा मेरी उम्मत भलाई के साथ रहेगी जब तक इफ़्तार में जलदी करेंगे। (बुखारी, जि. 1, स. 263, मुस्लिम जि. 1, स. 350)

इफ़्तार में ताख़ीर करना मना है : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَا يَزَالُ الدِّيْنُ ظَاهِرًا مَا عَجَّلَ النَّاسُ الْفِطْرَ لِاَنَّ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى يُؤَخِّرُوْنَ

हमेशा दीने इस्लाम ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़्तार में जलदी करते रहेंगे क्योंकि यहूदो नसारा इफ़्तार में ताख़ीर करते हैं। (अबू दाऊद, जि. 1, स. 323, मिश्कात, स. 175)

अल्लाह तआला का प्यारा बन्दा : हजरत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला के हबीब, उम्मत के तबीब, मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है मेरे बन्दों में मुझे वह बन्दा ज़्यादा पसन्द है जो इफ़्तार में जलदी करता है। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 150)

वक़्त से पहले इफ़्तार करना अज़ाब का सबब है

हमारे हुज़ूर, सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि एक रात में सो रहा था कि दो शख्स आए और मुझे एक पहाड़ पर ले जा रहे थे रास्ते में, मैं ने चीखने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनी तो मैं ने कहा यह आवाज़ें कैसी हैं तो उन दो लोगों ने मुझे बताया कि यह ऐसे लोगों की आवाज़ें हैं जो जहन्नमी हैं। फिर मैं आगे गया तो वहाँ पर एक क़ौम को देखा जो उलटे लटके हुए हैं और फ़रिश्ते उन के मुंह और जबड़ों को फाड़ रहे हैं जिस से खून जारी है। मैं ने पूछा यह लोग कौन हैं तो बताया गया कि यह वह लोग हैं जो वक़्त से पहले रोज़ा इफ़्तार कर लेते थे। (जवाजिर, जि. 1, स. 109, इब्ने खुज़ैमा, इब्ने हब्बान)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला अपना फ़ज़्लो करम रोज़ेदार को अता फ़रमाए। शैतान कब चाहेगा कि रोज़ेदार रोज़ा रख कर गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाए और अपने रब तआला को राज़ी कर ले और जन्नत का हकदार बन जाए, इस लिये रोज़ा इफ़्तार करते वक़्त बहुत एहतियात की ज़रूरत है। वक़्त से पहले इफ्तार करना रोज़े को ज़ाए कर देता है और यह अज़ाब का सबब बन सकता है और रोज़ा इफ़्तार करने में ताख़ीर करना भी मना और ना पसन्दीदा अमल है। इस लिये जब यक़ीने कामिल हो जाए कि सूरज डूब गया है और अब इफ्तार का वक़्त हो गया है तो रोज़ा इफ़्तार करना चाहिये।

सेहरी खाना सुन्नत है : एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि मैं अपने प्यारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सेहरी तनावुल फ़रमा रहे थे। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि सेहरी बरकत की चीज़ है जो अल्लाह तआला ने तुम्हें अता फ़रमाई है। उस को मत छोड़ना। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब किसी को सेहरी खाने के लिये बुलाते तो इरशाद फ़रमाते आओ बरकत का खाना खालो। एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रमज़ान शरीफ़ में नबिये आज़म रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ अपने साथ सेहरी खाने के लिये बुलाया और फ़रमाया कि यह बरकत वाला खाना है। (नसाई, जि. 1, स. 235)

सहरी में बरकत है : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि सहरी खाया करो क्यों कि सहरी में बरकत है। (बुख़ारी, स. 257/1, मुस्लिम, स. 350/1, नसाई, स. 233/1, इब्ने माजह, स. 121)

सहरी खाने वालों पर फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करते हैं कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला और उस के फ़रिश्ते सहरी खाने वालों पर दुरूद यानी रहमत भेजते हैं। (तबरानी, इब्ने हब्बान, जि. 5, स. 194)

सहरी से कुव्वत मिलती है : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रावी हैं कि अल्लाह तआला के हबीब, उम्मत के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, सहरी खाने में दिन के रोज़े के लिये कुव्वत मिलती है और (दोपहर के वक़्त थोड़ी देर आराम) यानी क़ैलूला करने से रात की इबादत के लिये कुव्वत हासिल होती है। (इब्ने माजह, स. 121, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 240, इब्ने ख़ुज़ैमा, बैहकी)

सहरी चाहे एक घूंट पानी से : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया सहरी कुल की कुल बरकत है उसे न छोड़ना अगर चेह एक घूंट पानी ही पी ले। क्यों कि सेहरी खाने वालों पर अल्लाह तआला और उस के फ़रिश्ते दुरूद यानी रहमत भेजते हैं। (इमाम अहमद, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 240)

तीन शख़्सों के खाने का हिसाब नहीं : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिववायत करते हैं कि नबिये करीम रऊफ़ो रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तीन शख़्स हैं जिन के खाने का हिसाब नहीं होगा जब कि हलाल खाया हो (एक) रोज़ा दार और (दूसरा) सेहरी खाने वाला और (तीसरा) वह मुजाहिद) यानी सर हद पर घोड़ा बाँधने वाला। (तबरानी कबीर, जि. 11, स. 285)

हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फ़र्क़ सहरी है

हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

فَصْلُ مَا بَيْنَ صِيَامِنَا وَصِيَامِ أَهْلِ الْكِتٰبِ أَكْلَةُ السَّحَرِ

हमारे और अहले किताब यानी यहूदी और नसरानी के रोज़ों में फ़र्क़ सहरी खाना है। (मुस्लिम, जि. 1, स. 350, अबू दाऊद, नसाई, जि. 1, स. 235, तिर्मिज़ी, इब्ने खुज़ैमा)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हमें अपने ख़ास फ़ज़्लो करम से नवाज़ा और रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ अता की और इफ़्तार की नेअमत से मालामाल किया और इफ़्तार के वक़्त हम ने जो दुआ मांगी अल्लाह तआला ने उसे क़ुबूल फ़रमाई और सहरी की बरकत व रहमत से हम गुलामाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सर फ़राज़ फ़रमाया, सहरी भी खाओ और अल्लाह तआला और उस के फ़रिश्तों के दुरूद व रहमत के हक़दार भी बन जाओ, मगर सहरी खाने में भी एहतियात ज़रूरी है सहरी ताख़ीर से खाना सुन्नत है मगर इतनी ताख़ीर भी न हो कि सहरी का वक़्त ख़त्म हो जाए इस लिये एहतियात के तौर पर पाँच, दस मिनट पहले सहरी कर लेना चाहिये।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(९)

रमज़ानुल मुबारक

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

रमज़ानुल मुबारक का अदब व एहतिराम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले। (पारा 2, रुकूअ 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत कअब बिन उजरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया सब लोग मेरे मिम्बर के पास जमा हो जाओ, हम हाज़िर हुए। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बर के पहले ज़ीने पर चढ़े कहा आमीन, दूसरे ज़ीने पर चढ़े फ़रमाया आमीन। तीसरे ज़ीने पर क़दमे मुबारक रखा फ़रमाया आमीन। जब मिम्बर से नीचे तशरीफ़ लाए तो हम ने अर्ज़ किया कि आज हम ने हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से ऐसी बात सुनी है जो कभी नहीं सुनी तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आए और अर्ज़ की वह शख़्स दूर हो जाए (यानी हलाक हो जाए) जिस ने रमज़ान शरीफ़ पाया और अपनी मग़फ़िरत न कराई। तो मैं ने कहा आमीन। और जब मैं दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने कहा वह शख़्स दूर हो जाए (यानी हलाक हो जाए) जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और वह शख़्स मुझ पर दूरूद न पढ़े तो मैं ने कहा आमीन और जब मैं ने तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की वह शख़्स दूर हो जाए

(यानी हलाक हो जाए) जिस शख़्स के मां, बाप, दोनों या एक को बुढ़ापा आए और वह शख़्स उन की खिदमत करके जन्नत में न जाए तो मैं ने कहा आमीन।

(हाकिम, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 92)

ऐ ईमान वालो ! वह शख़्स कितना बद नसीब है जिस के हक़ में रसूलों के सरदार, हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और फ़रिश्तों के सरदार हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम दुआए हलाकत व बरबादी फ़रमा रहे हैं। लिहाज़ा! रमज़ान शरीफ़ की क़दर व मन्ज़िलत कर के हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नाराज़गी से बचना चाहिये और जब और जहाँ भी ज़िक्रे हबीबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम होता हो तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह बे कस पनाह में क़सरत से दुरूदो सलाम पेश करना चाहिये ताकि हलाकत व बरबादी से महफ़ूज़ रहें और बरकत व सलामती से मालामाल हों और मां बाप दोनों या दोनों में से कोई एक बूढ़ा हो जाए तो हमें उन की खूब खिदमत कर के उन की दुआएं हासिल कर के हलाकत व बरबादी से बच कर के जन्नत का हक़दार हो जाना चाहिये। अल्लाह तआला तौफ़ीक़े महब्बत व खिदमत दे।

माहे रमज़ान के अदब का सिला जन्नत है : एक शख़्स बड़ा बदकार और गुनाहगार था पूरे साल भर बद अमली और गुनाह के कामों में मशग़ूल रहता था लेकिन जब रमज़ान शरीफ़ का बरकत व रहमत वाला महीना आता तो खूब पाक व साफ़ कपड़े पहन कर पाँचों वक़्त पाबन्दी से नमाज़ पढता। उस शख़्स से पूछा गया कि तू सिर्फ़ रमज़ान शरीफ़ में नमाज़ें पढ़ता है और पाक व साफ़ नज़र आता है। अच्छे काम करता है, ऐसा क्यों करता है तो उस शख़्स ने जवाब दिया कि यह महीना खैरो बरकत और तौबह व मग़फ़िरत का है। इस उम्मीद पर कि शायद अल्लाह तआला मुझे रमज़ान शरीफ़ के अदब व एहतिराम और इस माह में अच्छे अमल के सबब बख़्श दे। जब उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने ख्वाब में उस से पूछा कि अल्लाह तआला ने तेरे साथ क्या मुआमला किया ? तो उस शख़्स ने जवाब दिया, मेरे अल्लाह तआला ने मुझे रमज़ान शरीफ़ के अदब व ताज़ीम करने के सबब बख़्श दिया। (दुर्रतुन्नासेहीन)

रमज़ान शरीफ़ के अदब से ईमान मिला फिर जन्नत

शहर बुखारा में एक मजूसी रहा करता था। एक दिन रमज़ान शरीफ़ में मजूसी अपने बेटे के साथ बाज़ार गया उस मजूसी के बेटे ने बाज़ार से कोई चीज़ खाने की खरीदी और खाने लगा, मजूसी बाप को यह देख कर कि मेरा बेटा रमज़ान शरीफ़ में सरे बाज़ार मुसलमानों के सामने कुछ खा रहा है, बेटे को एक तमांचा मारा और डांटने लगा कि शर्म करो इस लिये कि रमज़ान का महीना है और मुसलमानों का रोज़ा है। बेटे ने जवाब दिया अब्बा ! आप भी तो रमज़ान में खाते, पीते हैं तो मजूसी बाप ने कहा बेटा ! मैं खाता हूँ मगर घर के अन्दर, मुसलमानों के सामने नहीं खाता इस माहे मुबारक की बे अदबी नहीं करता हूँ। जब वह मजूसी शख़्स वफ़ात पा गया तो किसी अल्लाह वाले ने आलमे ख्वाब में देखा कि वह शख़्स बड़े मज़े से जन्नत में

घूम रहा है। हैरत से पूछा कि तू तो मजूसी था जन्नत में कैसे आ गया, कहने लगा कि मैं तो हक़ीक़त में मजूसी था लेकिन जब मौत का वक़्त आया तो अल्लाह तआला ने रमज़ान शरीफ़ के अदब व ताज़ीम की बरकत से मुझे ईमान की दौलत से नवाज़ा और अब जन्नत में आला मक़ाम पर हूँ। (दुर्रतुन्नासेहीन)

ऐ ईमान वालो ! रमज़ान शरीफ़ अज़मत व बरकत वाला महीना है। साल भर का गुनाहगार अगर रमज़ान शरीफ़ में पाक व साफ़ हो कर तौबह इस्तिग़फ़ार करके रोज़ा रख ले और नमाज़ को पाबन्दी के साथ पढ़े तो उस शख़्स का ठिकाना जन्नत है और अगर मजूसी काफ़िर शख़्स भी रमज़ान का अदब व एहतिराम करता है तो ईमान की दौलते ला ज़वाल पाता है और मरने के बाद जन्नत उस का मक़ाम होता है।

अलहम्दु लिल्लाह करोड़ों बार अलहम्दु लिल्लाह हम तो मोमिन मुसलमान और महबूबे खुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ग़ुलाम हैं। अगर हम रमज़ान शरीफ़ का अदब व ताज़ीम करें, रोज़ा रखें, नमाज़ें पढ़ें और पूरे मोमिन और मुकम्मल मुसलमान बन जाएं तो अल्लाह तआला हम को कितने इनाम व इकराम की दौलत व नेअ़मत अता फ़रमाएगा और बे शक हमारे लिये भी जन्नत को ठिकाना और मकान बनाएगा।

शरीअत में अक़्ल का दख़ल महरूमी है

रोज़ा एक अज़ीम इबादत है जिस के अदा करने में बिला शुबह बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मसाइल की ना वाक़फ़ी या अपनी अक़्ल की मुदाख़लत से उस को बरबाद कर लेना बड़ी ही महरूमी और बद नसीबी है। इस लिये ज़रूरी है कि रोज़ा रखने वाले लोग उलमा और इमामों से मस्अला मालूम करते रहा करें ताकि रोज़े में कोई ख़राबी न होने पाए।

चन्द इरशादात मुलाहज़ा फ़रमाइये : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَنْ نَسِيَ وَهُوَ صَائِمٌ فَاَكَلَ اَوْشَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ فَاِنَّمَا اَطْعَمَهُ اللّٰهُ وَسَقَاهُ

यानी जो शख़्स रोज़ा की हालत में भूल गया और उस ने खा, पी लिया तो वह शख़्स अपना रोज़ा पूरा कर ले कि अल्लाह तआला ने उस को खिलाया और पिलाया है।

(इब्ने माजह, स. 120, मिश्कात शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! भूल कर खाने, पीने से रोज़ा नहीं टूटता है अगर किसी शख़्स ने अपनी बीवी से जिमाअ कर लिया और उस को रोज़ा बिल्कुल याद नहीं था तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

(बहारे शरीअत, जि. 5)

निसयान : यानी भूल जाना कि किसी को बिल्कुल याद ही न रहा कि उस का रोज़ा है जैसे कोई सो कर उठा, प्यास लगी, पानी पी लिया या भूक लगी, खाना खा लिया, यक़ीनन ऐसा हो सकता है तो उस सूरत में मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ रोज़ा नहीं टूटता, न क़ज़ा, न कफ़्फ़ारा, शाम को वक़्त पर इफ़्तार करे और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे कि उस ने अपने करम से तुम्हें भुला कर

खिलाया और पिलाया भी और रोज़ा भी कुबूल फ़रमा लिया। खाने, पीने की मिक़दार मुक़र्रर नहीं चाहे कम खाया, ख़ूब पेट भर खा लिया, ख़ूब पानी पिया, चाए वग़ैरह पी ली एक ही हुक्म है। (बहारे शरीअत, हि. 5)

ख़ता : यानी ग़लती, कि रोज़ा तो याद है लेकिन ग़लती से रोज़ा तोड़ने वाला कोई काम कर लिया, जैसे कुल्ली कर रहा था कि हलक़ में पानी चला गया तो उस ख़ता यानी ग़लती से रोज़ा टूट जाता है क़ज़ा करना पड़ेगा कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। (बहारे शरीअत, जि. 5)

अमद : यानी क़सदन जान बूझ कर रोज़ा तोड़ने वाला कोई काम करना जैसे बहुत भूक और प्यास लगी जान कर खा लिया और पी लिया, जान कर बीवी से सोहबत कर ली तो क़सदन रोज़े को तोड़ देना, रोज़े की सख़्त बे हुरमती है। लिहाज़ा रोज़ा क़ज़ा भी करना होगा और कफ़्फ़ारा भी अदा करना होगा और तौबह भी करना होगी कि अल्लाह तआला आख़िरत में उस गुनाह की सज़ा को मुआफ़ फ़रमा दे। एक रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा साठ रोज़े मुसलसल रखना है कि दरमियान में किसी दिन का रोज़ा न छूटने पाए। चाहे फ़र्ज़ रोज़ा तोड़ा हो या नफ़्ल रोज़ा दोनों का कफ़्फ़ारा एक ही है क्यों कि नफ़्ल रोज़ा शुरू कर देने के बाद फ़र्ज़ हो जाता है कि उस का पूरा करना फ़र्ज़ रोज़े की तरह फ़र्ज़ होता है। अगर कोई शख़्स बुढ़ापे, बीमारी वग़ैरह की वजह से साठ रोज़े न रख सके तो साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त खाना खिलाए अगर औरत पर कफ़्फ़ारा लाज़िम है और वह साठ रोज़े रख रही है तो हैज़ की वजह से जिन दिनों का नाग़ा होगा उस में हरज नहीं। (बहारे शरीअत, हि. 5)

एक हदीस शरीफ़ कफ़्फ़ारा से मुतअल्लिक़

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि (सहाबा) अपने प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबार में मौजूद थे कि एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ करने लगा। या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिका वसल्लम मैं हलाक हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तुझे क्या हुआ वह शख़्स कहने लगा मैं ने रोज़े की हालत में अपनी बीवी से सोहबत कर ली तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया क्या तू दो महीने के मुतवातिर रोज़े रख सकता है, अर्ज़ करने लगा नहीं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया क्या तू साठ ग़रीबों को खाना खिला सकता है, कहने लगा नहीं। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा बैठ जाओ और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ठेहरे रहे हम सब (सहाबा) इसी तरह (बैठे) थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में ख़जूरों का एक टोकरा पेश किया गया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया वह सवाल करने वाला कहाँ है उस ने अर्ज़ किया, मैं हाज़िर हूँ। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

यह ले और सदक़ा कर दो तो उस शख़्स ने अर्ज किया कि क्या मैं यह अपने से ज़्यादा मोहताज पर सदक़ा करूँ। ख़ुदा की क़सम मदीना के दोनों गोशों, उस का मतलब था दोनों हिस्सों के दरमियान (यानी पूरे मदीना शरीफ़ में) सबसे ज़्यादा मोहताज मेरे ही घर वाले हैं।

فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. حَتّٰى بَدَتْ اَنْيَابُهٗ ثُمَّ قَالَ اَطْعِمْهُ اَهْلَكَ ٥

पस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुस्कुराए यहाँ तक कि आप के मुबारक दांत चमकने लगे, फिर फ़रमाया अपने घर वालों ही को खिला दो। (कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा) (बुख़ारी, जि. 1, स. 159, मुस्लिम, जि. 1, स. 354)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मोहताज नहीं ब़ल्कि मुख़्तार बनाया है किसी के लिये एक चीज़ हराम फ़रमा दें और दूसरे के लिये वही चीज़ हलाल फ़रमा दें यह शान सिर्फ़ हमारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये ख़ास है। सुनो और अपने ईमान को ताज़ा करो कि हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार, नबी मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस शख़्स को ख़ुद के कफ़्फ़ारे की खजूरों को खाने की इजाज़त देदी, हालांकि मस्अला यही है कि कोई शख़्स अपनी ज़कात व कफ़्फ़ारा की चीज़ों को या वाजिब सदक़ा अपने इस्तिमाल में नहीं ला सकता लेकिन उस शख़्स को ख़ुद के कफ़्फ़ारे की खजूर खाने के लिये हलाल फ़रमाया और बता दिया कि अल्लाह तआला ने मुझे मोहताज नहीं ब़ल्कि मुख़्तार बनाया है और जिस के लिये जो हुक्म चाहूँ सादिर फ़रमा दूँ और मेरी ही अदाओं और मर्ज़ी का नाम शरीअत है और उस शख़्स के लिये कफ़्फ़ारा, रोज़ा तोड़ने की सज़ा को मैं ने अल्लाह तआला की अता से रहमत व नेअ़मत बना दिया।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा
वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

दुरूद शरीफ़ :

आदाबे रोज़ा : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स रोज़ा की हालत में बे हूदा और बुरी बात कहने से बाज़ न आए और बुरी बातों पर अमल करना तर्क न करे तो अल्लाह तआला को उस शख़्स के भूके और प्यासे रहने की कोई ज़रूरत नहीं है। (बुख़ारी, जि. 1, स. 255, अबू दाऊद, जि. 1, स. 322, तिर्मिज़ी, नसाई)

रात भर का जागना बे कार गया : प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, बहुत से रोज़े रखने वाले ऐसे हैं जिन्होंने भूका रहने के सिवा

कुछ भी हासिल नहीं किया और बहुत से शब बेदार ऐसे हैं, जिन्होंने रात जागने के सिवा कुछ भी न पाया। (इब्ने माजह, स. 121)

तीन क़िस्म के लोगों का रोज़ा : एक क़िस्म आम लोगों क़े रोज़े की है जो पेट को खाने, पीने और शर्मगाह को जिमाअ यानी बीवी से सोहबत करने से रोके रखते हैं । दूसरी क़िस्म, ख़ास बन्दों का रोज़ा जो उन के अलावा कान, आँख, ज़बान, हाथ, पांव और तमाम आज़ा को गुनाहों से बाज़ रखतेहैं। तीसरी क़िस्म, ख़ास नेक बन्दों क़ा रोज़ा जो अल्लाह तआला के सिवा तमाम चीज़ों और सब से जुदा होकर सिर्फ़ अल्लाह तआला की जानिब मुतवज्जह रहते हैं। (बहारे शरीअत, हि. 5, स. 98)

ऐ ईमान वालो ! हदीसे मुबारका यानी हमारे आक़ा रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान का मतलब व मक़सूद साफ़, साफ़ ज़ाहिर है कि बहुत से मुसलमान रोज़ा रखते है और उनका फ़र्ज़ अदा भी हो जाता है कि बज़ाहिर वह रोज़ा तोड़ने वाला कोई काम नहीं क़रते, लेकिन जो तक़वा और बलन्द दर्जा रोज़े से नसीब होना चाहिये और तरावीह अदा करने से जो फ़रहत व ख़ुशी मिलना चाहिये, इस से वह महरूम रहते हैं क्यों कि वह रोज़े की हालत में भी अपनी बे हूदा आदत के मुताबिक़, झूट, मक्र, बोहतान और ग़ीबत वग़ैरह बुरे कामों से बाज़ नहीं आते, वह तिजारत करते हैं तो धोका देने से बाज़ नहीं आते, मुलाज़मत करते हैं, तो सुस्ती से बाज़ नहीं आते, लोगों पर ज़ुल्म करने दूसरों का हक़ मारने रिश्वत लेने सूद से पैसा कमाने की नाजाइज़ व हराम हरकतों क़ो नहीं छोड़ते। रमज़ान के एक महीना का रोज़ा तो मुसलमान को बहुत बलन्द कर सकता है। इस में शक नहीं कि रोज़ा मुसलमान की माद्दी और रूहानी बलन्दी का ज़रीआ है लेकिन अफ़सोस कि हम उस को एक रस्म समझ कर इख़्तियार करते हैं वह तक़वा और परहेज़गारी इख़्तियार नहीं करते जिस से रोज़ा का पूरा फ़ायदा नसीब हो, याद रखिये अल्लाह तआला ने हमारी फ़लाह व कामयाबी के लिये हमें रोज़ा जैसी इबादत अता की है।

रोज़े में दो दुश्वारियाँ थीं : रोज़े माहे शअ़बान सन् 2 हि. में पीर के दिन फ़र्ज़ हुए, शुरू में रोज़े की इबादत कुछ ज़्यादा सख़्त थी कि दिन की तरह रात को भी मर्द व औरत का मिलना, सोहबत करना हराम था इस तरह पूरे महीने रोज़े रखना पड़ता था, खाने, पीने का वक़्त भी बहुत कम था कि इफ़्तार से इशा की नमाज़ तक खा पी सकते थे, इशा के बाद सोने के साथ ही रोज़ा शुरू हो जाता था। अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया और उन दोनों दुश्वारियों को ख़त्म कर दिया।

हदीस शरीफ़ : मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रमज़ान की एक रात में अपनी बीवी से जिमाअ (सोहबत) कर लिया आप ने गुस्ल किया और एहसासे गुनाह से रोने और अपने आप को मलामत करने लगे। फिर आप नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ करने लगे। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप के और

अल्लाह तआला के दरबार में मअज़िरत पेश करता हूँ, आज मुझ से बड़ी ग़लती हुई, मैं
अपनी बीवी के पास पहुँचा तो एक ऐसी खुश्बू महसूस हुई कि मैं अपने नफ़्स के फ़रेब में
मुब्तला हो गया और अपनी बीवी से सोहबत कर लिया, तो हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला
अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुम्हें ऐसा न
करना चाहिये था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाल सुन कर कुछ दूसरे
सहाबा भी खड़े हुए और उन्हों ने भी ऐसी ग़लती का एतिराफ़ किया। (रूहुल बयान)

चन्द सहाबा की ग़लती पूरी उम्मत के लिये अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम का ज़रीआ बन गई

वही नाज़िल हुई और हमेशा के लिये रोज़े की एक सख्ती ख़त्म हो गई।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ

तर्जमा : रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना तुम्हारे लिये हलाल हुआ, वह
तुम्हारी लिबास हैं और तुम उन के लिबास। (पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दूसरी दुश्वारी भी ख़त्म : हज़रत सरमा बिन क़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दिन भर
मेहनत व मज़दूरी किया करते थे एक रात इफ़्तार के बाद बीवी से खाना मांगा वह खाना पकाने
में मसरूफ़ थीं यह थके हारे खाने का इन्तिज़ार करते, करते सो गए, बीवी ने बेदार किया और
खाना पेश किया तो फ़रमाया अब तो रोज़ा शुरू हो चुका है, यह खाना मैं कैसे खा सकता हूँ,
ऐसी हालत में दूसरा रोज़ा रख लिया, सुबह हुई तो मेहनत व मज़दूरी के लिये चले गए,
दोपहर तक तो काम करते रहे और कमज़ोरी बढ़ती गई और आख़िर कार बे होश हो कर गिर
पड़े, हज़रत सरमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस हालत पर अल्लाह तआला को रहम
आया और उन के सदक़े में उम्मत से रोज़े की यह दूसरी सख्ती भी ख़त्म हो गई। वही
नाज़िल हुई, सोने न सोने की पाबन्दी ख़त्म कर दी गई है। खाने, पीने का वक़्त बढ़ा कर सुबह
सादिक़ तक कर दिया गया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

लिहाज़ा! अब दूसरी इबादतों की तरह रोज़ा मुकम्मल है चौदह सो बरस से इसी तरह है
और क़यामत तक इसी तरह रहेगा। इस में किसी क़िस्म की कमी ज़्यादती का किसी को हक़
हासिल नहीं। अल्लाह तआला तक़वा के साथ रोज़ों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन
सुम्मा आमीन।

रोज़े से अल्लाह तआला मिलता है : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं
कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह
तआला फ़रमाता है। اَلصَّوْمُ لِىْ وَاَنَا اُجْزِىْ بِهٖ

यानी अल्लाह तआला फ़रमाता है रोज़ा मेरे लिये है और रोज़ा की जज़ा मैं ख़ुद दूँगा।
(बुख़ारी, जि. 1, स. 54, मुस्लिम, जि. 1, स. 363)

और ! कुछ मुहद्देसीने किराम ने इस हदीसे कुदसी को इस तरह भी पढ़ा है।

اَلصَّوْمُ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِہٖ

यानी रोज़ा मेरे लिये है और रोजे की जज़ा मैं खुद हूँ। (तफ़सीर नईमी)

ऐ ईमान वालो ! रोज़ा वह इबादत है कि रोज़ा दार बन्दा अपने खालिक व मालिक अल्लाह तआला को पा लेता है गोया नमाज, हज, ज़कात, सदक़ा, व ख़ैरात वग़ैरह तमाम नेक आमाल से जन्नत मिलती है मगर रोज़ा वह इबादत है जिस से जन्नत का खालिक व मालिक खुद अल्लाह तआला मिल जाता है।

नूरानी वाक़िआ : हज़रत महमूद ग़जनवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने एक मरतबा एक बाज़ार लगाई और उस में दुनिया के हर किस्म के साज़ो सामान रख दिये गए जिस में हीरे, जवाहरात, सोना, चाँदी अच्छी सवारियाँ सब मौजूद थीं और अरकाने दौलत को हुक्म हुआ कि जिस की मर्ज़ी में जो आए उसे वह ले ले। जिस चीज पर जो शख्स हाथ रख देगा वह चीज उस की हो जाएगी। जिस को जैसा पसन्द आया उस ने उसी चीज पर हाथ रख दिया। किसी को घोड़ा पसन्द था उस ने घोड़ा लिया, किसी को हीरे जवाहरात पसन्द थे उस ने वह लिये, किसी को सोना चाँदी पसन्द था उस ने सोना चाँदी पर हाथ रखा।

मगर हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैह जो बादशाह के ख़ास वज़ीर थे, उन्होंने हीरे जवाहरात भी देखे, ऊंट, घोड़े भी देखे। सोना चाँदी पर भी नज़र किया मगर आगे बढ़ते गए सब से दामन बचाया और बादशाह के क़रीब हुँच कर बादशाह की पुश्त पर अपना हाथ रख दिया। बादशाह ने पूछा अयाज़ (रहमतुल्लाहि तआला अलैह) क्या बात है तुम ने बाज़ार की किसी चीज़ को पसन्द नहीं किया। हज़रत अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अर्ज़ की, जिस शख्स को जो चाहिये था उसने उस पर हाथ रख दिया और मुझे बादशाह चाहिये था इस लिये मैं ने बादशाह पर हाथ रख दिया है ताकि मुझे बादशाह सलामत मिल जाएं और जब बादशाह सलामत मेरे हो जाएंगे तो हीरे, जवाहरात, ऊंट, घोड़े, सोना, चाँदी हत्ता कि बाज़ार की सारी दौलत मेरी हो जाएगी। इस लिये मैं ने बाज़ार के मालिक पर अपना हाथ रख दिया है।

ऐ गुलामाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैह व आलिही वसल्लम अच्छी तरह जान लो कि रोज़ा वह नेक अमल है जिस के ज़रीए रोज़ा दार मोमिन बन्दा को खुद अल्लाह तआला मिल जाता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिले तो सब कुछ मिला

हदीस शरीफ़ : सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हजरत रबीआ बिन कअब असलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को एक मरतबा वुज़ू कराया तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खुश हो कर फ़रमाया।

سَلْ رَبِيْعَة ऐ रबीआ! मांग किया चाहता है। अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर क्या शान है हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की। फ़रमाते हैं जो चाहो मांगो मैं अल्लाह तआला की अता से तुम को अता करूँगा। इस लिये कि अल्लाह तआला ने मुझे सारी नेअमत व दौलत के ख़ज़ानों का मालिक बनाया है।

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आपके क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

और हज़रत रबीआ सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह फ़रमाने इख़्तियार सुन कर यह नहीं क़हा कि या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप से क्या मांगूँ आप के पास तो कुछ है ही नहीं। आप तो मोहताज हैं मआज़ल्लाहि तआला मुझे मांगना होगा तो अल्लाह तआला से मांग लूँगा।

यही वह मक़ाम है जहाँ मोमिन और मुनाफ़िक़ और मुनाफ़िक़ में फ़र्क़ हो जाता है। मुनाफ़िक़, बे ईमान यही कहते और लिखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास तो कुछ है ही नहीं वह तो मोहताज व मजबूर हैं। उन से मांगना बिदअत व शिर्क है जैसा कि वहाबियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी गुमराह कुन किताब तक़वीयतुल ईमान, स. 89, में लिखा कि जिस का नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। मआज़ल्लाहि तआला।

एक सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का अक़ीदा और उन के मानने वाले! ईमान वाले हम सुन्नी मुसलमानों का यही अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ने अपने प्यारे हबीब, उम्मत के तबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को तमाम नेअमत व दौलत का मालिक बनाया है जभी तो हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद के बाद अर्ज़ करते हैं:

اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الْجَنَّةِ यानी ऐ आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे जन्नत में आप की रफ़ाक़त चाहिये यानी मैं उसी जन्नत में रहूँ जिस जन्नत में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रहेंगे।

हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहावी हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सवाल पर यह नहीं फ़रमाया कि यह, जन्नत जो मेरे लिये अल्लाह तआला ने बनाई है वह तमाम जन्नतों से आला है। उसे मैं कैसे दे सकता हूँ उस जन्नत के देने का मुझे इख़्तियार हासिल नहीं है। बल्कि हमारे आक़ा अहमदे मुख़्तार मालिके जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया:

اَوْ غَيْرَ ذٰلِكَ यानी ऐ रबीआ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम ने जो मांगा है वह जन्नत तो तुम को मैं ने दिया उस के अलावा जो चाहो मुझ से मांग लो? गोया हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अर्ज़ कर रहे थे।

तुझ से तुझी को मांग लूँ तो सब कुछ मिल जाए
सो सवालों से यही एक सवाल अच्छा है

हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, बस सिर्फ़ यही चाहिये (यानी ऐ मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जन्नतुल फ़िरदौस में आप के साथ रहना नसीब हो जाए और उस से बड़ी कोई दौलत ही नहीं है जिस को मैं मांगूँ।

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी कायनात
मुझ सा कोई गदा नहीं तुझ सा कोई सख़ी नहीं

और जब हज़रत रबीआ रज़ियल्लाहु आला अन्हु मालिके जन्नत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जन्नत मांग कर और फिर अपने प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जन्नत मिलने की बशारत सुन कर मज़ीद किसी हाजत से इनकार करके गोया यह ऐलान कर रहे थे।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूबो मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

فَأَعِنِّي عَلٰى نَفْسِكَ بِكَثْرَةِ السُّجُوْدِ

यानी ऐ रबीआ !ज़न्नत तो तुम को मिल गई उस के शुक्रिया में तुम ख़ूब सज्दा किया करो और कसरत से नमाज़े नफ़्ल पढ़ा करो ? (मिश्कात शरीफ़, मुस्लिम, स. 193/1, अबू दाऊद, स. 187/1)

ऐ ईमान वालो ! यह महीना तो घर घर रहमत बांटता और बरकतें तक़सीम करता आया है अब कोई रमज़ान की अज़मत ही का एहसास न करे तो उस महीना का क्या क़ुसूर है जिस तरह इन्सान को जिस्म का मेल साफ़ करने के लिये ग़ुस्ल करना पड़ता है, अपने कपड़ों क़ो साफ़ करने के लिये उन्हें धोना पड़ता है इसी तरह उस माहे मुबारक की बरकतों क़ो हासिल करने के लिये रोज़ा रखना, तरावीह पढ़ना, तक़वा इख़्तियार करना ज़रूरी है। जो इतनी तकलीफ़ भी बरदाश्त न कर सके उसे रमज़ान की रहमतों से उम्मीद रखने का क्या हक़ पहुँचता है।

ऐ ग़ौस व ख़्वाजा व रज़ा के गुलामो ! एक तरफ़ तो रमज़ान की बरकतों क़ा भरा बादल हम पर साया किये हुए है। दूसरी तरफ़ हमारे दिन रात तकलीफ़ों और मुसीबतों से भरे नज़र आ रहे हैं। मुद्दतों से कान तरस गए कि दुनिया के किसी गोशे से तो अमन व सुकून की ख़बर सुनाई दे। लेकिन मायूसी ही मायूसी है कौन सी क़ौम है जिस को पुर सुकून ज़िन्दगी मयस्सर है, कौन सा मुल्क है जहाँ इन्सानों क़ी इज़्ज़त व आबरू महफ़ूज़ है। आख़िरकार कहाँ जाएं और क्या करें कि पुर सुकून ज़िन्दगी मयस्सर आए, तो मैं दावत देता हूँ दुनिया के इन्सानों को और ख़ास तौर पर मुसलमानों क़ो, कि माद्दी सहारों को छोड़ कर इस्लाम का सहारा ले लो, यह तुन्हें इसी तरह पर सुकून ज़िन्दगी मुहय्या कर देगा जिस तरह चोदह सौ बरस पहले तबाह हाल इन्सानों क़ो नवाज़ चुका है।

पस अल्लाह तआला के सच्चे बन्दे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सच्चे गुलाम बन कर देखो ? तो तुम्हें नज़र आएगा कि रमज़ान का बरकतों भरा बादल हम पर साया किये हुए है। यही मौक़ा है इस्लाम का पट्टा गरदन में डाल लेने का और प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दामन पकड़ लेने का, गुनाहों से तौबह करने का, तरावीह इस तरह पढ़ो कि क़ुरआने करीम के एक एक लफ़्ज़ पर आँखों से आंसू टपकें, सेहरी ऐसे खाओ कि हर निवाले के साथ अल्लाह तआला की रहमत से झोलियाँ भरी महसूस हों। यक़ीन कीजिये अगर हम ने इस हाल में एक महीना रमज़ान शरीफ़ क.. गुज़ार लिया तो उस की बरकतें हमें ऐसी नसीब होंगी कि फिर कोई तड़प और कोई इज़्तिराब बाक़ी न रहेगा।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(९)

रमज़ानुल मुबारक

तीसरा जुमा .... पहला बयान

ग़ज़वए बद्र का बयान

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ج

तर्जमा : और बेशक अल्लाह ने बद्र में तुम्हारी मदद की, जब तुम बिल्कुल बे सरो समान थे। (पारा 4, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तेरे क़दमों पे सर हो, और तारे ज़िन्दगी टूटे
यही अन्जामे उल्फ़त है यही मरने का हासिल है

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा, सरकार आला हज़रत, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मरदाने अरब

ऐ ईमान वालो ! रमज़ान शरीफ़ की सतरह तारीख़ और दिन, इस्लाम की तारीख़ का अफ़ज़ल तरीन दिन और तारीख़ है। इस तारीख़ में जो वाक़िआ पेश आया उस की अहमियत व इफ़ादियत का तक़ाज़ा है कि हर साल इस माहे मुबारक में इस को ज़रूर बयान किया जाए और सुना जाए यानी ग़ज़वए बद्र, जो रोज़े की फ़रज़ियत के बाद उसी साल रमज़ान शरीफ़ की सतरह तारीख़ सन् 2 हि. जुमा के दिन पेश आया।

बद्र एक कुंवा का नाम है जो मदीना मुनव्वरा से तक़रीबन अस्सी मील के फ़ासले पर वाक़ेअ है। यह कुंवा बहुत मशहूर था। इस लिये उस के आस पास की आबादी, देहात को भी बद्र कहा जाता है यह देहात (यानी गांव) अब भी मौजूद है और वह मैदान भी है जहाँ ग़ज़वए बद्र हुआ था। ख़ुश अक़ीदा मुसलमान मक्का शरीफ़ से मदीना तैय्यिबा जाते हुए या मदीना तैय्यिबा से मक्का मुकर्रमा आते हुए बद्र में भी हाज़िर होते हैं कि यह बाइसे सवाब है और इस

उम्मत पर उन शोहदाए बद्र का अज़ीम एहसान है जिन्होंने इस्लाम की हिफ़ाज़त व बक़ा के लिये अपनी जानें कुरबान कीं अल्लाह तआला तौफ़ीक़ तो आप हज़रात भी मदीना मुनव्वरा और मक्का मुकर्रमा की हाज़िरी के साथ बद्र में बी हाज़री दें।

अल्लाह तआला की मदद : ऐ ईमान वालो ! खुतबा के बाद मैंने जो आयते करीमा तिलावत की है उस आयते मुबारका में अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद का ज़िक्र फ़रमाया है गोया कुरआन शरीफ़ यह बताना चाहता है कि किसी भी मैदान में फ़तह व कामयाबी का ज़रीआ अल्लाह तआला की मदद है। मुसलमानों की अपनी ज़ाहिरी और माद्दी ताक़त व कुव्वत नहीं है। देखिये मैदाने बद्र में, मुसलमान अल्लाह तआला के दीन की हिफ़ाज़त के लिये दुश्मन के मुक़ाबिल खड़े थे तो बड़े कमज़ोर थे, हर ज़ाहिरी एतिबार से कमज़ोर थे। तादाद में सिर्फ़ तीन सो तेरह थे और दुश्मन की तादाद नो सो पचास थी। मसुलमानों के पास सवारी के लिये सिर्फ़ सत्तर ऊंट और दो घोड़े, छः ज़िरह, आठ तलवारें थीं जब कि दुश्मन के पास सो घोड़े, सात सो ऊंट बकसरत ज़िरह और दूसरे हथियार मौजूद थे और खाने का माकूल इन्तिज़ाम था।

लेकिन अल्लाह तआला ने ग़ज़वए बद्र में क़मज़ोर मुसलमानों पर करम फ़रमाया और उन की मदद की ताकि क़ियामत तक मुसलमानों को मालूम हो जाए कि कामयाबी व कामरानी अल्लाह तआला की मदद से नसीब होती है।

अल्लाह तआला की मदद किस तरह हुई

कुरआने करीम बयान फ़रमाता है : وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ

तर्जमा : और जब लड़ते वक़्त तुम्हें काफ़िर थोड़े कर के दिखाए और तुम्हें उन की निगाहों में थोड़ा किया। (पारा 10, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

पहली मदद : इस तरह हुई कि मुसलमानों को काफ़िरों की तादद मैदाने जंग में कम नज़र आने लगी। ताकि मुसलमान दुश्मन की कसरत देख कर घबराएं नहीं और कुरआने मुक़द्दस फ़रमाता है। يَرَوْنَهُمْ مِثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ط

तर्जमा : उन्हें आँखों देखा अपने से दूना समझें। (पारा 3, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दूसरी मदद : इस तरह हुई कि जंग के दौरान काफ़िरों को मुसलमानों की तादाद दोगुनी नज़र आती थी जिस की वजह से काफ़िरों पर मुसलमानों का डर और ख़ौफ़ तारी हो गया था और काफ़िरों की हिम्मत पस्त हो गई।

और फिर कुरआने मजीद इरशाद फ़रमाता है :

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ٥

तर्जमा : जब तुम अपने रब से फ़रियाद करते थे। तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूँ हज़ारों फ़रिश्तों की क़तार से। (पारा 9, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

तीसरी मदद : अल्लाह तआला ने मैदाने बद्र में मुसलमानों की तीसरी मदद इस तरह की कि एक हज़ार फ़रिश्तों का लश्कर मुसलमानों की मदद के लिये भेजा गया।

जंगे बद्र में सहाबए किराम की जाँ निसारी

कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन का एक हज़ार लश्करे जर्रार सैलाब की तरह बढ़ता चला आ रहा था। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस नाज़ुक वक़्त में सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को जमा करके जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह का ऐलान फ़रमाया तो सिर्फ़ तीन सो तेरा नहित्थे और बे सरो सामान मुजाहिदीने इस्लाम ने जिस जज़्बए शहादत और ख़ुलूस व वफ़ा के साथ उस हक़ व बातिल की जंग में अल्लाह तआला और अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुश्नोदी की ख़ातिर लडे हैं। यक़ीनन आफ़ताब व माहताब ने रूए ज़मीन पर ऐसी जां बाज़ी व सर फ़रोशी का मन्ज़र न देखा होगा। जिस बे सरो सामानी के आलम में ग़ज़वए बद्र की तय्यारी हुई। तो हमारे हुज़ूर, सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन से जंग के सिलसिले में मशवरा किया तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जिस तरह आप हुक्म दें हम तय्यार हैं। हम अपनी जानें अल्लाह तआला की राह में कुरबान कर दें गे। हम क़ौमे मूसा अलैहिस्सलाम की तरह नहीं हैं कि उन्होंने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा था कि तुम और तुम्हारा रब लड़े हम तो यहाँ बैठे हैं। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब अपने गुलामों का यह जज़्बा देखा तो ख़ुश होकर उन के हक़ में दुआ फ़रमाई। मैदाने बद्र में जब हक़ व बातिल का मअरका शुरू हुआ तो मुसलमानों ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म पर जाँ निसारी, बहादुरी के वह जौहर दखाए जो मैदाने बद्र की ज़मीन कभी भी भूल न पाएगी।

फ़ज़ाए बद्र को एक आप बीती याद है अब तक
यह वादी नअ़रए तौहीद से आबाद है अब तक
मुंह व अन्जुम पे इस मिट्टी के ज़र्रे मुस्कुराते हैं
ज़बाने हाल से माजी के अफ़साने सुनाते हैं

अन्सार व मुहाजिरीन! तमाम सहाबा किराम ने इस्लाम पर फ़िदा होने और अल्लाह तआला और उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये जान की कुरबानी का वादा किया गोया गुलामाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कह रहे थे।

नबी का हुक्म हो तो कूद जाएं हम समन्दर में
जहाँ को ग़र्क़ कर दें नअ़रए अल्लाहु अकबर में
हमारा मरना, जीना आप के अहकाम पर होगा
किसी मैदान में हो ख़ातिमा इस्लाम पर होगा

दुरूद शरीफ़ :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैदाने बद्र में

जंग की रात सब सोते रहे लेकिन कायनात के आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अलिही वसल्लम अल्लाह तआला से इस्लाम के उन सिपाहियों के लिये फ़तह व कामरानी की दुआ करते रहे, सुबह हुई तो मुसलमानों क़ी सफ़ों को दुरुस्त किया। जंग की तय्यारियाँ मुकम्मल हुई तो महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रब तआला की बारगाह में दुआ के लिये हाथ फेलाए और अर्ज़ की। ऐ अल्लाह तआला अब तेरी उस मदद का वक़्त आ गया है जिस का तूने मुझ से वादा फ़रमाया है। اَللّٰھُمَّ اِنْ تُہْلِكْ ھٰذِهِ الْعِصَابَةَ الْیَوْمَ لَا تُعْبَدْ

यानी ऐ अल्लाह तआला अगर मुसलमानों की इस छोटी सी जमाअत को तूने हलाक हो जाने दिया तो फिर तेरी भी इबादत न की जाएगी (यानी फिर कोई तेरी इबादत करने वाला न रहेगा) (बुखारी, मुस्लिम शरीफ, जि. 2, स. 93, मिश्कातुल मसाबीह, स. 531)

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ क़ुबूल हुई और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने रब तआला के हुक्म से सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन को ख़ुश्ख़बरी सुनाते हुए फ़रमाया घबराओ नहीं आगे बढ़ो। अल्लाह तआला के हुक्म से फ़रिश्तों ने अपना काम पूरा किया कि तलवार लगने से पहले सर कटते नज़र आ रहे थे कुछ काफ़िरों के मुंह और नाक पर कोड़ों के निशान नज़र आ रहे थे और यही फ़रिश्तों को ख़ुदा का हुक्म था।

ग़ौर कीजिये ! कैसी ज़बरदस्त मदद है। अल्लाह तआला की तरफ़ से, कि दुश्मन पर मार पड़ रही है और मारने वाला नज़र नहीं आता, इसी तरह वह कुव्वत व क़ुदरत वाला अपने मोमिन बन्दों की मदद करता है।

وَاللّٰهُ یُؤَیِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ یَّشَآءُ तर्जमा : और अल्लाह अपनी मदद से ज़ोर देता है जिसे चाहता है। (पारा 4, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलमा की आवाज़ : जंगे बद्र में एक आवाज़ आ रही थी :

اَقْدِمْ حَیْزُوْمُ. اَقْدِمْ حَیْزُوْمُ (मुस्लिम जि. 2, स. 93, मिश्कातुल मसाबीह, स. 531)

हैज़ूम आगे बढो : हैज़ूम आगे बढ़ो। सहाबा कहते हैं हम हैरान थे कि यह आवाज़ कहाँ से आ रही है। नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हैज़ूम हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम है। वह अपने घोड़े को कह रहे हैं कि आगे बढ़ो। सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन फ़रमाते हैं कि हम कितने मरतबा किसी काफ़िर को क़त्ल करना चाहते तो वह पहले ही क़त्ल हो जाता। हम समझ जाते कि यह अल्लाह तआला की मदद है।

कुफ्र व इस्लाम : हक़ व बातिल की इस्लाम की तारीख़ में पहली जंग है जिस में मुसलमान बे सरो सामान और लश्कर के मुजाहिदीन की कुल तादाद तीन सो तेरह थी। मगर अल्लाह तआला ने इस क़लील जमाअत को तीन गुना ज़्यादा काफ़िरों के लश्कर पर शानदार फ़तह अता फ़रमाई।

अल्लाह तआला का ऐलान : كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةً بِإِذْنِ اللّٰهِ ط

तर्जमा : बारहा कम जमाअत ग़ालिब आई है ज़्यादा गिरोह पर अल्लाह के हुक्म से।

(पारा 2, रुकू 17, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अबू जहल का अन्जाम : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि मैं मैदाने बद्र में खड़ा था कि अन्सार के दो छोटे कम उम्र लड़के मेरे पास दौड़ते हुए आए और मुझ से पूछने लगे चचा जान! अबू जहल कौन है ? और वह कहाँ है ? यह दोनों बच्चे मआज़ बिन अम्र और मऊज़ बिन इफ़रा थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उन दोनों बच्चों से कहा कि तुम दोनों अबू जहल का पता क्यों पूछते हो ? तो उन दोनों बच्चों ने जवाब दिया कि मैं ने सुना है कि अबू जहल लईन, बद बख़्त हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गालियाँ देता है। गोया वह बच्चे कह रहे थे।

क़सम खाई है मर जाएंगे या मारेंगे नारी को
सुना है गालियाँ देता है वह महबूबे बारी को

हमारे आक़ा प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अबू जहल लईन, गालियाँ देता है इस लिये हम ने फ़ैसला कर लिया है और क़सम खा ली है कि उस को क़त्ल करके ही दम लेंगे, या अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नाम पर अपनी जानें कुरबान देंगे।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं ने उन बच्चों से कहा कि अबू जहल कोई मामूली आदमी नहीं है वह काफ़िरों के लश्कर का सरदार है उस को क़त्ल करना आसान नहीं है उस के इर्द गिर्द फ़ौज का दस्ता हिफ़ाज़त कर रहा है।

इस लिये : हिफ़ाज़त कर रहा है गिर्द उस के फ़ौज का दस्ता
बच्चे बोले : चचा जान! यह दस्ता कब तलक रोकेगा इज़राईल का रस्ता

आप फ़रमाते हैं कि मैंने अबू जहल की तरफ़ इशारा कर के कहा कि बच्चो! वह है अबू जहल जो लश्कर के बीच घोड़े पर सवार है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ फ़रमाते हैं मैं ने उंगली का इशारा किया, मेरी निगाह वहाँ हुँची तो मैं ने देखा कि वह दोनों बच्चे अबू जहल के घोड़े के पसा मौजूद थे। बच्चे छोटे थे इस लिये उन का हाथ अबू जहल तक पहुँचना मुश्किल था इस लिये बच्चों ने सब से पहले अपनी तलवारों का वार घोड़े की टांग पर किया और घोड़ा चिल्लाता हुआ ज़मीन पर गिरा और अबू जहल घोड़े से ज़मीन पर आया, दोनों बच्चों ने बड़ी तेज़ी से अपनी नन्ही मुन्ही तलवारों से अबू जहल के सर पर हमला कर दिया जिस से अबू

जहल ख़ाक व ख़ून में तड़पने लगा और हज़रत मुअव्विज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लड़ते हुए शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। (पारा ,2 रुकू 3)

और हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर अबू जहल का लड़का इकरमा ने वार किया जिस से हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक हाथ कट कर लटकने लगा जिस से जंग करने में दुश्वारी हो रही थी तो हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तलवार दूसरी हाथ में ले ली और जंग करते रहे। अल्लाह, अल्लाह क्या जज़्बा था, लटकता हुआ बाज़ू रुकावट बन रहा था, पांव के नीचे खा और तोड़ कर फेंक दिया। उस नन्हे मुजाहिद की उस अदा को हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम देख रहे थे। जब हज़रत मआज़ अपना कटा हुआ बाज़ू ले कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना लुआबे दहन उस पर लगा दिया तो कटा हुआ बाज़ू कन्धे के साथ फिर जुड़ गया। (सीरतुर्रसूल, स. 355)

थोड़ी देर बाद हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन अल्लाह तआला अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उन दो नन्हें आशिक़ों और मुजाहिदों यानी हज़रत मआज़ और हज़रत मुअव्वज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हमेशा हमेश करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए और उन के वसीले से पूरी उम्मत पर और ख़ास कर इस पूरे मजमे पर रहमतों, गुफ़रान की बारिश फ़रमाए। (सीरतुर्रसूल, स. 355, ब हाला, बुख़ारी, व मुस्लिम)

बद्र में अबू जहल इस जगह पर मरा मिलेगा

हमारे प्यारे नबी अल्लाह तआला के महबूब, दानाए ख़िफ़ाया व ग़ुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैदाने बद्र में जंग से पहले उस जगह का मुआएना करने के लिये चन्द सहाबा के साथ तशरीफ़ लेगए कि जंग की तय्यारी मुकम्मल कर ली जाए। बद्र के मैदान में हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जंग से पहले एक लकीर खींची और फ़रमाया कल जब जंग होगी तो मेरी उम्मत का फ़िरओन अबू जहल इस जगह मरा मिलेगा और उमय्या इब्ने ख़लफ़ इस जगह मरा पड़ा होगा इसी तरह बहुत से काफ़िरों के सरदारों के बारे में फ़रमाया कि फ़लां उस जगह पर फ़लां उस जगह पर मरा पड़ा होगा एक दिन पहले ही उन के मौत की ख़बर दी।

هٰذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ ۔ غَدًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ ۔ هٰذَا مَصْرَعُ فُلَانٍ ۔ غَدًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 10, मिश्कातुल मसाबीह, स. 531)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को हक़ के साथ भेजा वह (कुफ़्फ़ार) हुदूद से ज़रा आगे पीछे न थे जहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन के बारे में निशानदही फ़रमाई थी। (सीरतुर्रसूल व हवाला मुस्लिम, नसाई, इमाम अहमद)

ऐ ईमान वालो ! जंगें दुनिया में बेशुमार हुई हैं और होती रहेंगी मगर किसी बादशाह या

लश्कर के सिपह सालार ने जंग से पहले कामयाबी व कामरानी की बशारत नहीं दी न यह बता सका कि फ़लां दुश्मन इस जगह पर क़त्ल किया हुआ मरा मिलेगा।

यह शान सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारे प्यारे रसूल, क़ाइदे आलम, सरदारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की है कि जंग बाद में यानी कल होगी और फ़तह व ज़फ़र, कामयाबी व कामरानी का मुज़दा पहले सुना दी और कौन सा दुश्मन किस जगह मरा पड़ा होगा जंग से पहले बता दिया। बाज़ बुज़ुर्गों की किताबों में इस तरह की भी रिवायत मिलती है जब अबू जहल को पता चला कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैदाने बद्र में तशरीफ़ लाए और मैदान का जाइज़ा लिया और एक लकीर खींची और कहा कि कल जब जंग होगी तो अबू जहल मारा जाएगा और उस की लाश उस लकरी पर पड़ी होगी तो उम्मत का फ़िरऔन अबू जहल घबराया और अपने साथियों से कहने लगा कि कल मेरी मौत का दिन है, अब मुझे मरने और क़त्ल होने से कोई चीज़ बचा नहीं सकती। इस लिये कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के मुंह से जो बात मैंने सुनी है वह कभी ग़लत नहीं हुई बल्कि वह बात पूरी हो कर हती है।

सच कहा गया : اَلْفَضْلُ مَا شَهِدَتْ بِهِ الْاَعْدَاءُ यानी हक़ वही है जिस की सचाई की दुश्मन भी गवाही दे और जब अबू जहल ख़ाक व ख़ून में तड़प रहा था ज़िन्दगी की आख़री सांसे ले रहा था, इर्द गिर्द उस के साथियों की जमाअत खड़ी है। उस ने मरते मरते सवाल किया कि देखो तो कि मेरा जिस्म उस लकीर पर तो नहीं है जो लकीर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने खींची थी जब साथियों ने ग़ौर किया और देखा तो यक़ीनन अबू जहल का धड़ उसी लकीर पर था तो अबू जहल कहने लगा कि मेरा धड़ खींच कर या उठा कर उस लकीर से दूर कर दो ताकि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) की एक बात तो झूटी हो जाए। मर रहा है ख़ाक व ख़ून में तड़प रहा है मगर अदावत व नफ़रत में कोई कमी नहीं है। उस लईन के साथी उसे उठाने की कोशिस करने लगे। इधर अल्लाह तआला का हुक्म होता है ऐ मलकुल मौत (अलैहिस्सलाम) सुनो अबू जहल बद बख़्त झूटा है और मेरा प्यारा महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सचा है। देरी न करो, रूह क़ब्ज़ कर लो। मलकुल मौत (अलैहिस्सलाम ने रूह निकाली, ज़ालिम अबू जहल का जिस्म नारी ठन्डा हो गया और उसी लकीर पर लाश पड़ी थी जो लकीर हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खींची थी। अल्लाह तआला की अता से हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब की शान व शौकत का आलम यह है कि जो आप हज़रात ने मुलाहज़ा किया मगर मानने और क़ुबूल करने के लिये ईमान का होना शर्त है। खुश अक़ीदा सुन्नी मुसलमान होना ज़रूरी और लाज़मी है इसी लिये तो वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी को ईमान न होने की वजह से आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम के इल्मे गैब का इनकार करते है और हम सभी अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को गैब दां मानते है और मानते रहेंगे।

आशिके मुस्तफा प्यारे रजा, अच्छे रजा, इमाम अहमद रजा फाज़िले बरेलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते है :

और कोई गैब किया तुम से निहां हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ :

मैदाने बद्र में इश्क से लबरेज़ वाक़िआ

हमारे सरकार, उम्मत के गमख्वार, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जंग के लिये सफें सीधी फरमा रहे थे जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने आशिक हजरत सवाद अन्सारी रजियल्लाहु तआला अन्हु के करीब पहुँचे उन का पेट कुछ बडा था जो सफ से बाहर निकल रहा था तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन के पेट पर अपनी छडी लगाते हुए फरमाया : اِسْتَوِ يَا سَوَادُ ऐ सवाद ! सीधे खडे हो जा। बस हजरत सवाद ने मोका को गनीमत समझा और अर्ज की या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप ने मेरे पेट पर जो लकडी मारी है मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से उस का बदला लुंगा। सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम हैरत में पड गए कि इस मुश्किल घडी में सवाद को क्या हो गया है और हमारे नबी, आदिल व रहीम आका सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सवाद रजियल्लाहु तआला अन्हु की बात सुनते ही अपना कपडा उठाते हुए फरमाया। ऐ सवाद (रजियल्लाहु तआला अन्हु) लो मेरा पेट हाज़िर है तुम अपना बदला ले लो, इसी छड़ी से मार लो जिस से तुम्हें तकलीफ पहुँची है। हजरत सिवाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आका अलैहिस्सलातो वस्सलाम के करीब हुए और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक पेट को चूमा और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्म मुबारक से चिमट गए। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ सवाद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) यह क्या है ? तुम तो अपना बदला लेना चाहते थे। हज़रत सवाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अर्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम इस वक्त में मैदाने जंग में हूँ व या पता मौत का वक्त आ जाए और मैं शहीद हो जाऊँ पस मेरे दिल में तमन्ना पैदा हुई कि मेरा जिस्म आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक जिस्म के साथ मस हो जाए यानी छू जाए। अल्लाह तआला ने मुझे यह मौका नसीब फरमाया। मुझे यकीन है कि अब मेरे जिस्म पर जहन्नम की आग हराम हो गई पस जो मेरा मकसद था वह पूरा हो गया मैं अपना बदला मुआफ करता हूँ।

ऐ ईमान वालो ! यह था हज़रात सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का ईमान और उन का इश्क़ जो आप हज़रात ने सुन लिया, यानी जो जिस्म आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक जिस्म से छु जाए उस को दोज़ख़ की आग नहीं जला सकती। मगर मैं आप हज़रात को बता देना चाहता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे मुबारक का पैरहन शरीफ़ या मूए मुबारक की बरकत व रहमत के हुसूल के लिये मोमिन ख़ुश अक़ीदा सुन्नी मुसलमान होना लाज़िम व ज़रूरी है यानी ऐसा मुसलमान हो जिस में सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन के इश्क़ की हरारत मौजूद हो। इसी लिये आशिक़े सादिक़ [illegible]ज़ार आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा, फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं।

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दुरूद शरीफ़:

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बद्र में

जो काफ़िर गिरफ़्तार हुए वह बारगाहे रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में पेश किये गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम अपने गुलामों से मशवरा फ़रमाया। किसी की राए यह थी कि उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और कुछ लोगों ने यह कहा कि जो काफ़िर जिस का रिश्ता दार है वही उस को क़त्ल करे और किसी ने यह मशवरा दिया कि फ़िदया ले कर उन को रिहा कर दिया जाए। रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह मशवरा ज़्यादा पसन्द आया कि क़त्ल न किया जाए बल्कि फ़िदया ले कर उन को रिहा कर दिया जाए। उन्हें गिरफ़्तार होने वालों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हक़ीक़ी चचा हजरत अब्बास भी थे।

इल्मे ग़ैब देखा और हज़रत अब्बास ईमान ले आए

हजरत अब्बास से भी कहा गया कि अगर आप भी आज़ाद होना चाहते हैं तो चार सो दिरहम फिदया अदा कीजिये और आज़ाद हो जाइये। हज़रत अब्बास ने कहा कि मेरे पास इतना माल नहीं कि मैं इस क़दर फ़िदया अदा कर सकूँ।

हमारे आका गैब दां नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फिर फ़रमाया, चचा अब्बास फ़िदया दो और रिहा हो जाओ मगर हजरत अब्बास ने फिर दूसरी मरतबा भी यही कहा कि मेरे पास इस कदर रक़म नहीं है जो मैं फ़िदया अदा कर सकूँ तो तीसरी मरतबा हमारे सरकार गैब दां रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया। चचा जान आप

मक्का जाकर फ़िदया की रक़म भेज दीजियेगा। आप को आजादी का परवाना दे देता हूँ तो हज़रत अब्बास बोले मेरे घर मक्का में भी कोई रक़म नहीं है। तो हमारे हुज़ूर ग़ैब की ख़बर देने वाले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया वह माल कहाँ गया जो आते वक़्त आप ने अपनी बीवी (यानी मेरी चची) उम्मुल फ़ज़्ल के साथ मिल कर ज़मीन में दफ़्न किया था और आप ने अपनी बीवी (यानी मेरी चची) उम्मुल फ़ज़्ल से कहा था कि मैं सलामत आ गया तो ठीक है वर्ना अगर जंग में क़त्ल कर दिया गया तो यह माल मेरे बच्चों फ़ज़्ल, अब्दुल्लाह और कुसुम के हवाले कर देना। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के ग़ैब की बात को सुन कर हज़रत अब्बास की आँखें खुल गई और वह कहने लगे कि आज मैं ने जान लिया कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के स च्चे नबी हैं और जो नबी होता है वह ग़ैब का इल्म रखता है वर्ना माल को ज़मीन में दफ़्न करने का मुआमला मेरे और मेरी बीवी के अलावा और कोई नहीं जानता। आप मदीने में हैं और मक्का. में मेरे घर की बात बता रहे हैं जो एक राज़ थी। मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह तआला के सच्चे नबी और रसूल हैं और मुसलमान हो गए। (सीरतुर्रसूल, स. 396)

इल्मे ग़ैब के सबब ईमान लाए : जंगे बद्र में जब नोफ़िल को क़ैद किया गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नोफ़िल से फ़रमाया फ़िदया दो रिहाई हासिल करो। तो नोफ़िल ने कहा मेरे पास कुछ नहीं है मैं फ़िदया किस से अदा करूँगा तो हमारे ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जद्दा में जो तुम ने नेज़े रखे हैं वह फ़िदया के तौर पर दे दो हम तुम्हें आज़ाद कर देते हैं। नोफ़िल ग़ैब की बात को सुन कर हैरत में पड़ गया और कहने लगा जद्दा में मेरे पास एक हज़ार नेज़े रखे हुए हैं मगर उस राज़ का इल्म मेरे सिवा कोई नहीं जानता, गोया नोफ़िल कह रहे थे कि जो मदीना में रह कर जद्दा की ख़बर रखे वह झूटा नहीं हो सकता। मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह तआला के स च्चे नबी और बरहक़ रसूल हैं और मुसलमान हो गए। (सीरतुर्रसूल, स. 396)

ऐ ईमान वालो ! जंगे बद्र का वाक़िआ आप हज़रात ने सुन लिया कि हज़रत अब्बास ईमन लाए तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का इल्मे ग़ैब देख कर नोफ़िल मुसलमान हुए तो हमारे पय़ारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इल्मे ग़ैब देख कर और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने आप को ईमान वाला और मुसलमान कहते और कहलवाते हैं और दावा भी करते हैं कि हम मुसलमान हैं लेकिन अल्लाह तआला के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब का इनकार करते हैं अब आप हज़रात ही बताएं क्या ऐसे लोग मुसलमन हो सकते हैं नहीं हर गिज़ नहीं। लिहाज़ा हमें ऐसे बद अक़ीदा लोगों से दूर रहना है ताकि हमारा ईमान महफ़ूज़ रहे।

क़ब्र वाले काफ़िर भी सुनते हैं : हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का यह मामूल था

कि जब जंग में फ़तह हो जाती तो तीन दिन मैदाने जंग में ठहरते। मैदाने बद्र में भी फ़तह के बाद तीन दिन तक क़याम फ़रमा रहे तीन दिन के बाद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने सहाबा के साथ मैदाने बद्र से रवाना हुए रात का वक़्त था हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस कुंएं के पास तशरीफ़ लाए जिस में कुफ़्फ़ारे कुरैश की लाशें डाली गई थीं, कुंए के पास खड़े हो कर ख़िताब फ़रमाया ऐ अबू जहल! ऐ उमय्या बिन ख़लफ़! ऐ उक़बा बिन रबीआ! ऐ शीबा बिन रबीआ! अगर तुम लोग अल्लाह तआला और उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इताअत करते तो आज ख़ुश होते और जो वादा अल्लाह तआला ने मेरे साथ किया था:

فَاِنِّیْ قَدْ وَجَدْتُ مَا وَعَدَنِیْ رَبِّیْ حَقًّا पस बेशक जो वादा मेरे रब तआला ने मेरे साथ किया मैंने सच्चा पाया। (सीरतुर्रसूल, व हवाला, मुस्नद इमाम अहमद, स. 364)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम! उन्हें मरे हुए तीन दिन गुज़र गए हैं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आज उन से बातें कर रहे हैं। मुर्दा जिस्म कैसे गुफ़्तुगू कर सकते हैं तो प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: مَا اَنْتُمْ بِاَسْمَعَ لِمَا اَقُوْلُ مِنْهُمْ

यानी मैं जो कह रहा हूँ तुम उन से ज़्यादा सुनने वाले नहीं हो। (मुस्नद इमाम अहमद, स. 364)

ऐ ईमान वालो! इस हदीसे मुबारका से साफ़ साफ़ ज़ाहिर व बाहिर हो गया कि मरने और क़त्ल होने के बाद काफ़िर भी सुनते हैं ज़भी तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जंगे बद्र में क़त्ल होने वाले कुफ़्फ़ारे कुरैश की लाशों से ख़िताब फ़रमाया और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सवाल पर फ़रमाया, ऐ उमर! तुम उन से ज़्यादा नहीं सुनते। इस हदीस शरीफ़ की रोशनी में मुझे बताना और समझना यह है कि जब मरे हुए काफ़िर से बात की जाए तो वह सुनते हैं तो वह मोमिन जो अल्लाह तआला की महब्बत में मरा हो या शहीद हुआ हो, या वह अल्लाह का वली जो अल्लाह तआला की दोस्ती के साथ दुनिया से गया हो अगर उस की ख़िदमत में अर्ज़ व मअरूज़ किया जाए तो यक़ीनन वह अपनी क़ब्र में फ़रयादी की फ़रयाद सुनते हैं और फिर हमारे आक़ा अल्लाह तआला के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान तो बहुत बलन्द व बाला है।

इसी लिये तो आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

हम यहाँ से पुकारें वहाँ वह सुनें
मुस्तफ़ा की समाअत पे लाखों सलाम

दूरो नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअले करामत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

शोहदाए बद्र : जंगे बद्र में तीन सो तेरह मुजाहिदीने इस्लाम में से सिर्फ़ चौदह सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन शहीद हुए।

जंगे बद्र में कितने काफ़िर क़त्ल हुए

जंगे बद्र में तक़रीबन एक हज़ार की तादाद थी लश्करे कुफ़्फ़ार की। जिस में क़ाफ़िरों के सत्तर आदमी क़त्ल हुए। जिन में अकसर काफ़िरों के सरदार थे। (सीरतुर्रसूल, स. 398)

हज़रात ! अफ़सोस यह मस्जिदों के नमाज़ी और मैदाने जंग के ग़ाज़ी दुनिया से चले गए।

आह इस्लाम तेरे चाहने वाले न रहे
जिन का तू चाँद था अफ़सोस वह हाले न है

कितने अफ़सोस की बात है जो हमारे बुरे आमाल व किरदार ने हमें यह दिन दिखाया है। न आज रात के आबिद रहे और न दिन के ग़ाज़ी हैं। न वह नमाज़ रही न वह सज्दा रहा, न वह दुआएं रहीं,. जो बाबे इजाबत में पहुँच कर अल्लाह तआला की रहमत को हमारी जानिब मुतवज्जह करतीं और न वह इस्लाम के सच्चे ग़ाज़ी रहे जिन का ज़ौक़े शहादत अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को राज़ी कर के इस्लाम की जड़ों को कमज़ोर होने से बचा कर मज़बूत व मुस्तहकम करता।

एक तरफ़ तेग़ ब कफ़ एक तरफ़ सर ब सुजूद
फिर ज़रूरत है उन्हीं बे सरो सामानों की

हज़रात ! जिहाद की दो क़िस्में हैं एक क़िस्म जिहादे कुफ़्फ़ार है जो आप हज़रात सुन चुके, दूसरी क़िस्म जिहादे नफ़्स है। नफ़्स से जिहाद की हक़ीक़त के बारे में अर्ज़ कर रहा हूँ आप हज़रात ग़ौर से सुनिये और अमल करने की कोशिश कीजिये।

नफ़्स से जिहाद : हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं : اَلْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهٗ

यानी सच्चा और कामिल मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स से जिहाद करे। (मिश्कात, स. 334)

हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक ग़ज़वा से वापस तशरीफ़ लाते हुए इरशाद फ़रमाया : رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْاَصْغَرِ اِلَى الْجِهَادِ الْاَكْبَرِ

यानी अब हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़ लोटे। (मिश्कात, स. 334)

ऐ ईमान वालो ! आप हज़रात ने सुन लिया कि जंग के मैदान में तीर व तलवार से दुश्मन से लड़ना। हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जिहादे असग़र यानी छोटा जिहाद फ़रमाया और नफ़्स से जिहाद को जिहादे अकबर यानी बड़ा जिहाद फ़रमाया। बात दर अस्ल यह है कि अपने नफ़्स को क़ाबू में रखना, और हमेशा उस के ख़िलाफ़ रहना यह नफ़्स का जिहाद है जो आसान नहीं बड़ा मुश्किल काम है। इस लिये कि मैदाने जंग में तीर व तलवार से दुश्मन का मुक़ाबला करना चन्द दिनों या महीनों रहता है मगर

नफ़्स से जिहाद सुबह से शाम तक, रात से दिन तक, घर से बाज़ार तक, हर आन और हर लम्हा, हर क़दम यहाँ तक कि ज़िन्दगी की आख़री सांस तक जारी रहता है। तमाम गुनाह वाली लज़्ज़तों और शहवतों से नफ़्स को रोक कर रखना। और तमाम इबादतों की मशक़्क़तों पर साबित क़दम रहना। दुनिया बे शुमार गुनाह वाली लज़्ज़तों और शहवतों से भरी पड़ी है। शराब, मनशियात, सीनेमा व मोसीक़ी, रक़्स व सुरूरू, हुस्नो जमाल का बे हिजाब नज़ारा यह गुनाहों के वह दिल कश व दिल फ़रेब सामान हैं कि आदमी का नफ़्स बार बार उन की तरफ़ लपकता है मगर नफ़्स के मुजाहिद की यह शान होती है कि नफ़्स को क़ाबू में रखता है। हमेशा नफ़्स को उन गुनाहों की तरफ़ बढ़ने से रोके रखता है। इसी तरह वक़्ते फ़ज्र का नमाज़ी अपने नर्म नर्म बिस्तर और गर्म गर्म लिहाफ़ की मीठी नीन्द को छोड़ कर सख़्त सर्दी में वुज़ू कर के मस्जिद में सर ब सुजूद होकर नफ़्स से लड़ता है और रोज़ा दार सख़्त प्यास की हालत में ठन्डा, ठन्डा पानी और मीठा मीठा शरबत मौजूद होते हुए भी अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से हाथ भी नहीं लगाता और नफ़्स से जिहाद करता है और कामयाबी व कामरानी से सरफ़राज़ होता है।

ग़ज़वए बद्र से सबक़ : ग़ज़वए बद्र के वाक़ेआत से जो सबक़ मिला है उसे मुसलमानों को हमेशा याद रखना चाहिये वह सबक़ यह है कि हम मुख़लिस, मुत्तक़ी, परहेज़गार मुसलमान बन जाएं तो यक़ीनन अल्लाह तआला अपने मुख़लिस, मुत्तक़ी, परहेज़गार मोमिन बन्दों की मदद फ़रमाता है और दुनिया की बड़ी से बड़ी कुव्वत व ताक़त पर उन को ग़ालिब कर देता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है : يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अगर तुम दीने ख़ुदा की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा। (पारा 26, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अल्लाह तआला का यह वादा सुबहे क़ियामत तक के मोमिनों से है जब भी मोमिन मुसलमान बन्दा अल्लाह तआला के दीन की मदद के लिये अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की ग़रज़ से आगे बढ़ता है तो अल्लाह तआला उस मोमिन बन्दा की मदद फ़रमाता है। जैसा कि मैदाने बद्र में अल्लाह तआला ने मुट्ठी भर मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के भारी लश्कर पर ग़ालिब कर दिया और उन के क़दम ऐसे मज़बूत कर दिये कि दुनिया की कोई ताक़त उन को हिला नहीं सकी। बस ज़रूरत है ग़ज़वए बद्र की याद ताज़ा करने की उस के दिये हुए सबक़ पर अमल करने की, हम अपने किरदार व आमाल और हाल पर नज़र करें और ग़ौर करें कि हम ने कितना खोया है और क्या पाया है। आज हम कितनी ज़िल्लतों और नाकामियों के शिकार हैं। लेकिन अल्लाह तआला की मदद हमें क्यों नसीब नहीं होती। सिर्फ़ वजह यह है कि हम ने दुनिया के साज़ो सामान को अपना सहारा समझ लिया है और अल्लाह तआला पर भरोसा करना छोड़ दिया है। अल्लाह तआला रमज़ान शरीफ़ के सदक़े रोज़े व नमाज़ के वसीले से और शोहदाए बद्र की बे मिसाल क़ुरबानियों की बरकत से हमारी हालत बदल दे और अपनी मदद हमें और सारे आलम के मुसलमानों को नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(9)

रमज़ानुल मुबारक

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

ज़कात की फ़ज़ीलत व अहम्मियत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ٥

तर्जमा : और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करो। इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो। (पारा 18, रुकू 13, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

दर्द व आलाम के मारे हुए क्या देते हैं
हम तो बस उन की निगाहों को दुआ देते हैं
अक़्ल वालों के नसीबों में कहाँ ज़ौक़े जुनूं
इश्क़ वाले हैं जो हर चीज़ लुटा देते हैं

ऐ ईमान वालो ! जो आयते करीमा मैंने तिलावत करने की सआदत हासिल की है अल्लाह तआला उस में इरशाद फ़रमाता है।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ٥

तर्जमा : और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमांबरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रहम हो। (पारा 18, रुकू 13, तर्जमा कन्जुल ईमान)

हज़रात ! इस आयते मुक़द्दसा में अल्लाह तआला ने तमाम ईमान वालों को नमाज़ क़ाइम करने और ज़कात अदा करने का हुक्म फ़रमाया है गोया नमाज़ी मुसलमान को आगाह किया जा रहा है कि ऐ नमाज़ पढ़ने वाले, अगर तू चाहता है कि तेरी नमाज़ अल्लाह तआला की बारगाह में क़बूल हो जाए तो जो माल व ज़र तुझे दिया गया है। उस की ज़कात भी अदा कर दे और हमारी प्यारे रसूल मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इताअत व फ़रमांबरदारी से तुम्हें यह इनआम मिलेगा कि अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाएगा और तुम अल्लाह तआला के फ़ज़्ले अज़ीम और लुत्फ़े अमीम से दुनिया व आख़िरत में कामयाब हो जाओगे।

ज़कात में रहमत व बरकत

ऐ ईमान वालो ! ज़कात देना ऐसा कारे ख़ैर और नेक अमल है जिस के ज़रीए अल्लाह तआला ज़कात देने वाले बन्दे को हिदायत की नेअमत और उस के कारोबार में ख़ूब रहमत व बरकत अता फ़रमाता है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ○

तर्जमा : हिदायत और ख़ुश ख़बरी ईमान वालों को वह जो नमाज़ बरपा रखते हैं और ज़कात देते हैं और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (पारा 19, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ज़कात अदा करने से ग़म और ख़ौफ़ से नजात मिलती है

ऐ ईमान वालो ! माल व दौलत जमा करके इन्सना बे पनाह बला व मुसीबत में मुब्तला हो जाता है हर वक़्त माल की हिफ़ाज़त की फ़िक्र और माल के ज़ाए होने का ख़ौफ़ व ग़म लगा रहता है लेकिन वह शख़्स जो अपने माल की ज़कात अदा कर देता है तो अल्लाह तआला उस शख़्स को हर ग़म और ख़ौफ़ से नजात अता फ़रमा देता है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ○

तर्जमा : बे शक वह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

(पारा 3, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ज़कात देना बहुत बड़ा सवाब है

ऐ ईमान वालो ! ज़कात अदा करना वह नेक अमल है जिस से अल्लाह तआला ख़ुश हो कर ज़कात देने वाले बन्दा को अज्रे अज़ीम यानी ख़ूब सवाब अता फ़रमाता है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ○ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا○

तर्जमा : और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अनक़रीब हम बड़ा सवाब देंगे। (पारा 6, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ज़कात देने से जन्नतुल फ़िरदौस मिलती है

ऐ ईमान वालो ! ज़कात इस लिये अदा करो ताकि माल ख़ूब बढ़ने और तिजारत फूले फले और आप का माल बला व मुसीबत से महफ़ूज़ हो जाए और सब से बड़ी बात यह है कि ज़कात देने से जहाँ माल व दौलत तलफ़ व ज़ाए होने से महफ़ूज़ हो जाता है और अल्लाह तआला ज़कात देने वाले बन्दे से राज़ी होकर उस बन्दे को जन्नतुल फ़िरदौस का वारिस बना देता है

जिस में ज़कात देने वाला बन्दा हमेशा हमेश रहेगा।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوَارِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

तर्जमा : और वह कि ज़कात देने का काम करते हैं यही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौसी मीरास पाएंगे और उस में हमेशा हमेश रहेंगे। (पारा 18, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ज़कात न देना दर्द नाक अज़ाब होगा

ऐ ईमान वालो ! जो लोग सोना, चाँदी (और माल व दौलत) जमा करते हैं और उस की ज़कात अदा नहीं करते और उसे अल्लाह तआला की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी सुना दो जिस दिन दोज़ख़ की आग में वह तपाए जाएंगे और उन से उन की पेशानियाँ और करवटें और पीठें दाग़ी जाएंगी (और उन से कहा जाएगा) यह वह (माल व दौलत) है जो तुम ने अपने नफ़्स के लिये जमा किया था तो अब (उस का मज़ा) चखो जो (माल व दौलत) जमा करते थे। (पारा 10, रुकू 11)

गन्जे सांप का अज़ाब

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है हमारे प्यारे रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स को अल्लाह तआला माल दे और वह उस की ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वह माल गन्जे सांप की सूरत में कर दिया जाएगा जिस के सर पर दो चत्तियाँ होंगी वह सांप उस शख़्स के गले में तौक़ बना कर डाल दिया जाएगा फिर उस की बाछें पकड़ेगा और कहेगा मैं तेरा माल हूँ, मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ (यानी मैं तेरा वह माल और ख़ज़ाना हूँ जिस की ज़कात नहीं अदा करता था) (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 188)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हमारे सरकार, उम्मत के ग़मख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जिस माल की ज़कात नहीं दी गई क़ियामत के दिन वह माल गन्जा सांप बन जाएगा। मालिक को दौड़ाएगा और वह भागेगा यहाँ तक कि अपनी उंगलियाँ उस (मालदार) के मुंह में डाल देगा। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 3, स. 626)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अगर आप को सोना व चाँदी माल व दौलत से नवाज़ा है तो मुकम्मल ज़कात अदा करो वर्ना यही दौलत गन्जे सांप बन कर आप को डसेंगे उस वक़्त न बाप काम आएगा और न बेटा काम आएगा जिस के लिये तुम ने माल व दौलत जमा किया है, गन्जे सांप का अज़ाब कम न समझना, सांप जब एक हज़ार साल का होता है तो उस के सर पर बाल निकलते हैं और जब दो हज़ार साल का हो जाता है तो वह बाल गिर जाते हैं और वह सांप गन्जा हो जाता है (यानी ज़हर की ज़्यादती से सब बाल गिर जाते हैं और फिर सांप गन्जा हो जाता है) (बहारे शरीअत हि. 5, स. 4)

ज़कात न देने वाला क़त्ल का मुस्तहिक़ है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हुए उस वक़्त अरब में से कुछ लोग काफ़िर हो गए (यानी ज़कात की फ़रज़ियत से इनकार कर बैठे) हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन पर जिहाद और क़िताल का हुक्म सादिर फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मैं उन से जिहाद व क़िताल करूँगा जो नमाज़ व ज़कात में तफ़रीक़ करे (यानी नमाज़ को फ़र्ज़ माने और ज़कात की फ़रज़ियत से इनकार करे) ज़कात हक़्क़ुल माल है। ख़ुदा की क़सम बकरी का बच्चा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास हाज़िर किया करते थे अगर मुझे देने से इनकार करेंगे तो उस पर उन से जिहाद करूँगा। (बुख़ारी, जि. 1, स. 188, व मुस्लिम)

मस्अला : ज़कात फ़र्ज़ है इस का मुनकिर काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनाहगार व मरदूदुश्शहादा है।

(आलमगीरी व हवाला बहारे शरीअत, हिस्सा 5, स. 10)

ज़कात दूसरे माल को हलाक कर देती है

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ज़कात किसी माल में न मिलेगी मगर उसे हलाक कर दे गी। (शअबिल ईमान, 3, स. 273)

मस्अला : ज़कात आप पर वाजिब थी और ज़कात की रक़म आप ने मुस्तहिक़्क़े ज़कात के हवाले करने की बजाए अपने दूसरे माल में मिलाए रखा तो ज़कात का माल दूसरे माल को हलाक व बरबाद कर देगा। (बहारे शरीअत हि. 5, स. 6)

माल व दौलत के बरबाद होने का सबब

हदीस शरीफ़ : हज़रत बुरीदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो क़ौम ज़कात न देगी अल्लाह तआला उसे क़हत में मुब्तला फ़रमाएगा। (तबरानी औसत, जि. 3, स. 275)

हदीस शरीफ़ : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबिये मुख़्तार शफ़ीए रोज़े शुमार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुश्की और तरी में ज़ो माल तलफ़ यानी हलाक व बरबाद होता है वह ज़कात न देने से तलफ़ होता है। (तबरानी शरीफ़, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 1, स. 308)

ऐ ईमान वालो ! होश में आ जाओ और अपने माल व दौलत को, हलाक व बरबाद होने से बचा लो यानी ज़कात अदा करो। आप की दौलत सोना, चाँदी हत्ता कि आप की ज़ात भी अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में हो जाएगी फिर कौन है जो अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त व

ज़मानत की चीज़ को तबाह व बरबाद कर सके। लिहाज़ा मुकम्मल ज़कात अदा किया करो, खुद महफ़ूज़ रहोगे और व दौलत भी महफ़ूज़ रहेगा और मरने के बाद जन्नतुल फ़िरदौस के वारिस बन जाओगे।

ज़कात न देने वाला सब से पहले जहन्नम में डाला जाएगा

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में सब से पहले तीन शख़्स जाएंगे उन में एक वह तवंगर (यानी मालदार शख़्स) है कि अपने माल में अल्लाह तआला का हक़ अदा नहीं क़रता (यानी ज़कात नहीं अदा करता)

(इब्ने खुज़ैमा, जि. 4, स. 8 व इब्ने हब्बान, जि. 6, स. 254)

ज़कात न देने वाले की नमाज़ क़ुबूल नहीं होती

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें और जो शख़्स ज़कात न दे उस की नमाज़ क़ुबूल नहीं। (तबरानी कबीर, जि. 10, स. 103)

ऐ ईमान वालो ! बहुत से मुसलमान हैं जो नमाज़ बड़ी पाबन्दी से पढ़ते हैं मगर माल व दौलत के लालच ने उन्हें अन्धा कर रखा है जो ज़कात अदा नहीं क़रते और ज़कात निकालते भी हैं तो आधा, तीहा। जब तक ज़कात मुकम्मल न निकाली जाए उस वक़्त तक ज़कात अदा न होगी। बे शक नमाज़ की पाबन्दी बड़ी सआदत की चीज़ है मगर ज़कात भी आप पर फ़र्ज़ है इस लिये ज़कात का अदा करना आप पर वाजिब है अभी आप ने हदीस शरीफ़ सुनी है कि जो शख़्स ज़कात न अदा करे उस की नमाज़ क़ुबूल नहीं होती पस हम पर फ़र्ज़ है कि पूरे माल का हिसाब कर के पूरी पूरी ज़कात अदा करें।

ज़कात न देने वाला हलाक हो गया

दौरे नुबुव्वत में सअलबा बिन अबी हातिब ने ज़कात नहीं दी तो हलाक व बरबाद हो गया। हज़रत अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि सअलबा बिन हातिम अन्सारी ने हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में अर्ज़ की। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे लिये दुआ फ़रमाएं मैं मालदार हो जाऊँ हमारे हुज़ूर मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ सअलबा थोड़ा माल ज़्यादा माल से बेहतर है इस लिये कि थोड़े माल पर अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा करना आसान है और ज़्यादा माल पर शुक्र अदा करना मुश्किल होता है यह हुक्म सुन कर सअलबा वापस चला गया मगर माल व दौलत की महब्बत ने उसे फिर बारगाहे रिसालत में हाज़िर होने पर मजबूर किया और सअलबा दोबारह हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ

फ़रमा दीजिये कि वह अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे मालदार बना दे और सअलबा कहने लगा क़सम है उस ज़ाते पाक की जिस ने आप को सच्चा रसूल बना कर भेजा है अगर वह मुझे माल व दौलत से नवाज़ेगा तो मैं उस माल को अल्लाह तआला की राह में खर्च करूँगा और हर हक़दार का हक़ अदा करूँगा यह सुन कर अल्लाह तआला के हबीब, उम्मत के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दस्ते रहमत को दुआ के लिये उठाए और सअलबा के हक़ में दुआ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ ارْزُقْ ثَعْلَبَةَ مَالًا

ऐ अल्लाह ! सअलबा को माल अता कर। हमारे हुज़ूरे करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ सअलबाके हक़ में क़ुबूल हो चुकी थी।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सअलबा ने कुछ बकरियाँ खरीदीं और अल्लाह तआला की शान वह कीड़ों की तरह बढ़ने लगीं यहाँ तक कि मदीना मुनव्वरा में जगह तंग होने लगी तो सअलबा अपनी बकरियां को लेकर मदीना मुनव्वरा से दूर जंगल में चला गया और वहीं बकरियों के साथ जंगल में रहने लगा। पहले पाँच वक़्त की नमाज़ मस्जिद में आकर जमाअत से पढ़ता था। माल बढ़ता गया तो अब सिर्फ़ ज़ोहर और अस्र की नमाज़ जमाअत से आकर पढ़ता और माल बढ़ा तो दुनिया ने सअलबा को चारों तरफ़ से घेर लिया तो पाँचों वक़्त की नमाज़े जमाअत तो छूटी ही थी अब ऐसा वक़्त आ गया कि नमाज़े जुमा के लिये भी मस्जिद में हाज़िर नहीं होता। माल व ज़र की महब्बत ने सअलबा को मस्जिद और नमाज़े बा जमाअत से दूर किया हत्ता कि जुमा भी छूट गया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब देखा कि सअलबा नमाज़े बा जमाअत से दूर किया हत्ता कि जुमा भी छूट गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब देखा कि सअलबा नमाज़े बा जमाअत के लिये मस्जिद में हाज़िर नहीं होता और जुमा भी छोड़ दिया है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबाए किरा., अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान से दरयाफ़्त फ़रमाया कि सअलबा बिन हातिम का क्या हाल है तो सहाबए किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम सअलबा का माल इस क़दर बढ़ गया है कि मदीना मुनव्वरा में रहने की जगह कम पड़ गई है इस लिये वह मदीना मुनव्वरा से दूर जंगल में चला गया है। हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। सअलबा तुझ पर अफ़सोस है। सअलबा तुझ पर अफ़सोस है।

अब एक दिन वह भी आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने नाएबीन सहाबा को मालदारों के पास ज़कात वुसूल करने के लिये रवाना फ़रमाए। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ाइम किये हुए आमेलीन बैरूनी इलाक़ों के उमरा और मालदारों के पास पहुँचे और हुज़ूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुक्म सुनाया तो उन मालदारों और अमीरों ने अपने माल की ज़कात व सदक़ात को मदीना शरीफ़ में सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम के पास रवाना फ़रमाए। लेकिन ज़कात के वुसूल करने वाले नाएबीने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब सअलबा बिन हातिम के पास गए तो वह यह कह कर ज़कात देने से इनकार कर दिया कि यह टेक्स है। जाओ फ़ुरसत के वक़्त मैं सोचूँगा और फिर ज़कात अदा करूँगा। मुहस्सेलीने ज़कात सअ़लबा का यह जवाब सुन कर दरबार रिसालत में वापस आए, अभी उन्होंने सअ़लबा का कोई पैग़ाम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ नहीं किया था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। ऐ सअ़लबा अफ़सोस है। ऐ सअलबा अफ़सोस है कि तूने ज़कात देने से इनकार कर दिया है और जब मुहस्सेलीन व आमेलीन का जवाब बारगाहे नुबुव्वत में पेश किया तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बहुत अफ़सोस ज़ाहिर किया, उसी वक़्त अल्लाह तआला ने इस आयत का नुज़ूल फ़रमाया और यह आयत सअ़लबा के हक़ में नाज़िल हुई।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝

तर्जमा : और उन में कोई वह हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले अदमी हो जाएंगे तो जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया उस में बुख़्ल करने लगे और मुंह फेर कर पलट गए।

(पारा 10 ,रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

इस आयते मुक़द्दसा में सअलबा के बुख़्ल (कन्जूसी) और एतिराज़ की मज़म्मत (बुराई) की गई है। सअलबा को जब यह मालूम हुआ कि उस की मज़म्मत में अल्लाह तआला ने नाराज़ हो कर आयात को नाज़िल फ़रमाया है तो सअलबा घबराया और कहने लगा कि लोग मुझे बख़ील और कन्जूस कहेंगे। बद नामी के डर से ज़कात का हिसाब लगाया और ज़कात का माल लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं अपनी ज़कात लेकर हाज़िर हुआ हूँ मेरी ज़कात क़ुबूल फ़रमा लीजिये तो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ सअ़लबा ! अपनी ज़कात वापस ले जा। इस लिये कि अल्लाह तआला ने तेरी ज़कात क़ुबूल करने से मना फ़रमाया है, यह जवाब सुन कर सअ़लबा वापस लौट गया और अपने सर पर मिट्टी डालता। हमारे सरकार, शफ़ीए रोज़े शुमार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल हुआ, जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हुए तो सअलबा ने मौक़ा ग़नीमत जाना और ज़कात का माल लेकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह फ़रमा कर ज़कात लेने से इनकर कर दिया कि जब हमारे आक़ा करीम प्यारे रसूल, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम ने तेरी ज़कात कुबूल नहीं की तो मैं तेरी ज़कात कैसे कुबूल कर सकता हूँ। फिर हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में सअ़लबा ज़कात का माल लेकर हाज़िर हुआ तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह कहकर ज़कात लेने से इनकार कर दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तेरी ज़कात कुबूल नहीं की तो मैं तेरी ज़कात कैसे कुबूल कर सकता हूँ। यह फ़रमा कर ज़कात लेने से इनकार कर दिया फिर सअ़लबा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफ़त में मर गया। (मदारिक शरीफ़, व रूहुल मआनी, तबरानी कबीर, जि. 8, स. 218)

क़ारून का बुरा अन्जाम

क़ारून जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की कौम का एक फ़र्द था। बड़ा ग़रीब, मुफ़्लिस, नादार और मफ़लूकुल हाल शख़्स था। उस की ग़रीबी और मुफ़्लिसी पर रहम खा कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून को इल्म कीमिया सिखा दिया जिस से उस ने ख़ूब सोना और चाँदी और माल व दौलत जमा कर लिया। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَاۤ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓءُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ۚ

तर्जमा : और हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये जिस की कुन्जियाँ एक ज़ोर आवर जमाअत पर भारी थीं। (पारा 20, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और ईमान वालों ने जब क़ारून से कहा कि अल्लाह तआला की नेअमतों का शुक्र अदा कर और अल्लाह तआला की राह में ख़र्च कर यानी ज़कात व सदक़ा निकाल दे ताकि क़ियामत के दिन तेरी नजात हो सके।

وَاَحْسِنْ كَمَاۤ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ

तर्जमा : और एहसान कर जैसा अल्लाह ने तुझ पर एहसान किया।

(पारा 20, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

मगर वह बद नसीब क़ारून कहने लगा।

قَالَ اِنَّمَاۤ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ

तर्जमा : बोला यह तो मुझे एक इल्म से मिला है जो मेरे पास है।

(पारा 20, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाने की बजाए क़ारून कहने लगा मैं इल्म वाला हूँ मैंने अपने इल्म और क़ाबलियत से यह दौलत हासिल की है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जब क़ारून को ज़कात अदा करने का हुक्म दिया तो उस ने इनकार किया और लोगों से कहने लगा कि मूसा अलैहिस्सलाम हमारा माल लेना चाहते हैं और क़ारून बद नसीब ने एक फ़ाहिशा औरत के ज़रीए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को बदनाम करने की नापाक साज़िश की तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ारून के लिये दुआए हलाकत फ़रमाई जिस से अल्लाह तआला ने

क़ारून और उस के ख़ज़ानों को ज़मीन में धंसा दिया। एक रिवायत में आता है कि क़ारून और उस का ख़ज़ाना क़ियामत तक ज़मीन में धंसता रहेगा। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान व तफ़सीरे ख़ाज़िन)

ऐ ईमान वालो ! आप हज़रात ने सअलबा बिन अबी हातिब अन्सारी जो मदीना शरीफ़ का रहने वाला था और क़ारून जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम का आदमी था उन दोनों बद नसीबों के हालात व वाक़ेआत आप हज़रात ने सुन लिये कि ज़कात न देने की वजह से उन लोगों का अन्जाम कितना बुरा हुआ। सअलबा हलाक हो गया और क़ारून अपने ख़ज़ाने के साथ ज़मीन में धंसा दिया गया। अब जो लोग भी माल व दौलत की ज़कात नहीं अदा करते हैं उन लोगों को भी होश में आने की ज़रूरत है। कहीं ऐसा न हो कि ज़कात न देने की वजह से तुम्हारा हश्र भी सअलबा और क़ारून की तरह हो जाए। तुम भी हलाक कर दिये जाओ, और तुम्हारा माल भी तबाह व बरबाद कर दिया जाए। अल्लाह तआला माल दे तो सदक़ा व ज़कात देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

सख़ावत जन्नत का दरख़्त है

अल्लाह तआला के प्यारे रसूल, हमारे प्यारे नबी और सख़ी दाता, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं :

اَلسَّخَاءُ شَجَرَةٌ فِی الْجَنَّةِ وَالشُّحُّ شَجَرَةٌ فِی النَّارِ

सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है और बख़ीली जहन्नम में एक दरख़्त है। (मिश्कात शरीफ़, स. 167)

ऐ ईमान वालो ! सख़ी के लिये जन्नत की ख़ुशख़बरी है और बख़ील का ठिकाना जहन्नम है। अल्लह तआला की राह में मस्जिद व मदरसा में ख़र्च करने वाले पर अल्लाह तआला की रहमत होती है जिस से सख़ी हर बला व मुसीबत से महफ़ूज़ रहता है। अल्लाह तआला सख़ी बनाए और बख़ील तरह तरह की बला व मुसीबत में मुब्तला रहता है और बख़ील का माल उस के लिये ज़हमत ही ज़हम है। अल्लाह तआला बख़ील से महफ़ूज़ रखे।

नबी की दुआ सख़ी के लिये : اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا . اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا

हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुआ देते हैं कि ऐ अल्लाह तआला ! सख़ी को ख़ूब नफ़अ अता फ़रमा और ऐ अल्लाह ! बख़ील को बरबादी अता फ़रमा। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 325, मिश्कात, स. 164)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی اَنْفِقْ يَا ابْنَ اٰدَمَ اُنْفِقْ عَلَيْكَ (बुख़ारी व मुस्लिम, मिश्कात स. 164)

अल्लाह तआला फ़रमाता है ऐ इन्सन ! तू ख़र्च कर, मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा। यानी जो शख़्स ख़ूब दरया दिली से ख़र्च करता है तो अल्लाह तआला उस बन्दे को बे हिसाब रोज़ी अता फ़रमाता है।

सख़ी बन्दा अल्लाह तआला का क़रीबी होता है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हमारे आक़ा जव्वादो फ़य्याज़ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلسَّخِيُّ قَرِيْبٌ مِّنَ اللهِ وَالْبَخِيْلُ بَعِيْدٌ مِّنَ اللهِ وَالْجَاهِلُ السَّخِيُّ اَحَبُّ اِلَى اللهِ مِنْ عَابِدٍ بَخِيْلٍ

यानी सख़ी बन्दा अल्लाह तआला के क़रीब है और बख़ील कन्जूस बन्दा अल्लाह तआला से दूर है। और जाहिल सख़ी बन्दा अल्लाह तआला की बारगाह में ज़्यादा पसन्दीदा है इबादत गुज़ार बख़ील बन्दे से। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 17, मिश्कात, स. 164)

अल्लाह तआला आज़माइश में डालता है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में तीन आदमी थे, एक कोढ़ी, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा, अल्लाह तआला ने उन की आज़माइश करना चाहा तो उन के पास एक फ़रिश्ता भेजा जो पहले कोढ़ी के पास गया और उस से कहा :

فَقَالَ اَيُّ شَيْءٍ اَحَبُّ اِلَيْكَ

यानी फ़रिश्ते ने कहा तुझे कौन सी चीज़ ज़्यादा पसन्द है ? तो उस कोढ़ी ने कहा अच्छा रंग, अच्छी जिल्द, और मुझ से यह बीमारी दूर हो जाए जिस की वजह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं। कोढ़ी की बात सुन कर उस फ़रिश्ते ने जो इन्सानी शक्ल में उस के पास मौजूद था। (मिश्कात, स. 165)

فَمَسَحَهُ فَذَهَبَ عَنْهُ قَذَرُهُ وَاُعْطِيَ لَوْنًا حَسَنًا وَجِلْدًا (मिश्कात, स. 165)

पस उस फ़रिश्ते ने उस कोड़ी पर अपना हाथ फेरा तो उस की बीमारी जाती रही और उस को अच्छा रंग और अच्छी जल्द हो अता हो गई।

फिर फ़रिश्ते ने उस से पूछा तुझे कौन सा माल पसन्द है ? قَالَ الْاِبِلُ उस शख़्स ने कहा मुझे ऊंट पसन्द है। चुनाँचे उस शख़्स के पसन्द के मुताबिक़ उसे एक ऊंटनी दे दी गई और फ़रिश्ते ने उस के लिये बरकत की दुआ की। जिस से उस के ऊंट में ख़ूब बरकत हुई।

गन्जा आदमी : फिर वह फ़रिश्ता गन्जे आदमी के पास आया और उस से कहा, बता तुझे क्या चाहिये और तू क्या पसन्द करता है तो उस गन्जे शख़्स ने कहा मेरे सर पर ख़ूबसूरत बाल हों और मेरी यह बीमारी दूर हो जाए जिस की वजह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं तो फ़रिश्ते ने उस के सर पर हाथ फेरा तो उस गन्जे शख़्स के सर पर ख़ूबसूरत बाल आ गए, फिर फ़रिश्ते ने उस शख़्स से पूछा कि तुझे कोनसा माल पसन्द है ? तो उस शख़्स ने गाए की तमन्ना की।

فَاُعْطِيَ بَقَرَةً حَامِلًا وَقَالَ بَارَكَ اللهُ لَكَ (मिश्कात, स. 165)

तो उसे एक हामिला गाय दी गई और फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह तआला तुझे बरकत दे।

अन्धा आदमी

फ़रिश्ता तीसरे शख़्स के पास आया जो अन्धा आदमी था उस से कहा तुझे कौनसी चीज़ पसन्द है। तो उस अन्धे शख़्स ने कहा कि अल्लाह तआला मेरी आँखें लौटा दे ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। فَمَسَحَهُ فَرَدَّ اللّٰهُ اِلَيْهِ بَصَرَهُ قَالَ فَاَيُّ الْمَالِ اَحَبُّ اِلَيْكَ (मिश्कात, स. 166)

तो फ़रिश्ते ने उस अन्धे शख़्स पर अपना हाथ फेरा तो अल्लाह तआला ने उस की बीनाई लौटा दी फिर फ़रिश्ते ने पूछा तुझे कौनसा माल ज़्यादा पसन्द हैं ? तो वह शख़्स ने कहने लगा मुझे बकरी पसन्द है। लिहाज़ा उस शख़्स को एक बकरी अता की गई और फ़रिश्ते ने दुआ की कि अल्लाह तआला तुझे बरकत दे। हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं फिर वही फ़रिश्ता अल्लाह तआला के हुक्म से उन तीनों आदमियों यानी वह कोढ़ी जिस के जिस्म पर फ़रिश्ते ने हाथ फेरा था और उसे तन्दुरुस्त और ख़ूबसूरत कर दिया था और एक ऊंटनी दी थी जिस से वह ख़ूब मालदार हो गया फिर उस शख़्स के पास फ़रिश्ता आया जो पहले गन्जा था और फ़रिश्ते ने अपना हाथ फेर कर गन्जे की बीमारी दूर कर दी थी और उसे एक हामिला गारा दी थी जिस से वह शख़्स ज़माने का ग़नी व मालदार हो गया फिर वह फ़रिश्ता उस शख़्स के पास पहुँचा जो पहले अन्धा था फ़रिश्ते ने अपना हाथ फेर कर उस की बीनाई वापस लौटाई थी और उस शख़्स को एक बकरी अता की थी जिस से वह शख़्स बहुत बड़ा दौलत मन्द हो गया।

वही फ़रिश्ता उस शख़्स के पास पहुँचा जो पहले कोढ़ी था और फ़रिश्ते ने सवाल किया : فَقَالَ اَنَا رَجُلٌ مِسْكِيْنٌ फ़रिश्ते ने कहा मैं एक ग़रीब आदमी हूँ। सफ़र की वजह से मेरा सामान ज़ाए हो गया है तो अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और तेरी मदद के बग़ैर मैं घर नहीं पहुँच सकता हूँ उस ख़ुदाए तआला के नाम पर तुझ से सवाल करता हूँ जिस ने तुझे अच्छी रंगत और अच्छी जिल्द अता की है। फ़रिश्ते ने साइल व फ़क़ीर बन कर कहा कि मुझे अल्लाह तआला के नाम पर एक ऊंट देदे ताकि मेरी परेशानी दूर हो जाए। तो उस अमीर व दौलत मन्द ने जवाब दिया कि मुझ पर बहुत से हुक़ूक़ हैं जिन्हें मैं पूरे नहीं कर पाता हूँ तो तुझे कहाँ से दूँ ? फ़रिश्ते ने कहा कि शायद मैं तुझे पहचानता हूँ तू वही शख़्स है जो पहले कोढ़ी था और फ़क़ीर व मोहताज था और लोग तुझ से नफ़रत करते थे और अल्लाह तआला ने तुझे कोढ़ की बीमारी से नजात दी और माल व दौलत से भी नवाज़ा तो उस मालदार शख़्स ने गुस्से में आकर बोला कि मैं कब कोढ़ी था, मैं तो हमेशा से तन्दुरुस्त व ख़ूबसूरत हूँ और यह माल व दौलत तो मेरे बाप दादा से वरासत में मिली है। फ़रिश्ते ने कहा :

اِنْ كُنْتَ كَاذِبًا فَغَيَّرَكَ اِلٰى مَا كُنْتَ

अगर तू झूटा है तो अल्लाह तआला तुझे, जैसा तू पहले था वैसा ही कर दे। फिर वह शख़्स पहले जैसा यानी कोढ़ी हो गया और माल व दौलत भी हलाक हो गया।

फिर वह फ़रिश्ता उस शख़्स के पास गया जो पहले गन्जा था उस से भी अल्लाह तआला

के नाम पर सवाल किया, उस शख़्स ने भी देने से इनकार कर दिया और कोढ़ी शख़्स की तरह कहने लगा मैं क़ब गन्जा था मैं तो पैदाइशी ख़ूबसूरत और तन्दुरुस्त हूँ और मेरा माल तो बाप, दादा से चला आ रहा है मैं कभी ग़रीब व मुफ़लिस था ही नहीं। फ़रिश्ते ने कहा अल्लाह तआला तुझे वैसा ही कर दे जैसा तू पहले था, वह शख़्स पहले की तरह गन्जा व मोहताज व कंगाल हो गया। फिर फ़रिश्ता उस शख़्स के पास पहुँचा जो पहले अन्धा था और सवाल किया : أَسْئَلُكَ الَّذِي رَدَّ عَلَيْكَ الْبَصَرَ وَشَاةً

यानी फ़रिश्ते ने कहा मैं तुझ से उस अल्लाह तआला के नाम पर सवाल करता हूँ जिस ने तुझे आँखें दीं, मुझे एक बकरी देदे तो वह शख़्स जो पहले अन्धा था कहने लगा बे शक मैं पहले अन्धा था अल्लाह तआला ने मुझे बीनाई अता की और आँख वाला बनाया तो ऐ साइल एक बकरी की बात नहीं है तू मेरे माल में से जितना चाहे ले ले और जितना चाहे छोड़ दे। अल्लाह तआला की क़सम ! आज तू जो कुछ भी मेरे अल्लाह तआला के नाम पर लेगा मैं दे दूँग उस पर फ़रिश्ते ने कहा। आज तुम सब का इम्तिहान व आज़माइश की गई :

فَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْكَ وَسَخِطَ عَنْ صَاحِبَيْكَ

बे शक अल्लाह तअला तुझ से राज़ी हो और तेरे दो साथियों से नाराज़ हुआ।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 492, मुस्लिम, मिश्कात, स. 166)

ऐ ईमान वालो ! बुख़ारी शरीफ़ मुस्लिम शरीफ़ की हदीस शरीफ़ जो बयान की गई उस से पता चला और मालूम हुआ कि अल्लाह तआला जो नेअमत व दौलत अता फ़रमाए तो उस का शुक्र अदा करना चाहिये और पिछली हालत को भूलना नहीं चाहिये वर्ना बहुत बड़ा ख़सारा व नुक़सान उठाना पड़ सकता है और अल्लाह तआला की दी हुई नेअमत व दौलत में जो ग़रीबों का हक़ है यानी ज़कात व सदक़ा उस को मुकम्मल अदा कर देना चाहिये वर्ना माल व मालदार दोनों के लिये हलाकत व बरबादी हो सकती है हर मालदार व अमीर मुसलमान को चाहिये कि वह अल्लाह तआला की मख़लूक़ से महब्बत करे, अपने माल से उन की मदद और ख़िदमत करे और उन की दुआएं ले हर मांगने वाले, को एक जैसा नहीं समझना चाहिये। मालूम नहीं कि दरवाज़े पर साइल व फ़क़ीर की शक्ल में कौन खड़ा है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक : وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ (पारा 30, रुकू 18)

हदीस शरीफ़ : हज़रत उम्मे बजीद रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है वह फ़रमाती हैं कि मैंने अपने प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि जब कोई ग़रीब शख़्स मेरे दरवाज़े पर खड़ा होता है अगर मेरे घर में कोई चीज़ न हो तो मुझे शर्म आती है (यानी शर्म इस लिये करती हूँ कि फ़क़ीर को देने की कोई चीज मेरे पास नहीं है) तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِدْفَعْ يَدَهُ وَلَوْ ظِلْفًا مُحَرَّقًا

यानी उस के हाथ में कुछ दे दो अगरचेह जली हुई खुर ही हो। (मिश्कात शरीफ़, स. 166)

ऐ ईमान वालो ! हदीसे पाक का मतलब खूब ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला केनाम पर मांगने वाले को ख़ाली हाथ न लोटाओ। ज़्यादा नहीं दे सकते तो कुछ न कुछ ज़रूर दे कर भेजो। खास कर ज़कात तो फ़र्ज़ है उसे हर हाल में अदा करना है। ज़कात का अदा न करना ग़ज़बे इलाही को दावत देता है।

ऐ ईमान वालो ! बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की मुत्तफ़क़ अलैह हदीसे पाक जो अभी मैं ने आप हज़रात को सुनाई और आप हज़रात ने सुनी इस हदीसे पाक से साफ़ साफ़ ज़ाहिर हो गया और मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के फ़रिश्ते का हाथ लगा तो कोढ़ी का कोढ़पन और गन्जे का गन्जा पन और अन्धे का अन्धा पन दूर हो गया और वह तीनों बीमारी से नजात पाकर सेहत मन्द व तन्दुरुस्त हो गए और फ़रिश्ते की दुआ की बरकत से तीनों आदमी मालदार व ग़नी हो गए। पस हम ईमान वाले अल्लाह तआला की बरकत व रहमत फ़ज़्लो करम और नेअमत व दौलत के मिलने का ज़रीआ जान गए कि अल्लाह तआला का फ़ज़्लो करम उसी वक़्त मिलेगा जब किसी अल्लाह तआला के नेक बन्दे का हाथ हमारे लिये उठ जाए। हाथ अल्लाह वाले का होगा और फ़ज़्लो करम अल्लाह तआला का होगा। यही तवज्जोह है कि हम सुन्नी मुसलमान अल्लाह वालों के दर पर हाज़री देते हैं क़भी अजमेर शरीफ़ हाज़िर होते हैं कि हाथ हिन्द के राजा हमारे ख़्वाजा का होगा और करम अल्लाह तआला का होगा। बड़े पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ग्यारहवीं शरीफ़ करते हैं कि हाथ हमारे पीर दस्तगीर का होगा और करम अल्लाह तआला का होगा। सरकार इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का खिचड़ा पकाते हैं और उन के नाम की सबील लगाते हैं कि हाथ शहीदे आज़म, इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का होगा और करम अल्लाह तआला का होगा। मेहफ़िले मीलादे पाक मुनअक़िद करते हैं और दुरूदो सलाम पढ़ते खूब नअत सुनते और सुनाते हैं और हम पर तक़दीर ऐहसान करे मदीना मुनव्वरा अपने सरकार, नबिये मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुज़ूर हाज़िर हों कि हमारे प्यारे आक़ा, शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नूरानी हाथ (दस्ते करम) उठे और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम, नेअमत व दौलत से हमारा बेड़ा पार कर दे। हाथ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का होगा और करम अल्लाह तआला का होगा।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बेहरे समाहत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के नबी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने भाइयों के ज़रीए जब पता चला और मालूम हुआ कि मेरे बाप अल्लाह तआला के नबी हज़रत याक़ूब

अलैहिस्सलाम की आँखें मेरे फ़िराक़ और जुदाई में रोते, रोते सफ़ेद हो गई हैं यानी आँखों से देखना बन्द हो गया है तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो कुरआने करीम बयान करता है :

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج

तर्जमा : मेरा यह कुर्ता ले जाओ इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आँखें खुल जाएंगी।

(पारा 13, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं जिस को कुरआन मजीद बयान करता है।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक :

وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ج

तर्जमा : और मैं शिफ़ा देता हूँ मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मैं मुरदे जिला देता हूँ अल्लाह के हुक्म से। (पारा 3, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! अपने ईमान को ताज़ा करो ! और ख़ूब मज़बूत कर लो और भरपूर यक़ीन कर लो कि हम अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा कितना हक़ और सच है जिस की ताईद व तस्दीक़ अल्लाह तआला का कलाम कुरआने मजीद करता नज़र आता है। हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का कुर्ता जब हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने अपने चेहरे पर डाला तो हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की आँखें रौशन हो गई और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मैं अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा देता हूँ और मुर्दे को ज़िन्दा करता हूँ तो ख़ूब सोच कर और समझ कर फ़ैसला करो कि हमारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बल्कि तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के इमाम व नबी हैं तो हमारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पैरहन शरीफ़, जुब्बा शरीफ़, अगर किसी अन्धे या किसी क़िस्म के बीमार के जिस्म से लग जाए तो बीमार का आलम क्या होगा और शिफ़ा झूम कर आएगी और बीमार की ज़ाहिरी बीमारी ही नहीं बल्कि बातिनी मर्ज़ भी शिफ़ायाब होता नज़र आएगा।

प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

शाफ़ी व नाफ़ी हो तुम, काफ़ी व वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं और इस बात को अल्लाह तआला कुरआने करीम में बयान करता है कि मैं अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देता हूँ और मैं मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ अब

वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, जवाब दें कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर उन का क्या हुक्म और फ़तवा है क्यों कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं शिफ़ा देता हूँ मैं ज़िन्दा करता हूँ मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बीमारों को शिफ़ा देते हैं और मुर्दों को भी ज़िन्दा फ़रमाते हैं। अब मैं यहाँ पर एक बात अर्ज़ करता चलूँ कि बीमार जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास जाएगा और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मदद मांगेगा तो शिफ़ा और मदद मिलेगी, तो गोया नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास जाना भी ज़रूरी और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मददगार मानना भी लाज़िम व ज़रूरी हुआ। इसी लिये हम ईमान वाले सुन्नी मुसलमान अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में हाज़िर होते हैं और मदद के लिये या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम भी पुकारते हैं।

बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह ! कहा फिर तुझ को क्या

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मैं शिफ़ा देता हूँ ज़िन्दा करता हूँ, तो वहाबी, देवबन्दी कहे कि अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और बीमारों को शिफ़ा देते हैं तो हम ईमान वाले सुन्नी मुसलमानों का भी यही अक़ीदा है और हम यही कहते हैं कि हमारे नबी अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी अल्लाह के हुक्म और अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से ही हमारे ज़ाहिर व बातिन की बीमारियों को शिफ़ा देते हैं और हमारे मुर्दा दिलों को ज़िन्दा फ़रमाते हैं। मगर हमारा मुख़ालिफ़ बड़ा मक्कार व अय्यार है वह तो अम्बियाए किराम और औलियाए इज़ाम अलैहिमुस्सलाम को हर हाल में मोहताज व बे इख़्तियार और लाचार मानता है और अपनी किताबों में भी लिखता है जैसा कि :

पेशवाए वहाबिया, मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब तक़वीयतुल ईमान, स. 70 पर लिखा कि जिस का नाम मुहम्मद या अली हो वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। मआज़ल्लाह तआला मगर हमारे मुख़ालिफ़ को यहाँ पर यह ख़याल नहीं आया कि अल्लाह तआला के हुक्म से हमारे नबी अल्लाह तआला के महबूब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम, सय्यिदुल औलिया, हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मालिको मुख़्तार हो सकते हैं मगर सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जवाब देते हैं और अपनी गुलामी का इज़हार भी फ़रमाते हैं :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

ऐ ईमान वालो ! होशियार, होशियार, ख़बरदार, ख़बरदार कभी भी उन के जाल में न आ

जाना, हमारा मुख़ालिफ़ बड़ा अय्यार व मक्कार है उस की घुट्टी में दग़ा व फ़रेब और अम्बिया व औलिया की अदावत व दुश्मनी ख़ूब भरी पड़ी है।

इसी लिये तो हमारे ईमान व अक़ीदा के मुहाफ़िज़ प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(९)

रमज़ानुल मुबारक

चौथा जुमा .... पहला बयान

फ़ज़ाइले सदक़ात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ

तर्जमा : उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उस दाना की तरह जिस में उगाईं सात बालें, हर बाल में सो दाने, और अल्लहा उस से भी ज़्यादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुसअत वाला इल्म वाला है। (पारा 3, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुझे यही पसन्द है कि तीन रातें न गुज़रने पाएं और उस में का कुछ मेरे पास रह जाए यानी सारा सोना तीन रात के गुज़रने से पहले मैं ग़रीबों, फ़क़ीरों में बांट दूँगा। हाँ मुझ पर कुछ क़र्ज़ हो तो उस के लिये कुछ रख लूँगा।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 2, स. 954, मुस्लिम, जि. 1, स. 320)

ख़र्च करो हिसाब न करो

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अस्मा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया ख़र्च कर और शुमार न कर, कि अल्लाह तआला शुमार करके देगा और बन्द न कर कि अल्लाह तआला भी तुझ पर बन्द कर देगा कुछ दे जो तेरी ताक़त हो। (बुख़ारी व मुस्लिम, जि. 1, स. 331)

सदक़ा बला पर भारी है

हदीस शरीफ़ : रज़ीन ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया सदक़ा देने में ज़लदी करो कि बला सदक़ा को नहीं फलांगती है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जि. 2, स. 20, मिश्कात, जि. 1, स. 167)

अच्छी बात भी सदक़ा है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया दो आदमियों में अद्ल यानी सुलह कराना सदक़ा है। किसी को जानवर (यानी सवारी) पर सवार होने में मदद करना और उस का सामान उठा देना सदक़ा है और अच्छी बात सदक़ा है और जो क़दम नमाज़ की तरफ़ चलेगा सदक़ा है और रास्ता से अज़ियत (यानी तकलीफ़ वाली) चीज़ दूर कर देना सदक़ा है। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 2, स. 15)

दरख़्त लगाना सदक़ा है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान दरख़्त लगाए या खेत बोए उस में से किसी आदमी या परिन्दा या किसी जानवर ने खाया वह सब उस शख़्स के लिये सदक़ा है। (बुख़ारी व मुस्लिम, जि. 2, स. 15)

भूले को राह बताना सदक़ा है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी सदक़ा है नेक बात का हुक्म करना सदक़ा है। बुरी बात से मना करना सदक़ा है राह भूले हुए को राह बताना सदक़ा है। कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना सदक़ा है। रास्ता से पत्थर, कांटा, हड्डी दूर करना सदक़ा है अपने बरतन में से अपने भाई के बरतन में पानी डाल देना सदक़ा है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 17)

सदक़ा अल्लाह तआला के ग़ज़ब को ठन्डा कर देता है

हदीस शरीफ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, सदक़ा अल्लाह तआला के ग़ज़ब को ठन्डा कर देता है और बुरी मौत को टाल देता है।

(तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 144, व इब्ने हब्यान, जि. 5, स. 131)

पहाड़ से ज़्यादा वज़न दार सदक़ा है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जब अल्लाह तआला ने ज़मीन पैदा फ़रमाई तो उस ने हिलना शुरू किया तो पहाड़ पैदा फ़रमा कर उस पर नसब कर दिया तो ज़मीन ठहर गई, फ़रिश्तों को पहाड़ की सख़्ती देख कर तअज्जुब हुआ, अर्ज़ किया ऐ अल्लाह तआला तेरी मख़लूक़ में कोई चीज़ है जो पहाड़ से ज़्यादा सख़्त है ? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया हाँ लोहा है। तो फ़रिश्तों ने अर्ज़ की लौहे से ज़्यादा कोई चीज़ सख़्त है ? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया हाँ आग है। फ़रिश्तों ने अर्ज़ की आग से ज़्यादा भी कोई चीज़ सख़्त है तो फ़रमाया हाँ पानी है, फिर फ़रिश्तों ने अर्ज़ की पानी से ज़्यादा कोई चीज़ सख़्त है तो फ़रमाया हाँ हवा है फिर फ़रिश्तों ने अर्ज़ की हवा से ज़्यादा कोई चीज़ सख़्त है तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया हाँ इब्ने आदम (अलैहिस्सलाम) का दाहिने हाथ से सदक़ा करना कि उसे बाएं हाथ से छुपाता है। (तिर्मिज़ी शरीफ, मिश्कात, स 170)

सदक़ा गुनाहों को मिटा देता है

हदीस शरीफ़ : हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, सदक़ा गुनाहों को ऐसे दूर करता है जैसे पानी आग को बुझाता है। (इमाम अहमद, इब्ने माजह, स. 310, तिर्मिज़ी)

घर वालों पर ख़र्च करना सदक़ा है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, मुसलमान जो कुछ अपने अहल (यानी बाल बच्चों) पर ख़र्च करता है अगर सवाब के लिये है तो यह भी सदक़ा है। (मगर शरीअत की पाबन्दी के साथ ख़र्च हो)

(बुख़ारी, जि. 2, स. 805, मुस्लिम, जि. 1, स. 324)

हराम माल सदक़ा नहीं, गुनाह है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा मालिके शरीअत (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने फ़रमाया,

जिस शख्स ने हराम माल जमा किया फिर उसे सदक़ा किया उस में उस के लिये कुछ सवाब नहीं बल्कि गुनाह है। (इब्ने खुज़ैमा, इब्ने हब्बान, जि. 5, स. 152, हाकिम)

कम माल वाले का सदक़ा अफ़ज़ल है

हदीस शरीफ़ : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, कम मायह (यानी थोड़ी दौलत) वाले शख्स का सदक़ा कि वह शख्स कोशिश करके सदक़ा देता है। (अबू दाऊद, जि. 1, स. 236, इब्ने खुज़ैमा, हाकिम)

एक रुपया, लाख रुपये से बढ़ कर है

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, एक दिरहम लाख दिरहम से अफ़ज़ल है, अर्ज़ किया गया, ऐसा क्यों है, या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम तो फ़रमाया एक शख्स के पास माल कसीर है उस ने उस में से लाख दिरहम सदक़ा किया (और अभी उस के पास लाखों दिरहम मौजूद हैं) और एक शख्स के पास सिर्फ़ दो (यानी दो रुपया) हैं उस ने उस में से एक दिरहम सदक़ा कर दिया (और अब सिर्फ़ एक ही बाक़ी है इस लिये उस शख्स का सदक़ा अफ़ज़ल है। (नसाई, जि. 5, स. 271, इब्ने खुज़ैमा, इब्ने हब्बान, जि. 5, स. 144)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की बारगाह में वह बन्दा बड़ा महबूब व मक़बूल है जो बन्दा मुकम्मल ज़कात अदा करके अपने माल को हर बला व मुसीबत से महफ़ूज़ कर लेता है और वह बन्दा जो सदक़ा करता है तो सदक़ा करने से रोज़ी में इज़ाफ़ा होता है और माल व दौलत में बरकत होती है, सदक़ा गुनाहों को मिटा देता है, सदक़ा मौत की सख्ती को दूर कर देता है।

सदक़ा बला व बीमारी को दफ़ा करता है

सदक़ा आदमी की उम्र को बढ़ा देता है, सदक़ा दुश्मन से बचने का बेहतरीन ज़रीआ है। सदक़ा बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज है।

सदक़ा से बच्चा अच्छा हो गया

एक दिन का वाक़िआ है कि अल्लाह तआला के वली, मेरे मुर्शिद आलिमे बा अमल, हज़रत मौलाना बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़वी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुझ से (अनवार अहमद क़ादरी) से फ़रमाया, मेरे साथ चलो एक बीमार की तीमार दारी के लिये चलना है।। मुर्शिदे कामिल का हुक्म था, हम हज़रत बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा के साथ रवाना हुए। उस घर पहुँचे जहाँ बचा सख्त बीमारी में मुब्तला है। बचा एक बड़ी बला व मुसीबत में घिरा हुआ है बचा मौत के मुंह में है कि देखने वाला ख़ुद परेशान हो जाए। हज़रत बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा का हुक्म हुआ, सदक़ा के लिये जानवर लाया जाए, एक

तन्दुरुसत बकरा हाज़िर किया गया, बच्चा का हाथ बकरे पर लगाया गया और हज़रत बदरे मिल्लत अलैहिर्रहमा के रू बरू बकरा ज़िबह किया गया, इधर बकरा ज़िबह हुआ, उधर बच्चा पुर सुकून हो कर मुस्कुराने लगा और फिर वह बच्चा मुकम्मल तन्दुरुस्त हो गया।

हज़रात ! यह है सदक़ा की बरकत। कि सदक़ा से बढ़ कर बला व बीमारी का कोई इलाज नहीं

ग़रीब की मदद करने से हज मक़बूल का सवाब मिलता है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं वह हज की सआदत हासिल करने के लिये मक्का मुअज़्ज़मा हाज़िर हुए, हज से फ़ारिग़ हो कर हरम शरीफ़ में बैठे थे कि नीन्द लग गई तो ख़्वाब में देखा कि दो फ़रिश्ते आसमान से नाज़िल हुए और एक दूसरे से गुफ़्तुगू करने लगे, एक ने कहा कि इस साल कितने लोगों ने हज की सआदत हासिल की है। दसूरे फ़रिश्ते ने कहा छः लाख लोगों ने फ़रीज़ए हज अदा किया, फिर फ़रिश्ते ने कहा कि इस साल कितने लोगों क़ा हज क़ुबूल हुआ, तो दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया किसी एक का भी हज क़ुबूल नहीं हुआ है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सुना तो बे चैन व बे क़रार हो गए और ख़याल किया कि छः लाख लोग मक्का में दूर दराज़ से हज के लिये आए, लेकिन किसी एक का भी हज क़ुबूल नहीं हुआ ? अभी यह सोच ही रहे थे कि फ़रिश्ते ने कहा कि दमिश्क़ में एक शख़्स है जो जूते सिलने का काम करता है, जिस का नाम अली बिन अल मवाफ़िक़ है वह हज पर नहीं आया मगर उस को हज्जे मक़बूल का सवाब दिया गया है और अल्लाह तआला ने उस की वजह से छः लाख हाजियों क़ा हज क़ुबूल कर लिया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब ख़्वाब से बेदार हुए तो शौक़ पैदा हुआ कि उस शख़्स से मिला जाए और ऐसे मक़बूल शख़्स की ज़ियारत की जाए जिस की वजह से छः लाख हाजियों का हज क़ुबूल हुआ है। हज़रत अब्दुल्लाहबिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दमिश्क़ के सफ़र के लिये ज़ादे राह बांधा और उस शख़्स की मुलाक़ात के लिये चल पड़े। जब आप दमिश्क़ पहुँचे तो पता मालूम करके अली बिन अल मवाफ़िक़ के घर पहुँचे और उन से मुलाक़ात की और अपना वह ख़्वाब जो मक्का शरीफ़ में देखा था बयान किया और सवाल किया कि आप का वह कौन सा नेक अमल है जिस की वजह से अल्लाह तआला ने आप को हज्जे मक़बूल का सवाब अता किया और आप के तुफ़ैल छः लाख लोगों का हज क़ुबूल कर लिया गया, यह सवाल सुन कर अली बिन अल मवाफ़िक़ की चीख़ निकल गई और बे होश हो गए जब होश आया तो बताने लगे कि ऐ अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुझे एक अर्सा, तीन साल से हज की तमन्ना थी और मैं जूते सिल कर और मरम्मत कर के हलाल रोज़ी कमाता और उस हलाल रोज़ी में से बचा बचा कर तीन सो दिरहम जमा किये थे और मैं ने जब हज की तय्यारी की, कि सुबह क़ाफ़ला के साथ हज व ज़ियारते हरमैन तैय्यिबैन के लिये जाना है उसी रात की बात है, मेरी बीवी

हामिला है उस की ख़्वाहिश हुई कि गोश्त खाएं और पड़ोसी के घर गोश्त बना था जिस की खुश्बू मेरे घर में आ रही थी, मैं अपनी बीवी की ख़्वाहिश पूरी करने के लिये पड़ोसी के घर गया, कि तुम्हारे घर में गोश्त बना है, मेरी बीवी हामिला है उस की ख़्वाहिश है कि मैं गोश्त खाऊँगी। तो मुझे पके हुए गोश्त में से थोड़ा गोश्त दे दे ताकि मेरी बीवी की ख़्वाहिश पूरी हो जाए, मेरा इतना कहना था कि मेरा पड़ोसी रोने लगा और उस ने अपना राज़ ज़ाहिर किया कि हफ़्ता हो गया है मेरे घर चूल्हा नहीं जला, मेरे बच्चे भूक से बिलक रहे थे, मौत सामने नज़र आ रही थी, बच्चों को मौत से बचाने के लिये मैं शहर के बाहर गया जहाँ मरे हुए जानवर डाले जाते हैं एक गधा को देखा जो मरा हुआ पड़ा था, उस के जिस्म से कुछ गोश्त काट कर लाया हूँ और उसे पकाया है ताकि मेरे बच्चों की जान बच जाए, यह गोश्त मेरे लिये हलाल है मगर तुम्हारे लिये हराम है, यह सब सुन कर और अपनी आँखों से देख कर मैं अपने घर आया और वह रक़म जो मैं ने तीन साल में हज के लिये जमा किया था वह सब रक़म तीन सो रुपये अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिये और एक ग़रीब मुसलमान की बेकसी व परेशानी दूर करने के लिये अपने पड़ोसी को दे दिये यही हमारा अमल है, यही हमारी नेकी है जिसे अल्लाह तआला ने कुबूल फ़रमा लिया है। (तजकिरतुल औलिया)

ज़कात किस को दी जाए

बहारे शरीअत हिस्सा 5, पर है कि ज़कात के मसारिफ़ सात हैं। तफ़सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअत का मुतालआ कीजिये, सात मसारिफ़ जिन में से एक फ़कीर है, दूसरा मिस्कीन।

(1) फ़कीर जो एक वक़्त का खाना खा ले तो दूसरे वक़्त के लिये इन्तिज़ाम हो।

(2) मिस्कीन : वह शख़्स है जिस के पास एक वक़्त का खाना है लेकिन दूसरे वक़्तके लिये इन्तिज़ाम नहीं और कुछ अस्बाब भी न हो जिस से इन्तिज़ाम हो सके। इसी लिये मिस्कीन को सवाल करने की इजाजत है। लेकिन फ़क़ीर को सवाल करने की इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअत)

ऐ ईमान वालो ! ज़कात व सदक़ा कितना महबूब अमल है जिस से अल्लाह तआला राज़ी हो कर ज़कात देने वले और सदक़ा करने वाले को जन्नत का मुस्तहिक़ बना देता है और ज़कात व सदक़ा के ज़रीए वह हमारे भाई जो ग़रीब हैं उन की मदद हो जाती है जिस से ग़रीब मुसलमानों की दुआएं मिलती हैं, रोज़ी बढ़ती है, बला व बीमारी टल जाती है लेकिन हम पर ज़कात अदा करना जहाँ वाजिब है वहाँ यह देखना भी बहुत ज़रूरी है कि हमारी ज़कात मुस्तहिक़ तक पहुँचती है या नहीं हम जिस को ज़कात दे रहे हैं वह ज़कात का मुस्तहिक़ है या नहीं। अकसर देखने में आया है कि घर में रंगीन टी वी है, ख़ूब ठाट बाट है मगर ज़कात ले रहे हैं नमाज़ पढ़ते नहीं, रोज़ा रखते नहीं वह लोग भी ज़कात मांगते फिरते हैं ऐसों को ज़कात व सदक़ात देना अपनी ज़कात व सदक़ात के सवाब को ज़ाए करना है।

ज़कात देने की सब से बेहतर जगह

मदारिसे इस्लामिया में जहाँ मुसलमानों के होनहार बच्चे क़ुरआन व हदीस की तालीम हासिल कर के हाफ़िज़े क़ुरआन और आलिमे दीन बन कर आलमे इस्लाम में पैग़ामे क़ुरआन व हदीस पहुँचाने का फ़रीज़ा अन्जाम देते हैं अगर आप की ज़कात की रक़म ऐसी जगह लगी है तो आप बड़े ख़ुश नसीब हैं जो सवाबे जारिया के मुस्तहिक़ बन जाएंगे। जिस का सवाब क़ियामत तक जारी रहेगा और कभी ख़त्म न होगा। मुसलमानों का वह तबक़ा जो साहिबे सरवत व दौलत है ऐसे लोग अपने बच्चों को हाफ़िज़ व आलिम नहीं बनाते, अगर किसी अमीर का बच्चा हाफ़िज़ या आलिम बन गया है तो ख़ुदाए तआला का इनआम कहा जाएगा। मदरसे में पढ़ने वाले अकसर तलबा ग़रीब या यतीम होते हैं अगर आप की मदद मदरसे में ज़कात व सदक़ा या अतिया की रक़म से होगी ? तो आप को मालूम होना चाहिये कि उस के सवाब की कोई मिक़दार नहीं है, आप को खाना, खिलाने का पानी पिलाने का सवाब, कपड़े पहनाने का सवाब बीमारी के इलाज का सवाब और यह बच्चे मेहमाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं उन की ख़िदमत का सवाब और सब से बड़ा अज्रो सवाब यह होगा कि आप की मदद व तआवुन से मदरसे के तलबा हाफ़िज़े क़ुरआन और आलिमे दीन बन रहे हैं जिस का अज्रो सवाब कभी ख़त्म न होगा, बे शुमार मिसालें मौजूद हैं ऐसे लोगों की जिन्होंने मदरसे के साथ महब्बत की और मेहमानाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तलबा के साथ मदद व ख़िदमत की उन की दौलत व इज़्ज़त में अल्लाह तआला ने इज़ाफ़ा फ़रमाया और उन की आने वाली नस्लें भी नेअमत व दौलत से मालामाल रहीं हैं।

लिहाज़ा ! मेरी गुज़ारिश है और वक़्त का तक़ाज़ा भी है कि हम मुसलमान अपने माल व दौलत की ज़कात का अकसर हिस्सा मदारिसे इस्लामिया में देकर इस्लाम व सुन्नियत को मज़बूत बनाएं और क़ुरआन व हदीस की तालीम को घर घर पहुँचाने में मदद करें और उस हदीस शरीफ़ के मिस्दाक़ बन जाएं। मेरे आक़ा प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : जिस शख़्स ने मेरी एक हदीस दूसरे तक पहुँचाई या पहुँचाने वाले की मदद की वह शख़्स जन्नत में मेरे साथ होगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(9)

रमज़ानुल मुबारक

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

शबे क़द्र की फ़ज़ीलत व बरकत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝
تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

तर्जमा : बे शक हम ने उसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना, क्या शबे क़द्र, शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, उस में फ़रिश्ते और जिब्राईल उतरते हैं, अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये, वह सलामती है सबह चमकने तक। (पारा 30, रुकू 22, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने ख़ुद इस रात का नाम लैलतुल क़द्र रखा, यानी अज़मत व बलन्दी वाली रात, क्यों कि इस रात में अज़मत वाले रब तआला का अज़मत वाला कलाम, कुरआने मजीद, अल्लाह तआला के अजमत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नाज़िल हुआ और यह उम्मत भी बड़ी अज़मत वाली हो गई जिस ने अज़मत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और अज़मत वाले कुरआने मजीद से महब्बत किया और उन के फ़रमान पर अमल किया।

क़ुरआने मजीद ने ख़ुद ही इस रात की क़द्र व मन्ज़िलत और अज़मत व बुज़ुर्गी के बारे में बयान फ़रमाया कि यह रात कितनी अज़मत व बरकत वाली है कि उस रात की इबादत का सवाब, इबादत करने वाले को एक हज़ार महीनों यानी तिरासी साल चार माह से ज़्यादा इबादत का सवाब अता किया जाता है। इस एक रात में इबादत, तौबह व इस्तिग़फ़ार और दुआ करने से अल्लाह तआला अपने बन्दे को जो सवाब व नेकी और इज़्ज़त व अज़मत, बरकत व रहमत अता फ़रमाता है वह हज़ार महीनों की इबादत व मेहनत से नसीब नहीं हो सकता।

हज़रत अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह ने सूरए क़द्र की शाने नुज़ूल इस तरह बयान फ़रमाया, कि हमारे हुज़ूर नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी उम्मत और पहली उम्मतों क़ी उम्रों में मुवाज़ना किया तो मालूम हुआ कि पहली उम्मतों की उम्रें ज़्यादा और तवील थीं, और मेरी उम्मत की उम्र बहुत मुख़्तसर और छोटी है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ल्बे मुबारक में ख़याल आया कि पहली उम्मतों क़ी उम्रें ज़्यादा थीं, तो उन की नेकियाँ भी ज़्यादा हों गी और मेरी उम्मत की उम्र कम है तो नेकियाँ भी कम होंगी, गोया मेरी उम्मत की नेकी पहली उम्मतों की नेकी के बराबर नहीं हो सकती इस लिये कि उन की उम्रें ज़्यादा हैं तो नेकी भी ज़्यादा होंगी। पस इस ख़याले उम्मत में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चेहरए मुबारक का रंग बदल गया और चेहरए अनवर से रन्ज व ग़म के आसार नमूदार हो गए। तो अल्लाह तआला की रहमत को गवारा न हुआ कि मेरा प्यारा हबीब उम्मत का तबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी उम्मत के ग़म में रन्जीदा और कबीदा ख़ातिर रहे इस लिये सूरए क़द्र को नाज़िल फ़रमाया। (तफ़सीरे अज़ीज़ी, पारा 30)

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ۝ وَمَآ أَدْرَىٰكَ مَا لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ ۝ لَيْلَةُ ٱلْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۝

تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ۝ سَلَٰمٌ هِىَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ ٱلْفَجْرِ ۝

तर्जमा : बेशक हम ने उसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र, शबे क़द्र हजार महीनों से बेहतर, इस में फ़रिश्ते और जिब्रईल उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये वह सलामती है सुबह चमकने तक। (पारा 30, रुकू 22, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

शबे क़द्र में क़ुरआने मजीद का नुज़ूल

क़ुरआने मजीद लोहे म,हफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर शबे क़द्र में नाज़िल हुआ, हज़ार महीने तक इबादत करने का जो सवाब है इस से ज़्यादा शबे क़द्र में इबादत करने का सवाब है। अल्लाह तआला के हुक्म से रूहुल अमीन हज़रत जिब्रईले अमीन अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों की जमाअत के साथ उतरते हैं ताकि शबे क़द्र में इबादत करने वालों को फ़रिश्ते ख़ैर व बरकत से नवाज़ें और इबादत करने वाले बन्दों पर सलाम भेजें और हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों की जमाअत के साथ शबे क़द्र में इबादत करने वाले बन्दों के हक़ में दुआए ख़ैर करते हैं और यह बरकत व रहमत का सिलसिला उस रात शाम से सुबह तक जारी रहता है।

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम, आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब शबे क़द्र होती है तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों की जमाअत के साथ उतरते हैं और हर उस शख़्स पर जो खड़ा हो कर या बैठ कर अल्लाह तआला का ज़िक्र कर रहा हो उस पर रहमतें भेजते हैं यानी उस शख़्स के लिये रहमत की दुआ फ़रमाते हैं। (मिश्कात शरीफ, 182, बैहक़ी)

शबे क़द्र में तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम माहे नुबुव्वत आफ़ताबे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जो बन्दा शबे क़द्र में ईमान व इख़्लास के साथ इबादत करे तो उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 270, मुस्लिम शरीफ)

आम बख़्शिश का ऐलान

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब शबे क़द्र आती है तो अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत जिब्राईले अमीन एक सब्ज़ झन्डा लिये फ़रिश्तों की जमाअत के साथ ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाते हैं और उस सब्ज़ झन्डा को कअ़बा मुअज़्ज़मा पर नसब फ़रमा देते हैं। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम के सो बाज़ू है जिन में से दो बाज़ू सिर्फ़ शबे क़द्र में ख़ोलते हैं वह बाज़ू मशरिक़ व मग़रिब में फ़ैल जाते हैं फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि जो कोई मुसलमान आज की रात क़याम करे या नमाज पढ़ रहा हो या ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल है। ऐ फ़रिश्तो ! उस शख़्स से सलाम व मुसाफ़हा करो और उन की दुआओं पर आमीन कहो और सुबह तक यह सिलसिला जारी रहता है। सुबह होने पर हजरत जिब्राईल अलैहिस्सलाम तमाम फ़रिश्तों को वापस चलने का हुक्म फ़रमाते हैं तो फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं ऐ हमारे सरदार हज़रत जिब्राईल ! अल्लाह तआला ने अपने प्यारे महबूब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत के मुआमलात के बारे में क्या किया ? तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम जवाब देते हैं कि अल्लाह तआला ने उन लोगों पर अपनी ख़ास नज़रे करम फ़रमाई और चार क़िस्म के लोगों के अलावा तमाम लोगों को मुआफ़ फ़रमा दिया। हज़रात सहाबाए किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह चार क़िस्म के लोग कौन हैं तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया (एक) वह शख़्स है जो शराब का आदी है (दूसरा) वह शख़्स है जो मां, बाप का ना फ़रमान है (तीसरा) वह शख़्स है जो क़तअ रहमी करने वाला (यानी रिश्ते दारों से रिश्ता तोड़ने वाला (चौथा) वह शख़्स है

(2) जो लोग ख़ूने नाहक़ करते हैं (3) रिश्तेदारों से रिश्ता तोड़ने वाले (4) कब्रिस्तान में जाकर हंसने वाले (5) इस की बात उस को और उस की बात उस को कर के लड़ाने वाले (6) दीनी उस्ताज़ को तकलीफ़ देने वाले (7) नमाज़ में सुस्ती करने वाले (8) तीन दिन से ज़्यादा मुसलमान भाई की तरफ़ कीना रखने वाले (9) बे ग़ुस्ल रहने वाले।

वह शख़्स महरूम है

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मरतबा जब रमज़ान शरीफ़ का महीना आया तो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे पास एक ऐसा महीना आया है जिस में एक रात (यानी शबे क़द्र) ऐसी भी है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है जो शख़्स उस रात से महरूम रहा, गोया तमाम भलाई से महरूम रहा और उस की (यानी शबे क़द्र) की भलाई से महरूम नहीं रहता मगर वह शख़्स जो हक़ीक़त में महरूम है। (इब्ने माजह शरीफ, स. 119)

ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

अल्लाह तआला के वली हज़रत शमऊन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वाक़िआ हमारे प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक मरतबा अपने सहाबा किराम अलैहिमुर्रहमतो वर्रिज़वान की बज़्मे महब्बत में बयान फ़रमाया कि बनी इसराईल में एक शख़्स बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार, अल्लाह तआला का वली था जिस का नाम शमऊन था। अल्लाह तआला के वली हज़रत शमऊन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़ार महीने इस तरह इबादत की कि रात को क़याम करते और दिन को रोज़ा रखते और अल्लाह तआला की राह में जिहाद भी करते थे हज़रत शमऊन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस क़दर ताक़तवर थे कि लोहे की मज़बूत ज़ंजीरों को अपने हाथों की ज़रा सी हरकत से तोड़ डालते थे, कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने जब देखा कि हज़रत शमऊन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हमारा कोई भी हरबा नहीं चल रहा है तो उन्होंने आप की बीवी को जो हददर्जा की मक्कार व चालाक थी बहुत सारे माल व दौलत की लालच देकर उसे अपने साथ मिला लिया, मुख़्तसर वाक़िआ यह है कि बद नसीब बीवी के ज़रीए काफ़िरों ने हज़रत शमऊन अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान को क़ैद कर के क़त्ल कर दिया और अल्लाह तआला ने अपने वली को शहादत का दरजा अता फ़रमाया और काफ़िरों पर अल्लाह तआला ने क़हर व ग़ज़ब नाज़िल फ़रमाया और उन्हें ज़मीन में धंसा दिया और दग़ा बाज़, बद नसीब बीवी पर क़हर व जलाल की ऐसी बिजली गिरी कि वह भी हलाक हो गई।

हज़राते सहाबए किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने जब अल्लाह तआला के वली हज़रत शमऊन अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान की हज़ार महीनों की इबादत व बन्दगी व तकालीफ़ और जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह का तज़किरा सुना तो बारगाहे रहमे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में अर्ज़ की, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व

आलिका वसल्लम हमें तो बहुत थोड़ी और कम उम्रें मिली हैं, लिहाज़ा हम हज़रत शमऊन अलैहिर्रहमा की तरह इबादत कर के नेकी व सवाब हासिल नहीं कर सकते यानी बनी इसराईल के नेकियों के बराबर आप की उम्मत नेकी नहीं पा सकती। बस इतना सुनना था कि हमारे करीम व रहीम आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़मगीन व रन्जीदा हो गए तो उसी वक़्त अल्लाह तआला ने सूरए क़द्र को नाज़िल फ़रमाया, और महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तसल्ली और ख़ुशख़बरी देदी गई कि मेरे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप बे चैन व रन्जीदा न हों,. आप की उम्मत को हम ने हर साल में एक रात ऐसी अता कर दी है जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। इस एक रात यानी शबे क़द्र में आप का उम्मती यानी आप का फ़रमां बरदार गुलाम मेरी इबादत करेगा तो मेरे वली शमऊन (अलैहिर्रहमा) के हज़ार महीनों की इबादत से ज़्यादा सवाब पाएगा।

ऐ ईमान वालो ! यह नूरानी वाक़िआ जो बयान किया गया उस में हमारे लिये हिदायतों के चश्मे उबल रहे हैं और नसीहतों की बे शुमार शम्एं जगमगा रही हैं।

पहली हिकमत : यह है कि जो इबादत, तकालीफ़ व मसाइब के साथ होती है, उसी इबादत से बन्दए मोमिन बलन्द मरतबे पर फ़ाइज़ होता है जैसे रात भर जाग कर और खड़े खड़े अल्लाह तआला के लिये इबादत करना और अगर यह नहीं तो इबादत तो हो जाएगी लेकिन मरतबा बलन्द कहाँ नसीब।

दूसरी हिकमत : यह है कि अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुश्मनों से लड़ना और जिहाद करना भी अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी का ज़रीआ है।

तीसरी हिकमत : यह है कि बन्दए मोमिन के लिये एतिमाद व भरोसा के लाइक़ ज़ात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ात है वर्ना धोका हो सकता है चाहे बद नसीब बीवी ही क्यों न हो। दुनिया की लालच और माल व दौलत के हिर्स में माज़ी क़रीब से माज़ी बईद तक बे शुमार औरतों को मुब्तला देखा गया है जिन्होंने अपने नेक और वली सिफ़त शोहरों से बे वफ़ाई कर के बद चलन और अय्याश दौलत मन्द के साथ रहना पसन्द किया है। बे वफ़ा बीवियाँ नेक और पारसा शोहरों के लिये आज़माइश व इम्तिहान का ज़रीआ बनें हैं। नेक बन्दों ने सब्र किया तो अल्लाह तआला ने उन को आला मन्ज़िल और बलन्द मक़ाम से सर फ़राज़ फ़रमाया और फिर अल्लाह तआला ने उन के फ़ैज़ व करम को आम और जारी व सारी कर दिया और बादे विसाल भी उन साबिर बन्दों का उर्स ख़ूब धूम से ख़ल्के ख़ुदा मनाती है और बे शुमार फ़ैज़ान से मालामाल होती है। और वह बे वफ़ा बीवी जिस ने अल्लाह वाले के साथ दग़ा व फ़रेब किया तो आप हज़रात ने सुना कि अल्लाह तआला की क़हर की बिजली गिरी जिस से वह हलाक व तबाह हो गई और अगर कोई बे वफ़ा औरत ज़िन्दा है तो उस की ज़िन्दगी एक जनाज़ा है बला

ने घेर रखा है जिस घर में क़दम रखा रहमत व बरकत गई। अब बला ही बला है। और मरने के बाद, अभी क़ब्र व क़यामत का अज़ाब बाक़ी है। लिहाज़ा औरत को चाहिये कि अपने शोहर के साथ किसी भी हाल में बे वफ़ाई और दग़ा न करे और अगर शोहर अल्लाह तआला का वली व नेक बन्दा है तो उस के साथ बे वफ़ाई और मक्कारी को अल्लाह तआला मुआफ़ नहीं फ़रमाता, जैसा कि एक रिवायत में आता है कि अल्लाह तआला अगर किसी बन्दा से नाराज़ हो जाए तो अल्लाह वाले अल्लाह तआला को राज़ी कर लेते हैं लेकिन नेक बन्दा यानी अल्लाह के वली जब किसी शख़्स से नाराज़ हो जाते हैं तो अल्लाह तआला भी उस बन्दे को मुआफ़ नहीं करता है।

चौथी हिकमत : यह है कि बन्दए मोमिन के लिये शबे क़द्र की इबादत हज़ार महीनों की इबादत से बढ़ कर है। यह सब सदक़ा है हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत का आपके उम्मती होने का, वर्ना पहली उम्मत के लोग भी तो अल्लाह तआला के बन्दे थे मगर अल्लाह तआला का फ़ैज़ व करम उन के लिये इस क़दर क्यों नहीं था। यह फ़ैज़ जूदो सख़ा महबूब रसूल, प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत का सदक़ा है कि काम व मेहनत सिर्फ़ एक रात की जाए और अज्रो सवाब यानी महनताना व मज़दूरी एक हज़ार साल के अमल से ज़्यादा दिया जाए यह सब रहमतें व बरकतें महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी की भीक है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

बद सही चोर सही मुजरिम व नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
दिले अबस ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हलका ही सही भारी है भरोसा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

ज़ईफ़ व कमज़ोर हज़रात भी कुछ लम्हे गुज़ारें

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने रमज़ान शरीफ़ की सत्ताईसवीं रात (शबे क़द्र) सुबह होने तक इबादत की वह मुझे रमज़ान शरीफ़ की तमाम रातों से ज़्यादा पसन्द है।

सय्यिदा, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा हज़रत फ़ातिमा ख़ातूने जन्नत रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की या रसूलल्लाह, सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम वह ज़ईफ़ व कमज़ोर मर्द और औरतें किस तरह इबादत करें जो क़याम पर क़ुदरत नहीं रखते (यानी खड़े होकर इबादत करने की ताक़त नहीं रखते) तो हमारे

सरकारे उम्मत के गमख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया वह हज़रात ताक़िया लगा लें यानी किसी चीज़ का सहारा ले लें, जिस से इबादत करने में आसानी हो जाए लेकिन उस मुबारक रात के कुछ लम्हे ज़रूर बैठ कर गुज़ारें, और अपने रब तआला की बारगाह में दुआ मांगें, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मगर यह बात मैं अपनी उम्मत के तमाम रमज़ान को क़याम में गुज़ारने से ज़्यादा महबूब रखता हूँ। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब)

शबे क़द्र ताक़ रातों में तलाश करो

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, शबे क़द्र को रमज़ान शरीफ़ के आख़री अशरा की ताक़ रातों यानी इक्कीसवीं और तेइसवीं और पचीसवीं और सताइसवीं और उन्तीसवीं रातों में तलाश करो।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 270, मुस्लिम शरीफ़)

सत्ताईसवीं रात ही शबे क़द्र है

हज़रत अबी बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शबे क़द्र के मुतअल्लिक़ हलफ़ उठा कर (यानी क़सम खाकर) कहा कि वह (यानी शबे क़द्र) सताईसवीं शब है। हज़रत ज़रीन ताबई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा किस दलील से आप कह रहे हैं कि वह (यानी शबे क़द्र) सताईसवीं रात है ? तो हज़रत अबी बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जो उस की अलामत बयान फ़रमाई है वह उसी रात में पाई जाती है। (मिश्कात शरीफ़)

शबे क़द्र कौन सी रात है ?

इस मुबारक रात के तअय्युन में हमारे अस्लाफ़ और उलमाए किराम के मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं जो चालीस के क़रीब हैं हर साल शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ के आख़री अशरा में ज़रूर होती है, मगर तारीख़ें बदलती रहती हैं और यह भी उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि उस रात के मुतअय्यन न करने में यह भी हिकमत है कि उस की तलाश में मुसलमान कम अज कम पाँच ताक़ रातों में अल्लाह तआला के ज़िक्र व इबादत में गुज़ारें। (तफ़सीरे मज़हरी)

हज़रत अल्लामा महमूद आलूसी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि उलमाए किराम की अकसरियत की राए यह है कि ताक़ रातों में से सत्ताइसवीं को शबे क़द्र होती है।

(रूहुल मआनी शरीफ़)

हमारे अस्लाफ़ के अक़वाल

अगरचेह बुज़ुरगाने दीन और मुफ़स्सेरीने किराम व मुहद्देसीने इज़ाम रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन का शबे क़द्र के तअय्युन के मुतअल्लिक़ बहुत इख़्तिलाफ़ है फिर

भी अकसरियत की राय यही है कि हर साल शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की सत्ताइसवीं शब को ही होती है।

सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बिन कअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, सहाबी इब्ने सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा इमामों के इमाम हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, पीरों के पीर, वलियों के सरदार अबुश्शैख़, अबू मुहम्मद सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और बे शुमार बुज़ुरगाने दीन व उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि शबे क़द्र रमज़ान शरीफ़ की सत्ताइसवीं रात ही को होती है। (तफ़सीरे अज़ीज़ी)

शबे क़द्र का इनआम

अमीरुल मोमिनीन मौलाए कायनात हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं ज़ो शख़्स शबे क़द्र में सूरए क़द्र सात मरतबा पढ़ता है तो अल्लाह तआला उस शख़्स को हर बला व मुसीबत से महफ़ूज़ फ़रमा देता है और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उस के लिये जन्नत की दुआ करते हैं। (नुज़हतुल मजालिस)

शबे क़द्र की दुआ

मुसलमानों की मां हज़रत सय्यिदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं, मैं ने अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिही वसल्लम अगर मुझे शबे क़द्र का इल्म हो जाए तो मैं क्या पढ़ूँ ? तो हमारे सरकारे अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया यह दुआ मांगो ?

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ यानी अल्लाह तआला बे शक तू मुआफ़ फ़रमाने वाला है और मुआफ़ी देने को पसन्द भी करता है, मुझे भी मुआफ़ फ़रमा दे। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, इब्ने माजह, स. 2274, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 191, मिश्कात शरीफ़, स. 182)

हज़रत इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह एक रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि जो शख़्स शबे क़द्र में इख़्लास के साथ नफ़्ल नमाज़ पढ़ेगा उस के अगले पिछले सब गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। (तफ़सीर रूहुल बयान शरीफ़)

शबे क़द्र में नवाफ़िल

ऐ ईमान वालो ! शबे क़द्र में नफ़्ल नमाज़ें जिस तरह चाहें पढ़ सकते हैं, बहुत से बुज़ुर्गों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की नमाज़ें पढ़ने का सुबूत मिलता है। किसी बुज़ुर्ग से चार रकअत, किसी बुज़ुर्ग से 12 रकअत किसी से 20 रकअत और फिर पहली रकअत में सूरए क़द्र सात बार पढ़ी जाए और दूसरी रकअत में फ़लां सूरत सात बार पढ़ना है। इस तरह पढ़ने का ज़िक्र किताबों में मिलता है मगर मैं आप को बताता हूँ कि इतनी ही रकअत नमाज़ पढ़ें जिस में मुकम्मल दिल लगे वर्ना जलदी जलदी पढ़ लेने से उठक बैठक कर लेने से कोई नतीजा नहीं निकल सकता,

इस लिये थोड़ी सी नमाज़ें पढ़ें मगर खुशूअ व खुज़ूअ के साथ पढ़ें और नमाज में उस सूरत को पढ़ेंजो आप के लिये आसान हो, यक़ीनन नतीजा हासिल होगा और नरसमाज़ मक़बूल होगी।

शबे क़द्र में नमाज़े मग़रिब के बाद आठ रकअत नमाज़ पढ़ें

दो रकअत की निय्यत बाँधें अगर सूरए क़द्र पढ़ सकते हैं तो हर रकअत में सूरए क़द्र पढ़ें इस लिये कि हदीस शरीफ़ में सूरए क़द्र की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गई वर्ना वह सूरत पढ़ें जो आप के लिये आसान हो, पहली दो रकअत में कुशादगिये रिज़्क की निय्यत करें, दूसरी दो रकअत उम्र में ख़ैर व बरकत की नियत करें, तीसरी दो रकअत में गुनाहों की बख़्शिश की निय्यत, चोथी दो रकअत ईमान पर ख़ातिमा की निय्यत करें, इस तरह आठ रकअत नमाज़ मुकम्मल करें और इसी तरह इशा की नमाज़ के बाद सुबह तक जितनी नमाज़ें चाहें पढ़ें और अगर शबे क़द्र में महफ़िले मीलाद शरीफ हो रही हो तो ज़रूर शरीक हों कि वअज़ व नसीहत सुनने से दीन व ईमान मज़बूत होते हैं और ऐसी ही महफ़िलों में शरीक होने से ईमान महफ़ूज़ हो जाते हैं। और अल्लाह तआला का ज़िक्र और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की नअत सुनना और सुनाना ऐने इस्लाम और ऐन ईमान है और बे शुमार अजो सवाब के हुसूल का ज़रीआ भी है।

शबे क़द्र की तय्यारी : अल्लाह तआला का एहसान है कि हमें यह मुक़द्दस अज़मत वाली रात नसीहत फ़रमाई, जो हज़ार महीनों से ज़्यादा अफ़ज़ल है पस ग़नीमत जानिये और तय्यारी कीजिये। यह रात जागने और अल्लाह तआला का ज़िक्र और अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ने और कलमा शरीफ़ के विर्द की रात है और ख़ूब, ख़ूब तय्यार रहिये कि यही रात जिस में फ़रिश्ते हम से सलाम व मुसाफ़हा करेंगे सिर्फ़ ज़ाहिरी सफ़ाई नहीं बल्कि अपने दिलों को भी पाक व साफ़ कर लें। अगर हमारे मां, बाप हम से नाराज़ हैं तो उन से मुआफी मांग लें। अगर हम पर किसी का हक़ है तो उस को अदा कर दें अगर सूद खाते हैं तो उस से तौबह कर लें, अपने दिलों में मुसलमानों की महब्बत, उल्फ़त और उन के लिये ईसार व क़ुरबानी का जज़्बा पैदा करें, हर क़िस्म की कदूरत, नफ़रत, बुग़्ज़ व हसद, कीना की गन्दगियों से अपने दिल को पाक व साफ़ कर लें। याद रखिये आज की रात हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों की जमाअत के साथ हम को देखने और हम से मुलाक़ात करने आ रहे हैं। ग़रज़ यह कि अल्लाह तआला ने यह रात यानी शबे क़द्र हम को अता फ़रमा कर हम पर बड़ा एहसान किया। यह रात रोनेऔर गिड़ गिड़ाने की रात है और रो रो कर अपने रब तआला को मना कर बख़्शिश व नजात पाने की रात है। यह रात दुआ मांगने की रात है। अपने लिये मांगो और अपने मोमिन भाइयो के लिये ख़ूब दुआ करो इस रात में मोमिन बन्दा की कोई दुआ रद नहीं की जाती है।

दरे करीम से बन्दा को क्या नहीं मिलता
जो मांगने का तरीक़ा है उस तरह मांगो

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखलाएं किसे रहरवे मन्ज़िल ही नहीं

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

ईदुल फ़ित्र के फ़ज़ाइल व मसाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيِّ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْخَوَاجِهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيِّ اَجْمَعِيْنَ ٥

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ٥ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ٥

तर्जमा : बेशक मुराद को पहुँचा जो सुथरा हुआ और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।
(पारा 30, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तम्हीद : ऐ ईमान वालो ! आज ईद का दिन है, अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्लो करम और अपने प्यारे हबीब हमारे तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल रमज़ान शरीफ़ जैसा रहमत व मग़फ़िरत वाला महीना उम्मते महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अता फ़रमाया। जिस मुसलमान ने अपने रब तआला के लिये रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखे, अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत जान कर नीन्द को क़ुरबान कर के सेहरी किया औ रोज़ा रखा, और फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा की और नमाज़ों को बा जमाअत अदा करता रहा और इफ़्तार के वक़्त दुआ में मशग़ूल रहा फिर इफ़्तार किया और मग़रिब की नमाज़ जमाअत के साथ अदा किया और इशा और तरावीह की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करता रहा तो जिन ख़ुश नसीब मुसलमानों ने अदब व एहतिराम के साथ रमज़ान शरीफ़ का महीना मुकम्मल किया तो अल्लाह तआला उन से राज़ी हो गया और ईदे सईद का इनआम उन को अता फ़रमाया।

इसी लिये हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ईद की रात को लैलतुल जाइज़ा फ़रमाया है यानी ईद की रात इनआम व इकराम पाने की रात है और ईद का दिन मग़फ़िरत व बख़्शिश पाने का दिन है जैसा कि अत्तरग़ीब वत्तरहीब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से एक तवील हदीस रिवायत है जिस का ख़ुलासा यह है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला आज के रोज़ यानी ईद के दिन आम ऐलान फ़रमाता है ऐ मेरे बन्दो ! जो सवाल करना है करो ? मैं उस को पूरा करूँगा, मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम आज यानी ईद के दिन अपनी आख़िरत के बारे में जो मुझ से सवाल करोगे वह मैं पूरा करूँगा और जो कुछ दुनिया की भलाई मांगोगे मैं तुम को दूँगा। मेरी इज़्ज़त की क़सम जब तक तुम मेरे हुक्म पर अमल करते रहोगे मैं तुम्हारी ख़ताओं और लग़ज़िशों पर पर्दा डालता रहूँगा। मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ज़ालिमों के स ाथ रुसवा न करूँगा और तुम इस हाल में नमाज़े ईद से फ़ारिग़ होकर अपने घरों की तरफ़ लौट कर आओगे कि मग़फ़िरत व बख़्शिश पा चुके होगे और तुम ने अल्लाह तआला को राज़ी किया और अल्लाह तआला तुम से राज़ी हो गया। (गुनयतुत तालिबीन, स. 372)

ईद का दिन किस के लिये है : इस हदीसे मुबारका से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि अल्लाह तआला जिस मुसलमान बन्दे से राज़ी हो गया है उस ख़ुश नसीब मुसलमान के लिये आज का दिन ईद का दिन है अगर हम ने अपने ज़ाहिर को साफ़ कर लिया और बातिन गन्दा है अगर हम ने ग़ुस्ल करके जिस्म को पाक कर लिया है और क़ल्ब में बुग़्ज़ व हसद, ग़ीबत व तोहमत, भाई से भाई की नफ़रत, मां बाप की ना फ़रमानी की नुहूसत, नमाज़ व रोज़ा, हज व ज़कात अदा न करने की मअसियत, हराम रोज़ी हासिल करना और झूट बोलने की लअनत, तकब्बुर व घमण्ड जैसी शैतानी आदत मौजूद हैं तो यक़ीनन हमारी रूह भी गन्दी है और हमारे दिल भी नापाक हैं तो सो चो और ग़ौर करो कि चमकदार कपड़े पहनने से किया हासिल होगा जब तक हमारे दिल चमकदार और साफ़ शफ़्फ़ाफ़ न हो जाएं।

अफ़सोस सद अफ़सोस : आज के मसुलमानों की तमाम तवज्जोह जिस्म व कपड़े और मकान पर है कि आज ईद का दिन है सब साफ़ और सुथरे और चमक, दमक वाले होना चाहिये यानी हमारी नज़र सिर्फ़ ज़ाहिर पर है जिस की कोई क़ीमत ही नहीं है। अल्लाह तआला बातिन यानी रूह व क़ल्ब की पाकीज़गी को देखता है आर अल्लाह तआला की बारगाह में उसी की क़द्र व क़ीमत है।

काश हम मुसलमान : अपने बातिन की तरफ़ नज़र कर लें यानी रूह व क़ल्ब को पाकीज़ा और साफ़ सुथरा बनाने की फ़िक्र कर लें।

अल्लाह तआला का फ़रमान : قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَکّٰی0 وَذَکَرَ اسْمَ رَبِّہٖ فَصَلّٰی0

तर्जमा : बेशक मुराद को हुँचा जो सुथरा हुआ अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

(पारा 30, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी वह मुसलमान कामयाब है जिस ने तज़किया नफ्स किया यानी अपने दिल को पाकीज़ा किया और अल्लाह तआला का ज़िक्र किया और नमाज़ें पढ़ीं गोया रब तआला की जानिब से मुसलमानों को कामयाबी का राज़ समझाया जा रहा है कि वही लोग कामयाब हैं जिन्होंने अपने दिल को पाक व साफ़ किया और दिल की पाकी हासिल करने के लिये ज़रूरी है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाए और पाँच वक़्त की नमाज़ों को पाबन्दी के साथ अदा किया जाए।

ऐ ईमान वालो ! नमाज़ वह मक़बूल इबादत है जिस के वग़ैर क़ल्ब की पाकी हासिल ही नहीं हो सकती। जिस मुसलमान का क़ल्ब तमाम मआसियतों और गुनाहों के धब्बों से पाक व साफ़ हो गया वही दिल ज़िन्दा व तन्दुरुस्त हो कर सीधा कहलाता है और जिस का दिल सीधा है उस के जिस्म के तमाम आज़ा सीधे रहेंगे। जिस्म का कोई हिस्सा हराम व गुनाह की तरफ़ नहीं बढ़ सकता। इस लिये कि दिल सीधा है और अगर जिस्म के आज़ा से गुनाह सरज़द होने लगें यानी आँख, कान, नाक, ज़बान, हाथ, पाओं, गुनाह व हराम का इरतिकाब कर रहे हों तो गोया दिल टेढ़ा हो गया है इस लिये दिल को सीधा रखने की अहादीसे तैय्यिबा में सख़्त ताकीदें वारिद हुई हैं। दिल के बिगाड़ और उस के टेढ़े पन के इलाज के लिये कसरत से तौबह व इस्तिग़फ़ार करना चाहिये और अपने रब तआला के ज़िक्र और हमारे प्यारे नबी मेअराज के दूल्हा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व इश्क़ में डूब कर पाँचों वक़्त की नमाज़ें पाबन्दी के साथ अदा करने से दिल पाक व साफ़ और ज़िन्दा होकर सीधा और दुरुस्त हो जाएगा। बहर हाल हमारी गुफ़्तुगू और बयान का मक़सद यह है कि सिर्फ़ ज़ाहिरी जिस्म को बना और संवार लेने और आज ईद के दिन चमकदार कपड़े पहन लेने से अल्लाह तआला से मसर्रत व शादमानी की नेअमत व दौलत और ईद की ईदी यानी इनआमो इकराम नसीब नहीं होगा। लिहाज़ा हम पर लाज़िम है कि अपने गुनाहों से तौबह व इस्तिफ़ार करते रहें और रमज़ान शरीफ़ में ज़ो हमारी इबादत थी कि नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ते थे। खूब तिलावते कुरआने मजीद करते थे। कसरत से कलमा व दुरूद शरीफ़ और रो रो कर दुआ मांगते थे यह हमारी आदतें बाक़ी रहें तो यक़ीनन अल्लाह तआला तमाम साल के तमाम दिनों को हमारे लिये ईद का दिन बना देगा।

ईद के दिन एक यतीम बच्चा

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा ईद के दिन महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़े ईद के लिये काशानए अक़दस से बाहर तशरीफ़ लाए, रास्ते में चन्द बच्चे खेल रहे थे, उन में एक बच्चा गमज़दा और परेशान रास्ते के एक तरफ़ अलग, थलग खड़ा था, उसके कपड़े फटे पुराने थे और ज़ारो क़तार रो रहा था, जब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की नज़रे करम उस यतीम बच्चे पर पड़ी तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस बच्चे के पास तशरीफ़ ले गए और शफ़क़त व प्यार से

उस के सर पर दस्ते रहमत रखा और प्यार भरे अन्दाज़ में उस से पूछा कि ऐ बच्चे ! तुम क्यों रो रहे हो ? और इस परेशान हाल में क्यों हो ? वह बच्चा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहचानता न था इस लिये वह कहने लगा कि मैं एक यतीम बच्चा हूँ। मेरे वालिद महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ एक जंग में तशरीफ़ ले गए और शहीद हो गए और मेरी वालिदा ने दूसरी शादी कर ली है। अब मेरा इस दुनिया में क़ोई मुईन व मददगार नहीं है, अगर मेरे वालिद होते तो मुझे भी नहलाते और नया कपड़ा पहना कर मेरी उंगली पकड़ कर मुझे भी ईदगाह अपने साथ ले जाते जब मैं उन बच्चों को देखता हूँ जिन के बाप ज़िन्दा हैं वह नए कपड़े पहन कर खुशियाँ मना रहे हैं तो मुझे अपने बाप की याद सता रही है और मुझे यह मुसीबत परेशान कर रही है इस लिये मैं रो रहा हूँ।

रहमत तमाम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत मचल पड़ी और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस यतीम बच्चे को उठाया और अपने गले से लगा लिया और उसे अपने घर ले आए और उसे नहलाया और बहतरीन लिबास पहनाया और ख़ुश्बू में बसाया और खिला, पिला कर उस को कन्धे पर बेठा कर ईदगाह की जानिब रवाना हुए तो इरशाद फ़रमाया , ऐ बच्चे ! क्या अब तुम खुश हो कि नहीं और क्या तुम को यह पसन्द है कि मैं तुम्हारा बाप हो जाऊँ और आएशा सिद्दीका तुम्हारी मां ? अली मुरतज़ा तुम्हारे चचा, इमाम हसन और इमाम हुसेन तुम्हारे भाई और सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन तुम्हारी बहन हो जाएं तो उस बच्चे ने पहचान लिया कि इस तरह करम की बारिश करने वाले कोई और नहीं बल्कि महबूबे ख़ुदा, रहमते आलम, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही हो सकते हैं। वह बच्चा अर्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह, या रहमतुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इस से बढ कर मेरे लिये और क्या सआदत हो सकती है और जब दूसरे, बच्चों ने उस यतीम बच्चे को नए लिबास में मलबूस, ख़ुश्बू से मुअत्तर और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हमराह देखा तो उन बच्चों ने रश्क करते हुए बसद हसरत कहा कि काश हमारे बाप भी शहीद हो गए होते तो हमें भी यह सआदत व नेअमत और ख़ुश नसीबी हासिल हो जाती जो इस यतीम बच्चेको मिली। (ज़ुबदतुल वाएज़ीन)

प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं दुरबे बहा दिये हैं

हज़रात ! उस नूरानी वाक़िआ से मालूम हुआ कि ईद के दिन अपनी ख़ुशी में किसी ग़रीब और यतीम को शरीक कर लेना सुन्नत है।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (1) जिस दिन कोई गुनाह सर ज़द न हो वह दिन मोमिन के लिये ईद का दिन है (2) जिस दिन ईमान के साथ दुनिया से आख़री सफ़र होगा वह दिन मोमिन के लिये हक़ीक़ी ईद का दिन होगा। (फक़ीह अबुल्लैस)

हज़रात ! अल्लाह तआला हम को भी हर दिन गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ दे और ईमान पर साबित क़दम रखते हुए ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

हर मज़हब वाले ईद मनाते हैं : तारीख़ शाहिद है कि माज़ी में ऐसा हुआ है और हाल हमारे सामने है। हर क़ौम और तमाम मज़ाहिब के मानने वाले साल में किसी न किसी दिन ईद मनाते हैं और ख़ुशियों का एहतिमाम करते हैं मगर उन की ईद मनाने का यह तरीक़ा होता है कि हर क़िस्म के गुनाह उन की ख़ुशी में शामिल हों, नाचना, गाना, शराब नोशी, फ़हाशी, मर्द व औरत का बाहम उरयां (नंगा) हो जाना और ज़िना जैसे फेले हराम का इरतिकाब उन की ईद व ख़ुशी में शामिल होते हैं। मगर हमारे पाक रब तआला ने पाक रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़रीए पाक मज़हब इस्लाम अता फ़रमाया। इस्लाम वह मज़हबे मुहज़्ज़ब है जिस ने किसी भी हाल में अपने मानने वालों को हर क़िस्म के गुनाह से रोका है और ईद का दिन तो कसरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र और उस की किब्रियाई बयान करने का दिन है। ईद का दिन अल्लाह तआला के इनआम व इकराम का दिन है अल्लाह तआला से नेअमत व दौलत पाने का दिन है और जब कोई बन्दा ईद के दिन किसी तरह का कोई गुनाह करता है तो अल्लाह तआला उस बन्दे को ईद के दिन के इनआम व इकराम से महरूम कर देता है।

अल्लाह तआला का इरशाद : وَلَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ط

तर्जमा : अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूँगा और अगर ना शुक्री करो तो मेरा अज़ाब सख़्त है। (पारा 13, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी अगर तुम मेरा शुक्र अदा करोगे (उस पर जो नेअमतें मैं ने तुम को दी हैं) तो मैं नेअमतें और ज़्यादा फ़रमा दूँगा और अगर तुम ना शुक्री करोगे तो मेरा अज़ाब बड़ा सख़्त है।

यानी मेरी नेअमत के मिलने पर अगर तुम ना क़दरी करोगे तो मेरा अज़ाब सख़्त है जिस से बचना तुम्हारे लिये मुमकिन नहीं।

शाहे बतहा हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो देखा कि मदीना शरीफ़ के लोगों ने साल में दो दिन ऐसे मुक़र्रर कर रखे हैं जिन को वह खेल, कूद, लह्व व लअब में गुज़ार देते हैं तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया। हमारा मज़हब इस्लाम बे राह रवी और गुनाह वाले खेल कूद की इजाज़त नहीं देता, इस्लाम क़ल्ब में रूहानियत और तबीअत में शराफ़त व नेकी बेदार करने की दावत देता है और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व आलिही वसल्लम ने उन जाहिलियत के तहवारों के बदले दो ईदें मुक़र्रर कीं। एक ईदुल फ़ित्र और दूसरी ईदे क़ुरबां और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुक्म दिया कि मुसलमानों पर लाज़िम है कि ईद के दिन गुनाहों से बचें और अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत से करें और फिर आप ने ख़ुद बलन्द आवाज़ से अल्लाह तआला की किब्रियाई का ऐलान किया और हम्दो सना बयान फ़रमाई। (मिश्कात शरीफ़)

ईद के दिन की तकबीर : اللہ اکبر اللہ اکبر لا الٰہ الا اللہ

واللہ اکبر اللہ اکبر وللہ الحمد (इब्ने माजह, स. 91, मिश्कात शरीफ़)

ऐ मुसलमान जाग जा : ईद के दिन हर मुसलमान तकबीर कहने यानी अपने ख़ालिक़ व मालिक रब तआला की किब्रियाई व बुज़ुर्गी बयान करे और अपने रब तआला के हुज़ूर रुकूअ करे और सज्दा यानी नमाज़ अदा करे। हमारे आक़ा अल्लाह तआला के हबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस तकबीर व नमाज़ के ज़रीए अपने गुलामों यानी मुसलमानों को यह बताना और समझाना चाहते हैं कि हमारी हक़ीक़ी ईद अल्लाह तआला के ज़िक्र व बन्दगी से होती है गोया हम मोमिनों की ईद सही मअनों में उस वक़्त होती है जब अल्लाह तआला राज़ी हो जाए और अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ की बरकत से मोमिन बन्दा को दाएमी ख़ुशी नसीब होती है और अल्लाह तआला का ज़िक्र ग़म व ज़हमत को दूर करता है और जो शख़्स ग़म व परेशानी में नमाज़ पढे और अल्लाह तआला का ज़िक्र करे तो अल्लाह तआला अपने ज़िक्र और नमाज़ की बरकत से ग़म को ख़ुशी में और परेशानी को आसानी में तब्दील फ़रमा देता है।

अल्लाह तआला राज़ी है तो हर दिन ईद का दिन है

सर चश्मए विलायत काने ख़ैर व बरकत अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईद के दिन जौ की भूसी की बनी हुई रोटी तनावुल फ़रमा रहे थे, एक शख़्स आया और उस ने हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सवाल किया कि आज तो ईद का दिन है और आप जौ की भूसी की रोटी खा रहे हैं ? मेरे आक़ा अबुल हसन वल हुसैन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने जवाब दिया कि आज ईद का दिन उस बन्दए मोमिन के लिये है जिस का रोज़ा अल्लाह तआला की बारगाह में क़ुबूल हो गया हो और उस शख़्स के गुनाह बख़्श दिये गए हों, आज का दिन भी हमारे लिये ईद का दिन है और हर वह दिन हमारे लिये ईद का दिन है जिस दिन हम कोई काम गुनाह का न करें

(गुनयतुत तालिबीन, स. 377)

ऐ ईमान वालो ! मेरे आक़ा हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम गुलामों को बता दिया कि जिस दिन कोई गुनाह का काम न हो बल्कि वह काम हो जिस के ज़रीए अल्लाह तआला अपने बन्दे से राज़ी और ख़ुश हो जाए तो वह दिन बन्दए मोमिन के लिये ईद का दिन है।

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ईद : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईद के दिन अपने बेटे को पुराने क़मीस पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने अर्ज़ किया, अब्बा जान ! आप किस लिये रोते हैं ? हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मेरे बेटे ! मुझे अन्देशा है कि आज ईद के दिन जब लड़के तुझे इस फटे पुराने लिबास में देखें गे तो तेरा दिल टूट जाएगा, बेटे ने जवाब दिया दिल तो उस का टूटे जो रज़ाए इलाही को न पा सका या जिस ने मां, बाप की ना फ़रमानी की हो और मुझे उम्मीद है कि आप की रज़ा मन्दी के तुफ़ैल अल्लाह तआला भी मुझ से राज़ी होगा। यह सुन कर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रो पड़े, बेटे को गले लगाया और उस के लिये दुआ की। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 710)

ऐ ईमान वालो ! इस नूरानी वाक़िआ से सबक़ मिलता है कि नए और चमक, दमक वाले कपड़ों से हक़ीक़ी ईद नसीब नहीं होती है बल्कि मां बाप की रज़ा मन्दी और अल्लाह तआला की ख़ुश्नोदी से बन्दए मोमिन के लिये ईद के दिन ईद होती है वर्ना वईद (सज़ा) होती है।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ईद

ईद के रोज़ लोग दरबारे अदालत में हाज़िर हुए तो देखा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर का दरवाज़ा बन्द है और आप ज़ारो क़तार रो रहे हैं, लोगों ने हैरान व परेशान हो कर अर्ज़ किया या ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन ! आज तो ईद का दिन है। आज तो मसर्रत व शादमानी और ख़ुशी का दिन है। यह ईद के दिन रोना कैसा ? आप ने आंसू साफ़ करते हुए फ़रमाया : هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَهٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْدِ

ऐ लोगो : यह ईद (ख़ुशी) का दिन भी है और वईद (ग़म) का दिन भी है यानी आज का दिन ख़ुशी का दिन भी है और ग़म का दिन भी है। आज जिन लोगों के नमाज़ रोज़ा मक़बूल हो गए उन लोगों के लिये आज का दिन ईद का दिन है और जिन लोगों की नमाज़ व रोज़ा रद कर के उन के मुंह पर मार दिये गए उन लोगों के लिये आज का दिन वईद यानी ग़म का दिन है और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूँ कि : اَنَا لَا اَدْرِىْ اَمِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ اَمِنَ الْمَطْرُوْدِيْنَ ٥

यानी मुझे यह मालूम नहीं कि मैं मक़बूल हुआ हूँ या रद कर दिया गया हूँ।

(ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 378)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर करो और सोचो ! कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन दस सहाबए किराम में से हैं जिन को हमारे आक़ा, क़ासिमे जन्नत, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी हयाते ज़ाहिरी ही में जन्नत की बशारत अता फ़रमा दी थी जिन की मुबारक जमाअत को अशरए मुबश्शरा कहा जाता है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

वह दसों जिन को जन्नत का मुज़दा मिला
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

बिला शक व शुबह : हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक़बूल रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मक़बूल ख़लीफ़ा और मक़बूल सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के मक़बुल अमीर व इमाम थे। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक़बूल सहाबी उन की नमाज़ व रोज़ा और तमाम आमाल बिला शक व शुबह मक़बूल थे। मगर ख़शियते इलाही ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी का आप पर इस क़दर ग़लबा था कि उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गिरया व ज़ारी सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़शियते इलाही और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी के ग़लबा की वजह से थी वर्ना आप मकबूल और आप की नमाज़ें और रोज़े व जुमला आमाल मक़बूल थे और एक हम मुसलमान हैं कि न नमाज़ की पाबन्दी है और न ही रोज़ों का अदब व एहतिराम, तो मक़बूल होना तो वहुत दूर की बात है, मगर ईद की तय्यारी पूरे माहे रमज़ान शरीफ़ करते हैं और चमक दमक वाले कपड़े पहनने को हम ने ईद समझ रखा है।

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीम व रज़ा मुश्किल है
जिन के रुत्बे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

अल्लाह तआला की रज़ा हक़ीक़ी ईद है

बलन्द पाया बुज़ुर्ग बड़े नेक व परहेज़गार, मुसलमानों के बादशाह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेटियाँ ईद से एक दिन क़ब्ल आप की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और अर्ज़ करने लगीं अब्बा जान ! कल ईद का दिन है हम कौन से कपड़े पहनेंगे ? आप ने फ़रमाया यही कपडे जो तुम ने पहन रखे हैं। उन्हें धोकर आज साफ़ कर लो और कल ईद के दिन पहन लेना। बेटियाँ मचल गईं और ज़िद करते हुए कहा, नहीं आप हमारे लिये नए कपड़े बनवा दें।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मेरी बेटियो ! ईद का दिन अल्लाह तआला की इबादत व बन्दगी करने और उस का शुक्र अदा करने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं,, बेटियों ने अर्ज़ किया कि आप की बात सही व दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियाँ और दूसरी लड़कियाँ हमें तअना दें गी कि तुम बादशाह की बेटियाँ और अमीरुल मोमिनीन की लड़कियाँ हो और इस पुराने कपड़े से ईद मना रही हो। यह कहते हुए बेटियां की आँखों में आंसू भर आए। बेटियों की बातें सुन कर अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दिल भी भर आया और आँखें छलक पड़ीं। आप ने ख़ाज़िन को बुला कर फ़रमाया मुझे मेरी एक माह की तन्ख़्वाह पेशगी दे दो।

ख़ाज़िन बड़े नेक और परहेज़गार थे अर्ज़ किया। हुज़ूर ! क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ? अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया : जज़ाकल्लाहु तआला यानी

अल्लाह तआला तुझे जज़ा दे तूने बहुत उम्दा और सही बात कही। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी बेटियों से फ़रमाया, मेरी प्यारी बेटियो ! अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला लैहि व आलिही वसल्लम की रज़ा व ख़ुशी पर अपनी आरज़ू और ख़ुशी को क़ुरबान कर दो, क़ोई शख़्स उस वक़्त तक जन्नत का हक़दार नहीं बन सकता जब तक वह शख़्स कुछ क़ुरबानी न दे।

ऐ ईमान वालो ! जो वाक़िआ आप हज़रात ने सुना उस में हमारे लिये बे शुमार हिदायतों के चिराग़ रौशन हैं जिस से हम को इबरत व नसीहत भी मिलती है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अमीरुल मोमिनीन और मुसलमानों के बादशाह थे जो चाहते ख़र्च कर सकते थे मगर ऐसा नहीं किया इस लिये कि उन के दिल में ख़ौफ़े ख़ुदाए तआला था और वह अल्लाह तआला से डरते थे कि एक दिन हम को भी मरना है और अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश हो कर ज़र्रे ज़र्रे का और एक एक पैसे का हिसाब देना है लेकिन आज के मुसलमानों का हाल इस के बर अक्स (उलटा) है, मस्जिद का मुआमला हो या मदरसे का या कोई और अमानत हो। अमानत बहर हाल अमानत है। शरीअते मुतह्हरा ने जहाँ ख़र्च करने की इजाज़त दी है सिर्फ़ वहीं ख़र्च किये जाएंगे वर्ना हराम व नाजाइज़ होगा। एक दिन मरना है और अपने अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश हो कर ज़र्रे ज़र्रे का और हर अमानत का हिसाब देना है। सोच लो ! और आज ही फ़ैसला कर लो ! वर्ना कल शर्मिन्दा होगे और पछताओगे। अल्लाह तआला अपने अमान में रखे और हलाल रोज़ी अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

पीरों के पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ईद

नेक व पारसा और अल्लाह तआला के मक़बूल व महबूब बन्दे जिन को सही मअनों में ईद मनाने का हक़ हासिल था वह क्या फ़रमाते हैं, सुनिये और इबरत हासिल कीजिये।

हमारे पीर, रौशन ज़मीर आलम के दस्तगीर अबुश्शैख़ अबू मुहम्मद सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान कितनी बलन्द व बाला और अरफ़अ व आला है कि आप का क़दमे मुबारक हर वली के गरदन पर है। क्या ही ख़ूब फ़रमाया नाइबे ग़ौसे आज़म, क़ुतबे आलम, मुर्शिदे आज़म, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

यह दिल यह जिगर है यह आँखें यह सर है
जहाँ चाहो रखो क़दम ग़ौसे आज़म
ख़बर लो हमारी कि हम हैं तुम्हारे
करो हम पे फ़ज़्लो करम ग़ौसे आज़म

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी एक रुबाई में फ़रमाते हैं :

फ़ारसी.....................

यानी अल्लाह की मख़लूक़ कह रही है कल ईद है, कल ईद है और सब ख़ुश हैं लेकिन मेरा

खातिमा जिस दिन ईमान पर होगा। वही दिन मेरे लिये ईद का दिन होगा। (गुनयतुत तालिबीन)

ऐ ईमान वालो ! कितने बड़े वली अल्लाह का वाक़िआ आप हजरात ने सुना वह फ़रमाते हैं कि वह दिन हमारे लिये ईद का दिन होगा जिस दिन हमारा ख़ातिमा ईमान पर होगा।

पता चला कि बे ईमान के लिये ईद है ही नहीं । ईद तो सिर्फ़ मोमिन के लिये है और मोमिन वह शख़्स है जो अपनी इज्ज़त व आबरू और जान व माल को अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे नाज़ पर कुरबान करने का जज़्बा रखता हो और वक़्त आने पर कुरबान भी कर देता हो।

इमामे इश्क़ो महब्बत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मोमिन वह है जो उन की इज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से

शबे ईद की फ़ज़ीलत : हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रहमते तमाम ख़ैरुल अनाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स ईदैन की रातों में (यानी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुज्जुहा में तलबे सवाब के लिये रात भर जाग कर इबादत करे) उस का दिल न मरेगा जिस दिन लोगों के दिल मर जाएंगे।

(इब्ने माजह, स. 127, बहारे शरीअत, हि 4, स. 105, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हि. 2, स. 152)

पाँच रातों की बरकत : हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स पाँच रातों में शबे बेदारी करे यानी रात भर जाग कर इबादत करे उस के लिये जन्नत वाजिब है। ज़िल हिज्जा की आठवीं, नवीं और दसवीं रातें और चोथी ईदुल फ़ित्र की रात और (पांचवीं) शअबान की पन्द्रहवी रात यानी शबे बराअत।

(बहारे शरीअत हि 4, स. 105, अत्तरग़ीब वत्तरहीब, हि. 2, स. 152)

ऐ ईमान वालो ! ईदैन की रातें बड़ी बरकत व रहमत वाली हैं जो शख़्स ईद की रात में शबे बेदारी करे यानी रात में जाग कर अपने रब तआला के लिये नमाज़ पढ़े। कलमा व दुरूद शरीफ़ का विर्द करे दुआ और दूसरी इबादतों में मशग़ूल रहे तो अल्लाह तआला उस शख़्स के लिये जन्नत वाजिब कर देता है।

क़ब्र में नूर ही नूर : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, अपनी ईदों को तकबीरों से ज़ीनत दो। (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 8, स. 250)

यानी اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْد

ईद के दिन कसरत से पढ़ना चाहिये।

और शाहे मदीना सरूरे क़ल्बो सीना सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जिस शख़्स ने ईद के दिन तीन सौ मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ा और मुसलमानों की रूहों को (यानी मरहूमीन की रूहों को) हदिया यानी ईसाले सवाब क्या तो हर एक मुसलमानकी

क़ब्र में एक हज़ार नूर दाखिल होते हैं और जब वह शख्स मरेगा जिस ने यह कलमा पढ़ा है तो अल्लाह तआला उस की कब्र में एक हजार नूर दाखिल फ़रमाएगा। (मुकाशिफ़तुल कुलूब)

ऐ ईमान वालो ! जो मोमिन बन्दा किसी मोमिन मय्यित के लिये कुछ ज़िक्रे ख़ैर कर के ईसाले सवाब करता है तो मय्यित को नूर व सवाब मिलता है और ईसाले सवाब करने वाले को भी अल्लाह तआला नूर व सवाब की नेअमत अता फ़रमाता है। लिहाज़ा हमको मोमिनीन मरहूमीन के लिये ज़्यादा से ज़्यादा ईसाले सवाब करना चाहिये ताकि मरने के बाद हमारा भी भला हो।

नमाज़े ईदुल फ़ित्र से पहले खजूर खाना सुन्नत है : हज़रत बुरीदा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते और ईदुज़्ज़ुहा को न खाते जब तक नमाज़ न पढ़ लेते। (तिर्मिज़ी शरीफ़, अबवाबुल ईदैन, जि. 1, स. 120) और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से है कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़ के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द खजूरें न तनावुल फ़रमा लेते और वह खजूरें ताक़ होतीं (यानी 3,5,7 या उस से ज़्यादा ताक़ खजूरें)। (बुखारी शरीफ़, जि. 1, स. 130, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 120, इब्ने माजह)

ईद की नमाज़ के बाद रास्ता बदल कर आना सुन्नत है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे आक़ा, नबिये रहमत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ईद की नमाज़ के लिये एक रास्ता से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते।

(इब्ने माजह, स. 92, तिर्मिज़ी, अबवाबुल ईदैन, जि. 1, स. 120, दारमी, जि. 1, स. 460)

ऐ ईमान वालो ! इन दोनों हदीसों से मालूम हुआ कि ईदुल फ़ित्र की नमाज़ से पहले चन्द खजूरें खाना सुन्नत अगर वह खजूरें ताक़त हों तो बेहतर है और अगर खजूरें न मिले तो मीठी चीज़ भी खा सकते हैं और ईदुज़्ज़ुहा की नमाज़ से पहले कुछ न खाना सुन्नत है और दूसरी बात यह मालूम हुई कि ईद की नमाज़ के लिये एक रास्ता से जाना और ईद की नमाज़ पढ़ कर दूसरे रास्ते से आना सुन्नत है।

रोज़े ईद की सुन्नतें : रोज़े ईद यह सारे काम मुस्तहब यानी नेक व सराब हैं। (1) हजामत बनवाना (2) नाख़ुन तरशवाना (3) गुस्ल करना (4) मिस्वाक करना (5) अच्छे कपड़े पहनना नया हो तो नया वर्ना धुला हुआ साफ़ कपड़ा पहनना। (6) अंगूठी बहनना (7) ख़ुश्बू लगाना (8) फ़ज्र की नमाज़ मुहल्ला की मस्जिद में पढ़ना (9) ईद गाह जल्द चले जाना (10) नमाज़ से पहले (यानी नमाज़े ईद से पहले) सदक़ए फ़ित्र अदा करना (11) ईद गाह पैदल जाना (12) दूसरे रास्ते से वापस आना (13) नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना मगर खजूरें ताक़ हों, अगर खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले नमाज़ से पहले कुछ न खाया तो गुनाहगार न हुआ मगर इशा तक न खाया तो इताब किया जाएगा (14) ख़ुशी

ज़ाहिर करना (15) कसरत से सदक़ा देना (16) ईद गाह को इत्मीनान व वक़ार और नीची निगाह करके जाना (17) आपस में मुबारक बाद देना मुस्तहब है।

(इब्ने माजह, स. 93, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 119, बहारे शरीअत, हिस्सा चहारुम, स. 108)

मस्अला : सवारी पर ईद की नमाज़ के लिये जाने में हरज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़ज़ल है और वापसी में सवारी पर आने में हरज नहीं। (आलमगीरी, जि. 1, स. 149)

मुसाफ़हा करना और गले मिलना सुन्नत है : हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना मुनव्वरा आए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन से गले मिले यानी मुआनक़ा किया और उन को बोसा दिया। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 102)

और हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बुलाया जब वह हाज़िर हुए तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गले लगा लिया यानी मुआनक़ा फ़रमाया। (अबू दाऊद शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हम अपने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़रीब हुए तो हम ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों को बोसा दिया (यानी हम ने आप से मुसाफ़हा किया और हाथों को चूमा)। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 709)

ऐ ईमान वालो ! मुसाफ़हा और मुआनक़ा करना यानी गले लगाना सुन्नत है और बुज़ुर्गों के हाथों और पैरों को चूमना भी सही व दुरुस्त है जैसा कि सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों को बोसा देते और पाए मुबारक को भी चूम लेते थे।

अबू दाऊद शरीफ़ की रिवायत है कि हज़रत वाज़ेअ बिन ज़ारेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते मुबारक और क़दमे मुबारक को बोसा देते। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि नमाज़े ईद के बाद मुसलमानों से मुसाफ़हा और मुआनक़ा करें और बुज़ुर्गों के हाथों को बोसा दें कि यह सब उमूर (काम) का सवाब और बरकत व रहमत का ज़रीआ हैं कि उन से ख़ुशियाँ बढ़ती हैं और ईद के मक़ासिद की तकमील होती है। (अबू दाऊद, जि. 2, स. 709)

सदक़ए फ़ित्र नमाज़े ईद से पहले अदा करना सुन्नत है।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 204, बहारे शरीअत हिस्सा 5, स. 67, दुर्रे मुख़्तार)

पहला बयान सदक़ए फ़ित्र : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब तक सदक़ए फ़ित्र अदा नहीं किया जाता बन्दे का रोज़ा आसमान व ज़मीन के दरमियान मुअल्लक़ रहता है। (बहारे शरीअत, हिस्सा 5, स. 67, ब हवाला कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 316)

सदक़दए फ़ित्र वाजिब है : हज़रत अम्र बिन शुऐब अन अबीह अन जद्दा रिवायत करते हैं कि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया एक शख़्स जाकर मक्का शरीफ़ के कूचों यानी गलियों में ऐलान कर दे कि सदक़ए फ़ित्र वाजिब है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 1, स. 146)

सदक़ए फ़ित्र रोज़ों की पाकी का ज़रीआ है

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हो से रिवायत है कि आक़ाए कायनात रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ज़कात व सदक़ए फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाई ताकि लग़्व और बेहूदा कलाम से रोज़ों की तहारत हो जाए और मसाकीन की ख़ूरिश (यानी खाना) हो जाए। (अबू दाऊद, इब्ने माजह, स. 131)

सदक़ए फ़ित्र कब अदा करे : सदक़ए फ़ित्र अदा करने का बेहतर वक़्त यह है कि ईद की सुबह सादिक़ होने के बाद ईद की नमाज़ अदा करने से पहले अदा कर दे अगर रमज़ान शरीफ़ से पहले या रमज़ान शरीफ़ में किसी दिन भी अदा कर दे तो जाइज़ है सदक़ए फ़ित्र अदा हो जाएगा (और अगर ईद का दिन गुज़र गया और सदक़ए फ़ित्र अदा न किया था तो सदक़ए फ़ित्र अब भी उस पर वाजिब है उम्र में ज़ब भी अदा करेगा तो अदा हो जोगा मगर ऐसा हर गिज़ नहीं करना चाहिये, बेहतर व अफ़ज़ल यही है कि ईद के दिन नमाज़े ईद से पहले अदा कर दे।

(दुर्रे मुख़्तार, जि. 3, स. 362, बहारे शरीअत, हिस्सा 5, स. 67)

ऐ ईमान वालो ! आज ईद का दिन है। नमाज़े ईद के लिये हम सब जमा हुए हैं । अल्लाह तआला का शुक्र है कि उस ने अपने प्यारे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल हम मुसलमानों को अपने घर में बुलाया, अपना ज़िक्र और अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बातें सुनने और सुनाने का मौक़ा अता फ़रमाया। रुकूअ और सज्दा करने और नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ दी। आज की इस मुबारक साअत में हम अपने करीम व रहीम रब तआला के हुज़ूर उस के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से दुआ मांगें कि अल्लाह तआला नमाज़े ईद के तुफ़ैल हम को हर दिन पांचों वक़्त की नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। अभी हम सब नमाज़े ईद के बाद एक दूसरे से मुसाफ़हा व मुआनक़ा यानी गले मिलेंगे।

कि यह सब उमूर (काम) सुन्नत हैं हम को ज़रूर सुन्नत पर अमल करने का सवाब नसीब होगा। हदीसे पाक है कि दो मुसलमान आपस में जब मुसाफ़हा करते हैं या मुआनक़ा करते हैं तो दोनों के जुदा होने से पहले अल्लाह तआला दोनों को मुआफ़ फ़रमा देता है।

(अबू दाऊद, जि. 2, स. 708)

हमारे तो काम बन गए, सुन्नत पर अमल का सिला मिला कि हम ख़ता कारों की गुनाह व मअसियत से मग़फ़िरत व बख़्शिश हो गई।

एक गुनाहगार को और क्या चाहिये
हश्र में दामने मुस्तफ़ा चाहिये

हजरात ! आज के दिन कुछ न कुछ सदका ज़रूर दो कि सदक़ा गुनाहों और ख़ताओं को जला कर राख कर देता है और सदक़ा के ज़रीए नेकियाँ कुबूल हो जाती हैं । खूब खुशी का इज़हार करो अल्लाह तआला हक़ीक़ी ख़ुशी अता फ़रमा देगा। ग़रीबों और यतीमों को भी अपनी ख़ुशी में शरीक कर लो इस लिये कि ग़रीबों और यतीमों से महब्बत करना सुन्नत है। यतीमों की दुआ लो कि यतीम की दुआ रद नहीं की जाती है अपने लिये और अपने अहलो अयाल के लिये और दुनिया के तमाम मुसलमानों के लिये दुआ मांगो कि आज ईद के दिन हर साइल का सवाल पूरा किया जाएगा और मांगने वालों की हर दुआ मुस्तजाब (कुबूल) होगी।

या अल्लाह ! या रहमान या रहीम ! तेरे महबूब रसूल और हमारे ग़मख़्वार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से और हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म और हमारे प्यारे ख़्वाजा हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ और प्यारे रज़ा व हमारे पीरो मुर्शिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तुफ़ैल हम को हमारे मां बाप को और इस मजमे में जितने हज़रात हमारा बयान सुन रहे हैं उन सब को। बल्कि पूरे आलमे इस्लाम को वह इनआम व इकराम अता फ़रमा दे जिस का तूने वादा फ़रमाया है और ईद की ईदी से नवाज़ दे और मग़फ़िरत व बख़्शिश पाने वलों में हम सब का नाम लिख दे। अपना अमान अता फ़रमा। अपनी हिफ़ाज़तों के साए में रख हर पल और हर लम्हा मेरे ग़ौस व ख़्वाजा व रज़ा व मुर्शिद का साया अता फ़रमा और वह काम लं ले जिस से तू और तेरा हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम राज़ी हो जाए। हम को और जितने हाज़िरीन हैं उन सब को मदीना तैय्यिबा की हाज़री नसीब फ़रमा और बार बार नसीब फ़रमा।

दिखा दे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है

और मदीना शरीफ़ के तुफ़ैल तवाफ़े कअ़बा और हज्जे कअ़बा नसीब फ़रमा। करबला शरीफ़, बग़दाद शरीफ़ और बार बार हर महीने अजमेर शरीफ़ की हाज़री नसीब फ़रमा और जिन लोगों ने मुझ गुनाहगार से दुआ के लिये कहा है मौला तआला तू सब को जानता है और सब के अहवाल को भी जानता है उन सब की दुआओं को शरफ़े कुबूलियत अता फ़रमा और या रहमान या रहीम आख़री दुआ यह है कि हम सब को ईमान पर, गुलामी सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ज़िन्दा रख और उसी पर ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

पहला जुमा .... पहला बयान

हज़रत सय्यिदी ख़्वाजा उस्मान हारूनी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اَلَآ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ٥

तर्जमा : सुन लो ! बे शक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(पारा 11, रुकू 12, तर्जमा कन्जुल ईमान)

आप का वतन : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वतन शरीफ़ ख़ुरासान में क़स्बा हारून है। (मिरअतुल असरार, स. 554)

हजरात ! ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़स्बा को बाज़ हज़रात हरून और बाज़ हारून कहते हैं। मिरआतुल असरार में हारून लिखा है और ख़ैरुल मजालिस के मुताबिक़ हरून है।

आप का साले विलादत : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु अन्हु के साले विलादत में इख़्तिलाफ़ है अकसर के नज़दीक साले विलादत 536 हि. मुताबिक़ 1141 ई. है

आप का ख़ानदान : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ानदाने सादात से तअल्लुक़ रखते थे। (सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज, स. 73)

आप की तालीम : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ुरआने करीम हिफ़्ज़ किया और आला तालीम के लिये नीशापूर के उलमा की ख़िदमत में रह कर हदीस, फ़िक़ह, तफ़सीर और दीगर मुरव्वजा उलूम व फ़ुनून में कामिल दस्तरस हासिल करके ज़बरदस्त मुहद्दिस व फ़क़ीह और आलिम व फ़ाज़िल हुए।

(गुलज़ारान मिरअतुल असरार, स. 554)

बैअत व ख़िलाफ़त : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत ख़्वाजा शरीफ़ ज़िन्दनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत हुए और अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत में रह कर राहे सुलूक व मआरिफ़त की तरबियत हासिल की और ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ हुए। (सियरुल औलिया, स 53)

ख़्वाजा उस्माने हारूनी की इबादत व रियाज़त

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सत्तर साल तक सख़्त रियाज़त व मुजाहिदा में बसर किया और उस मुद्दत में पेट भर कर न खाना खाया न पानी पिया और कुरआने मजीद के हाफ़िज़ थे। रोज़ाना एक ख़त्मे कुरआन मजीद की तिलावत फ़रमाते। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 202)

ख़्वाजा उस्माने हारूनी मुस्तजाबुद्दावात थे

हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुस्तजाबुद्दावात थे यानी आप जो दुआ मांगते थे अल्लाह तआला फ़ौरन कुबूल फ़रमा लेता।

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ मांगी कि मेरी क़ब्र मक्का मुअज़्ज़मा में हो। अल्लाह तआला ने दुआ को शरफ़े कुबूल बख़्शा और क़ब्र शरीफ़ मक्का मुकर्रमा में है।

दूसरी दुआ आप ने यह मांगी कि मेरे फ़रज़न्द मुईनुद्दीन ने मुद्दत दराज़ तक जो मेरी ख़िदमत की है उस के सिले में उस को वह विलायत व बुज़ुर्गी अता हो जो किसी और को अता न हुई हो। (मिरआतुल असरार, स. 561)

ख़्वाजा उस्माने हारूनी कितने बड़े बुज़ुर्ग थे

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलायत और कमालात व बुज़ुर्गी का इस बात से अन्दाज़ा हो सकता है कि ख़्वाजा बुज़ुर्ग, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी सुम्मा अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे शाहबाज़ आप के मुरीद हैं। (मिरअतुल असरार, स. 554)

ख़्वाजा उस्माने हारूनी की मक़बूलियत का आलम

सय्यिदुस्सादात हजरत सय्यद मीर अब्दुल वाहिद बिल गिरामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि :

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महबूबियत व मक़बूलियत का यह आलम था कि जब आप नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो ग़ैब से आवाज़ आती कि हम ने तुम्हारी नमाज़ कुबूल की, मांगो क्या मांगते हो, ख़्वाजा उस्माने हारूनी अर्ज़ करते कि या अल्लाह तआला मैं तुझ से तुझी को मांगता हूँ, आवाज़ आती कि ऐ उस्मान! मैं ने जमाले ला

जवाल तुझ को बख़्शा, कुछ और मांगो क्या मांगते हो?

अर्ज़ करते हैं इलाही! तेरे महबूब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत के गुनाहगारों को बख़्श दे। आवाज आती कि मैं ने प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की उम्मत के तीन हज़ार गुनाहगारों को तुम्हारी वजह से बख़्श दिया। आप को पांचों वक़्त यह बशारत मिलती। (सबअ सनाबिल शरीफ़, स 435)

हज़रात! जब बन्दा, महबूब व मक़बूल हो जाता है तो अल्लाह तआला उस बन्दे का और वह बन्दा अल्लाह तआला का हो जाया करता है और उस मन्ज़िल में बन्दा जो भी अर्ज़ करता है तो अल्लाह तआला शरफ़े क़ुबूलियत से नवाज़ता है।

ख़्वाजा उस्माने हारूनी की करामात

(1) आँखें बन्द करवा के दरया पार करा दिया

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अकसर व बेशतर बयान फ़रमाया करते थे कि मैं अपने पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह सफ़र करते हुए दरया दजला के कनारे पर पहुँचा। दरया को पार करने के लिये कश्ती न थी। मेरे पीरो मुर्शिद ने फ़रमाया आँखें बन्द कर लो! मैं ने आँखें बन्द कर ली, थोड़ी देर के बाद फ़रमाया आँखें खोल दो! जब मैं ने आँखें खोलीं तो हम दोनों दरया के पार दूसरे साहिल पर खड़े थे। (सियरुल औलिया, स. 53)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला ने इसी लिये हुक्म अता फ़रमाया है कि: كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِیْنَ यानी सच्चों के साथ हो जाओ! (पारा 11, रुकू 4, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

हज़रात! पीरो मुर्शिद की सोहबत की कितनी अज़ीम बरकत है कि मुर्शिद ने आँख बन्द करवा के दरया पार करा दिया और मुरीद को पता तक न चला, यह है अल्लाह वालों की गुलामी और मुरीदी का नतीजा। इन्शाअल्लाह तआला रोज़े क़ियामत हम सुन्नी मुसलमान अपने मुर्शिदाने किराम के दामन के साए में पुल सिरात पार कर जाएंगे और एहसास तक न होने पाएगा कि हम पुल सिरात पार कर के जन्नत में दाख़िल हो चुके हैं।

आशिके रसूल सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

पुल से गुज़ारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

(2) चालीस साल का गुम शुदा बच्चा घर आ गया

हिन्द के मुर्शिदे आज़म सरकार ख़्वाजए आज़म हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक दिन बूढ़ा शख़्स सख़्त परेशानी और हैरानी के आलम में मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ

और अर्ज़ किया कि चालीस साल से मेरा लड़का गुम है। उस की ज़िन्दगी व मौत की मुझे ख़बर नहीं कि मेरा लड़का ज़िन्दा है या मर गया। आप की ख़िदमत में इस लिये हाज़िर हुआ हूँ ताकि आप दुआ करें कि मेरा बेटा मुझे मिल जाए। आप ने सर झुका लिया और मुराक़बा किया। थोड़ी देर के बाद सर उठाया और हाज़िरीन से इरशाद फ़रमाया कि दुआ मांगो कि इस का बेटा इसे मिल जाए जब दुआ कर चुके तो आप ने उस बूढ़े शख़्स से फ़रमाया कि तुम घर जाओ, तुम्हारा बेटा घर आ गया होगा।

जब वह बूढ़ा शख़्स घर पहुँचा तो किसी ने मुबारक बाद दी कि तुम्हारा बेटा घर आ गया है। जब बाप बेटे की मुलाक़ात हुई तो दोनों हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए, तो ख़्वाजा ने उस से फ़रमाया, तुम इतने सालों तक कहाँ रहे तो उस ने बताया कि मुझे जिन्नातों ने पकड़ लिया और समन्दर के एक जज़ीरा पर ज़न्जीरों की बेड़ियाँ पहना कर क़ैद कर रखा था। मैं समन्दर के उस जज़ीरा पर था कि आप की शक्ल के एक बुज़ुर्ग आए, उन्होंने ज़ंजीरों पर निगाह डाली तो वह टूट कर गिर पड़ीं और उन बुज़ुर्ग ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि आँखें बन्द करो ! और जब मैं ने अपनी आँखें खोलीं तो अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा था। (सियरुल औलिया, स. 54 मिरआतुल असरार, स. 558)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने नेक व सालेह बन्दों को कैसी कैसी करामतों से नवाज़ा है। अल्लाह वालों की निगाहे इल्तिफ़ात से क़ैद व बन्द की ज़ंजीरें टूटती नज़र आती हैं। इस लिये हमारी फ़िक्र यह होनी चाहिये कि अल्लाह वालों की गुलामी सलामत रहे फिर हम को मुश्किल व मुसीबत और तकलीफ़ व सख़्ती से बचाना और नजात दिलाना, अल्लाह तआला की बख़्शी हुई कुव्वत व ताक़त से अल्लाह वालों का काम है।

निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें
जो हो ज़ौक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़ंजीरें

(3) ख़्वाजा उस्मान हारूनी मजूसी लड़के के साथ आग में

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुज़र एसी जगह से हुआ जहाँ आतिश परस्त आबाद थे उन का एक बहुत ही बड़ा आतिश कदा था जिस पर उन्होंने गुम्बद बनाया था जिस में शबो रोज़ आग जलती रहती, रोज़ाना बीस गाड़ी लकड़ी जलाई जाती थी और हर वक़्त आतिश परस्तों, मजूसियों की भीड़ लगी रहती थी, हज़रत ख़्वाजा ने वहाँ से दूर एक दरख़्त के नीचे नदी के किनारे क़याम फ़रमाया, आप ने अपने ख़ादिम फ़ख़रुद्दीन को हुक्म दिया कि इफ़्तार का वक़्त क़रीब है रोटी तय्यार करो ! ख़ादिम आग लेने के लिये गए तो आतिश परस्तों ने आग देने से इनकार कर दिया। ख़ादिम ने जाकर माजरा बयान किया तो ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुद आतिश कदा के पास तशरीफ़ ले गए जहाँ आतिश परस्तों का सरदार अपने सात साला बच्चे को गोद में लिये हुए तख़्त पर बेठा था और उस के इर्द गिर्द तमाम मजूसी बैठे आग की पूजा कर रहे थे।

हजरत ख्वाजा ने मजूसियों के सरदार से फ़रमाया : जो आग थोड़े से पानी से ख़त्म हो जाती है उसे पूजने का क्या फ़ायदा ? उस ख़ालिक व मालिक की इबादत व पूजा क्यों नहीं करते जिस ने आग वग़ैरह सब को पैदा किया है, आग की पूजा करते हो ? जो एक मख़लूक़ है। मजूसियों के सरदार ने जवाब दिया कि हमारे मज़हब में आग का बड़ा दरजा है, आग हमारा मअबूद है इस लिये हम उस की पूजा करते हैं ताकि मरने के बाद हमें न जलाए। हज़रत ख्वाजा ने फ़रमाया : बरसों हो गए हैं तुम लोग उस आग की पूजा करते हो, आओ उस के अन्दर हाथ डालकर देखो कि यह आग तुम्हें जलाती है या छोड़ देती है, मजूसियों के सरदार ने जवाब दिया कि जलाना आग का काम है, किसी की क्या मजाल जो उस के क़रीब जा सके। हज़रत ख्वाजा ने मजूसियों के सरदार की गोद से उस का सात साला बच्चा लिया और आग की तरफ़ बढे और

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ٥ قُلۡنَا یٰنَارُ کُوۡنِیۡ بَرۡدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤی اِبۡرٰہِیۡمَ ٥

पढ़ कर दहकते हुए आतिश कदा में चले गए।

मजूसियों आतिश परस्तों में शोरो गुल मच गया, कुछ देर हज़रत ख्वाजा निगाहों से ग़ाइब रहे फिर आप उस आग से इस हाल में निकले कि आप के और उस मजूसी बच्चे के कपड़ों पर आग तो क्या उस के धुंए का असर भी न था। उस दौरान हज़ारों आतिश परस्त जमा हो गए थे, यह करामत देख कर सब हैरान व शुशदिर रह गए, उन्होंने बच्चे से पूछा तूने आग के अन्दर क्या देखा बच्चे ने जवाब दिया कि वहाँ गुलो गुलज़ार के सिवा कोई चीज़ नज़र नहीं आती थी, हज़रत ख्वाजा की यह करामत देख कर तमाम आतिश परस्त मजूसियों ने आप के क़दमों पर सर रख दिये और सब के सब मुसलमान हो गए।

हजरत ख्वाजा ने आतिश परस्तों के सरदार का नाम अब्दुल्लाह और उस के लड़के का नाम इब्राहीम रखा। आप ने दोनों की तरबियत फ़रमाई, हत्ता कि दोनों विलायत के मन्सब पर फ़ाइज़ हुए और उस आतिश कदा की जगह मस्जिद तामीर की गई। हज़रत ख्वाजा ने उस जगह ढाई साल तक क़याम फ़रमाया। (मूनिसुल अरवाह, स. 26, ख़ज़ीनतुल अस्फ़िया, जि. 1, स. 254, मिरआतुल असरार, स. 559, मुईनुल अरवाह, स. 47)

ऐ ईमान वालो ! उस नूरानी वाक़िआ से पता चला कि जो अल्लाह का वली होता है आग उस को नहीं जला सकती।

हज़रात ! आग का काम है जलाना तो आग ने जलाया क्यों नहीं ? तो हमारा मुख़ालिफ़ कहेगा कि ख्वजा साहब नमाज़ पढ़ते थे और इबादत कसरत से किया करते थे तो यह नमाज़ की बरकत थी, इबादतों का सिला था, जिस की वजह से आग ने उन पर कोई असर नहीं किया और उन को जलाया भी नहीं।

ख्वाजा साहब नमाज़ी और इबादत गुज़ार थे इस लिये आग में ज़लने से महफ़ूज़ रहे तो बद अकीदा शख़्स से सवाल किया जाए कि आतिश परस्तों के सरदार का वह सात साला लड़का जिस को ख्वाजा साहब अपने गोद में लेकर आग में तशरीफ़ ले गए, वह तो काफ़िर व मुश्रिक

का लड़का था, वह लड़का नमाज़ी और इबादत गुज़ार न था तो आग ने उस पर असर क्यों नहीं किया, वह लड़का आग में जलने से महफ़ूज़ क्यों रहा ?

हज़रात ! औलियाए किराम के मुख़ालिफ़ क़ियामत तक इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते

हज़रात ! हम गुलामाने औलिया ख़्वाजा साहब से अर्ज़ करें कि हुज़ूर आप जलती और भड़कती शोअला बार आग में क्यों तशरीफ़ ले गए ? तो ख़्वाजा साहब की बारगाह से यह जवाब मिलेगा कि हम शोअला बार आग में इस लिये गए कि आतिश परस्तों, आग के पुजारियों के रुबरू इस्लाम की हक़्क़ानियत व सचाई की क़ुव्वत व ताक़त को उजागर किया जाए और आग के सामने झुकने वालों को ख़ुदाए वाहिद की बारगाह में झुकाया जाए, आग के पुजारियों को अल्लाह वाहिद का पुजारी बनाया जाए, कुफ़्र व मुश्रिक के अन्धेरों में भटकने वालों को इस्लाम के उजालों में लाकर मुसलमान किया जाए तो फिर हम गुलामाने औलिया हज़रत ख़्वाजा साहब की बारगाह में मअरूज़ा पेश करेंगे कि ऐ ख़्वाजा अगर आप को अल्लाह तआला की अता की हुई करामत व बुज़ुर्गी को ज़ाहिर करके आतिश परस्तों, मजूसियों और काफ़िरों मुश्रिकों के सामने इस्लाम की हक़्क़ानियत व सचाई की क़ुव्वत व ताक़त को उजागर कर के उन को मुसलमान बनाना था तो आप तन्हा आग में क्यों गए तो यकीनन ख़्वाजा साहब की बारगाह से यह जवाब मिलता नज़र आएगा कि अगर हम तन्हा भी आग में चले जाते तो काफ़िर व मुश्रिक आतिश परस्त हमारी यह करामत देख कर मुसलमान हो जाते मगर हमें तो मुख़ालिफ़ को जवाब भी देना था कि अल्लाह के वली हर तकलीफ़ और बला से महफ़ूज़ हैं और जो शख़्स अल्लाह के वली से क़रीब है वह भी आग में ज़लने और मरने और हर क़िस्म की मुसीबत व बला से महफ़ूज़ हो जाया करता है और इन्शाअल्लाह तआला औलिया अल्लाह के क़रीब रहने वाले रोज़े क़ियामत भी दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ व मामून रहेंगे।

(4) सत्तर जाहिलों ने तौबह की

सत्तर जाहिलों की एक म[illegible] आधी रात ख़ुराफ़ात में मुब्तला थी, उन्हीं लोगों के दरमियान हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामतों का ज़िक्र होने लगा। उन लोगों ने कहा कि हम सब उस वक़्त ख़्वाजा के पास चलते हैं और उन का इम्तिहान लेंगे और अगर हम लोग करामत देख लेंगे तो सब मुरीद हो जाएंगे। उन जाहिलों में से हर एक ने अपने दिमाग़ में अलग अलग खाने का ख़याल किया जो आधी रात के बाद मिलना बज़ाहिर मुश्किल काम था। फिर वह सब हज़रत ख़्वाजा की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हज़रत ख़्वाजा ने उन जाहिलों को देख कर फ़रमाया :

وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ○

उन सब जाहिलों को अपने सामने बिठाया बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ कर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए, फ़ौरन ही एक खाने का तबक़ ग़ैब से ज़ाहिर हुआ जिस में क़िस्म क़िस्म के खाने थे। हज़रत ख़्वाजा ने हर एक को उस की ख़्वाहिश के मुताबिक़ जुदा

जुदा खाने तक़सीम फ़रमाए, जब उन जाहिलों ने हज़रत ख़्वाजा की करामत देखी तो ख़ुलूसे दिल के साथ तौबह की और आप के मुरीद हो गए और वह लोग कमालाते ज़ाहिरी व बातिनी से सरफ़राज़ हुए। (ख़जीनतुल असफ़िया, स. 256)

हज़रात! इस वाक़िआ से पहली बात यह मालूम हुई कि अल्लाह वालों का इम्तिहान लेने वाले और उन को आज़माने वाले फ़ासिक़ व फुज्जार और जाहिल व गंवार ही होते हैं। नेक व सालेह और थोड़ा भी इल्म रखने वाले यह काम नहीं करते।

और दूसरी बात यह मालूम हुई कि जाहिल व आवारह शख़्स ही क्यों न हो, जिस निय्यत से अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़री देता है तो अल्लाह तआला की कुदरत और वली की दुआ से उस की निय्यत के मुताबिक़ उस शख़्स को वह चीज़ मिल जाया करती है इस लिये हम को चाहिये कि अच्छी निय्यत के साथ अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़री दें ताकि अल्लाह तआला हम को अच्छा सिला व बदला अता फ़रमाए।

और तीसरी बात यह मालूम हुई कि कितना बड़ा जाहिल और फ़ासिक़ शख़्स क्यों न हो अगर अल्लाह के वली के पास चला जाता है तो अल्लाह के वली की निगाहे करम से गुनाह व ख़ता की राह से बेज़ार व मुतनफ़्फ़िर होकर अल्लाह तआला की बारगाह में तौबह व इस्तिग़फ़ार कर के नेक व सालेह हो जाया करता है। इस लिये हर मुसलमान पर लाज़िम व ज़रूरी है कि अल्लाह वालों की ख़िदमत में और उन के मज़ारों पर ख़ुद हाज़री दें और अपने घर वालों को भी हाज़री दिलाएं ताकि अल्लाह तआला का करम जो उन बुज़ुर्गों पर बरस रहा है उस के कुछ क़तरे और छींटे हम को भी नसीब हो जाएं और हमारे दिलों से फ़िस्क़ व फुजूर और गुनाहों का धब्बा धुल जाए और हमारे कुलूब में नेक व सालेह बनने का हौसला पैदा हो जाए।

अल्लाह तआला उस शख़्स को अपने दोस्तों, औलियाए किराम का मुक़र्रब व महबूब होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है जिस को अपना मुक़र्रब व महबूब बन्दा बनाना चाहता है।

हमारे मुर्शिदे आज़म, कुतबे आलम सरकार मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो! हरगिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी का विसाल

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ मांगी थी कि आप का मदफ़न मक्का मुअज़्ज़मा में हो। हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी हयात के आख़री दिनों में मक्का मुअज़्ज़मा में हाज़िर हुए और बक़िया उम्र मक्का शरीफ़ में बसर फ़रमाई और वहीं पाँच शव्वाल 617 हि. मुताबिक़ 1220 ई. को विसाल फ़रमाया और मक्का मुअज़्ज़मा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल मुअल्ला में या उस के क़रीब मदफ़ून हुए।

(सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़, स. 77)

और मिरआतुल असरार में है कि हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने छः शव्वाल 607 हि. को विसाल फ़रमाया और मक्का मुअज़्ज़मा में मदफ़ून हुए।

(मिरआतुल असरार, स. 562)

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादात

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने पीरो मुर्शिद हजरत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत बा बरकत में बीस साल तक रहे। पीरो मुर्शिद के इरशादात व फ़रमूदात आप लिख लिया करते थे, उन्हीं फ़रमूदात व मलफ़ूज़ात के मजमुआ का नाम किताब अनीसुल अरवाह है।

ईमान की हक़ीक़त

(1) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईमान का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ईमान नंगा है और उस का लिबास परहेज़गारी है और उस का सरहाना फ़क्र है और उस की दवा इल्म है और इस बात की शहादत لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ पर ईमान है यानी मोमिन वह शख़्स है जो कलमए तैय्यिबा का ज़बान से इक़रार करे और दिल से तस्दीक़ करे और ईमान सिवाए नेको कार आदमी के किसी की क़िस्मत में नहीं होता।

(अनीसुल अरवाह, स. 5, 39)

नमाज़ की अहमियत

(2) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ अदा नहीं क़रता इस्लाम में उस का कोई हिस्सा नहीं। (अनीसुल अरवाह, स. 5)

गुनाहों का वबाल

(3) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाया कि सूरज गिरहन या चाँद गिरहन उस वक़्त होता है जब बन्दों के गुनाह बहुत ज़्यादा हो जाते हैं। (अनीसुल अरवाह, स. 7)

औरत के नज़दीक शोहर का मक़ाम

(4) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाया जो औरत अपने शोहर की फ़रमांबरदारी करती है वह औरत फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हमराह जन्नत में दाख़िल होगी और जिस औरत को शोहर बुलाए और वह न आए तो उस की तमाम नेकियाँ बरबाद हो जाती हैं। (अनीसुल अलरवाह, स. 10)

अल्लाह के बन जाओ

(5) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : ऐ दुरवेश ! याद रख ! कि जब आदमी अल्लाह तआला का बन जाता है तो सारी चीज़ें उस की बन जाती हैं। इस लिये मर्द को चाहिये कि तमाम चीज़ों से दिल हटा कर अल्लाह तआला की तरफ़ दिल को लगाए ताकि जो कुछ अल्लाह तआला का है वह सब उसकी हो जाए। (अनीसुल अरवाह, स. 13)

सदक़ा की बरकत

(6) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाया कि सब से अच्छा अमल सदक़ा देना है। फिर फ़रमाया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मैं ने सत्तर साल अपने नफ़्स के साथ मुजाहिदा किया है और बहुत सी मुसीबतें उठाई हैं लेकिन बारगाहे इलाही का दरवाज़ा नहीं खुला। जूं ही मैं ने अपनी तरफ़ ख़याल किया और जो माल मेरी मिलकियत में था, सब राहे ख़ुदा में सर्फ़ किया तो अल्लाह तआला (महरबान हो गया) और मेरा बन गया और जो अल्लाह तआला की मिलकियत थी अल्लाह तआला के करम से सब मेरी मिलकियत हो गई

फिर फ़रमाया कि हज़रत इब्राहीम अदहम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आसारे औलिया में लिखा है कि एक दिरहम सदक़ा देना एक साल की ऐसी इबादत से बेहतर है जिस में दिन को रोज़ा रखा जाए और रात को खड़े हो कर इबादत की जाए। (अनीसुल अरवाह, स. 14)

हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व अला आलिका वसल्लम कुरआन शरीफ़ पढ़ना बेहतर है या सदक़ा देना तो हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया सदक़ा देना ज़्यादा अफ़ज़ल है, क्यों कि सदक़ा दोज़ख़ की आग से बचाता है।

फिर यह वाक़िआ बयान फ़रमाया कि एक मरतबा एक यहूदी रास्ते में खड़ा हो कर एक कुत्ते को रोटी का टुकड़ा खिला रहा था (हासिले वाक़िआ यह है कि) हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस यहूदी शख़्स से फ़रमाया तू जो यह काम कर रहा है कुबूल नहीं। उस यहूदी ने कहा कि अगर मेरा यह अमल कुबूल नहीं है, मगर मैं यह अमल जिस के लिये कर रहा हूँ वह ख़ुदा देख रहा है कि मैं क्या कर रहा हूँ।

अल ग़रज़ ! एक ज़माने के बाद हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक्का मुअज़्ज़मा में पहुँचे तो परनाले के नीचे से आवाज़ आई कि रब्बी यानी ऐ मेरे रब ! फिर ग़ैब से आवाज़ आई कि लब्बैका अब्दी यानी ऐ मेरे बन्दे ! ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैरान हुए कि चल कर देखूँ तो सही कि वह कैसा नेक बख़्त बन्दा है। जब आप वहाँ पहुँचे, क्या देखते हैं कि एक शख़्स सज्दे में सर रख कर रब्बी ! ऐ मेरे रब ! पुकारता है।

आप वहाँ थोड़ी देर ठहरे रहे इतने में उस शख़्स ने सर उठाया और ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा तुम मुझे पहचानते हो ? आप ने फ़रमाया नहीं। उस ने कहा मैं वही शख़्स हूँ जिसे तुम कहते थे कि मेरी नेकी क़ुबूल नहीं। देखा कि मेरी चीज़ को अल्लाह तआला ने क़ुबूल किया और मुझे अपने घर में बुला लिया।

फिर फ़रमाया कि सदक़ा बहिश्त की सीधी राह है और जो शख़्स सदक़ा देता है वह ख़ुदा की रहमत से दूर नहीं होता।

फिर फ़रमाया कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत ख़्वाजा हाजी शरीफ़ ज़िन्दनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ानक़ाह में देखा कि सुबह से शाम तक ख़ल्क़े ख़ुदा आती और सब के साथ खा कर जाते अगर किसी वक़्त कोई चीज़ मुहय्या नहीं होती तो ख़ादिम को हमारे प्यारे पीरो मुर्शिद फ़रमाते कि पानी ही पिला दो ताकि कोई शख़्स ख़ाली न जाए।

फिर फ़रमाया कि ऐ दुरवेश ! ज़मीन सख़ी आदमी पर फ़ख़्र करती है और रात व दिन नेकियाँ उस के आमाल नामे में लिखी जाती हैं। (अनीसुल अरवाह, स. 15, 16)

नफ़्स से जिहाद

(7) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ऐक दफ़ा हज़रत बा यज़ीद बुस्तामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना वाक़िआ बयान फ़रमाया कि एक मरतबा मैं ने कुछ ज़्यादा खाना खा लिया था जिस की वजह से (नफ़्ल) नमाज़ न पढ़ सका, जब रात ख़त्म हुई और दिन निकल आया तो मैं ने दिल में यह बात ठान ली कि साल भर तक मैं अपने नफ़्स को पानी नहीं दूँगा।

फिर फ़रमाया कि एक मरतबा ख़्वाजा अबू तुराब बख़्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सफ़ेद रोटी और मुर्ग़ी का अन्डा खाने की ख़्वाहिश पैदा हुई कि आज मिल जाए तो उस से रोज़ा इफ़्तार करूँ। अस्र की नमाज़ के वक़्त वुज़ू करने के लिये बाहर निकले तो एक लड़के ने आकर आप को पकड़ लिया और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा कि यह चोर है, एक दिन मेरा सामान चुरा ले गया था और आज फिर चोरी करने आ गया है।

लड़के की चीख़ पुकार और शोर व ग़ोग़ा सुन कर लोग जमा हो गए। लड़का और उस का बाप मुक्के मारने लगे। हज़रत ख़्वाजा अबू तुराब बख़्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु छः मुक्के खा चुके थे। इतने में एक शख़्स आया और उस ने आप को पहचान लिया और कहा ऐ लोगों यह चोर नहीं है यह तो (अल्लाह के वली) हज़रत ख़्वाजा अबू तुराब बख़्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। लोग मुआफ़ी के ख़्वास्तिगार हुए और कहने लगे कि हमें मालूम न था। जब वह आदमी हज़रत ख़्वाजा अबू तुराब को अपने घर ले गया और शाम के खाने के लिये मुर्ग़ी के अन्डे और सफ़ेद रोटी जिस की आप ने ख़्वाहिश की थी इत्तिफ़ाक़िया तौर पर उस के घर में मौजूद थे आप के सामने पेश किये जब हज़रत ख़्वाजा अबू तुराब बख़्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा तो आप मुस्कुराए और फ़रमाया कि इन खानों क उठा लो ! मैं नहीं खाऊँगा।

उस ने सबब मालूम किया तो आप ने फ़रमाया कि आज मैं ने सिर्फ़ उस की ख़्वाहिश की थी तो बग़ैर खाए मैं ने छः मुक्के खाए हैं और अगर मैं उस को खा लूँगा तो न जाने कितनी बला व मुसीबत नाज़िल हो।

हज़रत ख़्वाजा अबू तुराब बख़्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़ैर खाए उठे और चले गए। (अनीसुल अरवाह, स. 17)

मोमिन को गाली देना ......

(8) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि जो शख़्स मोमिन को गाली देता है वह गोया अपनी मां और बेटी के साथ ज़िना करता है और वह शख़्स ऐसा है जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की लड़ाई में फ़िरऔन की मदद करना है और जो शख़्स मोमिन को गाली देता है उस की दुआ कुबूल नहीं होती। (अनीसुल अरवाह, स. 20)

पानी पिलाना और खाना खिलाना

(9) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि जिस वक़्त कोई आदमी प्यासे को पानी पिलाता है तो उसी वक़्त उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं गोया वह शख़्स अभी मां के पेट से पैदा हुआ है और बग़ैर हिसाब के जन्नत में जाएगा और अगर उसी दिन फ़ौत हो जाए तो शहीद का दरजा पाएगा।

और फिर फ़रमाया कि जो शख़्स भूके को खाना खिलाए तो अल्लाह तआला उस की हज़ार हाजतों को पूरा करता है और दोज़ख़ की आग से आज़ाद करता है और बहिश्त में उस के लिये एक महल बनाता है। (अनीसुल अरवाह, स. 25)

लड़कियाँ ख़ुदा का हदिया हैं

(10) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि लडकियाँ ख़ुदा का हदिया हैं पस जो शख़्स उन को ख़ूश रखता है ख़ुदा व रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस से ख़ुश होते हैं।

और जो शख़्स लड़कियों के पैदा होने पर ख़ुशी का इज़हार करे तो यह ख़ुशी करना सत्तर मरतबा ख़ानए कअ़बा की ज़ियारत करने से अफ़ज़ल है और जो मां बाप अपनी लड़कियों पर रहम करते हैं तो अल्लाह तआला उन पर रहम करता है और अम्बियाए किराम औलियाए किराम लड़कियों से व निस्चत लड़कों के ज़्यादा प्यार करते थे। (अनीसुल अरवाह, स. 25)

सलाम करना

(11) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाया कि जब मजलिस में जाए तो सलाम करे और जब मजलिस से उठे तो सलाम करे। क्योंकि सलाम करना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और फ़रिश्ते उस शख़्स के लिये

बख़्शिश के तलबगार होते हैं और सलाम करने से हज़ार नेकियाँ मिलती हैं और हज़ार गुनाह मुआफ़ होते हैं और हज़ार हाजतें पूरी होती हैं और सौ हज और सौ उमरह उस के नामए आमाल में लिखे जाते हैं। (अनीसुल अरवाह, स. 27)

उलमा का बयान

(12) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ के हवाले से फ़रमाया कि आख़री ज़माना में आलिमों को मारा जाएगा और उन को बुरा भला कहा जाएगा। (अनीसुल अरवाह, स. 39)

और फ़रमाया कि आख़री ज़माने में अमीर लोग ताक़तवर हो जोंगे और आलिम हज़रात आजिज़ व कमज़ोर तो उस वक़्त अल्लाह तआला अपनी बरकत उठा लेगा और शहर वीरान व बरबाद हो जाएंगे और दीन में फ़साद वाक़ेअ़ होजाएगा, पस तुम्हें याद रहे कि वह लोग (यानी अमीर लोग) अहले दोज़ख़ हैं। नऊज़ु बिल्लाहि मिन्हा (अनीसुल अरवाह, स. 43)

तौबह के बारे में

(13) हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मरने से पहले तौबह कर लो ! फिर बाद में अफ़सोस करने का कुछ फ़ायदा न होगा। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया ऐ आदम (अलैहिस्सलाम) जब तेरे बटे तौबह करेंगे तो मैं उन की तौबह कुबूल करूँगा।

तौबह दो क़िस्म की है : एक सच्ची तौबह कि इन्सान तौबह करने के बाद गुनाह के नज़दीक न जाए और दूसरी तौबह यह है कि दिन रात तौबह करे और फिर भी गुनाह न छोड़े तो ऐसी तौबह अच्छी नहीं। (अनीसुल अरवाह, स. 44)

इरशादे आली : हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने प्यारे और सच्चे मुरीद यानी हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया : ऐ मुईनुद्दीन ! मैं ने तेरी कमालियत के लिये इन बातों की तरग़ीब दी है, पस चाहिये कि जो कुछ मैं ने कहा तुम दिल व जान से उस को बजा लाओ ताकि क़ियामत के दिन शर्मिन्दा न हो।

फिर फ़रमाया कि लाइक़ मुरीद वह है कि जो कुछ अपने पीर की ज़बान से सुने तो उस पर अमल करे ताकि शर्मिन्दा न हो। (अनीसुल अरवाह, स. 45)

ब गरदाबे बला उफ़तादा कश्ती
ज़ईफ़ाने शिकस्ता रा तू पुश्ती
बहक़्क़े ख़्वाजा उस्माने हारूनी
मदद कुन या मुईनुद्दीन चिश्ती

दुआ : या अल्लाह ! या रहमान ! या रहीम ! अपने हबीब हम बीमारों के तबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीरो मुर्शिद सय्यिदुल आबेदीन बदरुल आरिफ़ीन शैख़ुल आज़म हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादाते आलिया पर हम को अमल करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा और हमारे प्यारे ख़्वाजा सरकार ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीला से ख़्वाजा जैसा हम को भी अपने पीर का सच्चा और वफ़ादार मुरीद बना और हमारे प्यारे ख़्वाजा की तरह हम को भी अपने पीरो मुर्शिद की हिदायात व फ़रमूदात पर अमल पैरा होने की सआदत अता फ़रमा : आमीन सुम्मा आमीन।

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

पहला जुमा .... दूसरा बयान

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत व बरकत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰی ٥ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰی ٥

तर्जमा : बेशक मुराद को पहुँचा जो सुथरा हुआ और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

(पारा 30, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : ऐ ईमान वालो ! फ़लाहे दारैन यानी दीन व दुनिया की कामयाबी का राज़ सर बस्ता है मोमिन के क़ल्ब की सफ़ाई और पाकीज़गी पर, इस दुनिया का कोई शोअबा हो या यौमे आख़िरत की फ़लाह व ज़फ़र, कामयाबी व कामरानी ना मुमकिन है जब तक क़ल्बे मोमिन हर क़िस्म के गुनाह से पाक और साफ़ व सुथरा न होजाए और मोमिन का क़ल्ब हर क़िस्म के वसवसे और तमाम गुनाहों , कदूरतों और बुराइयों से पाक करने के लिये रब तआला का ज़िक्र और उस की याद लाज़िम व ज़रूरी है बग़ैर ज़िक्रे इलाही के क़ल्ब को तय्यिब व ताहिर बनाना ना मुमकिन है और ज़िक्रे इलाही में सब से अहम और जामेअ ज़िक्र अपने वक़्त पर नमाज़ की अदाएगी है बग़ैर नमाज़ की अदाएगी के ज़िक्रे इलाही का मक़बूल होना ना मुमकिन है।

मेरी गुफ़्तुगू का मक़सूद आप समझ गए होंगे कि कामयाबी व कामरानी के लिये क़ल्ब की पाकीज़गी व सफ़ाई बहुत ज़रूरी अम्र है और क़ल्ब को पाक व साफ़ करने के लिये अल्लाह तआला का ज़िक्र लाज़िम व ज़रूरी है।

हज़रात ! बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ना भी अल्लाह तआला का मक़बूल ज़िक्र है और कलमा शरीफ़ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विर्द करना भी अफ़ज़ल व पसन्दीदा ज़िक्रे इलाही है।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये अम्बियाए किराम का नूरानी क़ाफ़ला और रसूलाने इज़ाम की पुर अनवार जमाअत मबऊस फ़रमाया और बे शुमार सहीफ़े नाज़िल फ़रमाए और चार बड़ी किताबें नाज़िल फ़रमाईं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर ज़बूर शरीफ़ नाज़िल हुई। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरेत शरीफ़ नाज़िल हुई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर इन्जील शरीफ़ नाज़िल हुई और हमारे प्यारे नबी अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा, जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ। जिस तरह हमारे रसूल, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तमाम नबियों और रसूलों से अफ़ज़ल व आला हैं इसी तरह कुरआन मजीद तमाम सहीफ़ों और जुमला आसमानी किताबों से अफ़ज़ल व आला है।

ज़ुबूर शरीफ़, तौरेत शरीफ़, इन्जील शरीफ़ में तहरीफ़ें की गई यानी शैतानी ख़सलत के लोगों ने जो चाहा निकाल दिया और जो चाहा अपनी मर्ज़ी से बढ़ा दिया मगर कुरआन मजीद जो हमारे प्यारे आक़ा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एक अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा है इस रब्बानी किताब कुरआन शरीफ़ की हिफ़ाज़त को रब तआला ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया। खुद अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

आयत : إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

तर्जमा : बे शक हम ने उतारा है यह कुरआन और बेशक हम ख़ुद इसके निगेहबान हैं।

(पारा 14, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

सुब्हानल्लाह ! क्या शान है अल्लाह तआला की मुक़द्दस किताब कुरआन शरीफ़ की जो हमारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सीनए मुबारक पर नाज़िल हुई चौदह सो बरस पहले जैसे थी आज भी वैसे ही है और हमेशा महफ़ूज़ रहेगी। एक लफ़्ज़ किया एक नुक़्ता भी न बदला गया है न बदला जाएगा और न ही कोई बदल सकता है।

है क़ौले मुहम्मद क़ौले ख़ुदा फ़रमान न बदला जाएगा
बदलेगा ज़माना लाख मगर कुरआन न बदला जाएगा

हज़रात ! तमाम आसमानी सहीफ़े और रहमानी किताबें यानी ज़ुबूर शरीफ़। तौरैत शरीफ़, इन्जील शरीफ़ वग़ैरह उलूम हिदायत व बरकत से मालामाल हैं लेकिन अर्ज़ यह करना है और मेरी तक़रीर का ख़ुलासा यह है तमाम उलूम और मअरिफ़त के ख़ज़ाने अलग अलग जो ज़ुबूर शरीफ़, तौरेत शरीफ़, इन्जील शरीफ़ और तमाम सहीफ़ों में मौजूद हैं वह सब के सब उलूम और मअरिफ़त के ख़ज़ाने बल्कि उससे और ज़्यादा। ख़ूब ज़्यादा अल्लाह तआला की मुक़द्दस किताब कुरआन शरीफ़ जो हमारे प्यारे नबी जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सीनए मुबारक पर नाज़िल हुई। इस किताब में मौजूद यानी यूँ अर्ज़ करूँ कि तमाम आसमानी सहीफ़ों और रहमानी किताबों के उलूम कुरआन

मजीद में मौजूद हैं और कुरआन शरीफ़ के तमाम उलूम सूरए फ़ातिहा में और सूरए फ़ातिहा के तमाम उलूम बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम में मौजूद हैं और बिस्मिल्लाह शरीफ़ के तमाम उलूम और मअरिफ़त के गन्जीने बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बे में मौजूद हैं और रब के तमाम उलूम और बरकत व रहमत के ख़ज़ीने बे के नुक़ते में मोजज़न और मौजूद हैं।

हर नेक काम बिस्मिल्लाह से शुरू करो

हमारे हुज़ूर सरापा नूर शाफ़ए मेहशर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है : كُلُّ اَمْرٍ ذِیْ بَالٍ لَا یُبْدَاُ فِیْہِ بِبِسْمِ اللّٰہِ فَھُوَ اَقْطَعُ
(मतालेउल मुसर्रात, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 1, स. 277)

यानी हर नेक काम जो अल्लाह तआला के नाम से शुरू न किया जाए वह नाक़िस और अधूरा रह जाता है।

हज़रात ! हर नेक और जाइज़ काम बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर शुरू करना चाहिये लेकिन हराम और नाजाइज़ काम से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ हरगिज़ हरगिज़ नही पढ़ना चाहिये बल्कि शराब पीते वक़्त, ज़िना करते वक़्त, जुवा खेलते वक़्त या चोरी करते वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना कुफ़्र है। (फ़तावा आलमगीरी)

हदीसे मुबारका की रोशनी में हर नेक काम के शुरू में बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना बरकत व रहमत का सबब है और बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़े बग़ैर किसी काम में बरकत नहीं होती। जिस खाने को तनावुल करने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ ली जाती है उस खाने में शैतान शरीक नहीं होता और बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत से खाना नूर बन कर पेट में जाता है और खाने वाले का पूरा जिस्म नूर से मुनव्वर और रौशन हो जाता है।

और जिस खाने में बिस्मिल्लाह शरीफ़ नहीं पढ़ी जाती उस खाने में शैतान शरीक हो जाता है और खाना बरकत से ख़ाली हो जाता है और खाने वाला इन्सान खाने के बाद भी भूका रह जाता है यानी भूक बाक़ी रह जाती है।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ जब याद आए पढ़िये

اِذَا اَکَلَ اَحَدُ کُمْ فَنَسِیَ اَنْ یَّذْ کُرَ اللّٰہَ عَلٰی طَعَامِہٖ فَلْیَقُلْ بِسْمِ اللّٰہِ فِیْ اَوَّلِہٖ وَاٰخِرِہٖ ٥

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 7, इब्ने माजह, स. 235)

यानी जब तुम ने खाना शुरू किया और भूल गए बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना तो जब याद आए यानी बीच खाने में तो पढ़ लो : بِسْمِ اللّٰہِ مِنْ اَوَّلِہٖ وَاٰخِرِہٖ ٥

हज़रात ! खाना शुरू करते वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना भूल गए तो जब याद आए चाहे एक ही लुक़मा बाक़ी था तो पढ़ लो बिस्मिल्लाह शरीफ़, जितना खाना शैतान ने खाया था, क़य कर देगा और आप के खाने में बरकत हो जाएगी। (अबू दाऊद, जि. 2, स. 529)

दुबला और मोटा शैतान : फ़िदाए मुस्तफ़ा हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

बयान करते हैं कि एक मौक़े की बात है एक मुसलमान और एक काफ़िर के शैतान में मुलाक़ात हुई काफ़िर का शैतान बहुत मोटा ताज़ा बन पर कपड़े पहने और सर में तेल डाले हुआ था और मोमिन का शैतान दुबला पतला था परागन्दा सर और नंगा था, काफ़िर के शैतान ने मोमिन के शैतान से सवाल किया भाई ! तुम्हारी यह हालत क्यों है ? शैतान ने जवाब दिया मैं एक ऐसे अल्लाह वाले के साथ हूँ जो खाने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ता है। इस लिये मैं भूका रह जाता हूँ और जब वह पानी पीता है और या और कोई चीज़ पीता है तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लेता है इस लिये मैं प्यासा रह जाता हूँ, लिबास पहनता है तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ता है इस लिये मैं नंगा हूँ और सर मैं तेल डालता है तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लेता है इस लिये मैं परागन्दा बाल हूँ। काफ़िर के शैतान ने कहा कि मैं एक ऐसे इन्सान पर मुसल्लत हूँ जो किसी काम में बिस्मिल्लाह शरीफ़ नहीं पढ़ता इसी लिये मैं उस के खाने में पीने में, लिबास में, हत्ता कि उस के हर काम में शरीक रहता हूँ इस लिये मैं मोटा ताज़ा हूँ। (मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! हम सब शैतान के मक्र से बचने की तदबीर करें और हर नेक काम बिस्मिल्लाह शरीफ़ से शुरू करें। हमारे काम बरकत वाले हो जाएंगे और नेकियाँ भी ख़ूब मिलेंगी

खाने के बाद भी भूका रहा : हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा फ़रमा हैं करम के मोती लुटा रहे हैं और सहाबए किराम अपने अपने दामन को भर रहे हैं एक सहाबी ने बारगाहे करम में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं खाने के बाद भी भूका रहता हूँ, मुझ में भूक बाक़ी रहती है सैर नहीं हो पाता हूँ, तो हमारे हुज़ूर सरापा नूर बरकत व रहमत वाले आक़ा ने इरशाद फ़रमाया : لَعَلَّكُمْ تَفْتَرِقُوْنَ शायद तुम अकेले खाते हो, अर्ज़ किया हाँ आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं अकेले खाता हूँ तो हमारे प्यारे नबी रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِجْتَمِعُوْا عَلٰى طَعَامِكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ تَعَالٰى يُبَارَكْ لَكُمْ فِيْهِ ○

यानी मिल जुल कर सब साथ में खाना खाया करो और बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लिया करो, तुम्हारे खाने में बरकत हो जाएगी। (सुनने इब्ने मजाह, स. 236, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 15, स. 103)

जिमाअ के वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ : हर मुसलमान सुन्नी भाई को चाहिये कि अपनी बीवी के पास जाने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ ले तो शैतान के ख़लल से पाक रहेगा और जो औलाद होगी वह नेक और सालेह होगी। (अबू दाऊद, जि. 1, स. 293)

हदीस शरीफ़ : मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ़ में है कि हमारे हुज़ूर सरापा नूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फ़रमाया : जब तुम अपनी औरत से जिमाअ करो तो बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लिया करो। जब तक ग़ुस्ले जनाबत नहीं करोगे उस वक़्त तक फ़रिश्ते तुम्हारे लिये नेकियाँ लिखते रहेंगे और पैदा होने वाली औलाद जब तक ज़िन्दा रहेगी उस की हर सांस पर तुम्हारे

सवारी के वक़्त बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना

हमारे आक़ा मेअराज के दूल्हा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने प्यारे सहाबी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इरशाद फ़रमाया, जब तुम सवारी पर सवार हो तो बिस्मिल्लाहि अलहम्दु लिल्लाह पढ़ लिया करो हर क़दम पर एक नेकी पाओगे। (मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ)

ऐ ईमान वालो ! अकसर हमारा हाल यह है कि सवारी पर सवार होते वक़्त हम ग़फ़लत का शिकार हो जाते हैं बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ना याद नहीं रहता और फिर हम किसी हादसे का शिकार हो जाते हैं अगर तबाही से बचना है हादसात से अपने आप को बचाना है तो सवारी पर बैठने से पहले बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ लो तो मुसीबत व बला से नजात भी मिले और सवाब का सवाब मिलेगा।

गुनाहगार की बख़्शिश : एक आराबी सहाबी ने रहमते आलम, सरदारे दो आलम हमारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते बा बरकत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं बड़ा गुनाहगार हूँ आप मेरे हक़ में बख़्शिश की दुआ फ़रमा दें तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ा करो तो वह अरहमर्राहिमीन तेरे गुनाह बख़्श देगा वह सहाबी तअज्जुब ख़ेज़ लहजे में अर्ज़ गुज़ार हुए और कहने लगे बस इतना ही या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे आक़ा ने फ़रमाया जो मुसलमान मर्द या औरत सच्चे दिल और यक़ीने कामिल के साथ बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ा करेगा तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से उस पढ़ने वाले को दोज़ख़ से नजात देगा। (असरारुल फ़ातिहा)

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत से बाप बख़्श दिया गया

रूहुल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक क़ब्र से गुज़र हुआ तो देखा कि क़ब्र में अज़ाब हो रहा है कुछ देर के बाद फिर उसी क़ब्र से गुज़रे तो मुलाहज़ा फ़रमाया कि उस क़ब्र में नूर ही नूर है और वहाँ रहमते इलाही की बारिश हो रही है आप बहुत मुतअज्जिब हुए और बारगाहे मौला में अर्ज़ गुज़ार हुए कि मुझे उस का राज़ बताया जाए, इरशाद हुआ ऐ ईसा रूहुल्लाह अलैहिस्सलाम यह बड़ा गुनाहगार और बदकार शख़्स था उस सबब से अज़ाब हो रहा था लेकिन उस ने अपनी बीवी हामिला छोड़ी थी उस के लड़का पैदा हुआ आज उस लड़के को मदरसे भेजा गया उस्ताज़ ने उस लड़के को बिस्मिल्लाह पढ़ाया मुझे हया आई कि मैं ज़मीन के अन्दर उस के बाप को अज़ाब दूँ जिस का लड़का ज़मीन पर बिस्मिल्लाह पढ़ रहा है। (तफ़सीरे नईमी)

सुब्हानल्लाह ! क्या क्या रहमतें हैं बिस्मिल्लाह शरीफ़ के पढ़ने की, मगर जब तक हम पढ़ेंगे नहीं तो बरकत व रहमत पाएंगे कैसे ?

उस्ताज़ और मां बाप की बख़्शिश : सहाबीए मुस्तफ़ा, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा ने रिवायत की है कि सरकारे दो आलम फख्रे आदम बनी आदम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जब उस्ताज बच्चे से कहता है कि पढ़ो बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम तो प्यारे आका फ़रमाते हैं उस्ताज, बच्चे और बच्चे के मां, बाप के लिये बरात लिख दी जाती है। ([illegible])

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत से दो यहूदी मुसलमान हो गए : एक यहूदी, एक यहूदन पर आशिक हो गया उस के इश्क में बे क़रार रहने लगा उन्होंने वलिये कामिल हजरत अता अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाजिर हुआ और माजरा पेश किया अल्लाह के वली ने एक कागज के टुकड़े पर बिस्मिल्लाह हिर्रहमा निर्रहीम लिख कर दिया और फरमाया निगल जा वह कागज का टुकड़ा जिस पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखा था हजरत के कहने से निगल गया। पेट में जाते ही उस का दिल नूरे ईमान से मुनव्वर हो गया और औरत का इश्क दिल से जाता रहा, कलमा शरीफ़ पढ़ा और मुसलमान हो गया। सरकारे मदीना सरवरे कल्बो सीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीवाना और शैदा हो गया : उसी दौर में उस की माशूका ने एक ख्वाब देखा कि कोई कह रहा है, अगर तुझे जन्नत चाहिए तो अल्लाह तआला के सच्चे वली हजरत अता अकबर रजियल्लाहु अन्हु की बारगाहे बा बरकत में हाजिर होजा ! वह औरत हजरत की खिदमते बा बरकत में हाजिर हुई और अर्ज किया कि मैं ही उस शख्स की माशूका हूं और फिर अपना ख्वाब बयान किया। हजरत अता अकबर रजियल्लाहु तआला अन्हु ने उस औरत से फ़रमाया, बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़. उस औरत ने पढ़ा, पढ़ते ही उस का दिल भी रोशन हो गया, फिर कलमा शरीफ पढा और मुसलमान हो गई, वलिये कामिल की बारगाहे रहमत से दोनों जहां की नेअमत अपने दामन में समेटे घर पहुंची रात सोई तो किस्मत चमक चुकी थी, बाबे रहमत खुल चुका था फिर क्या था ख्वाब में देखा कि जन्नत की सेर कर रही है जन्नत के बाग़ों में घूम रही है जन्नत के मकानों को देखा जिस पर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिखा हुआ था, पुकारने वाला आवाज दे रहा है, ऐ बिस्मिल्लाह पढ़ने वाली खुश नसीब औरत अल्लाह तआला ने तुझे जो कुछ दिया वह तूने देख लिया जब आँख खुली तो बे क़रार हो कर उस ने दुआ की।

ऐ अल्लाह तआला या रहमान, या रहीम तूने मुझे जन्नत में दाखिल फ़रमा कर फिर निकाल दिया मैं तुझे बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम का वास्ता देती हूँ मुझे फिर जन्नत में भेज दे। दर्द मन्द दिल से मांगी हुई दुआ कुबूल हो चुकी थी जिस्म में हरकत पैदा हुई और उस की रूह जिस्म से परवाज़ कर गई और वह खुश बख़्त औरत जन्नत में दाख़िल हो गई। (नुज़हतुल मजालिस)

ऐ ईमान वालो ! देखा तो बिस्मिल्ला शरीफ़ में कितनी बरकतें हैं वह शख़्स एक यहूदी था और वह औरत एक यहूदन थी बिस्मिल्लाह शरीफ़ की बरकत से उन दोनों को जन्नती दूल्हा और दूल्हन बनने का शरफ़ हासिल हो गया। अलहम्दु लिल्लाह हम और आप तो मोमिन हैं गुलामे रसूल हैं अगर हम बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ा करें तो हम पर अल्लाह तआला के इनआम व इकराम का क्या आलम होगा। और दूसरी बात भी जहन नशीं कर लें कि अल्लाह के वली

के वसीले के बगैर जन्नत तो किया हर रहमत और बरकत से महरुमी ही महरुमी रहती है और जो खुश बख्त अल्लाह के प्यारों को वसीला बनाता है रहमत व बरकत भी पाता है और जन्नत का हकदार भी बन जाता है जैसा कि आप ने ऊपर पढ़ा और देखा

हुजूर मुफ्तिये आज़म मुर्शिदे आज़म क़ुतबे आलम रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हरगिज़ खुदा मिलता नहीं

बिस्मिल्लाह शरीफ़ के लिखने से मय्यित की नजात

वह शख्स बड़ा खुश किस्मत है जो मरने से पहले अच्छी बात की वसियत कर जाता है। एक शख्स ने मरने से पहले वसियत की कि जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मेरे सीने और पेशानी पर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिख देना, ऐसा ही किया गया फिर किसी ने ख्वाब में उस खुश नसीब को देख कर हाल पूछा उस ने जवाब दिया कि जब मुझे क़ब्र में रखा गया तो फ़रिश्ते आए, जब पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखी देखी तो फ़रिश्तों ने कहा तू अज़ाब से बचा यानी रहमत का हक़दार बन गया। (दुर्रे मुख्तार बाब सलातुल जनाज़ा, जि. 3, स. 185)

कफ़न पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ कैसे लिखें

अज़ीमुश्शान मुहक्क़िक हज़रत अल्लामा शामी अपनी तस्नीफ़े लतीफ़ (रद्दुल मुख्तार शरीफ़) में रक़म तराज़ हैं कि मय्यित की पेशानी पर बिस्मिल्लाह हिर्रमा निर्रहीम लिखें और सीने पर कलमा शरीफ़ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लिखें मगर नहलाने के बाद और कफ़न पहनाने से पहले कलमे की उंगली से लिखें (रोशनाई) से न लिखें)। (रद्दुल मोहतार, बाब सलातुल जनाज़ा, जि. 3, स. 186)

इन्तिबाह : कलमा शरीफ़ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ख्वाह पढ़ें या लिखें तो साथ में सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़रूर पढ़ें और लिखें।

हज़रात ! हम गुनाहगारों का इस दुनिया में या मैदाने मेहशर में कौन आसरा व सहारा है फ़क़त हमारे हुज़ूर शाफ़ए मेहशर महबूबे दावर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही हैं जो हमारे आसरा और सहारा हैं और अपनी शफ़ाअत वाली चादर में छुपा कर जन्नत में ले जाने वाले भी हैं। गुज़ारिश करने वाला अनवार अहमद क़ादरी।

और सरकार आला हज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत प्यारे रज़ा अच्छे इमाम अहमद रज़ा आशिके मदीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अहले अमल को उन के अमल काम आऐंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर

फ़िरऔन के दरवाज़े पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ : ऐ ईमान वालो ! मोमिन तो बड़ा ही खुश नसीब होता है उस के नेक अमल का सिला घर में औलाद में, रोज़ी में, रोज़गार में बल्कि

दुनिया के हर शोअबे में, बरकत व रहमत और कामयाबी की शक्ल में दिया जाता है और आख़िरत में जिस इनआम व इकराम से मोमिन ख़ुश अक़ीदा गुलामे रसूल नवाज़ा जाएगा फिर जन्नत का दूल्हा बनाया जाएगा।

लेकिन ! अगर काफ़िर नेक अमल करता है तो सिर्फ़ दुनिया में उस का अज्र मिलता है और बरकत पाता है, आख़िरत में कुछ भी न पाएगा लेकिन दुनिया में काफ़िर को भी नेक अमल का सिला मिलता है, मैं जो वाक़िआ बयान करने जा रहा हूँ सुनिये और ग़ौरो फ़िक्र कीजिये। फ़िरऔन कैसा काफ़िर अल्लाह का दुश्मन, नबी का ग़द्दार, बन्दों पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़ने वाला मगर अपने घर यानी शाही महल के बाहरी दरवाज़े पर, बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिखवाया था, जब फ़िरऔन ने ख़ुदाई क दावा किया और हज़रत मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्लाम ने उस को अल्लाह तआला पर ईमान लाने की दावत दी तो क़ुबूल न किया और सरकशी की तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ किया या अल्लाह तआला मुझे तो उस में भलाई के आसार नज़र नहीं आते, अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे कलीम मूसा अलैहिस्सलाम शायद तुम उसे हलाक कर देना चाहते हो तुम उस के कुफ़्र को देख रहे हो और मैं अपना नाम देख रहा हूँ जो उस ने अपने घर के दरवाज़े पर लिख रखा है। (नुज़हतुल मजालिस)

घर की हिफ़ाज़ हो गई : हम अहले सुन्नत व जमाअत के अज़ीमुश्शान इमाम हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस ने अपने घर के बाहरी दरवाज़े पर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिखा वह हलाकत से बच गया यानी उस घर में तबाही बरबादी नहीं आ सकती) ख़्वाह काफ़िर ही क्यों न हो तो फिर सुन्नी मुसलमान, गुलामे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क्या हाल होगा जो लिखता भी है और हर नेक काम में बार बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ता भी है। (तफ़सीरे कबीर)

बच्चे को बिस्मिल्लाह शरीफ़ सिखा दो बख़्शे जाओगे

हमारे हुज़ूर सरापा नूर प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब बचा बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम पढ़ता है तो अल्लाह तआला उस के मां, बाप के तमाम गुनाहों को बख़्श देता है। (मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! हम अपनी तक़रीर को इख़्तिताम की मन्ज़िल से गुज़ारते हुए आप हज़रात से बड़े अदब व एहतिराम के साथ अर्ज़ करना चाहेंगे कि बिस्मिल्लाह शरीफ़ का विर्द सुबह, शाम, हर नेक काम करना अपनी आदत बना लें और घर वालों को भी बार बार कहते रहें ख़ास तौर पर अपने बच्चों को भी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने का आदी बनाएं, दीन व दुनिया की भलाई हमारे लिये होगी।

वक़्त तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

दूसरा जुमा .... पहला बयान

इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसलल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ٥

तर्जमा : और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और अल्लाह का तुम पर बड़ा अफ़ज़ल है। (पारा 5, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़र्श ता अर्श सब आईना ज़माइर हाज़िर
बस क़सम खाइये अम्मी ! तेरी दानाई की

शश जहत, सम्त मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही हाल
धूम वन्नज्म में है आप की बीनाई की

और कोई गैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

और

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूत व मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पे अयां नहीं

दुरूद शरीफ़

तमहीद ! हज़रात ! अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को तमाम नामो का इल्म सिखाया और तमाम चीज़ों का नाम, तमाम ज़बानो में सिखाया और उन को तमाम मलायका के नाम और तमाम औलादे आदम के नाम और तमाम हैवानात व जमादात के नाम और हर चीज़ की क़िस्मों के नाम और तमाम शहरों और क़ियामत तक पैदा होने वाले तमाम जानदारों के नाम।

और मशहूर मुहद्दिस व मुफ़स्सिर हज़रत अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रजियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं :

وَاَسْمَاءُ الْمَطْعُوْمَاتِ وَالْمَشْرُوْبَاتِ وَكُلِّ نَعِيْمٍ فِى الْجَنَّةِ وَاَسْمَاءُ كُلِّ شَيْئٍ حَتَّى الْقَصْعَةَ وَالْقُصَيْعَةَ. فِى الْخَبَرِ عَلَّمَهُ سَبْعَ مِأَةِ اَلْفِ لُغَةٍ

यानी और तमाम खाने पीने की चीज़ों के और जन्नत की तमाम नेअमतों के नाम, और हर चीज़ के नाम यहाँ तक कि प्याला और प्याली के नाम और हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सात लाख ज़बानों का इल्म सिखाया।

(रूहुल बयान, जि. 1, स. 100)

हज़रात! जब आप लोगों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के उलूम के ख़ज़ानों को मालूम कर लिया तो खुद फ़ैसला कर के बताइये कि सय्यदे आदम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उलूम के ख़ज़ानों का आलम क्या होगा।

फ़र्श ता अर्श सब आईना ज़माइर हाज़िर
बस क़सम खाइये अम्मी ! तेरी दानाई की

शिश जहत, सम्त मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही हाल
धूम वन्नज्म में है आप की बीनाई की

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों की शान

हमारे उस्ताज़े मुअज़्ज़म हज़रत अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी अलैहिर्रहम लिखते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सिर्फ़ तजल्लिये इलाही का मुशाहदा फ़रमाया। मगर फिर भी उस दीदारे तजल्ली से उन की आँखों को किस क़दर नूरानी कमाल हासिल हुआ? हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मक़बूल तरीन किताब शिफ़ा शरीफ़ में एक हदीस लिखते हैं कि : كَانَ يُبْصِرُ النَّمْلَةَ السَّوْدَاءَ فِى اللَّيْلَةِ الظَّلْمَاءِ مِنْ عَشَرَةِ فَرَاسِخَ

यानी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बसारत (आँख की रोशनी) का यह आलम था कि वह काली च्यूंटी को अन्धेरी रात में तीस मील की दूरी से देख लिया करते थे। (शिफ़ा शरीफ़)

अल्लाहु अकबर! हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की आँखों ने सिर्फ़ नूरे इलाही की तजल्ली देखी, जब उन की आँख की नूरानियत व बसारत का यह आलम है कि एक काली च्यूंटी को अन्धेरी रात में तीस मील की दूरी से देख लिया करते थे।

तो फिर हमारे आक़ा करीम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आँख की नूरानियत व बसारत और देखने का आलम क्या होगा जिस ने खुदाए तआला की ऐन ज़ात को देखा और इस तरह देखा : مَازَاغَ الْبَصَرُ وَمَاطَغٰى

तर्जमा : आँख न किसी तरफ़ फिरी न हद से बढ़ी। (पारा 27, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो! हक़ तो यह है कि जिस आँख से खुदा नहीं छुपा, उस आँख से खुदा की खुदाई कब छुप सकती है?

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! कुरआने करीम हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का हमेशा बाक़ी रहने वाला अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा है। यह किताबे मुबीन मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नाज़िल हुई।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَنُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ (पारा 26, रुकू 5)

और कुरआने करीम मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर नाज़िल किया गया।

और कुरआने करीम उलूमे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बेश बहा ख़ज़ाना है और इस किताबे मुबीन में हर शय का इल्म मौजूद है। ग़ैब का इल्म, क़ियामत का इल्म, मौत का इल्म, मां के पेट में बच्चा है या बच्ची उस का इल्म, अल ग़रज़ जुमला उलूम का सर चश्मा कुरआने करीम है और कुरआने करीम सीनए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में मौजूद है। गोया ग़ैब का इल्म हो या क़ियामत का इल्म, या उलूमे कायनात सब हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सीनए पाक में मौजूद हैं।

हज़रत का इल्म, इल्मे लदुन्नी था ऐ अमीर
हज़रत वहीं से आए थे लिखे, पढ़े हुए

इल्मे ग़ैब का सुबूत कुरआन से

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ۝ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝

तर्जमा : रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया, इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया, मा कान वमा यकून का बयान उन्हें सिखाया। (पारा 27, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत इमाम ख़ाज़िन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं :

وَقِيْلَ اَرَادَ بِالْاِنْسَانِ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ يَعْنِىْ بَيَانَ مَا يَكُوْنُ وَكَانَ
لِاَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنَبِّئُ عَنْ خَبَرِ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ

(लिबाबुत्तावील, जि. 4, स. 208)

यानी और कहा गया है कि इन्सान से मुराद (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और बयान से मुराद जो कुछ होगा और जो कुछ हो चुका है उस का बयान है क्यों कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अव्वलीन व आख़रीन की ख़बर देते हैं।

और इमाम सावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

وَقِيْلَ هُوَ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِاَنَّهُ الْاِنْسَانُ الْكَامِلُ وَالْمُرَادُ
بِالْبَيَانِ عِلْمُ مَا كَانَ وَمَا يَكُوْنُ وَمَا هُوَ كَائِنٌ (ज़ादुल मसीर, जि. 8, स. 106)

यानी और यह भी कहा गया है कि इन्सान से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी है क्यों कि वही इन्साने कामिल हैं और बयान से मुराद है हर उस वाक़िआ का इल्म जो हो चुका है और (क़ियामत तक) होने वाला है।

और इसी तरह अल्लामा बग़वी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मुआलिमुत्तन्ज़ील में और अल्लामा इमाम जोज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अल सावी अलल जलालैन में और इमाम क़रतबी ने अल जामेउल अहकामुल क़ुरआन में लिखा कि इन्सान से मुराद, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं और बयान से मुराद जो कुछ पहले हो चुका है और जो आइन्दा होने वाला है।

इल्मे ग़ैब का सुबूत अहादीसे तैय्यिबा में

हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने : بَابُ مَا يُكْرَهُ مِنْ كَثْرَةِ السُّؤَالِ ۝ के तहत नक़्ल फ़रमाया है कि आक़ा करीम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक दिन ज़ोहर की नमाज़ के बाद मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और क़ियामत के दिन और क़ियामत से पहले की बड़ी बडी होने वाली बातों का ज़िक्र फ़रमाया फिर इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स जिस चीज़ के बारे में मुझ से सवाल करना चाहे वह सवाल कर ले, क्योंकि ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़ब तक इस जगह मैं हू, तुम लोग जिस चीज़ के बारे में मुझ से सवाल करोगे मैं तुम्हें उस की ख़बर दूँगा। यह सुन कर लोग (घबरा गए, डर गए) बहुत ज़्यादा रोने लगे और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बार, बार फ़रमाते कि मुझ से पूछो, मुझ से पूछो। हज़रत अनस रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हाज़िरीन में से एक शख़्स खड़ा हो गया।

فَقَالَ اَيْنَ مَدْخَلِيْ يَارَسُوْلَ اللهِ قَالَ النَّارُ ۝

यानी उस शख़्स ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम (मरने के बाद) मेरा ठिकाना कहाँ होगा ? (जन्नत में या जहन्नम में ?) तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि तेरा ठिकाना जहन्नम है। फिर अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा खडे हो गए और सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! मेरा बाप कौन है ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तेरा बाप हुज़ाफ़ा है।

(सही बुख़ारी, जि. , स. 1083)

मशरिक़ व मग़रिब का इल्म : आक़ा करीम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِنَّ اللّٰهَ زَوٰى لِيَ الْاَرْضَ فَرَأَيْتُ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا

(सही मुस्लिम, 390, मिश्कात शरीफ़, स. 512)

यानी बेशक अल्लाह तआला ने मेरे लिये सारी ज़मीन को समेट दी तो मैंने तमाम मशरिक़ों और मग़रिबों को देख लिया।

हज़रात ! नमाज़ की हालत की बात है कि एक सहाबी की नमाज़ में कमी वाक़ेअ हो रही

थी, रुकूअ और सज्दा मुकम्मल नहीं कर रहे थे और नमाज़ियों की आख़री सफ़ में थे तो नमाज़ से फ़राग़त के बाद आक़ा करीम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम खड़े हे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरा मुंह सिर्फ़ क़िब्ला की तरफ़ देखते हो :

فَوَاللهِ مَا یَخْفٰی عَلَیَّ رُکُوْعُکُمْ وَلَا خُشُوْعُکُمْ اِنِّیْ لَاَرَاکُمْ مِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِیْ

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 152)

यानी ख़ुदा की क़सम मुझ पर न तुम्हारा रुकूअ और न तुम्हारा ख़ुशूअ पोशीदा है और बे शक मैं तुम्हें अपने पीछे से भी देखता हूँ।

सुब्हानल्लाह ! क्या शान है हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की

यही बोले सिदरह वाले चमने जहाँ के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाए का न पाया
तुझे एक ने एक बनाया, तुझे एक ने एक बनाया

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنِّیْ لَاَنْظُرُ اِلٰی مَا وَرَائِیْ کَمَا اَنْظُرُ اِلٰی مَا بَیْنَ یَدَیَّ

यानी बे शक मैं अपने पीछे से भी ऐसा ही देखता हूँ जैसा कि अपने आगे से देखता हूँ।

(ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 61, ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 4, स. 82)

इल्मे ग़ैब का खुला सुबूत : महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : مَا بَیْنَ قَبْرِیْ وَمِنْبَرِیْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِّیَاضِ الْجَنَّةِ

यानी मेरी क़ब्र और मेरे मिम्बर के बीच की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(बैहक़ी, शअ़बिल ईमान, ज. 3, स. 491)

अल्लाहु अकबर ! हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी ज़ाहिरी हयाते तैय्यिबा में सहाबा के दरमियान फ़रमाया मगर किसी सहाबी ने चूँ व चिरा न किया और किसी तरह का एतिराज़ न किया कि ग़ैब का इल्म तो अल्लाह तआला के अलावा कोई नहीं जानता।

आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का विसाल शरीफ़ कहाँ होगा ? और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र कहाँ बनेगी ? आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क्या मालूम ? ऐसा किसी सहाबी ने नहीं कहा बल्कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जो फ़रमाया सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आमन्ना व सद्दक़ना कहा और दिल व

जान से मान लिया, इस लिये कि वह मोमिन और सहाबी थे और इल्मे ग़ैब का इनकार करना तो मुनाफ़िक़ और वहाबी का काम है।

हज़रात ! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जैसा फ़रमाया था वैसा ही हुआ। इसी जगह मज़ारे अक़दस, क़ब्रे करीम है और क़ब्रे करीम और मिम्बरे करीम के बीच की जगह को जन्नत की क्यारी कहा जाता है।

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ यानी जन्नत की क्यारी वाली हदीस को नजदी हुकूमत ने भी मस्जिदे नबवी शरीफ़ में रियाज़ुल जन्नह में लिख कर बोर्ड लगा रखा है।

हज़रात ! अपने मुख़ालिफ़ से अगर सवाल करोगे कि मस्जिद शरीफ़ की उस जगह को जन्नत की क्यारी क्यों कहते हैं ? तो सारे मुख़ालिफ़ीन का यही जवाब होगा कि हदीस शरीफ़ में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया तो हम भी मानते हैं कि मस्जिद शरीफ़ की यह जगह जन्नत की क्यारी है। गोया हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जिस जगह को जन्नत फ़रमा दें तो वह जगह जन्नत हो जाती है, अल्लाह तआला उस जगह को जन्नत बना देता है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह ज़बां जिस को सब कुन की कन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जन्नती हैं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يَطْلُعُ عَلَيْكُمْ رَجُلٌ مِنْ اَهْلِ الْجَنَّةِ فَطَلَعَ اَبُوْ بَكْرٍ فَسَلَّمَ ثُمَّ جَلَسَ (अल मुस्तदरिक, जि. 3, स. 73)

यानी तुम्हारे पास अहले जन्नत में से एक शख़्स नमूदार होगा तो अबू बक्र तशरीफ़ लाए तो उन्होंने सलाम किया और बैठ गए।

हुज़ूर ने दस सहाबा को जन्नत की बशारत दी

इसी तरह आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दस सहाबा को जन्नती फ़रमाया :

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَبُوْ بَكْرٍ فِي الْجَنَّةِ وَعُمَرُ فِي الْجَنَّةِ وَعُثْمَانُ فِي الْجَنَّةِ وَعَلِيٌّ فِي الْجَنَّةِ وَطَلْحَةُ فِي الْجَنَّةِ وَالزُّبَيْرُ
فِي الْجَنَّةِ وَعَبْدُ الرَّحْمٰنِ بْنُ عَوْفٍ فِي الْجَنَّةِ وَسَعْدُ بْنُ اَبِيْ وَقَّاصٍ فِي الْجَنَّةِ
وَسَعِيْدُ بْنُ زَيْدٍ فِي الْجَنَّةِ وَاَبُوْ عُبَيْدَةَ بْنُ الْجَرَّاحِ فِي الْجَنَّةِ

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 216, मिश्कात शरीफ़, स. 566)

यानी (1)अबू बक्र जन्नती हैं (2) उमर जन्नती हैं (3) उस्मान जन्नती हैं (4) अली जन्नती हैं (5) तलहा जन्नती हैं। (6) ज़ुबैर जन्नती हैं (7) अब्दुर्रहमान बिन औफ़ जन्नती हैं (8) सअद इब्ने अबी वक़्क़ास जन्नती हैं (9) सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं (10) अबू उबैदा बिन जराह जन्नती हैं।

मुहिब्बे सहाबा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह दसों जिन को जन्नत का मुज़दा मिला
उस मुबारक जमाअत पे लाखों सलाम

हज़रात ! क़ियामत क़ाइम होगी, हिसाब व किताब होगा, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लो करम से जिस को चाहेगा जन्नत में दाखिल फ़रमाएगा।

मगर आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुनिया ही में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा वग़ैरह दस सहाबा को जन्नती होने की बशारत अता फ़रमाई।

गोया अल्लाह तआला के महबूब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की अता से इल्मे ग़ैब है कि कौन, कौन जन्नती हैं।

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

आसमान के तारों का इल्म : हम मुसलमानों की मादरे महरबान, हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि एक रात की बात है कि हम खुले आसमान के नीचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ थे, जब मैं ने आसमान के तारों की जानिब देखा तो मैं ने आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दरयाफ़्त किया :

يَارَسُوْلَ اللهِ هَلْ تَكُوْنُ لِاَحَدٍ مِنَ الْحَسَنَاتِ عَدَدَ نُجُوْمِ السَّمَاءِ

यानी या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या किसी की नेकियाँ आसमान के तारों के बराबर होंगी ? (मिश्कात शरीफ़, स. 560)

तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : نَعَمْ عُمَرُ हाँ उमर (फ़ारूक़) हैं जिन की नेकियाँ आसमान के तारों के बरार हैं । तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया : فَاَيْنَ حَسَنَاتُ اَبِىْ بَكْرٍ

यानी तो मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नेकियों का क्या हाल है ?

तो आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने

फ़रमाया : आएशा ? उमर फ़ारूक़ की सारी नेकियाँ, अबू बक्र सिद्दीक़ की एक नेकी के बराबर हैं। उलमा उस एक नेकी के बारे में कहते हैं कि यह ग़ारे सौर वाली नेकी का ज़िक्र है।

हजरात ! हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह मालूम है कि आसमान में तारे कितने हैं और यह भी मालूम है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के पास कितनी, किती नेकियाँ हैं।

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पे अयाँ नहीं

उहद पहाड़ पर इल्मे ग़ैब का नूर : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उहद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हमराह थे और अहद पहाड़ में ज़लज़ला आ गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने क़दमे मुबारक की ऐड़ी से उहद पहाड़ को ठोकर मार कर फ़रमाया :

فَاِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيْقٌ وَشَهِيْدَانِ

यानी तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 523, मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़, जि. 11, स. 229)

हज़रात ! महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब है कि मैं और अबू बक्र सिद्दीक़ क़त्ल नहीं होंगे और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम क़त्ल किये जाएँगे और शहीद होंगे।

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

हज़रात ! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुबारक क़दमों को अपने सीने पर पाकर उहद पहाड़ मारे ख़ुशी के झूमने लगा। क़दमे नूर के इशारे से फिर रुक गया।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

एक ठोकर में उहद का ज़लज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार, अल्लाहु अकबर ऐड़ियाँ

जंग मौतह में शहीद होने वालों की ख़बर

आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यिबा में तशरीफ़ फ़रमा हैं और जंगे मौतह सेकड़ों मील दूर मुल्के शाम में हो रही है। आक़ा करीम मदीना तैय्यिबा में जो सहाबा थे उन के साथ तशरीफ़ फ़रमा हैं और उन को जंगे मौतह

में शहीद होने वालों की ख़बर दे रहे हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत ज़ैद, हज़रत जअफ़र और हज़रत इब्ने रवाहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की शहादत की ख़बर पहुँचने से पहले लोगों को दे दी थी।

فَقَالَ اَخَذَ الرَّايَةَ زَيْدٌ فَاُصِيْبَ ثُمَّ اَخَذَهَا جَعْفَرُ فَاُصِيْبَ ثُمَّ اَخَذَ ابْنُ رَوَاحَةَ

فَاُصِيْبَ وَعَيْنَاهُ تَذْرُفَانِ حَتّٰى اَخَذَ سَيْفٌ مِّنْ سُيُوْفِ اللهِ حَتّٰى فَتَحَ اللهُ عَلَيْهِمْ

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 531)

यानी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सैकड़ों मील दूर, मुल्के शाम में होने वाली जंगे मौतह में शहीद होने वाले मुजाहिदीन का नाम ले ले कर बताते जा रहे हैं और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आमन्ना व सद्दक़ना कहते जा रहे हैं और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ग़ैब की खबर को क़ुबूल करते और मानते जा रहे हैं।

मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इ ल्मे ग़ैब को मानना सहाबा और मोमिनों का अक़ीदा है और न मानना मुनाफ़िक़ों और वहाबियों, देवबंदियों का अक़ीदा है। मुलाहज़ा कीजिये।

वहाबियों, देवबंदियों का अक़ीदा

वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

अक़ीदा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न कुछ ताक़त है न कुछ इल्मे ग़ैब (और आगे लिखते हैं) कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इल्मे ग़ैब होता तो पहले हर काम का अन्जाम मालूम कर लेते और अगर भला मालूम होता तो उस काम को कर लेते और अगर बुरा मालूम होता तो क्यों उस बुराई में क़दम रखते। अलग़रज़ उन को न कुछ ताक़त है और न उन को इल्म ग़ैब है।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 41)

हज़रात! क़ुरआने करीम के उसी पारों में, अहादीसे तैय्यिबा की किताबों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के उलूमे ग़ैब के अनवार चाँद व सूरज से ज़्यादा रौशन और जगमगा रहे हैं।

मगर अबू जहल के ग़ुलामों का ईमान व अक़ीदा मर चुका है और उन की बसीरत व बसारत दोनों ज़ाए हो चुकी हैं और उन की आँखें अन्धी हो चुकी हैं इस लिये उलूमे ग़ैब के जगमगाते सितारे भी उन अन्धों को नज़र नहीं आ रहे हैं।

ख़ुदा जब दीन लेता है
तो अक़लें छीन लेता है

क़ब्रों के अन्दर के राज़ को बता दिया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बेशक इन क़ब्र वालों को अज़ाब हो रहा है और अज़ाब की कोई बड़ी वजह भी नहीं। इन में से एक चुग़ली खाता था और एक पेशाब के छींटों से एहतियात नहीं करता था! रावी बयान करते हैं कि :

ثُمَّ اَخَذَ عُوْدًا رَطْبًا فَكَسَرَهٗ بِاِثْنَیْنِ ثُمَّ غَرَزَ كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا

عَلٰی قَبْرٍ ثُمَّ قَالَ لَعَلَّهٗ یُخَفِّفُ عَنْهُمَا مَا لَمْ یَیْبَسَا

यानी फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक हरी लकड़ी ले कर (खजूर की टहनी) उस के दो टुकड़े किये और उन दोनों क़ब्रों पर एक, एक टुकड़ा गाड़ दिया फिर फ़रमाया जब तक यह लकड़ी ख़ुश्क नहीं होगी यक़ीनन इन के अज़ाब में कमी होती रहेगी। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 184)

हज़रात ! सही बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस से दो मस्अले मालूम हुए और दोनों अक़ीदे से तअल्लुक़ रखते हैं।

(1) हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह करीम ने ख़ूब इल्मे ग़ैब अता फ़रमाया है कि महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ब्र के अन्दर क़ब्र वाले को भी देखते हैं और क़ब्र वाले किस हाल में हैं उस को भी मुलाहज़ा फ़रमाते हैं :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पे अयां नहीं

(2) हम सुन्नी मुसलमान अपने बुज़ुर्गों और मुर्दों की क़ब्रों पर जो फूल डालते हैं उस की अस्ल यही हदीस है कि क़ब्रों पर रही लकड़ी या फूल डालना बिदअत नहीं बल्कि सुन्नत है।

मुख़ालिफ़ कह सकता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस क़ब्र पर हरी लकड़ी रखी जिस पर अज़ाब हो रहा था तो क्या तुम्हारे बुज़ुर्गों और मर्दों पर अज़ाब होता है जो तुम सुन्नी लोग हर क़ब्र पर फूल डालते हो।

तो उस का जवाब यह है कि हरी लकड़ी या फूल जब तक हरे और शादाब हैं तो अल्लाह तआला की तस्बीह बयान करते हैं जिस की वजह से रहमत नाज़िल होती है, अब क़ब्र वाला अगर अज़ाव में है तो अज़ाब टल जाता है और क़ब्र वाला अगर नेक व परहेज़गार है तो उस के दरजात वलन्द हो जाते हैं, इस लिये हम सुन्नी मुसलमान नेक व बद की हर क़ब्र पर फूल डालते हैं और उन की दुआएं लेते हैं।

एक मशहूर कहावत है : कि कर भला तो हो गा भला। यानी आज हम किसी की क़ब्र पर फूल डालते हैं तो कल हमारी क़ब्र पर कोई ज़रूर फूल डालेगा। (इन्शाअल्लाह तआला)

सुराक़ा के हाथ में किसरा का कंगन

आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हिजरत के मौक़े पर अपना तआक़ुब (पीछा) करने वाले शख़्स सुराक़ा बिन मालिक को तौह करने के बाद जब सुराक़ा रुख़सत होने लगा।

قَالَ لَهٗ كَيْفَ بِكَ يَا سُرَاقَةُ إِذَا تَسَوَّرْتَ بِسِوَارَيْ كِسْرٰى

यानी फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐ सुराक़ा (मैं देख रहा हूँ) कि तुझे किसरा का कंगन पहनाया जाएगा।

(अस्सारिरतुल हलबिया, जि. 2, स. 45)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में ईरान फ़तह हुआ, तो माले ग़नीमत में किसरा का कंगन मौजूद था, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से वह कंगन सुराक़ा बिन मालिक को पहनाया गया। (सीरत हलबी, जि. 2, स. 45)

हज़रात ! बरसों बाद होने वाला वाक़िआ हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम देख रहे थे और जैसा फ़रमाया था वैसा ही हुआ।

और कोई ग़ैब किया तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हज़रत सुराक़ा बीमार हो गए थे, बीमारी इस क़दर सख़्त और ज़्यादा थी कि आप के बचने की कोई उम्मीद नहीं नज़र आती थी, हकीमों और तबीबों ने जवाब दे दिया था, लोग ना उम्मीद हो कर आप से मिलने आते थे, इसी तरह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी आख़री वक़्त समझ कर आप से मिलने आए और मुलाक़ात के वक़्त फ़रमाया कि ऐ सुराक़ा तुम्हारा आख़री वक़्त है, अगर मुझ से कोई तकलीफ़ पहुँची हो तो मुआफ़ करना। इतना सुनना था कि हज़रत सुराक़ा जोश में आ गए और फ़रमाया ! ऐ उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क्या तुम समझते हो कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब आ गया है, और अब मैं इस दुनिया से जा रहा हूँ। क़सम ख़ुदा की मुझे मौत उस वक़्त तक नहीं आएगी जब तक मेरे आक़ा करीम ग़ैब दां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक पूरा नहीं हो जाता। मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हिजरत के मौक़े पर फ़रमाया था कि ऐ सुराक़ा ! मैं तेरे हाथ में किसरा का कंगन देख रहा हूँ। उस वक़्त तक में मरूँगा नहीं जब तक मैं किसरा का कंगन पहन लूँगा। (नुज़हतुल मजालिस)

हज़रात ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब पर मज़बूत यक़ीन और ज़बर दस्त भरोसा था कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम ने बरसों पहले जो फ़रमा दिया है, बरसां बाद होने वाले वाक़िआ के बारे में उस में कोई रद्दो बदल नहीं हो सकता और वह होकर रहेगा। तो वही हुआ जो फ़रमाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम था।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पर अयां नहीं

दुरूद शरीफ़ :

अबू सुफ़ियान के ख़यालात की ख़बर : फ़तह मक्का के वक़्त अबू सुफ़ियान जो इस्लाम कुबूल कर चुके थे, सहाबए किराम के हमराह महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तवाफ़ का मन्ज़र देखा तो दिल में ख़याल किया कि मेरे पास लश्कर होता तो दुबारह उस शख़्स के साथ जंग करता। ग़ैबदां नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अबू सुफ़ियान के ख़यालों को जान लिया और अबू सुफ़ियान के पास तशरीफ़ लाए और अपना दस्ते मुबारक अबू सुफ़ियान के दोनों कन्धों के दरमियान रखा और फ़रमाया : (अगर तू मुझ से जंग करता) إِذًا أَخْزَاكَ اللّٰهُ तो फिर अल्लाह तआला तुझे ज़लील करता।

अबू सुफ़ियान ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने सामने क़याम फ़रमा देख कर कहा : مَا أَيْقَنْتُ أَنَّكَ نَبِيٌّ حَتَّى السَّاعَةِ

यानी मुझे यक़ीन नहीं था कि आप क़ियामत तक के लिये नबी हैं।

(दलाइलुन्नुबुव्वत लिल बैहक़ी, जि. 5, स. 10)

इसी रात अबू सुफ़ियान ने अपनी बीवी से कहा कि क्या आज जो कुछ हुआ तो उसे अल्लाह की जानिब से समझती है, तो उस ने कहा : हाँ यह सब कुछ अल्लाह तआला की जानिब से है। सुबह जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुलाक़ात हुई तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अबू सुफ़ियान को उस की गुफ़्तुगू जो उस की बीवी से हुई थी, आगाह करते हुए फ़रमाया :

قُلْتَ لِهِنْدٍ أَتَرَيْنَ هٰذَا مِنَ اللّٰهِ

तूने (अपनी बीवी) हिन्दा से यह कहा था कि क्या यह सब कुछ अल्लाह तआला की जानिब से है। (दलाइलुन्नुबुव्वत, जि. 5, स. 102)

तो अब ! हज़रत अबू सुफ़ियान बे साख़्ता पुकार उठे कि : أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُوْلُ اللّٰهِ

यानी मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं और उस वक़्त मेरे साथ मेरी बीवी के अलावा कोई दूसरा नहीं था। तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को कैसे ख़बर हो गई। यक़ीनन आप अल्लाह तआला के नबी हैं। (दलाइलुन्नुबुव्वत, जि. 5, स. 103)

हज़रात ! हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान मज़बूत हो गया और

दो बारह कलमा पढ़ने की तौफ़ीक़ मिली तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्मे ग़ैब को देख कर।

अफ़सोस सद अफ़सोस ! कि आज कल के वहाबी, देवबन्दी अपने आप को मुसलमान भी कहते हैं और नबी के इल्मे ग़ैब का इनकार भी करते हैं तो उन लोगों को अबू सुफ़ियान से कुछ सबक़ पढ़ लेना चाहिये ताकि तौबह की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए।

इल्मे ग़ैब ज़ाती और इल्मे ग़ैब अताई

हज़रात ! अल्लाह तआला को जो इल्मे ग़ैब है वह ज़ाती है बग़ैर किसी के दिये है और आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जो इल्मे ग़ैब है अताई है। अल्लाह के दिये से है।

अब ! मुख़ालिफ़ से पूछा जाए कि क्या अल्लाह तआला इल्मे ग़ैब देने पर क़ादिर है कि नहीं तो उस का यही जवाब होगा कि : إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

यानी बे शक अल्लाह तआला हर शय पर क़ादिर है और इल्मे ग़ैब देने पर भी क़ादिर। तो हम सुन्नी मुसलमानों का यही ईमान व अक़ीदा है कि हमारे आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से ही आलिमे ग़ैब, ग़ैब दां और ग़ैब के जानने वाले हैं।

फिर भी हमारा मुख़ालिफ़ हम सुन्नियों पर इल्ज़ाम लगाते नहीं थकता कि सुन्नी बरैलवी उलमा अल्लाह तआला के इल्म को और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म को बराबर जानते हैं इस लिये सुन्नी मुसलमान काफ़िर व मुश्रिक हैं।

और अपने दावे को साबित करने के लिये क़ुरआने करीम की इस आयते पाक को पेश करते हैं। قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ط

तर्जमा : तुम फ़रमाओ ग़ैब नहीं जानते जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं मगर अल्लाह।

(पारा 20, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

इस आयत को वहाबी, देवबन्दी बड़ी कसरत से पढ़ते हैं और कहते हैं कि देखो इस आयत में साफ़ साफ़ लिखा है कि अल्लाह तआला के अलावा कोई भी, नबी हों या रसूल ग़ैब नहीं जानते

तो ! हम अर्ज़ करेंगे कि हमारा भी यह अक़ीदा व ईमान है कि ज़ाती तौर पर अल्लाह तआला के अलावा कोई भी ग़ैब नहीं जानता, ज़ाती तौर पर सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के पास इल्मे ग़ैब है और उस आयत में जो हुक्म है वह ज़ाती इल्मे ग़ैब के बारे में है।

और ! अल्लाह तआला की अता से हर नबी व रसूल ग़ैब दां हैं मुलाहज़ा कीजिये।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا ۙ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

तर्जमा : ग़ैब का जानने वाला तो अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता सिवाए अपने पसन्दीदा रसूलों के। (पारा 29, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! यह आयते करीमा साफ़ तौर पर एलान कर रही है कि अल्लाह तआला के

रसूलों का मुक़द्दस गिरोह जो ख़ुदा के पसन्दीदा हैं उन को आलिमुल ग़ैब अल्लाह तआला अपने ग़ैब पर मुत्तलअ फ़रमाता है। यानी उन को इल्मे ग़ैब अता फ़रमा कर, ग़ैब दां बना देता है

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ٥

यानी ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! आप जो कुछ नहीं जानते थे उन सब चीज़ों का अल्लाह तआला ने आप को इल्म अता फ़रमा दिया है और आप पर अल्लाह तआला का फ़ज़्ल बहुत ही बड़ा है। (पारा 5, रुकू 14)

पाँच चीज़ों का इल्म ! मुख़ालिफ़ का धोका ! कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पाँच चीज़ों का इल्म नहीं है। (1) क़ियामत कब आएगी। (2) बारिश कब होगी ? (3) मां के पेट में क्या है ? (4) कौन कल क्या करेगा ? (5) कौन कहाँ मरेगा ?

अल्लाह तआला फ़रमाता : وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ

यानी ऐ महबूब (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) आप जो कुछ नहीं जानते थे (फिर से ग़ौर से सुनिये) आप जो कुछ नहीं जानते थे उन सब चीज़ों का अल्लाह तआला ने आप को इल्म अता फ़रमा दिया है। (पारा 5, रुकू 13)

अब आप ख़ुद फ़ैसला करें कि उन पाँच चीज़ों का इल्म बाक़ी कैसे रह सकता है जब कि अल्लाह तआला ने सब कुछ सिखा दिया है।

हज़रत का इल्म, इल्मे लदुन्नी था ऐ अमीर
हज़रत वहीं से आए थे लिखे पढ़े हुए

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ का इल्म : आक़ा करीम, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म की शान तो बहुत ही बलन्द व बाला है। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा और ग़ुलाम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भी अल्लाह तआला ने इल्मे ग़ैब की नेअमत व दौलत से सर फ़राज़ फ़रमाया है और वह भी जानते हैं कि औरत के पेट में बच्चा है या बच्ची है।

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब उन के विसाल का वक़्त आया तो कुछ वसियत फ़रमाई जिस में से एक वसियत यह थी कि यह मीरास की चीज़ें हैं और तुम्हारे दो भाई और दो बहनें हैं (जब कि एक ही बहन थी) तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि अब्बा जान मेरी तो एक ही बहन अस्मा हैं दूसरी कौन है ?

فَقَالَ اَبُوْبَكْرٍ ذُوْبَطْنِ بِنْتِ خَارِجَةَ اُرَاهَا جَارِيَةً

तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर ने फ़रमाया वह बिन्ते ख़ारिजा के पेट में है और वह मेरे ख़याल में लड़की है। (मुअत्ता इमाम मालिक, जि. 2, स. 645, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 15)

और ! हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी बिन्ते ख़ारिजा के यहाँ लड़की पैदा हुई जिन का नाम उम्मे कुलसूम रखा गया।

हज़रात ! जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इल्म की यह शान है तो महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म की शान व बुज़ुर्गी का आलम क्या होगा।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म का इल्म

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा में हैं और हज़ारों मील दूर इस्लामी लश्कर को देख रहे हैं और यह भी देख रहे हैं कि दुश्मन धोका से इस्लामी लश्कर को हलाक करना चाहता है तो लश्करे इस्लाम के अमीर हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जुमा मुबारका के दिन ऐन ख़ुतबा के वक़्त पुकारा يَا سَارِيَةُ الْجَبَل यानी ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ देखो और जब हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पहाड़ की जानिब नज़र की तो दुश्मन को देख लिया और दुश्मन का हमला नाकाम रहा और लश्करे इस्लाम ने फ़तह व नुसरत के झन्डे बलन्द कर दिये।

(मिश्कात शरीफ़, स. 546, दलाइलुन्नुबुव्वत, स. 507)

हज़रात ! हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना तैय्यिबा से हज़ारों मील दूर लश्करे इस्लाम को देख लिया और उन को आवाज़ दे कर दुश्मन की चाल से आगाह भी कर दिया। जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इल्म की यह शान है तो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इल्म की बुज़ुर्गी और बरतरी का आलम क्या होगा।

सरे अर्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शय नहीं वह जो तुझ पे अयां नहीं

हज़रत मौला अली की निगाह : एक दिन हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आदमी की शक्ल में सर चश्मए विलायत हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और अर्ज़ किया कि ऐ अली बताओ 1 कि इस वक़्त जिब्रील कहाँ हैं ?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पहले दाएं फिर बाएं देखा, फिर ज़मीन व आसमान की तरफ़ देख कर फ़रमाया मैं इस वक़्त जिब्रील को न तो आसमानों में पाता हूँ और न ज़मीन में, शायद तू ही जिब्रील है। (नुज़हतुल मजालिस, जि. 2, स. 352)

हज़रात ! हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सारी ज़मीन को देख डाला और तमाम आसमानों को नज़र किया और बैठे हैं मदीना तैय्यिबा में तो जब हज़रत अली की निगाह की यह शान है तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह व नज़र की शान का आलम क्या होगा।

हज़रत ग़ौसे आज़म की निगाह : आले नबी औलादे अली, कुतबुल अक़्ताब, सुलतानुल बग़दाद, अबू मुहम्मद, अबुश शैख़ सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं : لَوْلَا لِجَامُ الشَّرِيْعَةِ عَلٰى لِسَانِيْ لَاَخْبَرْتُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ اَنْتُمْ بَيْنَ يَدَيَّ كَالْقَوَارِيْرِ مَا فِيْ بَوَاطِنِكُمْ وَظَوَاهِرِكُم

यानी अगर मेरी ज़बान पर शरीअत की रोक न होती, तो मैं तुम्हें ख़बर देता जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में जमा करते हो तुम मेरे सामने शीशे की तरह हो, मैं तुम्हारा ज़ाहिर व बातिन सब कुछ देख रहा हूँ। (बहजतुल असरार, स. 24)

और फ़रमाते हैं : نَظَرْتُ اِلٰى بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا
كَخَرْ دَلَةٍ عَلٰى حُكْمِ اتِّصَالٖ

यानी मैं अल्लाह तआला के तमाम शहरों को ऐसे देखता हूँ जैसे, हथेली पर राई का दाना।
(क़सीदए ग़ौसिया शरीफ़)

सुब्हानल्लाह ! जब हमारे पीरे आज़म, हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान का यह आलम है तो हमारे नबी, रसूले आज़म मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह की शान व शौकत का आलम क्या होगा।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की निगाह : हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द, हज़रत सय्यद मुईनुद्दीन चिश्ती संजरी, अजमेरी हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में एक शख़्स ख़न्जर छुपा कर आप को क़त्ल करने के इरादे से आया, हमारे प्यारे ख़्वाजा हज़रत ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की अता की हुई रूहानियत की निगाह से उस शख़्स के बुरे इरादे को देख लिया। वह शख़्स हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आकर बैठ गया तो हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस के साथ अख़्लाक़े करीमाना का बेहतरीन सुलूक पेश किया और इरशाद फ़रमाया कि तुम ख़न्जर बाहर निकालो और जिस काम के इरादे से आए हो उस को पूरा करो ! यह सुनते ही वह शख़्स कांपने लगा और बड़ी आजिज़ी के साथ कहने लगा कि मुझ को लालच दे कर आप को क़त्ल करने के लिये भेजा गया है। यह कह कर उस शख़्स ने बग़ल से ख़न्जर निकाल कर सामने रख दिया और क़दमों में गिर कर कहने लगा कि आप मुझ को मेरी ग़लती की सज़ा दीजिये बल्कि मेरे ख़न्जर से मेरा काम तमाम कर दीजिये। हमारे रहीम व करीम ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हम फ़क़ीरों दुरवेशों का शेवा है कि हमारे साथ कोई बदी भी करता है तो हम उस को नेकी और भलाई का सिला देते हैं फिर हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस के लिये दुआ फ़रमाई, वह शख़्स बहुत मुतास्सिर हुआ और उसी वक़्त से ख़िदमते अक़दस में रहने लगा। हमारे प्यारे ख़्वाजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबत की बरकत से ताइब हुआ और उस को 45 बार हज्जे कअ़बा की सआदत हासिल हुई और उसी मुक़द्दस ज़मीन में बादे विसाल मदफ़ून हुआ। (मिरअतुल मनाजीह, स. 598)

हज़रात ! अल्लाह तआला की दैन व अता मुलाहज़ा कीजिये कि उस ने हमारे प्यारे

ख़्वाजा, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इल्मे ग़ैब की नेअमत से नवाज़ा है और हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लोगों के दिलों के हालात को देखते हैं। तो मुझे बताना यह है कि जब हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लोगों क़े दिलों के हालात को देखते हैं। तो मुझे बताना यह है कि जब हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाह का यह आलम है तो आक़ाए कायनात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है मुख़्तार का आलम क्या होगा

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

ज़िक्रे इलाही की फ़ज़ीलत व बरकत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

فَاذْكُرُوْنِیْٓ اَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِیْ وَلَا تَكْفُرُوْنِ ٥

तर्जमा : तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा चरचा करूँगा और मेरा हक़ मानो और मेरी ना शुक्री न करो। (पारा 2, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! जिस इन्सान का क़ल्ब अल्लाह तआला के ज़िक्र में लगा है वह इन्सान ज़िन्दा है और जिस इन्सान का क़ल्ब अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल है वह इन्सान मुर्दा है। (बुखारी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 188)

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे इस्लाम बिन रज़ा फ़रमाते हैं :

لَا مَوْجُوْدَ اِلَّا اللّٰهُ — لَا مَشْهُوْدَ اِلَّا اللّٰهُ

لَا مَقْصُوْدَ اِلَّا اللّٰهُ — لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

اٰمَنَّا بِرَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ

मौला दिल का ज़ंग छुड़ा, क़ल्बे नूरी पाए जिला
दिल को कर दे आईना, जिस में चमके यह कलमा
ला इलाहा इल्लल्लाह आमन्ना बि रसूलिल्लाह

हमारे सरकार प्यारे आक़ा रहमते आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है।

अफ़ज़लुज़्ज़िक्र शरीफ़ : ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 201)

कलमा शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हमारे प्यारे रसूल रहमते आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ قَالَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَدَخَلَ الْجَنَّةَ

यानी जिस ने ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहा वह जन्नत में दाख़िल होगा (बुख़ारी, मुस्लिम व कश्फ़ुल ग़म्मा, जि. अव्वल, स. 21)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वज़ीफ़ा : हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ की, या बारी तआला मुझे कोई ऐसा वज़ीफ़ा बता दे कि उस से मैं तुझे याद करूँ। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया : ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा करो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की या अल्लाह तआला तेरे बे शुमार बन्दे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ते हैं तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा करो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की या अल्लाह तआला मुझे ऐसा वज़ीफ़ा बता। जो सिर्फ़ मेरे लिये ख़ास हो तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

يَا مُوْسٰى لَوْ اَنَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعَ وَالْاَرَضِيْنَ السَّبْعَ فِىْ كَفَّةٍ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فِىْ كَفَّةٍ لَمَالَتْ بِهِنَّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

तर्जमा : यानी ऐ मूसा अलैहिस्सलाम अगर सातों आसमान और सातों ज़मीन तराज़ू के एक पलड़े में रखा जाए और ला इलाहा इल्लल्लाह दूसरे पलड़े में रखा जाए तो ला इलाहा इल्लल्लाह जिस पलड़े में रखा जाएगा वह पलड़ा भारी होगा और वज़न दार हो जाएगा। (मिश्कात शरीफ़, स. 201)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि मेरे प्यारे अल्लाह तआला का नाम कायनात की सारी चीज़ों से भारी और वज़न दार है।

मेरे ख़्वाजा के दयार की नूरानी हिकायत

मेरे प्यारे ख़्वाजा हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हिन्दूस्तान में एक हिन्दू मुश्रिक था जो कुफ़्र में डूबा हुआ बुतों की पूजा करता था एक मरतबा किसी मुश्किल में मुब्तला हुआ परेशानी और हैरानी के आलम में जिस बुत को पूजता था उस बुत के पास गया और अपनी मुश्किल बयान की और मुराद मांगी मगर पत्थर तो पत्थर ही है कुछ न हुआ हिन्दू, मुश्रिक, मुश्किल में घिरा रहा वह मुश्रिक बुत से ना उम्मीद हो कर उस ने सोचा मुसलमान अल्लाह तआला को मानते हैं मैं भी इस मुश्किल घड़ी में अल्लाह तआला से मदद मांगूँ और देखूँ कि क या होता है। इस मुश्रिक ने शर्मिन्दा हो कर अपनी निगाह आसमान की तरफ़ उठाई और बलन्द आवाज़ से पुकारा या अल्लाह ! फ़ज़ा में कुड़का हुआ बिजली चमकी नूर का हाला आसमान पर छा गया और निदा आई 0لَبَّيْكَ يَا عَبْدِىْ

ऐ मेरे बन्दे मैं मौजूद हूँ, मांग जो मांगता है तेरी हाजत पूरी की जाएगी। मुश्किल आसान की जाएगी। तेरा दामन मुरादों से भर दिया जाएगा। फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला की बारगाह

करम में अर्ज़ किया या अल्लाह तआला यह बन्दा मुश्रिक है बुतों की पूजा करता था मगर बुतों ने उस की कुछ न सुनी और तुझे एक मरतबा ही पुकारा है और तूने जवाब दे दिया तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से फ़रमाया अगर मैं भी उस बुत की तरह जवाब न दूँ तो मेरा बन्दा कहाँ जाएगा वह बुत झूटे हैं और मैं सच्चा ख़ुदा हूँ और अपने बन्दे की फ़रियाद सुनता हूँ और मदद करता हूँ, उस बुत परस्त मुश्रिक ने जब यह माजरा देखा तो कलमा शरीफ़ पढ़ा : ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और मुसलमान हो गया। (नुज़हतुल मजालिस, जि. अव्वल)

ऐ ईमान वालो ! अपने प्यारे अल्लाह तआला की शान को जानो और समझो कि अल्लाह तआला जब एक मुश्रिक की आवाज़ पर لَبَّيْكَ يَا عَبْدِيْ0 फ़रमाता है तो हम गुलामाने महबूबे ख़ुदा हैं अगर हम यक़ीनन सिद्क़ दिल से अपने प्यारे अल्लाह तआला को पुकारें तो अल्लाह तआला हम पर किस क़दर कसरत से रहमत व बरकत नाज़िल फ़रमाएगा कि मुश्किलें आसान और तकलीफ़ें दूर होती नज़र आएंग और हमारे सारे काम बनेंगे और हम बा मुराद हो जाऐंगे।

आओ हम सब मिल कर पढ़ लें : ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

उस्ताज़े ज़मन शाइरे शीरीं सुख़न हज़रत मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

क्यों कर न मेरे काम बनें ग़ैब से हसन
बन्दा भी हूँ तो कैसे बड़े कारसाज़ का

मेरे मुर्शिदे आज़म कुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म इब्ने रज़ा अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मैं हूँ बन्दा वह मौला, कौन है अपना उस के सिवा
मैं हूँ उस का वह है मेरा, जिस ने बनाया और पाला

ला इलाहा इल्लल्लाह आमन्ना बि रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

हर मख़्लूक़ अल्लाह तआला का ज़िक्र करती है

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला की हर मख़लूक़ चाहे छोटी हो या बड़ी, आसमानों में हो या ज़मीन में , या समन्दर के पानी के नीचे सब अपने अपने तरीक़े से अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं मगर कुछ इन्सान और जिन्नात ही हैं जो अपने पैदा करने वाले अल्लाह तआला के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हैं। अल्लाह तआला कुरआन शरीफ़ पारा 15, रुकू 5 में फ़रमाता है :

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ

तर्जमा : और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती होती उस की पाकी न बोले। (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना नईमुद्दीन मुराद आबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी तफ़सीर खज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं :

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा सहाबिये रसूल सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हर ज़िन्दा दरख़्त यानी पेड़ अल्लाह तआला की तस्बीह करता है और हर चीज़ की तस्बीह उस की हैसियत के मुताबिक़ है ?

मुफ़स्सेरीने किराम फ़रमाते हैं कि दरवाज़ा खोलने की आवाज़ और छत का चटखना यह भी तस्बीह करता है और उन सब की तस्बीह سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ है। सहाबिये रसूल हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हम ने अपने सरकार मदीने के ताजदार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अंगुश्तहाए मुबारका से पानी के चश्मे जारी होते हुए देखा और यह भी देखा कि हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब खाना खाते तो खाना अल्लाह तआला की तस्बीह करता था

(बुख़ारी, जि. 1, स. 32, मुस्लिम, जि. 2, स. 245)

अफ़ज़लुज़्ज़िक्र कलमा शरीफ़ : दीवानए मुस्तफ़ा हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उम्मत के ग़मख़्वार हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : अफ़ज़ल ज़िक्र ला इलाहा इल्लाह है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, मिश्कात, स. 201)

दोज़ख से आज़ाद : नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जो शख़्स गवाही दे (यानी पढ़े) ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) यानी अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं, मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

तो अल्लाह तआला उस पर दोज़ख को हराम कर देता है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 46, मिश्कात शरीफ़, स. 14)

दो गुलाम आज़ाद करने का सवाब

हमारे सरकार महबूबे किरदिगार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाय : जो शख़्स सोने से पहले दो मरतबा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पढ़ ले गोया उस ने अल्लाह की राह में दो गुलाम आज़ाद किये। (अनीसुल वाएज़ीन)

अर्श आज़म का सवाल : हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद है। जब कोई अल्लाह तआला का बन्दा ला इलाहा इल्लल्लाह कहता है तो अल्लाह तआला का अर्श हिलने लगता है हुक्म होता है ऐ अर्श साकिन हो जा। अर्श अर्ज़ करता है ऐ अल्लाह तआला जिस ने कलमा पढ़ा उस को बख़्श दे ताकि मुझे सुकून मिले तो अल्लाह तआला फ़रमाता है मैंने कलमा शरीफ़ पढ़ने वाले बन्दे को बख़्श दिया।

(अनीसुल वाएज़ीन)

हर क़तरे के बदले सवाब ही सवाब है

नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं। नमाज़े फ़ज्र के बाद सूरज निकलने तक जो बन्दा ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

पढ़े और दरमियान में दुनियावी बात न करे तो अल्लाह तआला उस बन्दे को ज़रूर जन्नत अता फ़रमाएगा और जो वुज़ू करते वक़्त कलमा शरीफ़ पढ़ता रहता है तो अल्लाह तआला हर क़तरे के बदले में एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो क़ियामत तक कलमा पढ़ेगा और उस का सवाब उस शख़्स को मिलेगा। (अनीसुल वाएज़ीन)

कामयाबी का नुस्ख़ा : अल्लाह तआला के हबीब, हमारे तबीब रहमते आलम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं :

اَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) تُفْلِحُوْا

यानी ऐ लोगो ! ला इलाहा इल्लल्लाह (मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) पढ़ो कामयाब हो जाओगे।

(कश्फ़ुल गम्मा)

ऐ ईमान वालो ! अपने प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक बार बार पढ़िये और सोचिये कि हम को दूर जाने की ज़रूरत नहीं भटकने की हाजत नहीं कलमा शरीफ़ पढ़िये और कामयाब हो जाए।

सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो तेरे दर से यार फिरते हैं, दर बदर यूँ ही ख़ार फिरते हैं
उस गली का गदा हूँ मैं जिस में, मांगते ताजदार फिरते हैं

बीमारी से नजात : सय्यिदुत्ताइफ़ा हम क़ादरियों के मुर्शिदे आज़म हज़रत सय्यदना जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मरतबा मक्का शरीफ़ कअ़बा मुअज़्ज़मा की ज़ियारत के लिये फ़रीज़ए हज की अदाएगी के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे। सफ़र जारी है एक मक़ाम पर सवारी मक्का शरीफ़ की जानिब चलने की बजाए कुस्तुनतुनिया की जानिब चल पड़ी। बहुत कोशिश पकड़ने के बावजूद सवारी कुस्तुनतुनिया के शहर में दाख़िल हो गई। वहाँ पहुँच कर देखता हूँ कि लोग कसीर तादाद में ज़मा हैं और आपस में महवे कलाम हैं। मालूम करने पर पता चला कि बादशाह की लड़की पर दीवानगी का दौरा पड़ा है और किसी तबीब की तलाश की जा रही है। हज़रत जुनैदे बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मुझे ले चलो मैं बादशाह की लड़की का इलाज कर दूँगा लोग मुझे बादशाह के पास ले गए। जब शाही महल के दरवाज़े पर पहुँचा तो अन्दर से आवाज़ आई। ऐ जुनैद ! तू कब तक अपनी सवारी को हमारे पास आने से रोकता रहेगा। जब कि अल्लाह तआला ने आप को अपनी मख़लूक़ का मसीहा बनाया है। (मसीहा मरीज़ के पास आ गया) हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा एक लड़की हुस्नो जमाल में यकताए रोज़गार ज़ंजीर में बन्धी हुई है और मुझ से फ़रियाद कर रही है कि हज़रत ! मेरे लिये दुआ , कीजिये और मुझे बचा लीजिये। मुझे बीमारी से नजात दिला दीजिये मुझे बला ने पकड़ लिया है। रहम कीजिये, करम कीजिये।

हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मैंने बादशाह की लड़की से कलमा शरीफ़ यानी ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पढ़ने को कहा। लड़की ने बलन्द आवाज़ से कलमा शरीफ़ पढ़ा, कलमा

शरीफ़ पढ़ते ही ज़ंजीर टूट कर गिर गई और बादशाह की लड़की बला से नजात पाकर उसी वक़्त तन्दुरुस्त हो गई। बादशाह अपने सामने यह सब कुछ देख कर हैरान हुआ और कहने लगा। ऐ हज़रत जुनैद बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप कितने प्यारे और अच्छे हकीम हो कि एक पल में मेरी लड़की की बीमारी दूर करके उसे अच्छा और तन्दुरुस्त कर दिया। हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं मैं ने बादशाह से कहा तुम भी कलम शरीफ़ पढ़ तो, तुम्हारे दिल से कुफ्र की बीमारी दूर हो जाएगी। बादशाह ने कलमा शरीफ़ पढ़ा और मुसलमान हो गया। कलमा शरीफ़ की बरकत और एक वली की करामत देख कर कसीर तादाद में लोग मुसलमान हो गए। (नुजहतुल मजालिस जि. 1, स. 16)

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से
उठा ले आए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

ऐ ईमान वालो ! कलमा शरीफ़ पढ़ने वाले शीआ भी हैं वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी भी हैं मगर कोई असर नहीं होता। मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के वली के साए में जो इबादत होती है वही कुबूल होती है और अल्लाह तआला के वली का दामन हाथ में हुआ और कलमा शरीफ़ पढ़ा जाता है तो मोमिन का ईमान ताज़ा होता है और कुफ्र का अन्धेरा छट जाता है और इस्लाम का उजाला फैल जाता है।

खूब फ़रमाया मेरे मुर्शिद आज़म, हम शबीहे ग़ौसे आज़म, कुतबे आलम अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हरगिज़ खुदा मिलता नहीं

दुरूद शरीफ़ :

जन्नत की कुन्जी : عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی
عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ مَفَاتِیْحُ الْجَنَّۃِ شَھَادَۃُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ٥

तर्जमा : मआज़ इब्ने जबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गवाही देना जन्नत की कन्जी है। (मिश्कात शरीफ, स. 15)

गुनाहगार जन्नत में : हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन एक गुनाहगार लाया जाएगा जिस के निनानवे दफ़्तर गुनाहों से भरे होंगे और उन की लम्बाई हद्दे नज़र तक होगी फिर अल्लाह तआला फ़रमाएगा तू इन में से किसी चीज़ का इनकार करता है। गुनाहगार अर्ज़ करेगा नहीं फिर फ़रमाया जाएगा तेरे पास कोई उज़्र है, वह गुनाहगार कहेगा मेरे पास कोई उज़्र भी नहीं, फिर रहम व करम वाला अल्लाह तआला फ़रमाएगा तेरी एक नेकी है। आज तुझ पर ज़ुल्म नहीं

दिया जाएगा, उस वक़्त एक परचा कागज़ का निकाला जाएगा जिस में अशहदु अंल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) लिखा होगा (खुलूस दिल महब्बत से जो पढ़ा था) उस पर्चा को मीज़ान के एक पलड़े में रखा जाएगा और निनानवे दफ़्तर गुनाहों के दूसरे पलड़े में। गुनाहों का पलड़ा हलका हो जाएगा और कलमा वाला पलड़ा वज़नी हो जाएगा। अब वह गुनाहगार अर्ज़ करेगा ऐ मेरे अल्लाह तआला निनानवे दफ़्तर गुनाहों के मुक़ाबले में एक कागज़ के परचे की क्या हक़ीक़त है ? तो अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाएगा कि मेरे नाम के बराबर कोई चीज़ नहीं हो सकती। मेरा नाम सब से वज़नी और भारी है कलमा शरीफ़ की बरकत से गुनाहगार बख़्श दिया जाएगा और जन्नत का दूल्हा बना दिया जाएगा। (हाकिम, मिश्कात, स. 486)

कलमा शरीफ़ के पढ़ने से गुनाह बख़्श दिये गए

हमारे हुज़ूरे पाक साहिबे लौलाक मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि एक आराबी (देहाती) सहाबी हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं बहुत गुनाहगार हूँ (मैं बहुत गुनाहगार हूँ) तो हमारे आक़ा रहमत ही रहमत करम ही करम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस आराबी से सवाल किया तेरे गुनाह सितारों से ज़्यादा हैं ? उस आराबी ने अर्ज़ किया हाँ। फिर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या बारिश के क़तरों से भी ज़्यादा तेरे गुनाह हैं, उस आराबी ने जवाब दिया, हाँ फिर हमारे सरकार बे सहारों के मददगार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पूछा, क्या दरख़्तों के पत्तों से ज़्यादा तेरे गुनाह हैं ? तो उस देहाती ने जवाब दिया हाँ! फिर मेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पूछा क्या तेरे गुनाह अल्लाह तआला की रहमत से भी ज़्यादा हैं तो इस सवाल पर वह आराबी ख़ामोश हो कर रोने लगा। हमारे प्यारे नबी ने बड़ी शफ़क़त व महब्बत भरे लहजे में फ़रमाया, कलमा शरीफ़ ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ ले। अल्लाह तआला (कलमा शरीफ़ की बरकत से) तेरे तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा। (अनीसुल वाएज़ीन)

ऐ ईमान वालो ! क्या शान है कलमा शरीफ़ की, क्या रहमतें, बरकतें हैं कलमा शरीफ़ की। आइये हम सब मिल कर बलन्द आवाज़ से एक दूसरे को गवाह बना कर कलमा शरीफ़ पढ़ लें। ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

हज़रात ! यक़ीन है और रहमत से पूरी उम्मीद है कि इस पूरे मजमे में किसी न किसी का कलमा शरीफ़ पढ़ना हमारे प्यारे अल्लाह तआला को पसन्द होगा और ज़रूर होगा और एक के सदक़े में हम सब रहम व करम से मालामाल कर दिये जाऐंगे।

रहमत की सदा है।

हम तो माइल ब करम हैं को साइल ही नहीं
राह दिखलाएं किसे रहरवे मन्ज़िल ही नहीं

कलमा पढ़ने से ईमान ताज़ा होता है

सहाबिये रसूल हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि हमारे आक़ा जन्नत के दूल्हा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: ईमान ताज़ा करो, सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन ने अर्ज़ किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ईमान किस तरह ताज़ा करें ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कसरत से पढ़ा करो। (तबरानी)

कलमा पढ़ने वाले पर दोज़ख़ हराम है

उबादह इब्ने सामित सहाबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान किया कि हमारे आक़ा अबुल क़ासिम मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स सच्चे दिल से कलमा शरीफ़ पढ़ेगा अल्लाह तआला उस पर दोज़ख़ हराम फ़रमा देगा। (मुस्लिम, जि. 1, स. 46, तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 14)

कलमा शरीफ़ बेहतरीन सदक़ा है : सहाबिये रसूल हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि हमारे आक़ा करीम रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : तुम्हारे हर उज़्व का सदक़ा है (एक बार) सुब्हानल्लाह कहना एक सदक़ा और जब भी कहोगे अलहम्दु लिल्लाह तुम्हारे लिये सदक़ा है जब भी पढ़ोगे अल्लाहु अकबर तुम्हारे लिये सदक़ा है। जब भी बोलेगे और पढ़ोगे ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम्हारे लिये सदक़ा है और बुराई से मना करना भी सदक़ा है। और चाश्त की दो रकअत नमाज़ इन तमाम का एवज़ (यानी बदला) बन जाती है। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स 324, बयाने सदक़ा)

नसरानी मुसलमान हो गया : इमामे ख़्वाजगां हज़रत ख़्वाजा इमाम हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बा बरकत बारगाह में एक नसरानी शख़्स कभी कभी हाज़िरी के शरफ़ से बारियाब हुआ करता था, कई दिन गुज़र गए ख़िदमते अक़दस में हाज़िर न हुआ हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस नसरानी शख़्स के बारे में लोगों से पूछा तो मालूम हुआ कि बिस्तरे मर्ग पर हालते नज़अ में है। हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस नसरानी शख़्स के घर पर तशरीफ़ ले गए और उस से पूछा ? كَيْفَ حَالُكَ तेरा क्या हाल है ? नसरानी शख़्स अर्ज़ करने लगा। ऐ हज़रत क्या बताऊँ मेरा बुरा हाल है। मौत सर पर खड़ी है कोई पुरसाने हाल नहीं। दोज़ख़ की आग के शोअले भड़क रहे हैं। बचने की कोई सूरत नहीं। आज अद्ल का तराज़ू क़ाइम है मगर मेरा दामन नेकी से ख़ाली है। अल्लाह तआला रहमान रहीम है गफ़ूर है, मगर मेरे पास कोई हुज्जत और दलील और उज्र नहीं। निगाहों के सामने जन्नत नज़र आ रही है मगर जन्नत को खोलने की कुन्जी मेरे पास नहीं है। यह सारा ग़म का वाक़िआ सुन कर हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया : मत घबराओ तुम्हारे पास जन्नत की कुन्जी आने वाली है। यह फ़रमा कर हज़रत ख्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर से बाहर जाने लगे तो नसरानी शख्स ने अर्ज़ की ऐ हज़रत आप तशरीफ़ ले जा रहे हैं और जन्नत की कुन्जी मेरे पास आ गई है और कलमा शरीफ़ यानी अशहदु अंल्ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पढ़ा और हमेशा के लिये सो गया, कुछ दिनों के बाद हज़रत ख्वाजा हसन बसरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख्स को ख्वाब में देखा और हाल दरयाफ़्त किया वह शख्स अर्ज़ करने लगा कि कलमा शरीफ़ की बरकत से अल्लाह तआला ने मुझे बख्श दिया और आला जन्नत में आला जगह अता फ़रमाई है और अब मैं ज़न्नत में हूँ। (नुज़हतुल मजालिस)

ऐ ईमान वालो ! क्या शान है कलमा शरीफ़ की अगर हम गुलामाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हो कर कलमा शरीफ़ सुबह शाम सोते जागते पढ़ लिया करें तो हम पर अल्लाह तआला कितने करम और कामयाबी के दरवाज़े खोल देगा। आओ हम सब मिल कर एक मरतबा बलन्द आवाज़ से कलमा शरीफ़ पढ़लें। ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम।

मेरे मुर्शिदे आज़म कुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खूब फ़रमाते हैं।

तेरा ज़िक्र लब पर खुदा दिल के अन्दर
यूँ ही ज़िन्दगानी गुज़ारा करूँ मैं
दमे वापसी तक तेरे गीत गाऊँ
मुहम्मद, मुमज्जद पुकारा करूँ मैं

दुरूद शरीफ़ :

अज़ीम बशारत : प्यारे सुन्नी भाइयो ! अज़ीम बशारत अपने प्यारे नबी महबूबे दावर शाफ़ए मेहशर साक़िये कौसर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमूदात की रोशनी में सुनिये और कलमा शरीफ़ से महब्बत पैदा कीजिये।

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिह वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख्स खुलूसे दिल से बा वुज़ू ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पढ़ेगा तो अल्लाह तआला उस शख्स को बारह करामत के मक़ामात अता फ़रमोगा।

1) मौत के वक़्त कलमा शरीफ ज़बान पर जारी हो जाएगा यानी इस्लाम की हालत में इन्तिक़ाल करेगा।
2) जां कनी की सख्ती उस पर आसान होगी।
3) उस की क़ब्र रोशन होगी।
4) मुनकर, नकीर उस के पास अच्छी शक्ल में आएंगे।

5) क़ियामत के दिन शहीदों के साथ उठाया जाएगा।
6) अमल के तराज़ू पर नेकियों का पलड़ा भारी होगा।
7) पुल सिरात पर बिजली की तरह गुजर जाएगा।
8) दोज़ख की आग उस के जिस्म पर हराम होगी।
9) शराबे तहूर से नवाज़ा जाएगा।
10) जन्नत में उस को सत्तर हूरें मिलेंगी।
11) प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शफ़ाअत उस को नसीब होगी।
12) अल्लाह तआला का दीदार उस को नसीब होगा। (तज़किरतुल वाएज़ीन)

ऐ ईमान वालो ! सुब्हानल्लाह ! माशाअल्लाह, क्या, क्या बरकात और बहारें हैं कलमा शरीफ़ की, कलमा शरीफ़ के पढ़ने से दीन और दुनिया की सारी दौलतें और नेअमतें और सब कुछ अता फ़रमा दिये गए उस ख़ुश नसीब को जिस ने सिद्क़ दिल से कलमा शरीफ़ पढ़ा।

प्यारे सुन्नी भाइयो ! उम्मीद ही नहीं यक़ीन है कि अब आप हज़रात के क़ल्ब व ज़हन में कलमा शरीफ़ की बरकत व रहमत की बहारें आ गई होंगी और कलमा शरीफ़ से मज़ीद महब्बत पैदा हो गई होगी और अब आप हज़रात कलमा शरीफ़ पढ़ने की आदत बना लेंगे और ज़रूरत बना लेंगे। इन्शाअल्लाहो तआला।

एक गुज़ारिश : इस बे इल्म व अमल असीरे ख़्वाजा सगे रज़ा अनवार अहमद क़ादरी रज़वी की एक अहम गुज़ारिश कुबूल फ़रमाएं कि जब भी कलमा शरीफ़ पढ़ें तो साथ में दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ लिया करें।

यानी ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

तीसरा जुमा .... पहला बयान

सलाम और मुसाफ़हा की फ़ज़ीलत व अहम्मियत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ط اِنَّ اللّٰهَ کَانَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ٥

तर्जमा : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ में जवाब में कहो या वही कह दो, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

(पारा 5, रुकू 8, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُیُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓی اَنْفُسِکُمْ تَحِیَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَکَةً طَیِّبَةً ط

तर्जमा : फिर जब किसी घर में जाओ तो अपनों को सलाम करो, मिलते वक़्त की अच्छी दुआ अल्लाह के पास से मुबारक पाकीज़ा। (पारा 18, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तम्हीद : अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ईमान वालों को, मोमिनों से सलाम करने का हुक्म दिया है और हमारे प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की यह बड़ी ही प्यारी सुन्नत है और सलाम में बे शुमार फ़वाइद और बरकतें हैं और सलाम करना, एक दुआ भी है जिस से जान व माल, इज़्ज़त व आबरू और माल व दौलत की हिफ़ाज़त भी होती है।

सलाम को आम करो ! हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया

हदीस शरीफ़ : لَا تَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ تُؤْمِنُوا وَلَا تُؤْمِنُوا حَتّٰى تَحَابُّوا اَوَلَا اَدُلُّكُمْ عَلٰى شَيْءٍ اِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ، اَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ

यानी तुम जन्नत में दाखिल नहीं होगे जब तक तुम ईमान न लाओ, और तुम मोमिन नहीं होगे जब तक आपस में महब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि जिस पर तुम अमल करो तो आपस में महब्बत करने लगोगे, वह यह है कि आपस में सलाम को फैलाओ।

(सही मुस्लिम, जि. 1, स. 74, तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 5, स. 52 अबू दाऊद शरीफ़, जि. 4, स. 350)

हज़रात ! इस हदीसे मुबारका से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि आपस में सलाम करने से महब्बत बढ़ती है और आपस में महब्बत करना मोमिन के लिये ज़रूरी है और मोमिन ही जन्नत में जाएंगे।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

मोमिन वह है जो उन की इ़ज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नजदी तो मरे दिल से

सब से बहतर इस्लाम, सलाम है : हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि एक शख्स ने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सवाल किया कि इस्लाम में सब से बहतर कौन सा अमल है ? तो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

تُطْعِمُ الطَّعَامَ، وَتَقْرَءُ السَّلَامَ عَلٰى مَنْ عَرَفْتَ وَمَنْ لَّمْ تَعْرِفْ

यानी तुम खाना खिलाओ और सलाम करो ! जिस को पहचानते हो या नहीं पहचानते हो।

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 13, सही मुस्लिम, जि. 1, स. 65)

हज़रात ! आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान की रोशनी में साबित हुआ कि खाना खिलाना और सलाम करना (मोमिन, मोमिन को) इस्लाम में बहुत ही बेहतर और अच्छा अमल है मगर आज कल कुछ लोग ऐसे भी नज़र आते हैं जो सलाम तो ख़ूब करते नज़र आते हैं लेकिन खाना खिलाना, बुज़ुर्गों की नियाज़ करना, अल्लाह वालों का लंगर लुटाना, मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़ छटी शरीफ़ में खाना तो दूर की बात है बल्कि उस खाने को नाजाइज़ व बिदअत भी कहते नज़र आते हैं और हम गुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा, सुन्नी मुसलमान कभी मीलाद शरीफ़ के नाम पर, कभी अपने प्यारे आक़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़िक्रे शहादत के मौक़े पर, कभी ग्यारहवीं शरीफ़ में, कभी छटी शरीफ़ में नियाज़ व लंगर पका कर ख़ुद खाते हैं और दूसरों को भी खिलाते हैं और आपस में सलाम भी करते हैं और दोनों बातों पर अमल कर के ख़ूब ख़ूब सवाब हासिल करते हैं।

सलाम का सही तरीक़ा : सही बुख़ारी, व सही मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया तो उन का क़द साठ हाथ का था। जब पैदा किया तो यह फ़रमाया कि उन फ़रिश्तों के पास जाओ और उन को सलाम करो और सुनो कि वह तुम्हें क्या जवाब देते हैं, क्यों कि वह तेरा और तेरी औलाद का सलाम है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने फ़रिश्तों से कहा : अस्सलामु अलैका रहमतुल्लाह और फ़रिश्तों ने वरहमतुल्लाहि के अलफ़ाज़ ज़्यादा किया। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही 'वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स जन्नत में जाएगा वह हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सूरत पर होगा और उस का क़द साठ हाथ लम्बा होगा।

(हज़रत सदरुश्शरीआ, इस्लामी अख़्लाक़ व आदाब, स. 103)

हज़रात ! मालूम हुआ कि : अस्सलामु अलैकुम कहा यही सही और सुन्नत तरीक़ा है और सलाम का जवाब उस से बेहतर देना चाहिये यानी व अलैकुमुस्सलाम वरहमतुल्लाह कह दिया तो बेहतर हो गया जैसा कि फ़रिश्तों ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सलाम के जवाब में कहा : अस्सलामु अलैका रहमतुल्लाह

काम ज़्यादा होगा तो सवाब बढ़ता जाएगा

आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स आया और अस्सलामु अलैकुम कहा आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस को जवाब दिया, वह बैठ गया। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया उस के लिये दस यानी दस नेकियाँ हैं। फिर दूसरा शख़्स आया और अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि कहा आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जवाब दिया, वह बैठ गया। इरशाद फ़रमाया उस के लिये बीस, फिर तीसरा शख़्स आया और अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू कहा, उस को जवाब दिया और वह बैठ गिया। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उस के लिये तीस। और हज़रत मआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि फिर एक शख़्स आया उस ने कहा : अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू व मग़फ़ि-र-तुहू आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उस के लिये चालीस। और फ़ज़ाइल इसी तरह होते हैं। यानी जितना काम ज़्यादा होगा सवाब भी बढ़ता जाएगा।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, सदरुश्शरीआ, इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब, स. 108)

पहले सलाम कौन करे : आफ़ताबे नुबुव्वत माहताबे रिसालत, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي، وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ ٥

(सही बुख़ारी, जि. 5, स. 2301, सही मुस्लिम, जि. 4, स. 1703)

यानी सवार, पैदल चले वाले को सलाम करे और पैदल चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे और थोड़े लोग ज़्यादा तादाद वालों को सलाम करें।

और हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दूसरी रिवायत में यह अलफ़ाज़ भी हैं कि छोटा, बड़े को सलाम करे।

सलाम में पहल करने वाला अल्लाह तआला का मुक़र्रब बन्दा है

अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِاللهِ تَعَالَى مَنْ بَدَأَهُمْ بِالسَّلَامِ

(अबू दाऊद शरीफ़, जि. 4, स. 301, बैहक़ी शअबिल ईमान, जि. 6, स. 33)

हज़रात ! सलाम में पहल करने वाला शख़्स बड़ा ही ख़ुश नसीब होता है कि अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस ख़ुश नसीब को अपनी बारगाह में मुक़र्रब व मक़बूल बना लेते हैं।

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बच्चों को सलाम फ़रमाते

सही बुख़ारी शरीफ़ और सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बच्चों क़े सामने से गुज़रे और बच्चों को सलाम किया। (सदरुश्शरीआ, इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब, 106)

हज़रात ! यह हदीस शरीफ़ बता रही है कि सिर्फ़ बड़ों को ही सलाम नहीं है बल्कि बच्चों को भी सलाम करना सुन्नते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम है।

सलाम करने में निय्यत क्या हो : हज़रत सदरुश्शरीआ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि सलाम करने में यह निय्यत हो कि उस की इज़्ज़त आबरू और माल सब कुछ सलामत और उस की (यानी अल्लाह तआला की) हिफ़ाज़त में रहे। इन चीज़ों के ख़िलाफ़ निय्यत करना हराम है। (रद्दुल मुख़्तार व हवाला इस्लाम अख़्लाक़ो आदाब, स. 108)

सहाबा सलाम करने की निय्यत से बाज़ार जाते थे

ख़लीफ़ा आला हज़रत, हज़रत सदरुश्शरीआ अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि :

सिर्फ़ उसी को सलाम न करे जिस को पहचानता हो, बल्कि हर मुसलमान को सलाम करे चाहे पहचानता हो या न पहचानता हो। बल्कि बाज़ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम सलाम करने की निय्यत से बाज़ार जाते थे कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग मिलेंगे और ज़्यादा सलाम करने का मौक़ा मिलेगा। (इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब, स. 108)

हज़रात ! वहाबी, देवबन्दी, ग़ैर मुक़ल्लिद, राफ़ज़ी वग़ैरह को सलाम करना हर हाल में

नाजाइज़ व हराम है और अगर मुसलमान जान कर सलाम किया तो कुफ़्र है।

बस इतना याद रखिये कि जो शख़्स हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम करना जाइज़ व दुरुस्त समझता है तो हम उस को सलाम करेंगे और जो शख़्स हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सलाम को नाजाइज़ व हराम कहेगा हम उस को हरगिज़ हरगिज़ सलाम नहीं करेंगे।

काफ़िर को सलाम न करे, अगर वह सलाम करे तो जवाब दे सकता है : हज़रत सदरुश्शरीआ अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि काफ़िरों को सलाम न करे और वह सलाम करें तो जवाब दे सकता है, मगर जवाब में सिर्फ़ अलैकुम कहे।

और अगर ऐसी जगह गुज़रना हो जहाँ मुसलमान और काफ़िर दोनों हों तो अस्सलामु अलैकुम कहे और मुसलमानों पर सलाम की निय्यत करे और यह भी हो सकता है कि اَلسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰی कहे। (आलमगीरी, व हवाला : इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब, स. 111)

और लिखते हैं कि काफ़िर को अगर हाजत की वजह से सलाम किया मसलन सलाम न करने में उस से अन्देशा है तो हरज नहीं और ताज़ीम की निय्यत से काफ़िर को हर गिज़, हरगिज़ सलाम न करे कि काफ़िर की ताज़ीम कुफ़्र है।

(दुर्रे मुख़्तार, व हवाला : इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब, स. 111)

नोट : सलाम किस को करे और किस को न करे और सलाम कब करे और कब न करे, उस की तफ़सीली मालूमात हासिल करना है तो हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली, सदरुश्शरीआ अलैहिर्रहमा की किताब इस्लामी अख़्लाक़ो आदाब में सलाम के आदाब व मसाइल का मुतालआ करे।

मुसाफ़हा करने से दोनों के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं

अल्लाह के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : مَا مِنْ مُسْلِمَيْنِ يَلْتَقِيَانِ فَيَتَصَافَحَانِ اِلَّا غُفِرَ لَهُمَا قَبْلَ اَنْ يَّفْتَرِقَا

(सही बुख़ारी, जि. 5, स. 74, अबू दाऊद, जि. 4, स. 354)

यानी जब भी दो मुसलमान आपस में मिलते हैं और मुसाफ़हा करते हैं तो दोनों के जुदा होने से पहले ही उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर हुआ कि सलाम करना और मुसाफ़हा करना दोनों अमल सुन्नत है। अल्लाह तआला हम सब को भी ख़ुलूस व महब्बत के साथ सलाम व मुसाफ़हा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन सुम्मा आमीन।

सलाम में पहल करना, अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है

मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने (बहुत) चाहा कि कोई ऐसा मौक़ा मिले कि मैं आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मजलिस में आने या जाने के वक़्त सलाम करूँ लेकिन (पूरी ज़िन्दगी में) मुझे यह मौक़ा न मिला जब कभी मैं आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम करता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पहले ही सलाम कर देते थे और फ़रमाते हैं कि पहले सलाम करना तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की सुन्नत है। (हश्त बहिश्त)

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सलाम करने का जज़्बा : उलमा बयान करते हैं कि, महबूबे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहले सलाम करूँगा और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की दीवार से छुप कर खड़े रहे कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हुजरा शरीफ़ से मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ लाएंगे तो मैं आगे बढ़ कर सलाम कर लूँगा लेकिन जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हुजरा शरीफ़ से निकले और मस्जिद में तशरीफ़ लाए, अभी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सोच ही रहे थे कि मैं आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को आगे बढ़ कर सलाम करूं कि उस से पहले महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने महबूब ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सलाम किया। तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बे क़रार हो गए आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि हम गुलामों को भी कभी सलाम का मौक़ा अता फ़रमा दें तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) सलाम करना नेक काम है अगर नेकी करने में,, मैं नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) पीछे रहूँगा तो मेरी उम्मत का क्या हाल होगा।

अल्लाहु अकबर ! सलाम में पहल करना कितनी अज़ीम नेकी है और हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पहल करना चाहिते हैं लेकिन महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सलाम करने में पहल फ़रमाते हैं। तो मालूम हुआ कि सलाम में पहल करने का जज़्बा रखना, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत है और पहले सलाम करना नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत है।

अल्लाह तआला हम को भी सलाम में पहल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अब भी सलाम में पहल फ़रमाते हैं

मशहूर आशिके रसूल, हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि अब भी कोई आशिक़, जब मुवाजह अक़दस में सुनेहरी जालियों के सामने, मज़ारे अनवर पर हाज़िर होता है, तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गुलाम के सलाम करने से पहले उस को सलाम करते हैं। (जज़्बुल क़ुलूब)

हज़रात ! अब भी, महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैज़ व करम जारी है जैसा कि पहले ज़ाहिरी हयात में जारी था।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बरसता नहीं देखकर अबरे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

सलाम करने वाले को 90, नेकियाँ मिलती हैं

आलिम रब्बानी हुज्जतुल इस्लाम, इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि जब दो मुसलमान आपस में मिलते हैं तो पहले सलाम करने वाले को 90 नेकियाँ मिलती हैं और सलाम का जवाब देने वाले को 10, नेकी मिलती है। (कीमियाए सआदत)

हज़रात ! सलाम में पहल करने वाले को अल्लाह तआला 90, नेकी अता फ़रमाता है और सलाम का जवाब देने वाले को सिर्फ़ 10, नेकी नसीब करता है।

तो ख़ुश नसीब है वह मुसलमान जो आगे बढ़ कर सलाम करता है और 90, नेकियाँ हासिल कर लेता है।

तीन दिन तक बात, चीत बन्द कर देना, नाजाइज़ है

मुस्तफ़ा जाने रहमत, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई से तीन दिन तक मुलाक़ात न करे और बात चीत बन्द रखे और उन दोनों में बहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रात ! सही बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर मालूम हुआ की एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान से, एक भाई का दूसरे भाई से, शोहर का बीवी से, बीवी का शोहर से, दोस्त का दोस्त से तीन दिन से ज़्यादा बात चीत बन्द करके रखना और आपस में मुलाक़ात न करना, नाजाइज़ व हराम है और उन दोनों में अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में बेहतर और नेक वह है जो पहले सलाम करे।

सलाम करना घर वालों के लिये रहमत व बरकत का ज़रीआ है

आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : يَابُنَيَّ اِذَا دَخَلْتَ عَلٰى اَهْلِكَ فَسَلِّمْ يَكُوْنُ بَرَكَةً عَلَيْكَ وَعَلٰى اَهْلِ بَيْتِكَ

(अबू दाऊद शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 399)

यानी ऐ मेरे बेटे जब तू अपने घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम कर, ताकि तेरे और घर वालों के लिये रहमत हो।

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि घर में दाख़िल होने के वक़्त सलाम करना, घर वालों में और घर में रहमत व बरकत का ज़रीआ है।

घर में दाख़िल हो, तो सलाम करो

हज़रत क़तादह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِذَا دَخَلْتُمْ بَيْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهٖ وَاِذَا خَرَجْتُمْ فَاَوْدِعُوْا اَهْلَهٗ بِسَلَامٍ

यानी जब तुम घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो और जब घर से बाहर निकलो तो घर वालों को सलाम करो। (बैहक़ी शरीफ़, मिश्कात शरीफ़, स. 399)

मोमिन के घर में रूहे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा फ़रमा होती है

मशहूर मुहद्दिस, हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि :

जब घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करो, सलाम करने से घर में बरकत होती है और अगर (घर में कोई न हो) घर ख़ाली हो तो (अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का तसव्वुर करके) اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ कह दिया करें। (यानी या नबी सल्लल्लाहु तआल अलैका व आलिका वसल्लम आप को सलाम हो) और हज़रत मुल्ला अली क़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हर मोमिन के घर में आक़ा करीम, महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रूहे मुबारक तशरीफ़ फ़रमा रहती है। (शरह शिफ़ा)

सुना है आप हर आशिक़ के घर तशरीफ़ लाते हैं
मेरे घर में भी हो जाए चिराग़ाँ या रसूलल्लाह

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से, मशहूर मुहद्दिस के बयान से सूरज की रौशनी से ज़्यादा रौशन और ज़ाहिर हो गया कि हर मोमिन के घर में आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रुहे मुबारका जलवा फ़रमा रहती है और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हम गुलामों के घरों में नूर की ख़ैरात और रहम व करम की भीक देने अपने गुलामों के घरों में तशरीफ़ लाते हैं।

मगर! मुख़ालिफ़ नहीं मानेगा और कहेगा कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक हैं और मोमिन लाखों करोड़ों में, तो एक जान कहाँ कहाँ जा सकती है तो मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत शाह मीना का जलवा हर पत्ते पर

उलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के वली हज़रत शाह मीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहर लखनऊ में रहते थे और एक आलम आप की ज़ात से फ़ैज़ हासिल करता था। एक मरतबा की बात है कि एक अंग्रेज़ अफ़सर अपने चन्द पुलिस वालों के हमराह आप की खिदमत में हाज़िर हुआ और उस ईसाई हाकिम ने कुतुबे शहर हज़रत शाह मीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इजाज़त ले कर पूछने लगा कि मैं ने किताबों में पढ़ा यह है कि मुसलमानों के नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मरने वाले की क़ब्र में आते हैं : क्या यह सही है ? तो हज़रत ने फ़रमाया बिल्कुल सही व दुरुस्त है। अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल नुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को यह ताक़त अता की है कि वह हर मरने वाले की क़ब्र में तशरीफ़ लाते हैं। अंग्रेज हाकिम ईसाई अफ़सर को गुस्सा आ गया और तेवर बदलते हुए कहने लगा कि मुसलमान अपने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) से झूटी महब्बत रखते हैं। कुतबे वक़्त अल्लाह तआला के वली हज़रत शाह मीना रहमतुल्लाहि तआला अलैह जलाल में आ गए और इरशाद फ़रमाया कि इस वक़्त क्या बज रहा है तो उस अंग्रेज़ ने जवाब दिया, दिन के बारह बचे हैं। अल्लाह तआला के वली ने फ़रमाया कि यह जो सामने पीपल का दरख़्त नज़र आ रहा है उस के पत्तों को ग़ौर से देख, जब अंग्रेज़ अफ़सर ने दरख़्त के पत्तों को बग़ौर देखा तो हैरत में पड़ गया कि हज़रत शाह मीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सामने बैठे हैं और हर पत्ते पर बैठे नज़र आ रहे हैं तो हज़रत की यह करामत देख कर कहने लगा कि आप तो मेरे सामने भी बैठे हैं और हर पत्ते पर बैठे नज़र आ रहे हैं तो अल्लाह तआला के वली ने फ़रमाया : नादान ? जब एक उम्मती की यह शान है तो इमामुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व अज़मत का क्या आलम होगा :

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का यह आलम है मुख़्तार का आलम क्या होगा
इस पार का जब यह आलम है तो उस पार का आलम क्या होगा

दुरूद शरीफ़ :

बेटे के सलाम से बाप, अज़ाब से बचा

बुज़ुर्गों ने बयान किया है कि एक शख़्स बड़ा ही गुनाहगार और बदकार था लेकिन उस की आदत थी कि जब वह घर से निकलता था तो घर वालों को, अपने बच्चों को सलाम करता था एक दिन घर से निकला, तिजारत की ग़रज़ से बाहर जा रहा था जब उस ने अपने छोटे से बच्चे को सलाम किया तो बच्चे ने अपनी तोतली ज़बान से व अलैकुमुस्सलाम कहा और अपने बाप के सलाम का जवाब दिया। बाप सफ़र को चला गया रास्ते में डाकुओं ने हमला कर दिया तो वह शख़्स देखता है कि एक नूरानी शक्ल के बुज़ुर्ग तशरीफ़ ले आए और डाकू उन को देख कर भाग गए तो उस शख़्स ने उस बुज़ुर्ग से पूछा कि हज़रत आप कौन हैं ? और आप इस मुसीबत के वक़्त काम आए, अगर आप न आते तो डाकू मुझ को हलाक कर देते तो उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह तआला की जानिब से आया हूं और अल्लाह तआला ने मुझ से फ़रमाया कि जल्दी जाओ और मेरे बन्दे को डाकुओं से बचाओ इस लिये कि जब यह शख़्स घर से निकला था तो उस ने अपने छोटे से बच्चे को सलाम किया था, तो उस बच्चे ने भी अपने बाप को सलाम का जवाब दिया था और व अलैकुमुस्सलाम कहा था। तो मेरी ग़ैरत को गवारा नहीं कि जिस का छोटा सा बच्चा अपने बाप को मेरे सलामती में देकर भेजे और उस पर कोई अज़ाब व मुसीबत आए तो मैं ने बेटे के सलाम की बरकत से उस के बाप को हर अज़ाब और मुसीबत से महफ़ूज़ कर दिया है।

गोया : छोटे से बच्चे के सलाम ने बाप को लुटने और क़त्ल व ग़ारत होने से बचा लिया। यह है सलाम करने की बरकत।

हज़रात ! जब बेटे के सलाम की यह बरकत है तो अगर हम सुबह व शाम अपने नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ते रहेंगे तो आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुरूदो सलाम की बरकत का क्या आलम होगा और जब बेटे के सलाम ने बाप की जान बचा ली तो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम की बरकत से जान भी महफ़ूज़ रहेगी और ईमान भी सलामत रहेगा। इन्शाअल्लाह तआला।

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

मैं वह सुन्नी हूँ जमीले क़ादरी मरने के बाद
मेरा लाशा भी कहेगा अस्सलातु वस्सलाम

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

तबर्रुकात की तअ़्ज़ीम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اِذْهَبُوْا بِقَمِیْصِیْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰی وَجْهِ اَبِیْ یَاْتِ بَصِیْرًا ج

तर्जमा : मेरा यह कुर्ता ले जाओ, इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो उन की आँखें खुल जाऐंगी
(पारा 14, रुकू 4, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तमहीद : ऐ ईमान वालो ! आला निस्बत से अदना और बे बरकत शय आला और बरकत वाली हो जाया करती है। और शय जिस क़दर आला और बरकत वाली होगी, उस की निस्बत व बरकत भी उसी क़द्र आला होगी। मिसाल के तौर पर यह एक कपड़ा है और बड़ा ही क़ीमती है मगर इस कपड़े को कोई भी अपनी आँखों और सीने से नहीं लगाता और न चूमता है और न ही अपने सर पर रखता है। और एक कपड़ा वह भी है जिसे जुज़दान बनाकर अल्लाह की किताब कुरआने मजीद पर चढ़ाया गया और ग़िलाफ़ बना कर अल्लाह के घर कअ़बा पर डाला गया जिस को हर मोमिन आँखों और सीनों से लगाता और चूमता है और वह लोग भी चूमते नज़र आते हैं जिन के मज़हब में चूमना, बोसा देना बिदअत व शिर्क है।

शिर्क ठेहरे जिस में ताज़ीमे हबीब
उस बुरे मज़हब पे लअ़नत कीजिये

मालूम हुआ कि कलामुल्लाह, कुरआन मजीद और बैतुल्लाह कअ़बए मुअज़्ज़मा की निस्बत की वजह से कपड़े का जुज़दान और ग़िलाफ़े कअ़बा चूमा जाता है और हर शख़्स जानता है कि हम कपड़ा नहीं चूम रहे हैं बल्कि किताबुल्लाह और बैतुल्लाह की ताज़ीम कर रहे हैं और उस की निस्बत को चूम रहे हैं।

अब इस मुख़्तसर सी तमहीद के बाद मैं आप को बताना और समझाना चाहूँगा कि हम सुन्नी मुसलमान कपड़ा और चादर नहीं चूमते है बल्कि कपड़ा और चादर की शक्ल में निस्बते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और निस्बते हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और निस्बते औलिया अल्लाह को चूमते हैं :

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

ऐ ईमान वालो ! हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की जुदाई के ग़म में इस क़दर रोए कि आपकी आँखों की बीनाई चली गई थी और आप आँखों से मअज़ूर हो गए थे तो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपनी क़मीस भेजी कि ले जाओ और मेरे बाप हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के चेहरे पर डाल दो तो उन की आँखें रौशन हो जाएंगी और जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीस को उन की आँखों पर डाला गया तो हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की आँखें रौशन हो गईं।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِىْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِىْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج
(पारा 13, रुकू 4)

ऐ ईमान वालो ! जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीस की बरकत का यह आलम है तो हमारे आक़ा करीम जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भी नबी हैं , उन की क़मीसे मुबारक की बरकत का क्या आलम होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

ऐ ईमान वालो ! कुरआने करीम में एक सन्दूक़ का ज़िक्र किया है जिस को ताबूते सकीना भी कहते हैं, जो शमशाद की लकड़ी का बना हुआ था जिस की लम्बाई तीन हाथ और चोड़ाई दो हाथ की थी। अल्लाह तआला ने उस सन्दूक़ को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर नाज़िल फ़रमाया था, इस में अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम की तस्वीरें थीं और यह सन्दूक़ एक दूसरे के पास से मुन्तक़िल होता हुआ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम तक पहुँचा, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बाद बनी इसराईल के पास रहा, उस वक़्त उस में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा, कपड़े और नअलैने मुबारक और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का अमामा और असा मुबारक और चन्द टुकड़े अलवाह (तख़्तियों) के थे। बनी इसराईल उस सन्दूक़ का अदब करते और उस को आगे रखते तो जंग में फ़तह पाते और उसकी बरकत से उन की दुआएं कुबूल होतीं और हाजतें पूरी होती थीं।

लेकिन ! जब बनी इसराईल के हालात ख़राब हो गए और उन में बद अमली पैदा हो गई तो बनी इसराईल से यह बरकत वाली सन्दूक़ छीन ली गई और फिर उस सन्दूक़ की बे अदबी

और बे हुरमती की गई तो अल्लाह तआला ने उन बे अदबों क़ो तरह तरह के अमराज़ व मसाइब में मुब्तला कर दिया और उन की पाँच बस्तियाँ तबाह व बरबाद हो गईं।

(मुलख़्ख़सन, तफ़सीरे ख़ाज़िन, मदारिक, ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रात ! कलामे इलाही से यह बात ज़ाहिर और साबित हुई कि अल्लाह वालों क़े कपड़े और तबर्रुकात में बहुत बरकतें होती हैं और अदब करने वाला मालामाल और निहाल कर दिया जाता है और बे अदब बीमारियों, और बलाओं में घिर कर अपनी दुनिया व आख़िरत बरबाद कर लेता है। अल अमान वल हफ़ीज़।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ

तर्जमा : निशानी यह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें मुअज़्ज़ज़ मूसा और मुअज़्ज़ज़ हारून के तरकह की लाएंगे उसे फ़रिश्ते, बेशक उस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर ईमान रखते हो।

(पारा 2, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आक़ा करीम के वुज़ू के पानी में बरकत

हज़रात ! सही बुख़ारी की हदीस शरीफ़ सुनिये और आक़ा करीम मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तबर्रुकात की ताज़ीम व अदब कर के सहाबए किराम की सुन्नत व आदत पर अमल करके बे शुमार बरकात व हसनात कमाइये।

हदीस शरीफ़ : क़ुरैशे मक्का ने अरवाह बिन मस्ऊद को ! जो अभी तक ईमान न लाए थे, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान के हालात मालूम करने के लिये भेजा था।

अरवह बिन मस्ऊद को मदीना तैय्यिबा भेजा, वह आए और हालात देख कर वापस हुए और जाकर क़ुरैश को बताया कि :

ऐ क़ौम ! ख़ुदा की क़सम बेशक मैं क़ैसर व किसरा और नजाशी और बड़े बड़े बादशाहों के दरबारों में हाज़िर हुआ हूँ, ख़ुदा की क़सम मैं ने कभी कोई ऐसा बादशाह नहीं देखा कि उस के अस्हाब (साथी) उस की ऐसी ताज़ीम करते हों। जैसा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) के अस्हाब, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम) की ताज़ीम करते हैं। ख़ुदा की क़सम जब वह थूकते हैं और रींठ खंकार फेंकते हैं तो वह उन के अस्हाब में से किसी न किसी के हाथ पर होता है, जिस को वह अपने मुंह और जिस्म पर मल लेते हैं और जब वह उन को हुक्म देते हैं तो वह सब के सब तामील के लिये दोड़ पड़ते हैं।

وَإِذَا تَوَضَّأَ كَادُوا يَقْتَتِلُونَ عَلَىٰ وَضُوئِهِ

और जब वह वुज़ू करते हैं तो उनके वुज़ू के पानी को हासिल करने के लिये यूँ गिर पड़ते हैं कि गोया अभी लड़ पड़ेंगे। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 31)

ऐ ईमान वालो ! मालूम हुआ कि सहाबए किराम के नज़दीक आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वुज़ू के पानी की बड़ी क़दर व मन्ज़िलत थी, क्यों कि सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान जानते थे कि यह पानी जिस्मे रहमत से लग कर बहुत ही बरकत व नूर वाला हो गया है। इस लिये वह परवानों की तरह उन पर निसार होते और उन के हुसूल की बहुत कोशिश करते और यह सब कुछ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रू बरू होता था और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुद उन को मुशाहदा फ़रमाते थे मगर कभी मना नहीं फ़रमाया बल्कि उन के जज़्बाते महब्बत का एहतिराम फ़रमाते।

लिहाज़ा ! सुन्नियो ! अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाल शरीफ़, पैरहन शरीफ़, नअलैन शरीफ़ और तमाम तबर्रुकात की ख़ूब ख़ूब क़द्र व इज़्ज़त कर के सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान के गुलाम बन जाओ और रहमत व बरकत से अपने दामन को भर लो।

आक़ा करीम के वुज़ू का पानी और हज़रत बिलाल

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने (हज़रत) बिलाल को देखा कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वुज़ू का पानी लिया और लोग उस पानी को लेने के लिये दौड़ रहे थे, जिस को उस में से कुछ मिलता वह उस पानी को अपने मुंह पर मलता।

وَمَنْ لَّمْ يُصِبْ مِنْهُ شَيْئًا اَخَذَ مِنْ بَلَلِ يَدِ صَاحِبِهٖ

और जिस को कुछ (पानी) न मिलता वह दूसरे के हाथों की तरी ले कर मल लेता।

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 147)

हज़रात ! ग़ौर कीजिये कि सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान के इश्क़ो महब्बत का आलम क्या था, वह लोग जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वुज़ू के पानी को लेने के लिये जब दौड़ते रहे होंगे तो देखने वाला यह फ़ैसला करने पर मजबूर हो जाता रहा होगा कि जब जिस्मे अक़दस से लगने वाले पानी की क़दर व मन्ज़िलत का जब यह आलम है तो महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाते गिरामी से महब्बत व अक़ीदत का आलम क्या होगा।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

और आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

दुरूद शरीफ़ :

आक़ा करीम के दस्ते अक़दस की बरकत से पानी में शिफ़ा

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होते तो मदीना तैय्यिबा के बच्चे अपने बरतन जिस में पानी होता, लेकर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होते। आप हर एक बरतन में अपना दस्ते मुबारक डुबो देते।

فَرُبَّمَا جَآئَهُ فِي الْغَدَاةِ الْبَارِدَةِ فَيَغْمِسُ يَدَهُ فِيْهَا

यानी बाज़ वक़्त सर्दी होती तब भी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपना दस्ते अक़दस पानी में डुबो देते।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 4, स. 1812, बैहक़ी शअ़बिल ईमान, ज. 2, स. 154)

हज़रात ! वह बच्चे उस पानी को ले कर अपने घर जाते और वह पानी तबर्रुक समझ कर पिया जाता। लिहाज़ा वहाबीद, देवबन्दी के फ़रेब से बचते रहिये और सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान की सुन्नत पर चलते रहिये इन्शाअल्लाह तआला ठिकाना जन्नत होगा।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़ मुस्तफ़ा, आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ ले के चले

दस्ते नूर से पानी में नूरानियत

हदीस शरीफ़ : उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुई, उस वक़्त आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गुस्ल फ़रमा रहे थे तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन के चेहरे पर पानी छिड़का।

فَلَمْ يَزَلْ مَاءُ الشَّبَابِ فِيْ وَجْهِهَا حَتّٰى كَبُرَتْ وَعَجَزَتْ

तो उन का चेहरा ऐसा पुर नूर और ख़ुश्नुमा हो गया कि बुढ़ापे में भी जवानी की रौनक़ उन के चेहरे से ज़ाइल न हुई। (अल इस्तीआब, स. 756)

हुज़ूर के पैरहने मुबारक की बरकत

हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के पास आक़ा, करीम मुस्तफ़ा रहीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जुब्बा शरीफ़ था।

قَالَتْ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَلْبِسُهَا فَنَحْنُ نَغْسِلُهَا لِلْمَرْضٰى يَسْتَشْفِيْ بِهَا

वह फ़रमाती हैं कि उस जुब्बा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम पहना करते थे, हम उसे धोकर बग़रज़े शिफ़ा बीमारों को पिलाते हैं और शिफ़ा हो जाती है।

(मुस्लिम जि. 2, स. 190, मुस्नद अहमद, जि. 6, स. 347)

आक़ा करीम ने क़ब्र को जन्नत का टुकड़ा बना दिया

हदीस शरीफ़ : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब फ़ातिमा बिन्ते असद (हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा माजिदा) का इन्तिक़ाल हुआ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और उन के सर के पास बैठ कर फ़रमाया।

يَرْحَمُكِ اللّٰهُ فَاِنَّكِ كُنْتِ اُمِّيْ بَعْدَ اُمِّيْ تَجُوْعِيْنَ وَتُشْبِعِيْنَنِيْ

यानी अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाए बे शक तुम मेरी मां के बाद मेरी मां थीं, तुम खुद भूकी रहतीं और मुझे पेट भर खिलातीं। (हिलयतुल औलिया, जि. 3, स. 121)

फिर! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन को गुस्ल का हुक्म फ़रमाया और गुस्ल के बाद अपने क़मीस मुबारक में कफ़न दिया। फिर! उसामा बिन ज़ैद अबू अय्यूब अन्सारी, हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और एक हब्शी गुलाम को बुला कर क़ब्र खोदने का हुक्म दिया फिर आप! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई औ क़ब्र पर तशरीफ़ लाए और क़ब्र को कुशादा और हमवार कराया और फिर खुद क़ब्र में उतर कर लैट गए और फ़रमाया।

सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिये हैं जो ज़िन्दा है कभी नहीं मरेगा। ऐ अल्लाह तआला मेरी मां फ़ातिमा बिन्ते असद को बख़्श दे और उस को उस की क़ब्र का मुआमला आसान कर दे और उस पर उस की क़ब्र को कुशादा कर दे।

بِحَقِّ نَبِيِّكَ وَالْاَنْبِيَاءِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِيْ فَاِنَّكَ اَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ

यानी अपने नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) के तुफ़ैल और उन नबियों के तुफ़ैल जो मुझ से पहले हुए हैं बे शक तू सब से बड़ा महरबान है।

(हिलयतुल औलिया, जि. 3, स. 121)

फिर! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنَّمَا اَلْبَسْتُهَا قَمِيْصِيْ لِتُكْسٰى مِنْ حُلَلِ الْجَنَّةِ وَاضْطَجَعْتُ مَعَهَا لِيَهُوْنَ عَلَيْهَا

(अल इस्तीआब, जि. 2, स. 774)

यानी मैंने अपना क़मीस इस लिये पहनाया ताकि अल्लाह तआला उस को (यानी मेरी मां को) जन्नत का हुल्ला (जोड़ा, लिबास) पहनाए और क़ब्र में इस लिये लेटा कि उस पर नर्मी व आसानी हो और उस को इज़्ज़त व सुकून हासिल हो।

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को उस ख़ातून के साथ जो सुलूक करते हुए देखा है वह किसी और के साथ करते हुए कभी नहीं देखा तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : يَا عُمَرُ اِنَّ هٰذِهِ الْمَرْءَةَ كَانَتْ اُمِّيَ الَّتِيْ وَلَدَتْنِيْ 0

यानी ऐ उमर यह ख़ातून मेरी हक़ीक़ी मां की तरह थीं।

और फ़रमाया ! कि अबू तालिब हमेशा एहसाने परवरिश जताते और यह उस को तहज़ीब और शाइस्तगी सिखातीं।

फिर फ़रमाया ! बे शक मुझे जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने मेरे रब अज़्ज़ व जल्ला की जानिब से ख़बर दी है कि यह ख़ातून जन्नती हैं।

إِنَّ اللهَ تَعَالَىٰ أَمَرَ سَبْعِينَ أَلْفًا مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ يُصَلُّوْنَ عَلَيْهَا

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 3, स. 108)

यानी बे शक अल्लाह तआला ने सत्तर हज़ार फ़रिश्तों को उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का हुक्म दिया है।

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा करीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुद क़ब्र में लेटे ताकि मेरे जिस्म की बरकत से क़ब्र जन्नत का बाग़ बन जाए और मेरी मां फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ियल्लाहु तआला अन्हा क़ब्र में आते ही जन्नत के बाग़ में पहुँच जाए और मैं ने अपना क़मीस उन को इस लिये पहनाया ताकि मेरे पहने हुए कपड़े की बरकत से क़ब्र के मुआमलात आसान हो जाएं और उस के बदले में जन्नत का लिबास नसीब हो जाए।

हुज़ूर की चादरे नूर की बरकत

हदीस शरीफ़ : हज़रत मौलाना रूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :

एक रोज़ महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम एक जनाज़ा में शिरकत फ़रमा कर वापस लौटे तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप के कपड़ों को हाथ लगा कर देखने लगीं।

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ए आएशा ! तुम क्या देखती हो ? तो उन्हों ने अर्ज़ किया कि जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ब्रिस्तान से तशरीफ़ ला रहे थे तो आसमान से बारिश हो रही थी और तअज्जुब है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कपड़े भीगे नहीं।

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ आएशा ! तुम ने सर पर क्या ओढ़ रखा है ? तो उन्होंने अर्ज़ किया आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुबारक चादर।

तो फ़रमाया ऐ आएशा ! उस चादर की बरकत से अल्लाह तआला ने तुम्हारी निगाहों से परदे हटा दिये और वह रहमत की बारिश जो मुझ पर हमेशा बरसती रहती है उस को तुम ने देख लिया। (मसनवी शरीफ़, दफ़्तरे अव्वल)

हज़रात ! हमारे प्यारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर से लगने वाली चादर शरीफ़ की बरकत व नूरानियत का यह आलम है कि हमारी मुक़द्दस मां आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने ओढ़ ली तो आँखों से हिजाबात

उठ गए और ग़ैब की बात ज़ाहिर हो गई और रहमत की नूरानी बारिश को देख लिया।

हज़रात ! ग़ौर कीजिये कि जब मलबूसात, पहने हुए कपड़ों में यह बरकत है कि जो ओढ़ ले उस पर ग़ैब ज़ाहिर हो जाता है और उस की निगाहों से परदा उठ जाता है तो ख़ुद महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहों का आलम क्या होगा। ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

और फ़रमाया :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्याले की बरकत

हदीस शरीफ़ : हज़रत इमाम इब्ने मामून रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे पास आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का एक प्याला था।

فَكُنَّا نَجْعَلُ فِيْهَا الْمَاءَ لِلْمَرْضٰى فَيَسْتَشْفُوْنَ بِهَا

हम उस में पानी डाल कर बग़रज़े शिफ़ा बीमारों को पिलाते तो शिफ़ा हो जाती। (शिफ़ा शरीफ़)

हदीस शरीफ़ : हज़रत ख़द्दाश बिन अबी ख़द्दाश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एक प्याला था जो उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से लिया था।

मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कभी कभी हज़रत ख़द्दाश रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर तशरीफ़ ले जाते तो उन से वही प्याला तलब फ़रमाते, प्याले में आबे ज़म ज़म भर कर पीते और अपने चेहरे पर छींटे मारते।

(असाबा, कन्ज़ुल उम्माल)

ऐ ईमान वालो ! मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम में बहुत ही सख़्त थे। अगर तबर्रुकात से बरकत हासिल करना दुरुस्त न होता तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत ख़द्दाश रज़ियल्लाहु अन्हु के घर जाकर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्याले में पानी पीना और अपने चेहरे पर मलना यह फ़ेअल हर गिज़ न करते।

तो मालूम हुआ कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कपड़े से, प्याले से, मुए मुबारक से और तमाम तबर्रुकात से फ़ैज़ व बरकत हासिल करना नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और नेकों की सुन्नत व आदत है।

सरकार आला हजरत, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रजा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़ रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

हदीस शरीफ़ : हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एक अरीज़ व उमदा प्याला देखा जो चोबे नज़्ज़ार का बना हुआ था और उस पर लौहे का एक हलक़ा बना हुआ था, हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चाहा कि लोहे की जगह सोने या चाँदी का हलक़ा बनाएं मगर हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि जिस चीज़ को महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने बनाया हो उस को तब्दील नहीं करना चाहिये यह सुनकर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वैसे रहने दिया और फ़रमाया :

لَقَدْ سَقَيْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ هٰذَا الْقَدَحِ اَكْثَرَ مِنْ كَذَا وَ كَذَا

बेशक, यक़ीनन मैंने उस प्याले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बारहा पानी पिलाया है। (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने उस प्याले को बसरा में देखा और उस में पानी भी पिया है। (शरह मनावी)

असा मुबारक की बरकत

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को ख़ालिद बिन सुफ़ियान बिन बलीग़ हज़ली को क़त्ल करने के लिये भेजा। मैं जब उस को क़त्ल करके वापस बारगाहे करम में हाज़िर हुआ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को अपना असा मुबारक अता फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया :

تَخَصَّرْ بِهٰذِهٖ فِي الْجَنَّةِ यानी उस असा के साथ जन्नत में चले जाना।

वह असा मुबारक हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रहा जब उन के विसाल का वक़्त आया तो उन्होंने वसियत की कि उस असा शरीफ़ को मेरे कफ़न में रख कर मेरे साथ दफ़न कर देना चुनाँचे ऐसा ही किया गया। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, बैहक़ी, हयातुल हैवान)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुआ तो मुझे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हुम मिले और उन्होंने फ़रमाया : اِنْطَلِقْ اِلَى الْمَنْزِلِ فَاَسْقِيْكَ فِيْ قَدَحٍ شَرِبَ فِيْهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

(सही बुख़ारी, जि. 6, स. 2673, बैहक़ी सुनने कुबरा, जि. 5, स. 349)

मेरे साथ घर चलिये मैं आप को उस प्याले में पिलाऊँगा जिस में आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पिया है।

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान का ईमान व अक़ीदा मुलाहज़ा फ़रमाइये कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का लबे मुबारक वह मुंह शरीफ़ जिस की हर बात वहिये इलाही हुआ करती थी।

आला हज़रतस, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह दहन जिस की हर बात वहिये ख़ुदा
चश्मए इल्मो हिकमत पे लाखों सलाम

आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का लबे पाक मुंह मुबारक जिस बरतन और प्याले से मस हो गया, लग गया तो हज़रत सहाबए किराम अलैहिमुरिज़वान के नज़दीक वह बरतन और प्याला बड़ा बरकत वाला हो गया, सहाबए किराम ऐसे बरतनों और प्यालों को बतौर तबर्रुक अपने पास महफ़ूज़ रखते थे और दूसरों क़ो उस प्याले से तबर्रुक समझ कर पानी पिलाते और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन तबर्रुक समझ कर पानी पीते थे जैसा कि सही बुख़ारी की हदीस से ज़ाहिर और साबित हुआ मगर मोमिन को समझाने और बताने के लिये एक हदीस शरीफ़ ही काफ़ी व शाफ़ी है मगर मुनाफ़िक़ के लिये पूरा दफ़्तर बे कार है।

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
मगर मर्दे नादां पर कलाम नरमो नाज़ुक बे असर

नबी के असा के साथ दफ़्न किया गया

हदीस शरीफ़ : सर चश्मए विलायत हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत मुहम्मद सीरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम असा मुबारक था, जब उन का इन्तिक़ाल हुआ तो उन की वसियत के मुताबिक़ वह असा शरीफ़ हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ दफ़्न किया गया। (बैहक़ी)

हज़रात ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तबर्रुकात से फ़ैज़ व बरकत हासिल करने को बिदअत व नाजाइज़ समझते तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पैरहन शरीफ़, प्याला मुबारक और असा शरीफ़ को पने पास महफ़ूज़ नहीं रखते और यह वसियत नहीं करते कि मेरे विसाल के बाद असा मुबारक को मेरी क़ब्र में रख दिया जाए जैसा कि हज़रत की क़ब्र में आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का असा मुबारक रखा गया।

हज़रात ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तबर्रुकात से फ़ैज़ व बरकत हासिल करना सुन्नियों, बरैलवियों ही का तरीक़ा नहीं है बल्कि यह नूरानी अफ़आल हज़रात सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की आदत व सुन्नत है।

असा मुबारक की बे अदबी से कैंसर हो गया

हदीस शरीफ़ : (1) एक बे अदब) जहजहा ग़िफ़ारी ने हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का असा मुबारक जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक में था, उन के हाथ से छीन लिया और अपने घुटने पर रख कर तोड़ने की (नापाक) कोशिश की तो लोगों ने शोर मचा कर उसे रोक दिया मगर फिर भी उस ने तोड़ डाला (तो उस को कैसी सज़ा मिली मुलाहज़ा फ़रमाइये)

فَاَخَذَتْهُ الْاَكِلَةُ فِیْ رُكْبَتِهٖ فَقَطَعَهَا وَمَاتَ قَبْلَ الْحَوْلِ

यानी उस के घुटने पर फोड़ा निकला जो नासूर बन गया। (यानी कैंसर) जिस की वजह से उस की टांग काट दी गई और एक साल भी न गुज़रा था कि वह मर गया। (शिफ़ा शरीफ, जि. 2, स. 621)

ऐ ईमान वालो ! याद रखिये कि बे अदबी करने वाले की तबाही व बरबादी ज़रूर होती है जैसा कि आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के असा मुबारक की बे अदबी करने वाला शख़्स जिस पैर पर असा मुबारक रख कर तोड़ा था उस पैर में कैंसर का मरज़ हो गया और वह पैर काटा गया।

बा अदब बा नसीब बे अदब कम नसीब

नअलैन शरीफ़ का अदब

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

طَبَقَةً فَطَبَقَةً شَرْقًا. غَرْبًا. عَجَمًا. عَرَبًا.

उलमाए दीन और अइम्मए मोअतमेदीन नअले मुतह्हर, हुज़ूर सय्यिदुल बशर, अफ़ज़लुस्सलातो अकमलुस्सलाम के नक़्शे, काग़ज़ों पर बनाते, किताबों में तहरीर फ़रमाते आए, और उन्हें बोसा देने, आँखों से लगाने, सर पर रखने का हुक्म फ़रमाते रहे, और दफ़्ए अमराज़ और हुसूले अग़राज़ में उस से तवस्सुल फ़रमाया किये, और बफ़ज़्ले इलाही अज़ीम व जलील बरकात व आसार उस से पाया किये।

अल्लामा अबुल यमन इब्ने असाकिर, और शैख़ अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन ख़लफ़ सलमी वग़ैरहुमा उलमा ने इस बाब से मुस्तक़िल किताबें तस्नीफ़ कीं, और अल्लामा अहमद बकरी की फ़तहुल मुतआल फ़ी ख़ैरुन्नआल, इस मस्अला में ज़मअ व इनफ़अ तसानीफ़ से है और भी दस बुज़ुर्गों के अस्मा को आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तहरीर किये हैं कि उन सब (बुज़ुर्गों) ने नअलैन शरीफ़

को बोसा देने, सर पर रखने का हुक्म व इस्तेहसान मज़कूर और यही मवाहिबुल्लदुन्नियह, इमाम अल्लामा अहमद क़स्तलानी व शरह मवाहिब अल्लामा ज़ुरक़ानी वग़ैरहुमा कुतुबे जलीला में मस्तूर है। (तबर्रुकात के आदाब व फज़ाइल, स. 23)

हज़रात! आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नअलैन शरीफ़ैन के फ़्यूज़ो बरकात बे शुमार हैं और जिस क़दर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने गिनाए हैं अगर हम उसी को दिल में रख लें और नअलैन शरीफ़ैन का अदब व एहतिराम मलहूज़ रखें तो यक़ीनन हम कामयाब होंगे।

जो सर पे रखने को मिल जाए नअले पाके हुज़ूर
तो कहेंगे कि हाँ ताजदार हम भी हैं

दुरूद शरीफ़ :

दस्ते पाक की निस्त का अदब : हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू मख़दूरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सर के अगले हिस्से में बालों का एक गुच्छा था, जब वह बैठते और उस को छोड़ देते तो वह (बाल का गुच्छा) ज़मीं से जा लगता, उन्हें कहा गया कि तुम उन को मुन्डवा क्यों नहीं देते तो फ़रमाया।

لَمْ اَكُنْ بِالَّذِيْ اَحْلَقُهَا وَمَسَّهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهٖ

मैं उन्हें हर गिज़ नहीं मुन्डवाउँगा क्योंकि उन पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हाथ मुबारक लगा हुआ है। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 44)

जिस्मे मुबारक की निस्बत की ताज़ीम

हदीस शरीफ़ : हज़रत इब्ने मुकन्दर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सेहन में एक ख़ास जगह पर लौटते और लेटते, उन से सबब पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने उस जगह पर महबूबे ख़ुदा आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सोते हुए देखा है। (वफ़ाउल वफ़ा)

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को देखा गया कि :

وَاضِعًا يَدَهٗ عَلٰى مَقْعَدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ الْمِنْبَرِ ثُمَّ وَضَعَهَا عَلٰى وَجْهِهٖ

मिम्बरे अक़दस पर जो जगह आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के बैठने की थी वहाँ अपने हाथों को मलते फिर अपने मुंह पर फेर लेते। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 44)

मिंबर शरीफ़ का अदब सिद्दीक़ो अमर ने किया

हदीस शरीफ़ : हमारे हुज़ूर, सरापा नूर, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मिंबर शरीफ़ के तीन दरजे थे, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सब से ऊपर के दरजे पर बैठते थे और दरमियानी दरजा पर अपने पांओं मुबारक रखते। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु ने अपने अहदे खिलाफ़त में ब लिहाज़े अदब ऊपर के दरजे पर न बैठते बल्कि दरमियानी दरजा पर बैठे और पांओ सब के नीचे के दरजा पर रखा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल शरीफ़ के बाद मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब ख़लीफ़ा हुए तो ऊपर की दोनों सीढ़ियों को छोड़ दिया और सब से नीचे के दरजा पर बैठते और पांव ज़मीन पर रखते। इस तरह मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बैठने की जगह का अदब व एहतिराम किया और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़माना आया तो उन्होंने मिंबर शरीफ़ के दरजात ज़्यादा कर दिये। आप नीचे के तीनों दरजों को छोड़ कर ऊपर के बढ़ाए हुए चोथे दरजे पर खड़े हुए। (कशफुल ग़म्मा, स. ...., वफ़ाउल वफ़ा, स. ......)

ऐ ईमान वालो ! महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा हैं महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन्होंने उस जगह का अदब मलहूज़ रखा जिस जगह आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेठा करते थे और मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस दरजे पर न बैठे जिस दरजे पर रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बेठा करते थे और उस दरजा पर भी न बेठे जिस दरजे पर महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू क्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बेठा करते थे और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु न रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जगह पर बैठे और न हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और न हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बैठने की जगह पर बैठे बल्कि चौथी सीढ़ी सब से ऊपर क़ाइम किया और फिर उस पर बैठे गोया उन हज़रात ने उम्मत को बहुत ही बेहतरीन सबक़ सिखाया कि हम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब करते हैं और नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलामों, नेकों का अदब ताज़ीम करना बिदअत नाजाइज़ नहीं बल्कि सहाबए किराम व ख़ुलफ़ाए राशेदीन की आदत व सुन्नत है।

क्या ही ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, मुहिब्बे सहाबा और गुलामे अहले बैत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ लेके चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! इस्लामी तारीख़ में ऐसे बे शुमार वाक़ेआत हैं कि सहाबा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और ताबेईन ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और उन के बाद वालों ने अपने बड़ों और नेकों के हाथ और पांव चूमे हैं और बरकतें हासिल की हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ को बोसा दिया

हदीस शरीफ़ : मुसलमानों की मां हज़रत सय्यिदा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जब सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले जाते तो वह आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये खड़ी हो जातीं :

فَاَخَذَتْ بِيَدِهٖ وَقَبَّلَتْهُ وَاَجْلَسَتْهُ فِيْ مَجْلِسِهَا

तो हज़रत सय्यिदा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हाथ मुबारक पकड़ कर उस को चूम लेतीं और अपने बैठने की जगह पर बिठातीं और जब हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के पास हाज़िर होतीं तो मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम खड़े हो जाते।

وَاَخَذَ بِيَدِهَا وَقَبَّلَهَا وَاَجْلَسَهَا فِيْ مَجْلِسِهٖ

और सय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का हाथ पकड़कर बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते। (इमाम बुख़ारी अल अदबुल मुफ़रद, स. 138, अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 218, मिश्कात शरीफ़, स. 402, ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 31, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 542)

ऐ ईमान वालो ! जन्नती औरतों की सरदार, हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की अम्मी जान, महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की प्यारी बेटी हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की खड़े होकर ताज़ीम की और हाथों को बोसा दिया और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खड़े होकर बेटी के साथ इज़्हारे महब्बत फ़रमाया और हाथों को बोसा दिया।

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से रौशन है कि नबिये दो आलम, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम के लिये खड़ा होना नाजाइज़ व बिदअत नहीं है बल्कि सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की सुन्नत है।

आक़ा करीम का दस्ते करम सहाबा ने चूमा

हदीस शरीफ़ : सहाबिये रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि : قَبَّلْنَا يَدَهُ

यानी हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते मुबारक को बोसा दिया। (इमाम बुख़ारी, अल अदबुल मुफ़रद, स. 143, अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 218)

हदीस शरीफ़ : सहाबिये रसूल हज़रत अशबह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए।

حَتّٰى اَخَذَ بِيَدِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَبَّلَهَا

यहाँ तक कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते मुबारक पकड़ कर बोसा दिया तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اِنَّ فِيْكَ لَخُلُقَيْنِ يُحِبُّهُمَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ

यानी तुम में दो आदतें ऐसी हैं जो अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पसन्द हैं।

(इमाम बुख़ारी अल अदबुल मुफ़रद, स. 86, मतबुआ मिस्र)

हदीस शरीफ़ : हज़रत ज़ारेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हम मदीना तैय्यिबा में आए तो हम ने अपनी सवारियों से उतरने में जलदी की।

فَنُقَبِّلُ يَدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرِجْلَهُ

यानी हम ने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ और पांव क बोसा दिया। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 218, मिश्कात शरीफ, स. 402)

हदीस शरीफ़ : हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा 11 रबीउल अव्वल शरीफ़ को आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में लश्कर के साथ रुख़सती की इजाज़त की ग़रज़ से हाज़िर हुए। और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरहाने खड़े हो गए और अपने सर को झुका कर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरे मुबारक और दस्ते मुबारक का बोसा लिया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 486)

हज़रात ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन अपने प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम में खड़े हो जाते और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ और पांव को चूमते भी थे।

आक़ा करीम के ग़ुस्ल के पानी की बरकत

हमारे हुज़ूर ! सरापा नूर, अल्लाह के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद जब आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ग़ुस्ल दिया गया तो आप सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पलकों के नीचे और नाफ़ शरीफ़ के गोशा में कुछ पानी जमा हो गया था। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस पानी को अपनी ज़बान से चूस लिया और पी गए। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उस पानी की बरकत से मेरा सीना इल्म व आ गही का ख़ज़ीना और मेरा हाफ़िज़ा बहुत मज़बूत हो गया। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 145)

नेकों के हाथ और पांव को बरकत के लिये चूमना

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि :

رَأَيْتُ عَلِيًّا يُقَبِّلُ يَدَيِ الْعَبَّاسِ وَرِجْلَيْهِ

यानी मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ और पांव को बोसा देते हुए देखा।

(इमाम बुख़ारी, अल अदबुल मुफ़रद, स. 144, तनवीरुल कुलूब, स. 200)

(2) आलिमे रब्बानी, हज़रत इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि :

अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक पर बोसा दिया।

(कीमियाए सआदत फारसी, स. 194, अवारिफ़ुल मआरिफ़ 160)

(3) यानी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत इमाम हसन बिन अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का बोसा लिया। (तारीख़े बग़दाद, जि. 9, स. 94)

(4) आशिक़े रसूल हज़रत अल्लामा अब्दुर्रहमान जामी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रक़म तराज़ हैं कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आले रसूल मुहम्मद बाक़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथों को बोसा दिया और पांव चूमा।

(शवाहिदुन्नुबुव्वत, स. 181)

(5) साहिबे सहीह मुस्लिम इमाम व मुहद्दिस हज़रत मुस्लिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बरकत के हुसूल के लिये हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पेशानी का बोसा लिया और फिर अर्ज़ किया कि आप इजाज़त दें तो मैं आप के पांव का बोसा ले लूँ।

(इब्ने नुक़ता, अत्तक़यीद, जि. 1, स. 33)

हुज़ूर ग़ौसे पाक के दस्ते पाक को औलियाने चूमा

हम क़ादरियों के क़ब्र के उजाला, आख़िरत के सहारा, हमारे पीरे आज़म, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि सन् 11 हि. में बरहना पांव बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ आ रहा था कि रास्ते में मुझे एक शख़्स जो नहीफ़ुल बदन, बहुत ही कमज़ोर, मुतग़य्यर रंग था मिला। उस ने मेरा नाम ले कर मुझे सलाम किया और क़रीब आने को कहा : जब मैं उस कमज़ोर के पास पहुँचा तो उस ने मुझे सहारा देने के लिये कहा और मैं ने उस कमज़ोर को सहारा देकर खड़ा कर दिया। देखते ही देखते उस

(बीमार) का जिस्म सेहत मन्द होने लगा और उस की शक्ल व सूरत में तरोताज़ागी नज़र आने लगी। मैं देख कर हैरान हुआ तो उस ने मुझ से कहा कि क्या आप मुझे पहचानते हैं ? मैं ने ला इलमी का इज़हार किया तो वह कहने लगा انا الدين मैं दीने इस्लाम हूँ :

كُنْتُ قَدْمُتُ وَدَثَرْتُ فَاَحْيَانِي اللّٰهُ تَعَالٰى بِكَ بَعْدَ مَوْتِي

यानी मैं क़रीबुल मर्ग हो गया था कि अल्लाह तआला ने आप के ज़रीए मुझे फिर से ज़िन्दा किया फिर मैं वहाँ से बग़दाद की जामेअ मस्जिद में आया तो एक शख़्स ने मुझ से मुलाक़ात की और मेरे जूते को पकड़ लिया और मुझे يَاسَيِّدِيْ مُحْيِ الدِّيْنِ कह कर पुकारा। फिर जब मैं नमाज़ पढ़ने लगा तो चारों जानिब से लोग आकर يُقَبِّلُوْنَ يَدِيْ मेरे हाथ को चूमने लगे और يَا مُحْيِ الدِّيْنِ कह कर पुकारने लगे। उस से क़ब्ल मुझे किसी ने इस लक़ब से नहीं पुकारा था।

(बहजतुल असरार, स. 54, क़लाइदुल जवाहर, स. 57, नफ़हातुल उन्स, स. 260)

बादशाहों ने हुज़ूर ग़ौसे पाक के हाथ को चूमा

बादशाहे वक़्त और उमरा वुज़रा (हाकिम व वज़ीर) पीराने पीर, दस्तगीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते आलिया में हाज़िर होते थे, अगर आप हुजराशरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा होते तो उठ कर घर तशरीफ़ लेजाते, जब वह हुजरा में बैठ जाते तो फिर दौलत खाना से बाहर तशरीफ़ ले जाते ताकि उन के लिये आप को उठना न पड़े। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन से गुफ़्तुगू निहायत बे बाक़ी से फ़रमाते और वाज़ेह अलफ़ाज़ में उन को वअज़ व नसीहत फ़रमाते तो वह लोग आप के सामने इज्ज़ व इन्किसारी से बैठते और आप के मुबारक हाथों को बोसा देते।

(बहजतुल असरार, स. 86, क़लाइदुल जवाहर, स. 19, सफ़ीनतुल औलिया, स. 64)

अक़्ताब व अब्दाल की जमाअत ने हुज़ूर ग़ौसे पाक के हाथ को चूमा

अल्लामा मुहम्मद बिन यहया हलबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी किताब क़लाइदुल जवाहर शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं कि अबुल हसन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि एक रोज़ मैं एक बहुत बड़ी जमाअत के हमराह हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ियारत केलिये रवाना हो और सब लोग अपनी मुश्किलात की आसानी के लिये दुआ कराने की ग़रज़ से हाज़िर हुए थे।

सब ने महबूबे सुब्हानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात की और अपनी अपनी मुश्किलात के हल के लिये दुआ की दरख़्वास्त की और हम सब आगे बढ़े। وَقَبَّلْنَا يَدَيْهِ وَانْهَرَ الْجَمَاعَتُ اِلٰى تَقْبِيْلِ يَدَيْهِ بِاَجْمَعِهِمْ.

यानी हम सब लोगों ने आप के हाथों को बोसा दिया और चारों तरफ़ से लोग आप की दस्त बोसी के लिये आ रहे थे। (क़लाइदुल जवाहर, स. 32, मतबा मिस्र)

हज़रात ! इस नूरानी वाक़िआ से पता चला कि क़ुतबे व वली भी हमारे पीरे आज़म, महबूबे

सुब्हानी, हुज़ूर ग़ौसे आज़म जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में दुआ के लिये और मुश्किलात के हल के लिये हाज़िरी दिया करते थे, इस तरह दुआ लेकर बरकत हासिल करते थे और ताज़ीमन दस्ते ग़ौसियत को चूम कर भी बरकत व रहमत हासिल किया करते थे।

बे अदब बद नसीब को ख़ुदा ही जाने
बा अदब बड़े ख़ुश नसीब होते हैं

ख़्वाजा उस्माने हारूनी के पांव को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने चूमा

हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द, ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती, संजरी, सुम्म अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बयान फ़रमाया कि जब मैं अपने शैख़, शैख़ुल आज़म हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते बा बरकत में हाज़िर हुआ तो अपने शैख़ के हाथों और पांव का बोसा दिया।

(अनीसुल अरवाह, स. 2)

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के पांव को ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन ने चूमा

हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा, हम ग़रीबों के ग़मगुसार, बे कसों के हामी व मददगार ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती अजमेरी, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुतअल्लिक़ ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :रोज़े पन्ज शम्बा दर मस्जिद जामा अजमेर दौलत पाबोस हासिल शुद, यानी जुमेअरात के रोज़ जामअ मस्जिद अजमेर शरीफ़ में मेरे शैख़ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पांव मुबारक को चूमने का शरफ़ हासिल हुआ।

(अख़बारुल अख़यार फारसी, स. 32, दलीलुल आरेफ़ीन मजलिस 6)

बाबा फ़रीद ने ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार के हाथ को चूमा

हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुतअल्लिक़ हज़रत बाबा फ़रीद गन्ज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने शैख़ हज़रत क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते करम को बोसा दिया।

(असरारुल औलिया, फ़ारसी, स. 80)

ऐ ईमान वालो ! रोज़े रोशन से ज़्यादा ज़ाहिर व साबित है कि बुज़ुर्गों के हाथ व पांव को चूमना बिदअत नहीं, बल्कि सुन्नत है।

ख़ुद महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हाथों को बोसा दिया और बेटी से अपनी महब्बत का इज़हार किया और हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने वालिदे गिरामी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये अदब के तौर पर खड़ी हुई और ताज़ीमन दस्ते अक़दस का बोसा दिया और यह बता दिया कि मैं सिर्फ़ जन्नती ही नहीं हूँ बल्कि तमाम जन्नती औरतों की सरदार हूँ और मेरी आदत व सुन्नत यह है कि मैं नबिये दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये ताज़ीमन खड़ी होती हूँ और दस्ते अक़दस को चूमती भी हूँ।

इसी तरह ! सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये खडे होकर ताज़ीम की और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथों और पांव को बोसा भी दिया।

और इसी तरह ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने बुज़ुर्ग व नेक सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की ताज़ीम व इज़्ज़त की और उन के हाथों को चूमा।

और इसी तरह ! ताबेईन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अपने से बुज़ुर्ग व नेक सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की ताज़ीम की और उन के हाथ को चूमा।

और इसी तरह ! एक मुहद्दिस ने दूसरे मुहद्दिस, जैसे हज़रत इमाम व मुहद्दिस मुस्लिम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ को चूमा।

और इसी तरह ! एक इमाम ने दूसरे इमाम जैसे हज़रत इमाम शाफ़ई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इमामुल अइम्मा हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इज़्ज़त की और उन की क़ब्र पर जाकर फ़्यूज़ो बरकात हासिल किये।

और इसी तरह ! बड़े बड़े औलियाए किराम ने हमारे पीरे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अदब किया और उनके हाथ व पांव को चूमा और इसी तरह ! हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत ख़्वाजा उस्माने हारूनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इज़्ज़त की और उन के क़दमों को बोसा दिया।

और इसी तरह ! हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने शैख़, हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा, अताए रसूल, हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इज़्ज़त की और उन के हाथों को चूमा।

और इसी तरह ! मोअजिज़ए मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने शैख़ आले रसूल अहमदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और तमाम सादाते किराम की ताज़ीम व तौक़ीर फ़रमाई और उन के हाथों को बोसा दिया।

और इसी तरह ! हमारे शैख़ लिये कामिल, आलिमे रब्बानी हज़रत मौलाना, मुफ़्ती अश्शाह बदरुद्दीन अहमद क़ादरी रज़ियल्लाहु अन्हु को हम ने ख़ुद देखा कि आले रसूल और बुज़ुर्गों की ख़ूब इज़्ज़त करते और उन के हाथों को बोसा देते थे। (अनवार अहमद क़ादरी रज़वी)

तो मालूम हुआ कि बड़ों की इज़्ज़त व अदब के लिये खड़ा होना और उन के हाथ और पांव को चूमना, खुराफ़ात व बिदअत नहीं बल्कि नेक काम और सुन्नत है और हक़ीक़त यह है कि नेक व बुज़ुर्ग की इज़्ज़त व तकरीम करना जन्नती का काम है, जहन्नमी को इन नेक कामों से क्या ग़रज़ ?

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

शिर्क ठेहरे जिस में ताज़ीमे हबीब
उस बुरे बज़हब पे लअ़नत कीजिये
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

बुज़ुर्गों के हाथ और पांव क्यों चूमे जाते हैं ?

सिलसिलए चिश्तिया के अज़ीमुश्शान बुज़ुर्ग हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पोते मुरीद हज़रत ख़्वाजा बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :

फ़ारसी.................................

यानी हम बुज़ुर्गों के हाथ इस लिये चूमते हैं कि किसी बख़्शे हुए का हाथ लगने से बख़्शिश हो जाए।

और एक वाक़िआ तहरीर फ़रमाते हैं कि एक मरतबा एक शख़्स को उस की मौत के बाद देखा और पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया ? तो उस शख़्स ने जवाब दिया कि जो कुछ मैं ने दुनिया में क्या था सब कुछ मेरे सामने लाया गया। फिर फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि उसे दोज़ख़ में ले जाओ। इतने में हुक्म हुआ कि उस ने फ़लां रोज़ दमिश्क़ की जामा मस्जिद में हज़रत ख़्वाजा शरीफ़ हार्जी (हमारे ख़्वाजा के मशाइख़ में से हैं) के हाथ को बोसा दिया था जिस की बरकत से उस को बख़्शा जाता है।

इस के बाद इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन कई गुनाहगार सिर्फ़ हाथ चूमने की बरकत से बख़्शे जाऐंगे और दोज़ख़ से नजात पाऐंगे।

और फ़रमाते हैं कि हर हाल में बुज़ुर्गों की दस्त बोसी करनी चाहिये ताकि किसी बख़्शे हुए के हाथ लगने की वजह से मग़फ़िरत हो जाए।

और फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त लोग आपस में एक दूसरे के हाथ को बोसा देते हैं तो हज़ारों रहमतें उन पर नाज़िल होती हैं और जब वह दस्त बोसी से फ़ारिग़ होते हैं तो तमाम रहमतें उन पर निसार होती हैं। (असरारुल औलिया, स. 79)

हज़रात ! कितने ख़ुश नसीब हैं वह लोग जो अपने पीरो मुर्शिद, अपने दीनी उस्ताज़, अपने मां, बाप और अपने बुज़ुर्गों की ताज़ीम व तकरीम करते हुए खड़े हो जाते हैं और उन के हाथ और पांव को चूम कर सुन्नत का सवाब और हज़ारों हज़ार रहमतों के मुस्तहिक़ बन जाते हैं।

हज़रात ! कुछ लोग इस क़दर बदनसीब होते हैं कि कहते फिरते हैं कि हम किसी इमाम और आलिम का हाथ नहीं चूमते वह लोग ग़ौर करें कि कितनी बड़ी सआदत व नेकी से महरूमी होती है।

बे अदब बद नसीब को ख़ुदा ही जाने
बा अदब बड़े ख़ुश नसीब होते हैं

अब ! इख़्तिताम की मन्ज़िल है एक हदीस शरीफ मुलाहज़ा कर लीजिये।

मां के क़दम को चूमना कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा को चूमना है

इमाम मुहद्दिस हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी हन्फ़ी, शारेह बुखारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हदीस नक़्ल फ़रमाते हैं कि बे शक एक आदमी महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास आया और उस ने अर्ज़ की कि मैं ने नज़र मानी है कि अगर अल्लाह तआला ने हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मक्का मुकर्रमा की फ़तह दी तो मैं क़अ़बा मुअज़्ज़मा की चौखट को बोसा दूँगा। महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

فَقَالَ قَبِّلْ قَدَمَیْ اُمِّكَ وَقَدْ وَفَیْتَ نَذْرَكَ O

यानि तुम अपनी मां के दोनों पांव को बोसा दो। तुम्हारी नज़र पूरी हो जाएगी।

(उमदतुल क़ारी, जि. 2, स. 82, मतबुआ मिस्र)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

चौथा जुमा .... पहला बयान

मालिक व मुख़्तार नबी

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ج

तर्जमा : और उन्हें क्या बुरा लगा यही न कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। (पारा 10, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

उस्ताज़े ज़मन, हज़रत मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

अल्लाह, अल्लाह शहे कौनैन जलालत तेरी
फ़र्श क्या अर्श पे जारी है हुकूमत तेरी
झोलियाँ खोल के बे समझे नहीं दौड़ आए
हमें मालूम है दौलत तेरी, आदत तेरी
तू ही मुल्के खुदा, मिलके ख़ुदा का मालिक
राज तेरा है, ज़माने में हुकूमत तेरी

और आशिके मुस्तफ़ा, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

और फ़रमाते हैं :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

तमहीद : हम जिस दौर में हैं यह बड़े फ़ितनों और हंगामों का दौर है और सब से बड़ा फ़ितना बद अकीदगी का फ़ितना है, वहाबियत का फ़ितना है, देवबन्दियत का फ़ितना है।

और तमाम बद अक़ीदों का मज़हब व मस्लक यह है कि महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे जैसे एक इन्सान थे और वह किसी चीज के मालिक व मुख़्तार नहीं थे, मआज़ल्लाहे तआला ! यह अक़ीदा और मज़हब व मस्लक कुरआने करीम का दिया हुआ नहीं है और कुरआने करीम का दिया हुआ अक़ीदा और मजहब व मस्लक क्या है, मुलाहज़ा फ़रमाइये।

कुरआन से सुबूत कि अल्लाह व रसूल ने ग़नी कर दिया

وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ج

तर्जमा : और उन्हें क्या बुरा लगा यही न कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। (पारा 10, रुकू 16, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने कितने वाज़ेह अलफ़ाज़ में बयान फ़रमा दिया कि अल्लाह तआला ग़नी (मालदार) फ़रमाता है और अल्लाह तआला के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी ग़नी करते हैं यानी दौलत मन्द बना देते हैं।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा, तेरा

दूसरी आयत मुलाहज़ा फ़रमाइये।

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

तर्जमा : और क्या अच्छा होता अगर वह उस पर राज़ी होते जो अल्लाह व रसूल ने उन को दिया। (पारा 10, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व अज़मत का ख़ुतबा दिया कि मैं भी देता हूँ और मेरी अता से मेरा महबूब, मुस्तफ़ा करीम भी देता है।

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

कुरआन से साबित है कि अल्लाह व रसूल ने नेअमत दी

तीसरी आयत मुलाहज़ा फ़रमाइये : اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ

तर्जमा : और ऐ महबूब ! याद करो जब तुम फ़रमाते थे उस से जिसे अल्लाह ने नेअमत दी और तुम ने उसे नेअमत दी। (पारा 22, रुकू 2, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

चौथी आयत मुलाहज़ा फ़रमाइये :

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ

तर्जमा : तुम्हारे दोस्त नहीं मगर अल्लाह और उसका रसूल

(पारा 6, रुकू 12, तर्जमा कंज़ुल ईमान)

तर्जमा : कितना वाज़ेह और रौशन इरशादे पाक है कि अल्लाह तआला ने उन पर एहसान फ़रमाया और अल्लाह तआला के महबूब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन पर एहसान किया और अल्लाह तआला ने उन को नेअमत अता फ़रमाई और अल्लाह के महबूब मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन को नेअमत अता की और अल्लाह तआला बे शक तुम्हारा मददगार है मगर अल्लाह के रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी तुम्हारे मददगार हैं।

हज़रात ! बद अक़ीदों को चाहिये कि अल्लाह तआला पर फ़तवा लगाएं कि अल्लाह तआला भी बरैलवी अक़ीदे वाला है। मआज़ल्लाह तआला।

बेशक अल्लाह तआला खुद से मददगार है और हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की देन व अता से मददगार हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

रब है मोअती यह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उन का है खिलाते यह हैं

इन्ना अअतैना कल कौसर
सारी कसरत पाते यह हैं

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का इरशादे पाक आप ने सुना और अपने ईमान को ताज़ा किया। अब अल्लाह तआला के महबूब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक मुलाहज़ा फ़रमाइये और अपने ईमान को खूब से खूब तर मज़बूत कीजिये।

हदीस से सुबूत कि अल्लाह व रसूल ने ग़नी कर दिया

हदीस शरीफ़ : (1) فَاَغْنَاهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ

तर्जमा : यानी तो अल्लाह ने उस को ग़नी कर दिया और अल्लाह के रसूल ने भी उस को ग़नी कर दिया। (सही बुखारी शरीफ़, जि. 1, स. 198)

हज़रात ! खुद महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला तो ग़नी दौलतमन्दर बनाता ही है और अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह के रसूल मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम भी गनी, मालदार, दौलतमन्द बना देते हैं।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

हदीस से सुबूत कि अल्लाह व रसूल मददगार हैं

दूसरी हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा कीजिये :

اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مَوْلٰى مَنْ لَّا مَوْلٰى لَهٗ ۝

तर्जमा : यानी अल्लाह तआला और अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मददगार हैं उस के जिस का कोई मददगार न हो। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 31)

तीसरी हदीस शरीफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइये : हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम, महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने गुलाम हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हक़ में फ़रमाया :

اَحَبُّ اَهْلِيْ اِلَيَّ مَنْ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ وَاَنْعَمْتُ عَلَيْهِ

यानी मुझे अपने घर वालों में सब से ज़्यादा महबूब वह है जिस को अल्लाह ने नेअमत दी और मैं ने उस को नेअमत दी। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 223, मिश्कात शरीफ़, स. 572)

मशहूर मुहद्दिस हज़रत मुल्ला अली क़ारी अलैहिर्रहमतुल बारी इस हदीसे पाक की शरह में फ़रमाते हैं कि :

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को अल्लाह तआला ने नेअमत बख़्शी और अल्लाह तआला के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने नेअमत बख़्शी। मगर यहाँ मुराद वह है जिस की तसरीह क़ुरआने करीम में बयान हुई कि जब तू फरमाता था उस से जिस को अल्लाह तआला ने नेअमत दी।

وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ هُوَ زَيْدٌ

यानी और ऐ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तू ने उसे नेअमत दी वह ज़ैद बिन हारिसा है।

हज़रात ! इन आयाते करीमा और अहादीसे तैय्यिबा से साफ़ तौर पर पता चला कि अल्लाह तआला तो हकीक़ी मालिक है और अल्लाह तआला के बनाने से हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी मालिक व मुख़्तार हैं और बे शक अल्लाह तआला ही देता है और अल्लाह तआला के दिये से हमारे प्यारे नबी, मालिको मुख़्तार रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी अपने गुलामों को अता फ़रमाते हैं :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे आक़ा ,मुस्तफ़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को एक और अनेक और बे मिस्ल और ला जवाब बनाया है, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम जैसा कोई हुआ है न होगा।

आशिके मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम कहा तेरी ख़ल्क़ को हक़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुआ है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

अल्लाह तआला ने हमारे नबी रसूले आज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बे मिस्ल बनाया है तो अब क़ियामत तक हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मिस्ल और जवाब ना मुमकिन और मुहाल है।

सौमे विसाल : हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सौमे विसाल यानी बग़ैर इफ़्तार किये रोज़े पर रोज़ा रखते थे, यह देख कर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने भी इसी तरह रोज़े रखना शुरू कर दिये जब कमज़ोरी के आसार उन में नुमायां हुए तो आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन्हें सोमे विसाल यानी बग़ैर इफ़्तार के रोज़े पर रोज़े रखने से मना फ़रमाया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को सोमो विसाल मना फ़रमाया तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया :

या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप तो ख़ुद रोज़ा रखते हैं।

قَالَ وَاَيُّكُمْ مِثْلِيْ اِنِّيْ اَبِيْتُ يُطْعِمُنِيْ رَبِّيْ وَيَسْقِيْنِيْ

(सही बुख़ारी, जि.1, स.263, सही मुस्लिम, जि.1, स.35')

यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ने फ़रमाया, तुम में (यानी मेरी तरह) मेरे जैसा कौन है ? मैं रात (अपने रब तआला के पास) गुज़ारता हूँ मेरा रब तआला मुझे खिलाता और पिलाता है।

हज़रात ! सही बुख़ारी शरीफ़ और सही मुस्लिम शरीफ़ की इस हदीस में ख़ुद महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा और दूसरे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से फ़रमा रहे हैं कि मैं तुम्हारी मिस्ल तुम्हारी तरह नहीं हूँ और तुम में से कोई भी मेरी मिस्ल मेरी तरह नहीं है।

हज़रात ! क्या सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कुरआने करीम की इस आयत :

إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

(पारा 16, रुकू 3)

नहीं पढ़ते थे, क्या उन को यह आयत याद नहीं थी ? सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने क्यों नहीं कहा कि हम सब आप के मिस्ल और आप की तरह हैं।

हज़रात ! मालूम हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बे मिस्ल और बे नज़ीर मानते थे और أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ का मफ़हूम उन के नज़दीक वह नहीं था जो आज कल के हमसरी व बराबरी का दावा करने वालों ने समझा है।

ईमान वालों को सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के ईमान व अक़ीदा से सबक़ हासिल करना चाहिये।

आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरा मस्नदे नाज़ है अर्शे बरीं, तेरा मेहरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दो सरा है शहा, तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम

ऐ ईमान वालो ! अब वहाबियों देवबन्दियों का अक़ीदा मुलाहज़ा कर लीजिये ताकि आप को उन बद अक़ीदों से दूर रहने में आसानी रहे।

वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा

वहाबियों, देवबन्दियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

(1) अक़ीदा : सब इन्सान (नबी हों या उम्मती) आपस में भाई हैं। जो बड़ा हो वह बड़ा भाई। औलिया व अम्बिया इमाम ज़ादा, पीर व शहीद, सब इन्सान ही हैं और आजिज़ (मजबूर) बन्दे हैं और हमारे भाई हैं और उन की ताज़ीम इन्सानों की तरह करना चाहिये।

(2) अक़ीदा : अम्बिया और औलिया, अल्लाह के रू बरू एक ज़र्रए नाचीज़ से भी कमतर हैं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 119)

अल्लाह तआला बद अक़ीदों के बुरे अक़ीदे और उन के फ़ितनों से महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दो आलम के बादशाह हैं

अल्लाह तआला ने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़मीन और आसमान, दोनों जहान का बादशाह बनाया है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हमारे दो वज़ीर आसमान में हैं (1) हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम। (2) हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम।

وَاَمَّا وَزِیْرَایَ مِنْ اَهْلِ الْاَرْضِ فَاَبُوْ بَکْرٍ وَّ عُمَرُ

यानी और दो वज़ीर ज़मीन वालों में (1) हज़रत अबू बक्र (2) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) हैं। (तिर्मिज़ी स. 209, मिश्कात शरीफ़, स. 552)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इसी लिये आसमान में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम वज़ीर हैं और ज़मीन में महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वज़ीर हैं। ख़ूब फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

अल्लाह अल्लाह शहे कौनैन जलालत तेरी
फ़र्श क्या अर्श पे जारी है हुकूमत तेरी

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बे मिस्ल इख़्तियार

मौलल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ किया गया, तुम हज करो ! एक शख़्स ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या हर साल हज फ़र्ज़ है ? तो आक़ा करीम मुस्तरफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ामोश रहे। हत्ता कि उस शख़्स ने तीन मरतबा यही सवाल किया।

قَالَ لَا وَلَوْ قُلْتُ نَعَمْ لَوَجَبَتْ ٥

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : नहीं : और अगर मैं हाँ कह देता तो हज हर साल फ़र्ज़ हो जाता।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 432, तिर्मिज़ी, इब्ने माजह, दारमी, अहमद, मिश्कात, स. 213)

और इब्ने माजह की रिवायत में है कि अगर मैं हाँ कह दूँ तो हर साल हज फ़र्ज़ हो जाए और फिर तुम हर साल हज न करते तो अज़ाब में पड़ जाते।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह ज़बां जिस को सब कुन की कन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जन्नत बांटते हैं

शारेह बुखारी, हजरत इमाम क़स्तलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बुख़ारी शरीफ़ की शरह में तहरीर फ़रमाते हैं : وَكُنْيَتُهٗ اَبُو الْقَاسِمِ لِاَنَّهٗ يَقْسِمُ الْجَنَّةَ بَيْنَ اَهْلِهَا

यानी हमारे आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की कुन्नियत अबुल क़ासिम है। इस लिये कि आप मुस्तहेक्क़ीन के दरमियान जन्नत बांटते हैं। (मवाहिबुल लदुन्नियह शरीफ़, जि 1, स. 195)

हज़रात ! बांटता वही है जो मालिक होता है, अल्लाह तआला ने अपने महबूब, हमारे आक़ा करीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जन्नत व दोज़ख दोनों क़ा मालिक बल्कि हक़ तो यह है कि सारी कायनात का मालिक बनाया है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत रबीआ बिन कअब को जन्नत अता की

ख़ादिमे रसूल, हज़रत रबीआ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़िदमत के लिये हज़रात को आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुजरा शरीफ़ की चौखट पर सर रख कर सो जाते थे ताकि दरवाज़ा शरीफ़ खुले तो मैं उठ जाऊँ और वुज़ू का पानी वग़ैरह ख़िदमते अक़दस में पेश कर दूँ। एक मरतबा हज़रत रबीआ बिन कअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : سَلْ يَا رَبِيْعَةُ

यानी ऐ रबीआ बिन कअ़ब जो मांगना है मांग लो, तो हज़रत रबीआ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया :

اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِى الْجَنَّةِ

यानी हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जन्नत में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का साथ मांगता हूँ।

यानी या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जन्नत मांगता हूँ और जन्नत में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ रहूँ यह भी मांगता हूँ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَوْغَيْرَ ذٰلِكَ यानी उस के अलावा और भी कुछ मांग लो तो हज़रत रबीआ बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि मुझे जो मांगना था वह अर्ज़ कर दिया तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अच्छा सज्दा कसरत से करते रहो। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 193, मिश्कात शरीफ़, स. 76)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का यह ईमान व अक़ीदा था कि हमारे प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लह तआला की अता से जन्नत भी देते हैं और जो मांगो वह अता फ़रमाते हैं। हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन का यह अक़ीदा नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से मांगना शिर्क व बिदअत है बल्कि वह तो अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ करते हैं :

اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِی الْجَنَّةِ यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप से जन्नत और जन्नत में आप की ख़िदमत मांगता हूँ।

(सही मुस्लिम, जि. 1, स. 193)

गोया सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का ईमान व अक़ीदा था कि हमारे प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जन्नत के मालिक व मुख़्तार हैं और जिस को चाहते हैं जन्नत अता फ़रमा देते हैं।

गुनाहगारों को जन्नत से कोई रोके तो क्यों रोके
जो यह जन्नत मुहम्मद की तो यह उम्मत मुहम्मद की

और ! आशिक़े मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

आँख भी दी और जन्नत भी अता कर दी

जंगे उहद में हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख में एक दुश्मन का नेज़ा या तीर पेवस्त हो गया जब उस तीर को निकाला गया तो साथ मैं आँख का ढेला भी बाहर आ गया।

हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आँख का ढेला हाथ में लिया और दूसरे हाथ से आँख बन्द किये हुए अल्लाह तआला के हबीब, बीमारों के तबीब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए और अपनी फूटी हुई आँख और आँख का ढेला जो बाहर हो गया है, आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को दिखाया और सारा वाक़िआ बयान किया तो आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहाबी क़तादा से फ़रमाया : ऐ क़तादा आँख चाहते हो या जन्नत ? तो हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आँख तो मेरी मर्ज़ी से दे दीजिये और जन्नत अपने करम से अता फ़रमा दीजिये।

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जन्नत की बशारत दी और अपने दहने मुबारक से लुआबे दहन शरीफ़ निकाला और आँख का ढेला ज़ख्मी आँख में रख कर लुआबे दहन शरीफ़ लगा दिया

तो हजरत क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उसी वक़्त मेरी दुखती हुई आँख दुरुस्त हो गई और पहले से ज़्यादा रौशन हो गई। (ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 5, स. 188, अन्वारे मुहम्मदिया, स. 297, शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 212)

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले
बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दोज़ख़ से बचाते हैं

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमते आलिया में अर्ज़ किया कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब को क्या नफ़अ दिया ? बेशक अबू तालिब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हिमायत में लोगों से लड़ते झगड़ते थे तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : وَجَدْتُّهُ فِيْ غَمَرَاتٍ مِّنَ النَّارِ فَأَخْرَجْتُهُ إِلَىٰ ضَحْضَاحٍ

यानी मैंने उसे (अपने चचा अबू तालिब को) सर से पांव तक आग में डूबा हुआ पाया तो मैं ने निकाल कर पांव तक की आग में कर दिया। (सही मुस्लिम जि. 1, स. 115)

هُوَ فِيْ ضَحْضَاحٍ مِّنْ نَّارٍ وَلَوْلَا أَنَا لَكَانَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ

यानी वह (अबू तालिब) पांव तक की आग में है अगर मैं न होता तो वह दोज़ख़ के सब से निचले तबक़े में होते। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 548)

यानी अबू तालिब का सिर्फ़ पांव दोज़ख़ की आग में है, अगर अबू तालिब मेरी बात मान जाते और मेरा कलमा पढ़ लेते तो मैं अबू तालिब को मुकम्मल दोज़ख़ की आग से बचा लेता।

किस चीज़ की कमी है मौला तेरी गली में
दुनिया तेरी गली में उक़बा तेरी गली में

और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से पता चला कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत अगर ग़ैर मोमिन भी करता है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस को भी नवाज़ते हैं और अपने करम की भीक कुछ न कुछ उस को अता फ़रमाते हैं।

खूब फ़रमाया प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

नजदी उस ने तुझ को मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की

और फ़रमाते हैं :

साइलो ! दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

आक़ा करीम, मोमिन गुनाहगारों को दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाऐंगे

हज़रत इमाम बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से गुनाहगार ईमान वालों को ख़ुद अपने हाथ से दोज़ख़ से निकाल लेंगे और जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أُخْرِجُهُمْ مِّنَ النَّارِ فَاُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ

यानी मैं उन को दोज़ख़ से निकालूँगा और फिर उन को जन्नत में दाख़िल करूँगा।

(सही बुख़ारी, जि. 2, स. 97)

हज़रात ! कितने वाज़ेह अलफ़ाज़ में महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला की दी हुई कुव्वत व ताक़त का इज़हार फ़रमाया कि मैं अपने गुनाहगार गुलामों को दोज़ख़ से निकाल लूँगा और फिर उन को जन्नत में दाख़िल करूँगा।

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा, तेरा

गुनाहगारों को जन्नत से कोई रोके तो क्यों रोके
जो यह जन्नत मुहम्मद की, तो यह उम्मत मुहम्मद की

हज़रात ! वहाबियों, ग़ैर मुक़ल्लिदों, देवबन्दियों का अक़ीदा भी मुलाहज़ा करते चलिये ताकि उन से बचिये दूसरों को भी बचाइये।

ग़ैर मुक़ल्लिदों, देवबन्दियों, तब्लीग़ियों के इमाम, मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

अक़ीदा : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न कुछ ताक़त है न कुछ इल्मे ग़ैब उन की ताक़त का हाल तो यह है कि अपनी जान तक के भी नफ़अ व नुक़सान के मालिक नहीं तो दूसरे को क्या नफ़ा पहुँचा सकते ? (तक़वीयतुल ईमान, स. 58)

ऐ ईमान वालो ! अब भी न पहचानोगे। किस क़दर दरीदा दहनी और बे अदबी व गुस्ताख़ी,

महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान में की गई और आज भी की जा रही है। अल इयाज बिल्लाहि तआला

जब कि ! सही बुखारी और सही मुस्लिम की हदीसो से साफ़ तौर पर साबित है कि आका करीम, मुस्तफा रहीम, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मोमिन गुनाहगारो को दोजख से निकाल लेंगे और जन्नत में दाखिल फरमाएंगे। इस तरह आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मोमिन सुन्नी मुसलमान को नफा देते है और नुकसान से बचाते हैं और मुनाफ़िक, वहाबी को न नफ़ा देंगे और न दोजख की आग से बचाऐंगे।

इसी लिये तो आला हजरत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमा दिया है :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की
मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

दुरूद शरीफ़ :

एक प्याला दूध, और सत्तर सहाबा

हज़रत अबू हुरैरह रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि कई रोज़ से खाना नहीं खाया था, शिद्दते भूक की वजह से एक दिन रास्ते के कनारे पर खड़ा हो गया जहाँ से लोग गुज़रते हैं, शायद किसी की नजर मेरे उदास चेहरे पर पड़े, वह मेरा हाल मालूम करे तो मैं उस को बताऊँ कि मैं भूका हूँ। इस तरह मेरी ज़रूरत पूरी हो जाए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सब से पहले जो साहब मेरे सामने से गुज़रे वह महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे तो मैंने उन को सलाम किया और कुरआन की एक आयत के मुतअल्लिक पूछा। हालांकि मुझे वह आयत याद थी मगर मेरा मकसद यह था कि शायद वह जवाब देते वक्त मेरे उदास चेहरे को देख कर रहम खाएं और मुझे खाना खिला दें मगर वह निगाह नीची किये हुए आयत बता कर आगे बढ गए और मेरी तरफ देखा तक नहीं।

फिर ! मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गुजरे तो मैं ने आगे बढ कर उन को सलाम किया और आयत के मुतअल्लिक़ पूछा तो उन्होंने भी नज़र झुकाए, झुकाए जवाब दिया और आगे बढ गए और मेरी जानिब देखा तक नहीं।

ثُمَّ مَرَّبِيْ اَبُوالْقَاسِمِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَسَّمَ

यानी फिर मेरे पास से आक़ा करीम अबुल क़ासिम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम गुज़रे तो मुझे देख कर मुस्कुरा दिये और फ़रमाया कि अबू हुरैरह मेरे साथ

चलो, मैं पीछे पीछे चलने लगा। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर में तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया ऐ आएशा ! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) खाने का कोई सामान है? तो हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया कि एक अन्सारी ने दूध का प्याला आप की ख़िदमते आलिया में भेजा है। हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दूध का प्याला लिये हुए बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया अबू हुरैरह ! अहले सफ़्फ़ा के पास जाओ और सब को बुला लाओ। वह सब भी भूके हैं वह भी दूध पी लेंगे। उस वक़्त अस्हाबे सुफ़्फ़ा सत्तर लोग थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने दिल में सोचा कि यह दूध मुझे मिल जाता तो बहतर था। इस लिये कि मैं ज़्यादा मुस्तहिक़ था, यह थोड़ा सा दूध (सत्तर) अस्हाबे सुफ़्फ़ा को किस तरह काफ़ी होगा ? और मेरे लिये कुछ भी नहीं बचेगा। लेकिन अल्लाह और अल्लाह के रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुक्म मानने के सिवा कोई चारा भी न था। चुनाँचे मैं अस्हाबे सुफ़्फ़ा के पास गया और उन को बुला लाया। वह सब (सत्तर) अस्हाबे सुफ़्फ़ा हाज़िरे बारगाह हो गए। तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उन सब को दूध पिलाओ। मैं ने प्याला लिया और उन में से एक को दिया। जब वह ख़ूब सेर हो कर दूध पी चुके तो मालिक व मुख़्तार नबी, मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दूध का प्याला लिया।

فَنَظَرَ إِلَيَّ فَتَبَسَّمَ وَقَالَ بَقِيتُ أَنَا وَأَنْتَ

यानी मेरे जानिब देखा और मुस्कुरा दिये और फ़रमाया अब मैं और तुम बाकी रह गए।

फिर ! मुझे हुक्म दिया बैठ जाओ और दूध पियो। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं बैठ गया और दूध पीने लगा, दूध पी लिया तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया और पियो मैंने और दूध पिया फिर सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया اِشْرَبْ यानी और पियो तो मैंने अर्ज़ किया : وَالَّذِيْ بَعَثَكَ بِالْحَقِّ यानी उस ज़ात की क़सम जिस ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हक़ के साथ भेजा अब तो पीने की बिल्कुल गुन्जाइश नहीं रही। हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं फिर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने वह प्याला ले लिया और अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया। बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ कर आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दूध नोश फ़रमाया और ख़त्म कर दिया। (बुख़ारी शरीफ़, जि 2, स. 955)

हज़रात ! एक प्याला दूध में सत्तर सहाबए किराम ने शिकम सेर हो कर दूध पिया और प्याला दूध से भरा ही रहा और फिर महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने भी नोश फ़रमाया :

खूब फरमाया आला हजरत, प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा, क़ादरी रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु ने :

क्यों जनाबे बू हुरैरह था वह कैसा जामे शीर
जिस से सत्तर साहिबों का दूध से मुंह फिर गया

हजरात ! अल्लाह तआला ने हमारे आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सारे आलम का कुल इख्तियार दे कर इस लिये भेजा था कि अगर हमारी कुदरत और हमारे इख्तियारात को कोई देखना चाहता है तो मेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इख्तियार को देखे, उन की ताक़त को देखे, तो उस को मेरी कुदरत व ताक़त खुद ब खुद समझ में आ जाएगी।

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं दुरबे बहा दिये हैं

ज़बाने मुबारक की बरकत

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने नुबुव्वत से जो निकल गया वह बात होके रही। मुलाहज़ा फ़रमाइये :

अल्लाह के महबूब, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक चश्मे पर नुज़ूल फ़रमाया।

فَقِيْلَ لَهُ اِسْمُهُ بَيْسَانُ وَمَائُهُ مِلْحٌ فَقَالَ بَلْ هُوَ نُعْمَانُ وَمَائُهُ طَيِّبٌ فَطَابَ

तर्जमा : यानी सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया कि ऐ आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस चश्मे का नाम बीसान और उस का पानी नमकीन और खारा है। तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया (नहीं) बल्कि उस चश्मे का नाम नोअमान और उस का पानी मीठा है तो वह मीठा हो गया। (शिफा शरीफ, जि. 1, स. 218)

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि हकम बिन आस, हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मजलिस में आ जाता और जब महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कलाम फ़रमाते तो वह मुंह मार, मार कर आप की नक्ल उतारा करता था।

हदीस शरीफ : فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُنْ كَذَالِكَ فَلَمْ يَزَلْ يَخْتَلِجُ حَتّٰى مَاتَ

यानी एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस को फ़रमा दिया : ऐसा ही हो जा। (बस वह शख्स ऐसा ही हो गया) और मरते दम तक मुंह मारता रहा।
(बैहकी, ख़साइसे कुब्रा, जि. 2, स. 79)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर पता चला कि हमारे प्यारे आक़ा, मुस्तफ़ा

करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने करम फ़रमा कर सीधी नज़र से देख ली तो टेढ़ी तक़दीर भी सीधी हो गई और ग़ज़ब की निगाह से देख लिया और फ़रमा दिया कि तेरा मुंह टेढ़ा हो जाए तो फिर हमेशा के लिये मुंह टेढ़ा ही हो गया।

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

और ! यह भी मालूम हुआ कि जो शख़्स हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दुश्मन और गुस्ताख़ हो उस के लिये बद दुआ करना और यह कहना कि उस का मुंह टेढ़ा हो जाए बिल्कुल दुरुस्त और सुन्नत है।

दुआए हलाकत : हज़रत सलमा बिन अकूअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने बाएं हाथ से खाना खा रहा था तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस को फ़रमाया : दाहिने हाथ से खा। तो उस ने कहा कि दाहिने हाथ से नहीं ख़ा सकता यानी मेरा दाहिना हाथ बेकार है।

قَالَ لَا اسْتَطَعْتَ مَا مَنَعَهُ اِلَّا الْكِبْرُ قَالَ فَمَا رَفَعَهَا اِلٰى فِيْهِ

तर्जमा : यानी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : जा, आज से बेकार ही रहेगा। उस ने यह झूटा उज़्र सिर्फ़ तकब्बुर से किया था तो उस दिन से वह हाथ बे कार हो गया कि फिर कभी मुंह तक न आ सका।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 172, मिश्कात, स. 536)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से भी पता चला कि जो लोग आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे आलिया के नाक़िद और बे अदब हैं उन के लिये बरबादी की दुआ करना और उन की ख़राबी के लिये बद दुआ करना हदीस शरीफ़ से साबित और सुन्नत है।

गुस्ताख़े रसूल के लिये बरबादी की दुआ करना जाइज़ है

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक शख़्स वही लिखता था तो वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुस्ताख़ और मुरतद हो गया और मुश्रिकों से मिल गया। فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ الْاَرْضَ لَا تَقْبَلُهُ ٥

यानी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बे शक उस को ज़मीन कुबूल नहीं करेगी। (सही बुख़ारी सही मुस्लिम मिश्कात, स. 535)

लिहाज़ा जब वह शख़्स मर गया और मुश्रिकों ने उसे दफ़्न किया तो ज़मीन ने बाहर फेंक दिया कई दफ़ा क़ब्र को गहरा कर के दफ़्न किया गया मगर वह जब भी दफ़्न कर के वापस लौटते तो क़ब्र उस को बाहर फेंक देती।

हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि वह शख़्स क़ब्र के बाहर ही

पड़ा रहा, यहाँ तक कि उस का जिस्म सड़ गल कर नेस्तो नाबूद हो गया मगर क़ब्र ने क़ुबूल न किया। (बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात, स. 535)

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

ऐ ईमान वालो ! सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की इस हदीस शरीफ़ से वाज़ेह हो गया कि दुश्मने रसूल का अन्जाम बहुत ही बुरा है और दुश्मने रसूल के लिये बरबादी और हलाकत की दुआ करना बिल्कुल दुरुस्त बल्कि सुन्नत है।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने लड़की को ज़िन्दा फ़रमाया

आक़ा करीम, महबूबे ख़ुदा, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स आया और उ ने अर्ज़ किया कि मैं ने अपनी छोटी सी बच्ची को फ़लां वादी में फेंका था तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस शख़्स के साथ उस वादी में तशरीफ़ ले गए और उस बच्ची का नाम ले कर पुकारा, ऐ फ़लां, ऐ बच्ची ! अल्लाह तआला के हुक्म से मुझे जवाब दे, तो वह बच्ची لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ कहती हुई निकली तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : कि बे शक तेरे मां, बाप मुसलमान हो गए हैं। अगर पसन्द हो तो मैं तुझ को उन के पास पहुँचा दूँ।

قَالَتْ لَا حَاجَةَ لِيْ فِيْهِمَا وَجَدْتُ اللّٰهَ خَيْرًا لِّيْ مِنْهُمَا

यानी बच्ची ने कहा (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) मुझे उन की हाजत नहीं, मैं ने अल्लाह तआला को उन से बेहतर पाया है।

(शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 211)

हदीस : (2) बैहक़ी ने हदीस शरीफ़ को इस तरह रिवायत की है कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने एक शख़्स को दावते इस्लाम दी तो उस ने अर्ज़ किया मैं इस्लाम उस वक़्त क़ुबूल करूँगा जब आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) मेरी बच्ची को ज़िन्दा फ़रमा दें। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : मुझे उस की क़ब्र दिखाओ। उस शख़्स ने

आप को अपनी बच्ची की क़ब्र दिखाई तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस लड़की को आवाज़ दी तो उस लड़की ने कहा : لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) मैं हाज़िर हूँ तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तू दुनिया की तरफ़ आना पसन्द करती है।

فَقَالَتْ لَا وَاللّٰهِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّيْ وَجَدْتُ اللّٰهَ خَيْرًا لِّيْ مِنْ اَبَوَيَّ وَوَجَدْتُ الْاٰخِرَةَ خَيْرًا لِّيْ مِنَ الدُّنْيَا

(शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 211, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 1, स. 240, अनवारे मुहम्मदिया, स. 295)

यानी बच्ची ने कहा : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! ख़ुदा की क़सम मुझे दुनिया में वापस आना पसन्द नहीं, बे शक मैं ने अपने मां, बाप से अल्लाह तआला को बहतर पाया और दुनिया से आख़िरत को बहतर पाया।

हज़रात ! इन दोनों हदीसों से साबित है कि हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमा दिया तो अल्लाह तआला के फ़ज़्लो अता से बच्ची ज़िन्दा हो गई।

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम
अर्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं
उस की क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब बन्दों को ख़ास कर अम्बियाए किराम और रसूलाने इज़ाम को बड़ी ताक़त व कुव्वत का मालिक बनाया है जैसा कि कुरआने करीम ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ताक़त व कुव्वत को बड़ी शान के साथ बयान फ़रमाया है। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

اَنِّيْ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ وَاُحْيِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ فِيْ بُيُوْتِكُمْ ط

तर्जमा : मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परिन्दा की सी सूरत बनाता हूँ फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह फ़ौरन परिन्द हो जाती है अल्लाह के हुक्म से और मैं शिफ़ा देता हूँ मादर ज़ाद अन्धे और सफ़ेद दाग़ वाले को, और मैं मुर्दे जिलाता हूँ, अल्लाह के हुक्म से और तुम्हें बताता हूँ जो तुम कमाते और जो अपने घरों में जमा कर गए हो। (पारा 3, रुकू 13, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाहु अकबर ! जब अल्लाह तआला ने इस क़दर शान व अज़मत और कुव्वत व ताक़त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अता किया है तो अपने महबूब, मुस्तफ़ा जाने रहमत, जाने मसीहा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किस क़दर शान व इज़्ज़त और कुव्वत व ताक़त का मालिक बनाया होगा।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस के तलवों का धोवन है आबे हयात
है वह जाने मसीहा हमारा नबी
कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मुझ से मांगो

हदीस शरीफ़ : हमारे आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا صَلَّيْتُمُ الظُّهْرَ فَقُوْمُوْا فَقُوْلُوْا اِنَّا نَسْتَعِيْنُ بِرَسُوْلِ اللّٰهِ

यानी जब ज़ोहर की नमाज़ पढ़ चुको तो खड़े हो जाओ और फिर कहो कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम से मदद मांगते हैं। (नसाई, जि. 2, स. 117)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से पता चला कि अल्लाह तआला की इबादत नमाज़ के बाद मोमिन मुसलमान को अल्लाह तआला के हबीब, हम बीमारों के तबीब, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मदद मांगने का हुक्म फ़रमाया है। इसी वजह से हम महरबान नबी रहीम व करीम रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बे कस पनाह में अ़र्ज़ करते हैं।

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसादे बरसाने वाले
चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

दूसरी बात : इस हदीस शरीफ़ में ख़ुद महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया है कि मुझ से मदद मांगो इस फ़रमान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मदद मांगना और या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहना बिदअत व शिर्क नहीं है बल्कि सुन्नत है।

अल्लाह तआला ख़ुद अपने महबूब, मुस्तफ़ा से मदद मांगने का हुक्म देता है

मशहूर बुज़ुर्ग, हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु लिखते हैं कि तौरेत शरीफ़ में है कि अल्लाह तआला अपने ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ هَاجِرَةَ تَلِدُ وَيَكُونُ مِنْ وَلَدِهَا مَنْ يَدُهُ فَوْقَ الْجَمِيعِ مَبْسُوطَةً إِلَيْهِ بِالْخُشُوعِ ۝

यानी बे शक हाजिरा की औलाद होगी और उस की औलाद में वह शख़्स होगा जिस का हाथ सब के हाथ से बलन्द तर होगा और सब के हाथ उस की जानिब आजिज़ी से फैले होंगे।

(तोहफ़ए असना अशरिया, स 265)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की
ला व रब्बुल अर्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में नेअ़मत रसूलुल्लाह की

हज़रत शाह मौलाना अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे लिखते हैं कि ज़ाहिर है कि हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद में इस शान का शख़्स कि जिस के हाथ सब से बलन्द तर हों और तमाम ज़माना उस के सामने आजिज़ी से झुके सिवाए मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के किसी वक़्त कोई नहीं हुआ। (तोहफ़ए अस्ना अशरिया, स. 265)

सही बुख़ारी और सही मुस्लिम की रिवायत : आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنِّي أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الْأَرْضِ

यानी बेशक मुझे ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की चाबियाँ दी गई।

(सही बुख़ारी, जि. 2, स. 558, सही मुस्लिम, जि. 2, स. 250)

और हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أُوتِيتُ خَزَائِنَ الْأَرْضِ यानी मुझे ज़मीन के तमाम ख़ज़ाने दिये गए।

(सही बुख़ारी, जि 2, स. 042, सही मुस्लिम, जि. , स. 244)

हदीस शरीफ़ : मां आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

يَا عَائِشَةُ لَوْ شِئْتُ لَسَارَتْ مَعِيَ جِبَالُ الذَّهَبِ

यानी ऐ आएशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) अगर मैं चाहूँ तो मेरे साथ सोने के पहाड़ चला करें। (मिश्कात शरीफ़, स. 541)

सही मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है : महबूबे ख़ुदा, मुस्तफ़ा रहीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أُعْطِيتُ الْكَنْزَيْنِ الْأَحْمَرَ وَالْأَبْيَضَ

यानी मुझे सोने और चाँदी के ख़ज़ाने अता किये गए। (मिश्कात शरीफ़, स. 512)

हज़रात ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को सब कुछ अता फरमा दिया और अपनी सारी ख़ुदाई का मालिक बना दिया मगर महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की शाने बन्दगी देखिये कि खजूर की चटाई बिस्तर है और पेवन्द लगे कपड़े लिबास और जौ की मोटी और खुरदरी रोटी ख़ूराक।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ताबेए फ़रमान सूरज है

हमारे सरकार दो आलम के मालिको मुख़्तार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ब्ज़ा व इख़्तियार सूरज पर है मुलाहज़ा हो।

हदीस शरीफ़ : إِنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَمَرَ الشَّمْسَ فَتَاَخَّرَتْ سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ

(तबरानी मोअजम, मवाहिबे लदुन्नियह, अनवारे मुहम्मदिया, स. 272)

तर्जमा : यानी बे शक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सूरज को हुक्म दिया (कि रुक जाए) तो वह दिन की एक साअत के लिये ठहर गया।

अल्लाहु अकबर ! क्या शाने मुस्तफ़ा है आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की कि हुक्म हुआ तो सूरज पलट आया और ठहर भी गया।

अर्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं
उस की क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इशारे से चाँद दो टुकड़े हो गया

हबीबे यमनी ने महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहा : अगर आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) नबी हैं तो चाँद के दो टुकड़े कर के दिखाएं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े फ़रमा दिये और इरशाद फ़रमाया : गवाह रहना। चाँद के दोनों टुकड़े इतने फ़ासले पर हो गए थे कि हिरा पहाड़ उन के दरमियान नज़र आ रहा था। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 546)

हज़रात ! इतना वाज़ेह और अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा देख कर भी कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन ईमान न लाए और कह दिया कि यह तो जादू है तो अगर आज कल के वहाबी, देवबन्दी और सुलह कुल्ली अगर हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाह तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम के सूरज को पलटाने और चाँद के दो टुकड़े करने की कुव्वत व ताक़त को तस्लीम नहीं क़रते, यह तो बग़ैर देखे चौदह सौ बरस बाद की बात है और कुफ़्फ़ारे मक्का तो आँख से देखते थे और इनकार करते थे।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

सूरज उलटे, पांव पलटे चाँद इशारे से हो चाक
अन्धे नजदी देख ले कुदरत रसूलुल्लाह की

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर चीज के मालिको मुख़्तार हैं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ब्ज़ा हर शय पर है, मुलाहज़ा हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर चीज़ के मालिको मुख़्तार हैं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ब्ज़ा हर श़य पर है, मुलाहज़ा हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ : اُوْتِيْتُ مَفَاتِيْحَ كُلِّ شَيْئٍ

तर्जमा : यानी मुझे हर चीज़ की कुन्जियाँ दे दी गई। (मुस्नद अहमद, ख़साइसे कुबरा, जि. 1, स. 196)

उस्ताज़े ज़मन, मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं :

कुन्जी तुम्हें दी अपने ख़ज़ानों की ख़ुदा ने
महबूब किया, मालिको मुख़्तार बनाया

दुरूद शरीफ़ :

उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हुए

सुलह हुदैबिया के दिन जब सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम सख़्त प्यासे हुए तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम प्यास से निढाल हैं और पानी नही है तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने बरतन में जिस में थोड़ा पानी था, अपने दस्ते मुबारक को रख दिया।

فَجَعَلَ الْمَاءُ يَفُوْرُ مِنْ اَصَابِعِهٖ كَاَمْثَالِ الْعُيُوْنِ

यानी तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुबारक उंगलियों से पानी के चश्मे जारी हो गए।

तमाम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने पानी से वुज़ू किया और ख़ूब सैराब हो कर पिया। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा गया कि उस दिन आप लोग

कितने आदमी थे ? तो उन्होंने जवाब दिया।

لَوْ كُنَّا مِائَةَ اَلْفٍ لَكَفَانَا

अगर हम एक लाख की तादाद में भी होते तो वह पानी हमारे लिये काफ़ी होता। मगर उस दिन हम पन्द्रह सौ आदमी थे। (सहीह बुखारी, जि 2, स. 898)

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

नूर के चश्मे लहराएं दरया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

और फ़रमाया !

उंगलियाँ हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नदियाँ पंजाबे रहमत की हैं जारी वाह, वाह

टूटी हुई पिन्डली दुरुस्त हो गई : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, अबू राफ़ेअ यहूदी (जो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सख़्त तरीन दुश्मन था) को क़त्ल करके उस के मकान से उतरने लगे तो सीढ़ी से गिर गए और उन की पिन्डली टूट गई तो उन्हों ने उसी वक़्त गरम, गरम अपने अमामा से बाँध लिया और अपने रुफ़क़ा के साथ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अपना हाल बयान किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अपना पांव फैलाओ, तो मैं ने अपना पांव फैला दिया

فَمَسَحَهَا فَكَأَنَّمَا لَمْ أَشْتَكِهَا قَطُّ ٥

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दस्ते मुबारक फेर दिया तो मेरी पिन्डली ऐसी दुरुस्त हो गई कि जैसे कभी वह टूटी ही न थी।

(सही बुखारी, जि. 2, स 577)

हज़रत अली के सीने को इल्म व मअरिफ़त का ख़ज़ीना बना दिया

सर चश्मए विलायत, मौलल मोमिनीन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे यमन में गवर्नर बना कर भेजना चाहा तो मैं ने अर्ज़ किया कि :

وَإِنِّي لَا أَعْلَمُ كَثِيرًا مِّنَ الْقَضَاءِ ٥

(इब्ने माजह, स 167)

यानी मैं क़ज़ा (फ़ैसले करना) नहीं जानता तो मुक़दमात के फ़ैसले वग़ैरह कैसे करूँगा ? तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक मेरे सीने पर मारा और फ़रमाया कि ऐ अल्लाह इस के दिल को हिदायत पर क़ाइम रख और उस की ज़बान को हक़ पर साबित रख !

قَالَ فَوَالَّذِیْ فَلَقَ الْحَبَّةَ فَمَا شَکَکْتُ فِیْ قَضَاءٍ بَیْنَ الْاِثْنَیْنِ ٥

यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम उस वक़्त से ता दमे हयात फ़रीक़ैन के फ़ैसले करने में एक ज़र्रा के बराबर भी मुझे ग़लती का शुबह नहीं हुआ।

(इब्ने माजह, स 167 ख़साइसे कुबरा, जि 2, स 73)

हज़रात ! हमारे सरकार, अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते मुबारक का यह असर हुआ कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु से बेहतर फ़ैसला करने वाला सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम में कोई न था

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बहरे समाहत पे लाखों सलाम

हज़रत अबू हुरैरह का ज़हन क़वी कर दिया

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अकसर बारगाहे मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हाज़िर रहा करते थे, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उसी वजह से मैं आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बहुत ज़्यादा हदीसें सुना करता था मगर कुछ देर के बाद हदीसों को भूल जाया करता था। एक मरतबा बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में हाज़िर हुआ तो मैं ने अर्ज़ किया ऐ आक़ा करीम ! सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से आप की हदीसें बहुत सुनता हूँ। मगर सब भूल जाता हूँ, तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : اُبْسُطْ رِدَاءَكَ یَا اَبَاهُرَیْرَةَ

यानी ऐ अबू हुरैरह अपनी चादर फैलाओ। (सही बुख़ारी, जि 1, स 514)

तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चादर फैला दी और मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दोनों ख़ाली हाथों को मिलाकर चादर में उन्डेल दिया और फ़रमाया : ضُمَّهُ اِلٰی صَدْرِكَ یَا اَبَاهُرَیْرَةَ

यानी ऐ अबू हुरैरह अपनी चादर समेट कर अपने सीने से लगा लो।

(सही बुख़ारी, जि 1, स 514, 515)

हज़रात ! हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं ने चादर को अपने सीने से लगा लिया और फ़रमाते हैं कि :

مَا نَسِیْتُ بَعْدُ شَیْئًا سَمِعْتُهٗ عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ٥

यानी उस के बाद से मैंने जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना उस में से कुछ भी न भूला। (यानी ज़ेर, ज़बर भी न भूला।)

(सही बुख़ारी, जि 1, स 514, 515, मस्लिम [illegible])

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ बज़ाहिर ख़ाली हैं और उसी दस्ते करम से हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की चादर में डाला मगर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम समझ गए कि बज़ाहिर हाथ ख़ाली हैं मगर आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कुव्वते हाफ़िज़ा अता फ़रमा दी, जब ही तो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि उस के बाद मैं ने जो कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना, सब याद रहा और उस में से कुछ भी न भूला।

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहाँ की नेअ़मतें हैं उन के ख़ाली हाथ में

दुरूद शरीफ़ :

सहाबा का अक़ीदा कि नबी देते हैं

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का ईमान व अक़ीदा था कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अता फ़रमाते हैं और नेअमत व दौलत को घटाने और बढ़ाने की भी ताक़त व कुव्वत रखते हैं , मुलाहज़ा हो।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मेरे साथ वादा फ़रमाया है कि वह मेरी उम्मत में से चार लाख आदमियों को बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल कर देगा। यह सुन कर महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया : زِدْنَا يَارَسُوْلَ اللهِ

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस से ज़्यादा कर दीजिये हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फिर अपने दोनों हथेलियों को मिला कर फ़रमाया : अच्छा तो अल्लाह तआला इस तरह दोनों चुल्लू भर के मेरी उम्मत को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।

महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर अर्ज़ किया :

زِدْنَا يَارَسُوْلَ اللهِ रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम और ज़्यादा कर दीजिये।

इतने में मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बोले ऐ हज़रत अबूबक्र छोड़ो ! यानी अब बस करो। इस तरह तो लोग अमल करना छोड़ देंगे। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

وَمَا عَلَيْكَ اَنْ يُّدْخِلَنَا اللهُ كُلَّنَا الْجَنَّةَ

यानी (ऐ उमर) अगर अल्लाह तआला हम सब को यूँ ही जन्नत में दाख़िल कर दे तो तेरा क्या बिगड़ता है।

तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया।

اِنَّ اللهَ اِنْ شَاءَ اَنْ یُّدْخِلَ خَلْقَهُ الْجَنَّةَ بِكَفٍّ وَّاحِدٍ

यानी अगर अल्लाह तआला चाहे तो अपनी सारी मख़लूक़ को अपने एक ही चुल्लू से जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे। فَقَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ صَدَقَ عُمَرُ 0

तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर ने सच कहा। (मिश्कात शरीफ़, स. 486)

हज़रात ! महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो तमाम सहाबए किराम में सब से अफ़ज़ल व आला शान के मालिक हैं उन का यह अक़ीदा है कि हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह की अता से नेअमत व दौलत तक़सीम फ़रमाते हैं और अल्लाह तआला की दी हुई नेअमत व दौलत में भी कमी व ज़्यादती करने का इख़्तियार रखते हैं।

ख़ूब फ़रमाया उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने :

दिखाई जाएगी मेहशर में शाने महबूबी
कि आप ही की ख़ुशी आप का कहा होगा
ख़ुदाए पाक की चाहेंगे अगले पिछले ख़ुशी
ख़ुदाए पाक ख़ुशी उन की चाहता होगा

हज़रत जाबिर के दोनों बच्चों को ज़िन्दा फ़रमा दिया

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग ख़न्दक़ खोद रहे थे कि ख़न्दक़ खोदते खोदते ख़न्दक़ के बीच में एक बहुत बडी चट्टान आ गई कि उस चट्टान का तोड़ना ज़रूरी हो गया था क्यों कि उसी चट्टान को पुल बना कर दुश्मन मदीना में आ सकता था और उस चट्टान के तोड़ने का हमें कोई रास्ता नज़र नहीं आता और सारे सहाबा उस को तोड़ने से आजिज़ आ गए और वह चट्टान न टूटी मेरे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि वह चट्टान कहाँ है और चट्टान के पास आ कर तेशा, कुदाल अपने दस्ते मुबारक में लिया और एक मरतबा तेशा कुदाल को उस चट्टान पर मारा तो पूरी चट्टान रेज़ा रेज़ा हो कर बिखर गई और चट्टान रेत और बालू की तरह बन गई। (सही बुख़ारी, जि. 2, स. 588)

ख़ूब फ़रमाया आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने :

जिस को बारे दो आलम की परवा नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने तेशा मारा तो चादर शरीफ़ ओढ़े हुए थे, वह चादरे करीम भी हाथों के साथ ऊपर उठ गई तो मैं ने देखा कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने भूक की वजह से शिकमे नाज़ पर पत्थर बाँध रखा है। जब

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह मन्ज़र देखा।

فَلَمْ اَصْبِرْ عَنْ نَفْسِیْ यानी तो मुझे अपने आप पर काबू न रहा। (सही बुखारी, जि 2, स 604)

और मैं अपने घर गया और अपनी बीवी से सारा माजरा बताया और कहा कि घर में कुछ खाने की चीज़ है ? तो बीवी ने जवाब दिया कि घर के अन्दर सिर्फ एक सेर जौ है और बकरी का छः महीने का बच्चा है और उस के अलावा कुछ भी नहीं है। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा : मैं बकरी के बच्चे को ज़िबह करता हूँ और तुम चक्की से आटा तय्यार करो वह आटा तय्यार करने लगीं और हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बकरी के बच्चे को ज़िबह किया तो उस वक़्त आप के दो छोटे छोटे फ़रज़न्द भी वहीं मौजूद थे जिन्होंने बकरी के बच्चे को ज़िबह होते हुए अपनी आँखों से देखा था। जब हज़रत जाबिर तशरीफ़ ले गए तो वह दोनों बच्चे छुरी ले कर छत पर चले गए।

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना जामी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि बड़े लड़के ने छोटे भाई से कहा कि आओ मैं भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करूँ जैसा कि हमारे वालिद ने उस बकरी के बच्चे के साथ किया है। बड़े भाई ने छोटे को बाँधा और हलक़ पर छुरी चला दी और नादानी से उस को ज़िबह कर दिया और उस का सर जुदा करके उस को उठाया जूँ ही हज़रत जाबिर की बीवी ने उस को देखा तो वह उस के पीछे दौड़ी, वह उस के ख़ौफ से छत से गिरा और मर गया। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की बीवी ने उस वक़्त चीख़ व पुकार और वावेला ना किया ताकि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम परेशान व ग़मग़ीन न हों और दावत बे मज़ा न हो जाए, निहायत सब्र व इस्तिक़लाल से दोनों बच्चों को अन्दर लाकर उन पर कपड़ा डाल दिया और किसी को उन के हाल की ख़बर न की यहाँ तक कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु को भी न बताया। अगर चेह दिल सदमा से ख़ून के आंसू रो रहा था, उस के बावजूद चेहरा को ताज़ा और शगुफ़्ता रखा और खाना वग़ैरह पकाया और ग़ैब दां आक़ा, मुश्फ़िक़ व मेहरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए और खाना आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने रखा गया। उसी वक़्त हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम आ गए कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जाबिर से कहो कि अपने फ़रज़न्द को लाए ताकि वह बच्चे आप के साथ खाना खाने का शरफ़ हासिल कर सकें, आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया कि अपने दोनों फ़रज़न्दों को लाओ ! वह फ़ौरन आए और बीवी से पूछा कि बच्चे कहाँ हैं ? बीवी ने कहा कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से कहो कि वह मौजूद नहीं हैं ! हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला का फ़रमान आया है कि उन को जल्दी बुलाओ ग़म की मारी बीवी रो पडी और कहा : ऐ जाबिर अब मैं उन को नहीं ला सकती। हज़रत जाबिर ने फ़रमाया : बात क्या है ? रोती क्यों हो। बीवी ने अन्दर ले जाकर

[illegible] सुनाया और कहा [illegible] का ज़िक्र [illegible]
[illegible] आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम [illegible]
[illegible]
[illegible] सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही
वसल्लम से अर्ज़ की कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि, ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि
व आलिही वसल्लम आप दुआ फ़रमाएं [illegible]
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुआ फ़रमाई। [illegible]
तआला के हुक्म से वही [illegible] ज़िन्दा हो गए। [illegible]

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि, [illegible]
सहाबए किराम जो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ
[illegible] फ़ारिग हो गए और [illegible]
इसी तरह दूसरे दिन पूरे मुहल्ले ने खाना तनावुल किया, इसी तरह तीसरे दिन भी किया मगर
खाना बाकी रहा तो मैं ने तीसरे दिन बर्तन को [illegible]
पहले की तरह भरा हुआ था और आटे का बर्तन भी भरा हुआ था। [illegible]
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु [illegible]
गया तो मैं आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत
आलिया में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया और सारा माजरा बयान किया तो आका करीम
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : अगर तुम ने उस का ढक्कन खोल
देखा न होता तो तुम ज़िन्दगी भर खाते रहते और वह खाना ख़त्म न होता।

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

विसाल शरीफ़ के बाद भी मदद फ़रमाते हैं

हमारे आका करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाहिरी हयाते तय्यिबा में सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम मांगते थे आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की अता से हर साइल का सवाल पूरा फ़रमाते और उन की मदद फ़रमाते थे इसी तरह आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद भी सहाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन अपनी दीनी और दुनियवी ज़रूरतों के लिये आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मरकदे नूर, मज़ारे अक़दस पर हाज़िर होते और अपने सवाल अर्ज़ करते तो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के सवालों को पूरा करते और उन की मदद फ़रमाते और दरबारे नूर से फ़ैज़ान का यह सिलसिला सुबहे क़ियामत तक जारी व सारी रहेगा। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

मशहूर आशिक़े रसूल ! हज़रत शैख़ अब्दुल हक मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी मक़बूल तरीन किताब, जज़्बुल क़ुलूब इला दयारिल महबूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि:

हज़रत अबू बक्र अक़तअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैं मदीना तैय्यिबा में आया और पाँच दिन गुज़र गए खाने का एक दाना भी नहीं चखा था, छटे रोज़ मरक़दे नूर, दरे करीम पर हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम) मैं आप का मेहमान हूँ) उस के बाद (क़ब्रे करीम के क़रीब अर्ज़ करते करते मैं सो गया) तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि महबूबे ख़ुदा आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दाहिनी जानिब हैं और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाईं जानिब हैं और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे थे, मुझ से कहते हैं कि उठो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले आए। मैं आगे बढ़ा और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पेशानी मुबारक का बोसा दिया। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को एक रोटी दी मैं ने खा ली, जब मैं बेदार हुआ तो एक टुकड़ा रोटी का मेरे हाथ में बचा हुआ था। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 240)

बादे विसाल रुपया दिया : हज़रत अमहद बिन मुहम्मद सूफ़ी कहते हैं कि मैं तीन महीने तक जंगल में फिरता रहा मेरे बदन की खाल फट गई थी मैं मदीना तैय्यिबा आया और मरक़दे नूर, क़ब्रे करीम पर हाज़िर हुआ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि फ़रमाते हैं,, ऐ अहमद ! तू आ गया, क्या हाल है। मैं ने अर्ज़ किया (या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं भूका हूँ और आप का मेहमान हूँ) तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हाथ खोल मैं ने हाथ फेला दिये तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने चन्द दिरहम (यानी रुपये) मेरे हाथ में दिये जब मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो वह रुपये मेरे हाथ में मौजूद थे। मैं बाज़ार गया गर्म गर्म, ताज़ा ताज़ा खाना, रोटी और फ़ालूदा ख़रीदा फिर मैं जंगल को चला गया। (जज़्बुल क़ुलूब. 240, 241)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

रब है मोअ़ती यह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का खिलाते यह हैं

ठन्डा, ठन्डा, मीठा, मीठा
पीते हम हैं पिलाते यह हैं

हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह मालिक हैं

आक़ाए कायनात मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने महबूब, अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में फ़रमाया :

مَا نَفَعَنِیْ مَالٌ قَطُّ مَا نَفَعَنِیْ مَالُ اَبِیْ بَکْرٍ فَبَکٰی اَبُوْ بَکْرٍ وَ قَالَ هَلْ اَنَا وَمَالِیْ اِلَّا لَکَ یَا رَسُوْلَ اللهِ

यानी मुझे नही नफ़ा दिया किसी माल ने कभी जो अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के माल ने मुझे नफ़ा दिया। (तारीखुल खुलफ़ा, स. 36, अस्सवाइकुल मुहर्रिक़ा, स. 72)

महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने (जब यह सुना) तो रोए और अर्ज़ किया कि मेरी जान और माल का मालिक आप के सिवा कौन है या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ ज़ाहिर और साबित है कि महबूबे मुस्तफ़ा, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी जान और माल का मालिक, महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जाना और माना तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत के सिले में अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालिक व मुख़्तार बना दिया, मुलाहज़ा हो।

नबी का ग़ुलाम मालिको मुख़्तार होता है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि एक रोज़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने रोज़ए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हाज़िरी दी तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूबे मुस्तफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कहा कि आप आगे हों और रोज़ए अक़दस का दरवाज़ा खोलें। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, ऐ अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप आगे हों तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं उस शख़्स से आगे किस तरह हो सकता हूँ जिस के हक़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यह कलमात फरमाए हों।

यानी जिस वक़्त क़ियामत का दिन होगा, जन्नत का रिज़वान फ़रिश्ता जन्नत व दोज़ख की कुन्जियाँ ले आएगा और कहेगा ऐ अबू बक्र (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अल्लाह तआला तुम को सलाम कहता है और फ़रमाता है यह जन्नत व दोज़ख की कुन्जियाँ हैं।

اِبْعَثْ مَنْ شِئْتَ اِلَی الْجَنَّةِ وَابْعَثْ مَنْ شِئْتَ اِلَی النَّارِ यानी जिस को चाहो जन्नत में दाखिल करो और जिस को चाहो दोज़ख में भेज दो। (नूरुल अबसार, स. 9)

अल्लाहु अकबर !

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

हज़रात ! जो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आशिक़ और गुलाम हो जाता है तो अल्लाह तआला उस को जन्नत का भी मालिक व मुख़्तार बना देता है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा और गुलाम हैं। और अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी शान अता की कि जिस को चाहें ज़न्नत में दाख़िल फ़रमा दें तो मुझे यह बताना है कि जब ख़लीफ़ा की शान का यह आलम है तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व बुज़ुर्गी का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर की हुकूमत दरया पर : मिस्र के लोग हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गवर्नरे मिस्र की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया जब तक हम मिस्र वाले एक नो जवान लड़की, हर साल दरयाए नील में न डालें तो दरया जारी नहीं होता। हमारा यह दस्तूर क़दीम ज़माना से चला आ रहा है। हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यह जाहिलियत की रस्म है उसे छोड़ दो। लोगों ने इस साल नो जवान लड़की दरया में नहीं डाली तो दरया सूख गया दरया की हालत को देख कर मिस्र के लोग मिस्र छोड़ने पर मजबूर हो गए गवर्नरे मिस्र ने उन सारे हालात की ख़बर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दी, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरयाए नील के नाम ख़त लिखा।

مِنْ عَبْدِ اللهِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ اِلٰى نِيْلِ مِصْرَ

यानी यह ख़त अल्लाह के बन्दे उमर बिन ख़त्ताब की जानिब से दरयाए नील के नाम है।

ख़त का मज़मून यह था : ऐ दरयाए नील ! अगर तू अपनी मर्ज़ी से बहता है तो हरगिज़ जारी न हो और अगर अल्लाह तआला के हुक्म से जारी होता है तो मैं अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करता हूँ कि वह तुझ को जारी फ़रमा दे। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह ख़त मिस्र के गवर्नर के पास भेजा कि उस ख़त को दरयाए नील में ड़ाल देना।

चुनाँचे हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह ख़त रात के वक़्त दरयाए नील में डाला गया सुबह लोगों ने देखा कि पहले से ज़्यादा सोलह गज़ गहरा पानी दरया में बह रहा था और आज तक यह दरया ख़ुश्क न हुआ। (ताजुल ख़ुलफ़ा, स. 90)

ज़लज़ला जाता रहा : मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु के ज़माना खिलाफ़त में एक दिन ज़लज़ला आया तो आप ने अल्लाह तआला की हम्द व सना की और फिर ज़मीन पर ज़ोर से अपने दुर्रे से मारा और फ़रमाया क्या मैंने तेरे ऊपर इन्साफ़ नहीं किया ? फिर भी तू लरज़ रही है। तो फ़ौरन ज़मीन का ज़लज़ला ख़त्म हो गया और ज़मीन ठहर गई। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

और ! मौलवी अशरफ अली थानवी ने भी अपनी किताब जमालुल औलिया में हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस ताक़त व कुव्वत को बयान किया है।
(जमालुल औलिया, स. 70)

ऐ ईमान वालो ! मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की हुकूमत दरया पर और ज़मीन पर भी नज़र आ रही है। तो मुझे कहना यह है कि जब गुलाम की शान व शौकत का यह आलम है तो दो आलम के मालिको मुख़्तार महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व अज़मत का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

हज़रत उस्मान ग़नी ने दो बार जन्नत ख़रीद ली

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु ताला अन्हु फ़रमाते हैं :

إِشْتَرٰى عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ مِنْ رَّسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْجَنَّةَ مَرَّتَيْنِ يَوْمَ رُوْمَةَ وَيَوْمَ جَيْشِ الْعُسْرَةِ

यानी हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मरतबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से जन्नत ख़रीद ली। बेरूमा के दिन और जैशे असरा के रोज़। (हाकिम तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 118, अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 108)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जन्नत का मालिक बनाया है क्यों कि बेचता वही है जो मालिक होता है और हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, जन्नत ख़रीद कर जन्नत के मालिक हो गए।

आशिक़े मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

और फ़रमाते हैं !

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

हज़रत अली जन्नत व दोज़ख़ तक़सीम करेंगे

आक़ा करीम, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम

ने हज़रत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया :

يَا عَلِيُّ أَنْتَ قَسِيمُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

यानी ऐ अली ! तुम जन्नत व दोज़ख को तक़सीम करोगे क़ियामत के दिन।

(दार कुतनी, अस्सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा, स. 124)

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बशारत सुना कर यह बता दिया कि मेरे रब तआला ने मुझे बहुत ही बड़ी शान व इज़्ज़त से नवाज़ा है मेरे गुलामों की यह शान है कि वह क़ियामत के दिन जन्नत तक़सीम कर रहे होंगे।

अर्शे हक़ है मस्नदे रिफ़अत रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इज़्ज़त रसूलुल्लाह की

और !

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

गुलामों की हुकूमत पानी पर

हज़रात ! जब तक हम आक़ा करीम, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का गुलाम बन कर रहे। कायनात हमारी गुलाम रही, जब से हम ने मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी छोड़ी ग़ैरों के गुलाम बन गए जो ख़ुदा के सामने झुकता है कायनात उस के सामने झुकती है और जो ख़ुदा के सामने नहीं झुकता तो वह सब के सामने झुकता है। जब तुम ख़ुदा के बन जाओ ख़ुदा तुम्हारा, तुम रसूलुल्लाह के बन जाओ, रसूलुल्लाह तुम्हारे और जब अल्लाह व रसूल तुम्हारे तो दोनों जहान तुम्हारे, जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलाम बने, बोलो ! उन की यह शान हुई या न हुई ? हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरयाए नील को ख़त लिखा या न लिखा और दरया ने उन का कहना माना या न माना ? माना क्यों ! इस लिये कि वह मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का कहना मानते थे तो दरया भी उन का कहना मानता था, मुलाहज़ा कीजिये।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ईरान फ़तह करने के लिये भेजा रास्ते में आ गया दरयाए दजला, ईरानियों ने दूसरी तरफ़ दरया के मोर्चे बना लिये कि जो भी तैरता हुआ आगे आए बस तीर मारते जाओ और उन की लाशों को दरयाए दजला में बहाते जाओ और दरयाए दजला का पानी मुसलमानों के ख़ून से सुर्ख़ कर दो। हज़ारों की तादाद में ईरानियों ने दरया के कनारे कमानों पर तीर चढ़ा कर लेट गए।

हज़रत सअद जो अमीरे लश्कर थे, लश्कर से फ़रमाया तुम जानते हो हमारे पास कश्तियाँ नहीं हैं दरया पार करना है, बोलो क्या करें ? मुसलमान मुजाहिदों ने कहा हम अपने अमीर का

हुक्म मानना जानते हैं, हमें हुक्म दीजिये कश्तियाँ नहीं तो क्या, आप हुक्म दें हम दरया में कूद जाएंगे फ़रमाया : मैं वह अमीर नहीं हूँ कि तुम्हें कह दूँ, आगे वढ जाओ और खुद पीछे वैठ जाऊँ हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा सब से आगे मैं लड़ता हूँ घोड़ा आगे दौड़ाया, हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दाएं तरफ़ आ गए और हज़रत बिलाल हबशी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाईं जानिब आ गए। यह तीन सवार आगे थे बाक़ी सब प्यादे और सवार पीछे थे। हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा : या अल्लाह तआला ! तेरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलाम तेरे नाम का बोल बाला करने निकले हैं, दरया पार करना है, हमारे पास कोई कश्ती नहीं है, इस दरया को हमारे लिये मुस्ख़र कर दे। यह कह कर घोड़े को दरया में डाल दिये, आगे, आगे यह तीन थे, पीछे सारा लश्कर, वह दरया पर इस तरह दौड़ते चले जा रहे थे जैसे रोड़ पर हम और आप दौड़ते जाते हैं ड़ाक्टर इक़बाल ने कहा है :

दश्त तो दश्त है दरया भी न छोड़े हम ने
बहरे ज़ुलमात में दौड़ा दिये घोड़े हम ने

इधर यह पानी की सतह पर घोड़े दौड़ाते जा रहे हैं, उनके सुम पानी में नहीं भीगे, इधर ईरान वालों ने देखा तो डर कर मैदान छोड़ कर भागने लगे इस तरह सब फ़रार हो गए और ईरान पर परचमे इस्लाम लहराने लगा।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लोहो क़लम तेरे हैं

हज़रात ! जिस वक़्त दरया पार कर गए तो हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा भाइयो ! किसी की कोई चीज़ दरया में गिरी तो नहीं ? एक बूढ़े सहाबी ने कहा मेरा एक मिट्टी का प्याला दरया में गिर गया है। तो उन्होंने यह नहीं कहा कि मिट्टी का प्याला था कहाँ गया होगा उस का क्या पता ? नहीं ! बल्कि हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दरया के कनारे पर खड़े होकर कहा ऐ दरया ! हमारे एक मुजाहिद का प्याला गिर गया है वह प्याला देदे। इतना कहना था कि पानी में एक भवर पैदा हुई और किसी ग़ैबी ताक़त ने उस प्याले को बाहर फेंक दिया। हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्याला पकड़ कर बूढ़े मुजाहिद को दे दिया।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लोहो क़लम तेरे हैं

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की गुलामी और फ़रमांबरदारी की शान मुलाहज़ा कीजिये कि उन की हुकूमत दरया पर, उन का क़ब्ज़ा पानी पर, जहाँ जाते हैं सारी खुदाई उन के ताबेअ फ़रमान नज़र आ रही है। जब गुलामों की शान का यह आलम है तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व बुज़ुर्गी का आलम क्या होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है मुख़्तार का आलम क्या होगा

हुज़ूर ग़ौसे आज़म की हुकूमत दरयाए दजला पर

मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत अदी बिन मुसाफ़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक मरतबा दरयाए दजला में इतना ख़तरनाक सैलाब आ गया कि शहर बग़दाद के ग़र्क़ होने का ख़तरा पैदा हो गया। अहले बग़दाद फ़रयाद के लिये हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हुए तो आप अपना असा ले कर उठे और दरया के कनारे जा कर अपना असा दरया की पुरानी हद पर गाड़ दिया और फ़रमाया कि ऐ दजला! ख़बरदार! अपनी हद से आगे न बढ़ना। इस के बाद फ़ौरन ही दजला की तुग़यानी ख़त्म होने लगी और आहिस्ता आहिस्ता पानी अपनी असली हद पर पहुँच कर ठहर गया। (बहजतुल असरार)

हज़रात! हमारे पीर, हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान है कि:

وَلَوْ اَلْقَيْتُ سِرِّیْ فِیْ بِحَارٍ
لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ

यानी अगर मैं अपना राज़ दरया पर डाल दूँ तो उस का पानी ज़मीन में जज़्ब हो कर ख़ुश्क हो जाए तो जब वलियों और पीरों के सरदार की शान का यह आलम है तो इमामुल अम्बिया और सय्यदुर्रुसुल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व बुज़ुर्गी का क्या आलम होगा।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

ख़्वाजा की हुकूमत अना सागर पर : बहुत मशहूर वाक़िआ है कि हिन्द के राजा, हमारे ख़्वाजा, सुल्तानुल हिन्द, अताए रसूल, ख़्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती संजरी, अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से अना सागर का पूरा पानी एक प्याला में आ गया था और प्याला का पानी फिर सागर में डाल दिया तो पूरा सागर भर गया और लबरेज़ हो गया, क्या मतलब? कि जब वली अल्लाह ख़्वाजा की शान का यह आलम है तो रसूलुल्लाह, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व बुज़ुर्गी का आलम क्या होगा। (अहले सुन्नत की आवाज़, सन् 2008, स. 45)

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है तो मुख़्तार का आलम क्या होगा

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(10)

शव्वालुल मुकर्रम

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

सच्ची तौबह की फ़ज़ीलत व बरकत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَی اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ط

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबह करो जो आगे को नसीहत हो जाए।

(पारा 28, रुकू 19, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

आशिके मुस्तफ़ा आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वास्ते
मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाएं रद शहीदे करबला के वास्ते
मेरे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म के वास्ते
मेरे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ के वास्ते
मीरे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा के वास्ते
मेरे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द के वास्ते
मेरे आक़ाए नेअमत बद्रे मिल्लत और दरया शाह के वास्ते

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन)

और! किसी ने कहा है :

ईस्यां से कभी हम ने किनारा न किया
लेकिन तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने की जहन्नम की बहुत तदबीरें मगर
तेरी रहमत ने कभी उस को गवारा न किया

तमहीद ! हज़रात ! अल्लाह तआला ने आयते मुबारका में इरशाद फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो ! सच्ची तौबह करो और दूसरी आयत में अल्लाह तआला का इरशाद है कि :

تُوبُوا إِلَى اللهِ جَمِيعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

तर्जमा : और अल्लाह की तरफ़ तौबह करो ऐ मुसलमानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ। (पारा 18, रुकू 10, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बड़ा करम और एहसाने अज़ीम है कि गुनाहगारों, खताकारों को गुनाह के ऐब और ख़ता की नापाकी से पाक व साफ़ होने के लिये एक कार आमद और बड़ा ही कामयाब नुस्खा अता फ़रमाया है वह है तौबह !!

रहमत की सदा ! لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ اللهِ ط

तर्जमा : अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद न हो। (कन्ज़ुल ईमान)

अल्लाह तआला की रहमत की शान

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में एक शख़्स आया जो कम्बल ओढ़े हुए था। उस ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम में एक झाड़ी के पास से गुज़रा तो मैं ने उस झाड़ी में चिड़या के बच्चों की आवाज़ सुनी तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया और अपने कम्बल में छुपा लिया, इतने में उन की मां आ गई वह मेरे सर पर चक्कर काटने लगी, मैं ने उस के सामने वह बच्चे खोल दिये वह उन पर गिर पड़ी तो मैं ने उन सब को अपने कम्बल में लपेट लिया वह सब मेरे पास हैं तो आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया उन सब को ज़मीन पर रख दो। मैं ने उन सब को ज़मीन पर रख दिया तो उन की मां उन से चिमटी हुई थी तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया किया तुम इन चूज़ों की मां की अपने बच्चों से इस क़दर महब्बत पर तअज्जुब करते हो।

فَوَالَّذِي بَعَثَنِي بِالْحَقِّ اَللهُ اَرْحَمُ بِعِبَادِهٖ مِنْ اُمِّ الْاَفْرَاخِ بِفِرَاخِهَا

यानी क़सम है उस ज़ात की जिस ने हक़ के साथ मुझे मबऊस फ़रमाया अल्लाह तआला बन्दों पर इस से ज़्यादा मेहरबान है, जितनी बच्चों की मां चूज़ों पर मेहरबान है।

उस के बाद ! आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस शख़्स से फ़रमाया कि जाओ ! उन सब को जहाँ से लाए थे वहाँ छोड़ आओ।

हज़रात ! मां को भी अपने बच्चे से इतनी महब्बत नहीं होती है जितनी महब्बत अल्लाह तआला को अपने बन्दे से होती है।

इसीलिये ! तो बार, बार रहमते ख़ुदा आवाज़ देती है कि मेरे बन्दो ! मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलामो ! तौबह व इस्तिग़फ़ार करो, ताकि मैं तुम को बख़्श दूँ।

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाह गार के लिये

हज़रात ! तौबह से सिर्फ़ गुनाह नहीं मिटते बल्कि अल्लाह तआला तौबह के ज़रीए गुनाह भी मिटाता है और गुनाह के बराबर नेकियाँ भी अता फ़रमाता है।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है !

فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ

तर्जमा : तो ऐसों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा।

(पारा 19, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

यानी अल्लाह तआला तौबह करने वालों के गुनाहों को सिर्फ़ मिटाता और मुआफ़ ही नहीं करता बल्कि उन के गुनाहों को मिटा कर उन के बदले में नेकियाँ अता फ़रमाता है।

रहमत की बारिश सब पर होती है

मौलल मोमिनीन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से एक शख़्स ने सवाल किया कि किया गुनाह गार के लिये भी अल्लाह तआला की रहमत में हिस्सा है ? हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो बरतन मंगवाए एक पाक व साफ़ और दूसरा गन्दा व कीचड आलूद था। आप ने फ़रमाया कि इन दोनों को अगर बारिश में रखा जाए तो बताओ यह दोनों ही पानी से भर जाएंगे या पाक व साफ बरतन तो पानी से भर जाएगा और गन्दा कीचड़ आलूद ख़ाली रह जाएगा ? उस शख़्स ने जवाब दिया कि बारिश होगी तो दोनों ही भर जाएंगे तो हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

كَذٰلِكَ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعُمُّ الطَّائِعَ وَالْعَاصِیَ

यानी इसी तरह अल्लाह तआला की रहमत भी हर नेक व बद के लिये आम है।

(गुनियतुत्तालिबीन)

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले

अल्लाह तआला ने शैतान को जवाब दिया : हदीस शरीफ़ : ख़ुदा मुहम्मादुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि शैतान ने अल्लाह तआला से कहा कि ऐ रब ! मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम ! जब तक तेरे बन्दे ज़िन्दा रहेंगे मैं उन्हें गुमराह

करता रहूँगा, उन से गुनाह के काम करवाता रहूँगा।

तो हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने शैतान को जवाब दिया :

وَعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ وَارْتِفَاعِ مَکَانِیْ لَا اَزَالُ اَغْفِرُ لَهُمْ مَا اسْتَغْفَرُوْنِیْ

यानी मुझे मेरी इज़्ज़त व जलाल और बलन्दी की क़सम कि मैं अपने बन्दों को बख़्शता रहूँगा जब तक वह मुझ से तौबह व इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (मिश्कात शरीफ़, स. 196)

हज़रात ! अल्लाह तआला की बख़्शिश व महब्बत पर क़ुरबान जाओ कि वह हम पर किस क़दर रहीम व करीम है कि शैतान अगर हमारा दुश्मन व मुख़ालिफ़ है तो अल्लाह तआला हमारे लिये मेहरबान और मददगार है।

गुनह रज़ा का हिसाब क्या, वह अगरचेह लाखों से हों सिवा
मगर ऐ करीम तेरे अफ़ू का, न हिसाब है न शुमार है

तौबह का दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता है

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का दस्ते करम रात के गुनाहगारों के लिये सुबह तक और दिन के गुनाहगारों के लिये रात तक दराज़ रहता है।

(सही मुस्लिम, जि. 2, स. 358, मुकाशेफ़तुल क़ुलूब, स. 112)

तौबह करने वाला ऐसा है जैसे गुनाह ही नहीं किया

हदीस शरीफ़ : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ کَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهٗ

यानी गुनाह करने वाला ऐसा हो जाता है जैसे उस ने गुनाह ही नहीं किया था।

(इब्ने माजह, स. 313, मिश्कात शरीफ़, स. 206)

सच्ची तौबह किसे कहते हैं : मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि तौबतुन्नसूह यानी सच्ची तौबह यह है कि तौबह के बाद फिर आदमी गुनाह की तरफ़ न लौटे जैसे निकला हुआ दूध फिर थन में वापस नहीं होता

(ग़ुनियतुत तालिबीन)

लिहाज़ा जब भी मोमिन अपने गुनाहों से सच्ची तौबह करता है तो गुनाहों से पाक व साफ़ हो जाता है। तो अब उसे चाहिये कि अपनी तौबह का ख़याल रखते हुए फिर गुनाह के क़रीब न जाए।

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों को देखता है।

तौबह क़ुबूल नहीं हुई : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से

रिवायत है कि कियामत के दिन बहुत से लोग ऐसे होंगे जो खुद को ताइब समझ कर आएंगे मगर उन की तौबह कबूल नहीं होगी इस लिये कि उन्होंने तौबह के दरवाजा को शर्मिन्दगी से मुस्तहकम नहीं किया था। तौबह करने के बाद गुनाह करना नहीं छोड़ा था।

और फरमाया ! कि गुनाहों को भूल जाना बहुत खतरनाक बात है। हर अक्ल मन्द के लिये जरूरी है कि वह अपने नफ्स का मुहासबा (हिसाब किताब) करता रहे और अपने गुनाहों को न भूले। ([illegible] स 116)

गुनाह पर शर्मिन्दा होना, तौबह है

हम बदकारों के कब्र के उजाला, आखिरत के सहारा, हमारे पीर, शेख अब्दुल कादिर जीलानी रजियल्लाहु तआला अन्हु रकम तराज (लिखते) हैं कि आका करीम, मुस्तफा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि (गुनाह पर) नदामत और शर्मिन्दगी तौबह है।

और फरमाया ! कि जिस शख्स ने गुनाह किया फिर उस पर शर्मिन्दा हुआ, तो शर्मिन्दगी उस गुनाह का कफ्फारा है।

और ! हजरत हसन बसरी रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि तौबह के चार सुतून (पिल्लर) हैं। (1) जबान से मुआफी मांगना। (2) दिल से नादिम व शर्मिन्दा होना। (3) तमाम आजा (बदन के हिस्सा) को हर किस्म के गुनाह से रोके रखना (4) यह नियत रखना कि आइन्दा कभी भी गुनाह नहीं करूंगा और यह भी फरमाया कि तौबतुन्नसूह यानी सची तौबह यह है कि जिस गुनाह से तौबह की है उस की तरफ फिर न लौटे। (गुनियतुत्तालिबीन, स 259)

हजरात ! हदीस शरीफ से साफ तौर पर जाहिर और साबित हो गया कि दिल से शर्मिन्दा और नादिम होना ही अस्ल तौबह है। अब रही यह बात कि लोग कान पकड़ते हैं और अपने गालों पर तमाचे लगाते है तो उस का सुबूत किताबों में कहीं भी नहीं नजर आता।

तौबह करता है फिर गुनाह करता है : हमारे पीर, रौशन जमीर, हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु अन्हु लिखते है कि महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि गुनाह से तौबह करने वाला बे गुनाह की तरह हो जाता है।

और ! गुनाह से तौबह करके फिर तौबह को तोड़ कर गुनाह करने वाला फिर रब तआला से तौबह व मुआफी मांगने वाला गोया अपने रब तआला से मजाक करता है।

(गुनियतुत तालिबीन, स 259)

गुनाह से दिल पर एक काला धब्बा पड़ जाता है

हमारे पीरे आजम, हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फरमाते हैं कि:

महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, मैं ने किसी चीज को तलब करने में इतना हसीन और तासीर में इतना तेज़ नहीं पाया। जितनी पुराने गुनाह के लिये नई नेकी होती है।

बिला शुबह ! नेकियाँ गुनाहों को मिटा देती हैं, यह फ़रमान, नसीहत हासिल करने वालों के लिये एक अज़ीम नसीहत है। जब कोई बन्दा गुनाह करता है तो गुनाह से दिल में एक स्याह नुक़्ता पैदा हो जाता है और वह तौबह करता है घबरा कर अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करता है और इस्तिग़फ़ार करता है। तो उस वक़्त वह नुक़्ता दिल से साफ़ हो जाता है। अगर वह तौबह, गिरया व ज़ारी और इस्तिग़फ़ार नहीं करता है तो गुनाह बालाए गुनाह, दाग़ पर दाग़ तह बह तह हो जाते हैं यहाँ तक कि तमाम दिल स्याह हो कर मुर्दा हो जाता है।

(गुनियतुत तालिबीन, स. 258)

अल्लाह तआला को तौबह पसन्द है : إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ○

तर्जमा : बे शक अल्लाह पसन्द करता है तौबह करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को। (पारा 2, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ : सही मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि आक़ा करीम, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! अल्लाह तआला की बारगाह में तौबह करो और उस से बख़्शिश तलब करो।

فَإِنِّيْ أَتُوْبُ فِي الْيَوْمِ مِائَةَ مَرَّةٍ

यानी मैं तो दिन में सो मरतबा तौबह करता हूँ। (मुस्लिम शरीफ़)

और ! हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि :

وَاللّٰهِ إِنِّيْ لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

यानी अल्लाह तआला की क़सम मैं दिन भर मैं सत्तर मरतबा से ज़्यादा अल्लाह तआला की बारगाह में तौबह व इस्तिग़फ़ार करता हूँ। (सही बुखारी, जि. 2, स. 993)

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीमो रज़ा मुश्किल है
जिन के रुत्बे हैं सिवा, उन को सिवा मुश्किल है

हज़रात ! नेकों और अच्छों की तौबह अल्लाह तआला की रज़ा और खुशी के लिये और अल्लाह तआला की बारगाह में दरजात की बलन्दी के लिये होती है और ! गुनाहगारों और बदों की तौबह गुनाहों और ख़ताओं से मुआफ़ी के लिये होती है।

अल ग़रज़ ! तौबह की अस्ल और बुनियाद गुनाहों से नदामत और शर्मिन्दगी है। मुलाहज़ा कीजिये

सच्ची तौबह की बरकत से शराब, दूध बन गई

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त का वाक़िआ है कि एक शराबी शराब पी कर शराब के नशे में धुत हो कर चला आ रहा है और शराब की बोतल भी साथ में है, इधर से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ ला रहे हैं। शराबी हज़रत उमर फ़ारुके आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देख लेता है और शराब की बोतल को बग़ल में छुपा लेता है और दिल ही दिल में अल्लाह तआला की बारगाह में नादिम व शर्मिन्दा होकर अर्ज़ करता है कि या मन्नान व सत्तार मौला मुझे हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने शर्मिन्दा होने से बचा ले और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दुर्रे से भी बचा ले मैं तेरी बारगाह में नादिम व शर्मिन्दा हूँ और कभी भी शराब न पिऊंगा, उधर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी शराबी के क़रीब पहुँच गए और शराबी को देखा और उसने शराब की रंगीन बोतल जो छुपाई थी उस हरकत को भी देख लिया था अमीरुल मोमिनीन ने पुर जलाल आवाज़ में फ़रमाया कि तूने शराब पी रखी है और शराब की बोतल को भी छुपा रखा है। मुझ से डरता है और जिस के हुक्म से शराब हराम है उस अल्लाह तआला से डर, उस शराबी की हालत ख़राब थी, डरते डरते शराब की बोतल बाहर निकाली मगर उस की तौबह क़ुबूल हो चुकी थी तो शराब की बोतल में रंगीन शराब नहीं है बल्कि शराब की जगह दूध है। शराबी हैरत में है कि बोतल में शराब भरने वाला मैं, शराब की रंगीन बोतल को लाने वाला, और जब बग़ल में छुपाया था तो भी शराब थी, आख़िर माजरा क्या है और इधर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी बड़ी हैरत में हैं कि अभी अभी मैं ने ख़ुद, देखा था तो उस बोतल में रंगीन शराब थी अब ! उस बोतल में दूध कहाँ से आ गया। इतने में ग़ैबी आवाज़ आई ऐ उमर तअज्जुब न करो ! यह मेरे बन्दे की सच्ची तौबह की बरकत है कि मैं ने शराब को दूध बना दिया है। (गुलख़स्सन मसनवी मौलाना रूम)

हज़रात ! यह है सच्ची तौबह की बरकत कि जब बन्दा अल्लाह तआला की बारगाहे करम में नादिम व शर्मिन्दा होकर सच्ची तौबह करता है तो अल्लाह तआला उस की तौबह को क़ुबूल फ़रमा कर उस की सच्ची तौबह की बरकत से रंगीन शराब को पाक व साफ़ दूध बना देता है।

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

सच्ची तौबह की बरकत से मिट्टी, सोना बन गई

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा अताए रसूल, सुल्तानुल हिन्द हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मशाइख़े किराम में से हैं आप का मक़ाम व मरतबा गिरोहे औलिया में बहुत ही बलन्द व बाला है आप की तौबह का वाक़िआ इस तरह है। हज़रत फ़ुज़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक मशहूर डाकू थे। बे शुमार डाकू आप के साथ काम करते थे और आप तमाम डाकुओं के सरदार थे एक मरतबा रात के वक़्त जंगल में एक क़ाफ़ला ठहरा और उस क़ाफ़ला में एक शख़्स रात में आयते करीमा तिलावत कर रहा था कि : أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ

तर्जमा : क्या ? ईमान वालों को अभी वह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिये। (पारा 27, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

इस आयत का हजरत फुज़ैल के दिल पर इस क़दर असर हुआ कि डाका डालने रहज़नी
करने और तमाम गुनाहों से तौबह कर ली। जब सच्ची तौबह कर ली तो अपने तमाम साथियों
ज़नी डाकुओं को बुलाया और रो रो कर सब साथियों को बताने लगे कि अब फुज़ैल अपने रब
तआला से डरने लगा है और मैंने रहज़नी और तमाम गुनाहों से तौबह कर ली है। लिहाज़ा!
मेरा रास्ता और है और तुम सब का रास्ता और है तो! सच्ची तौबह की पहली बरकत यह
ज़ाहिर हुई कि तमाम साथियों ने भी डाका ज़नी और तमाम गुनाहों से तौबह की और सब ने
एक साथ बयक आवाज़ कहा कि ऐ हज़रत फुज़ैल अभी तक रहज़नी और डाका ज़नी में आप
हमारे सरदार थे और अब तौबह करने में भी आप हमारे सरदार है। हज़रत फुज़ैल ने साथियों
से फ़रमाया कि जिस के साथ हम ने लूट मार की है जहाँ तक हो सके उन से मुआफ़ी मांग लेना
चाहिये। मालूम हुआ कि पास में एक गांव है जिस में एक यहूदी रहता है कुछ ही अर्सा हुआ है
हम ने उस का क़ाफ़ला लौटा था।

चुनाँचे! हज़रत फुज़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने साथियों के साथ उस गांव में
यहूदी के घर पहुँचे, यहूदी देख कर घबरा गया कि फुज़ैल डाकू आ गया। मगर फुज़ैल की
आँखों में आंसू थे यहूदी हज़रत फुज़ैल को रोता हुआ देख कर कहने लगा कि फुज़ैल क्या
बात है ? तुम रोते क्यों हो ? हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने
फ़रमाया अपने गुनाहों से शर्मिन्दा हूँ और तुम से मुआफ़ी के लिये आया हूँ, वह यहूदी तौरैत
शरीफ़ का जानकार था, उस ने तौरैत शरीफ़ में पढ़ा था कि जो मुसलमान अपने गुनाहों से
सच्ची तौबह कर लेगा तो वह अगर मिट्टी को हाथ लगा दे गा तो वह मिट्टी सोना बन जाएगी तो
उस यहूदी ने कहा कि ऐ फुज़ैल हम ने क़सम खाई थी कि हम तुम से बदला लेंगे लेकिन तुम
मुआफ़ी के लिये आए हो तो सब मुआफ़ कर दूँगा मगर तुम ने जो मेरी सोने की ईंटें ग़सब की थीं
वह वापस कर दो हम तुम को मुआफ़ कर देंगे। हज़रत फुज़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हुने
फ़रमाया सोने की ईंटें तो ख़त्म हो चुकी हैं मेरे पास कुछ भी नहीं है तो यहूदी ने कहा कि ऐ
फुज़ैल तुम जंगल जाओ और मिट्टी की ईंट बना कर ले आओ मैं सोना समझ कर रख लूँगा।
हज़रत फुज़ैल इब्ने अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने साथियों के साथ जंगल पहुँचे
मिट्टी को पानी से गूंधा और ईंट तय्यार की जब ईंट सूख के तय्यार हो गई तो हज़रत फुज़ैल
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन मिट्टी की ईंटों को एक बोरी में भरा और लाकर यहूदी के
हवाले किया यहूदी ने जब बोरी के मुंह को खोला तो देखता है कि उस बोरी में मिट्टी की ईंट की
जगह सोने की ईंटें हैं हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के सारे
साथी हैरत में हैं कि मिट्टी को पानी से गूंधा हम ने और ईंट तय्यार करके बोरी में भरा हम ने
और बोरी को ले कर आए भी हम थोड़ी देर के लिये भी यह बोरी निगाहों से ग़ाइब नहीं हुई फिर
उस में सोने की ईंट कैसे ?

तो ग़ैबी आवाज़ आई कि ऐ फुज़ैल! तुम्हारी सच्ची तौबह की बरकत है कि हम ने मिट्टी को
सोना बना दिया है। हज़रत फुज़ैल बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते रहे और

अल्लाह तआला के करम व एहसान को याद करते रहे और आप की सची तौबह की एक बरकत यह ज़ाहिर हुई कि यहूदी ने भी आप के हाथ पर तौबह की और मुसलमान हो गया। मुलख्खसन (कश्फ़ुल मह्जूब, स. 152, मुलख्खसन, तज़किरतुल औलिया, स. 51)

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत बशर हाफ़ी की तौबह : गिरोहे अस्फ़िया के सरदार हज़रत बशर हाफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कश्फ़ो करामात में बहुत मशहूर थे और अपने ज़माने के औलिया में मुन्फ़रिद मक़ाम रखते थे। आप की तौबह का वाक़िआ इस तरह है कि आप के पास शराब की फ़ैक्टी थी आप शराब बनाते थे और शराब पीते भी थे एक मरतबा शराब के कारखाना से घर को जा रहे थे कि रास्ते में एक काग़ज़ का टुकड़ा मिला जिस पर बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम लिखा हुआ था। काग़ज़ के उस टुकड़े को बड़े अदब व एहतिराम से उठाया और अपने रब तआला के नाम को चूमा और उस काग़ज़ को इत्र से मुअत्तर से मुअत्तर किया और एक बलन्द मक़ाम पर रख दिया। बस अल्लाह तआला को उन का यह अदब इस क़दर पसन्द आया कि अल्लाह तआला के करम से उन के दिल की दुनिया बदल गई और जब वह अपने मकान से शराब के कारख़ाने में आए और अपने मख़सूस आरामगाह में सो गए, ख़्वाब में बशारतें आने लगीं और एक मर्द दुरवेश को हुक्म हुआ कि बशर के पास जाओ और मेरा सलाम कहो और मेरा पैग़ाम बशर को सुना दो कि जिस होंट ने मेरे नाम का बोसा लिया है अब मैं उस होंट और मुंह से नापाक शराब नहीं पीने दूँगा उस दुरवेश ने हज़रत बशर के शराब ख़ाना के दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी कि मैं अल्लाह तआला का क़ासिद हूँ और अल्लाह तआला ने बशर को सलाम कहा है और पैग़ाम भेजा है कि मैं अपने बशर को अब शराब नहीं पीने दूँगा हज़रत बशर अपने बिस्तर से उठे और दरवाज़े पर क़ासिद से मिले, क़ासिद ने कहा कि ऐ बशर मैं अल्लाह तआला की जानिब से आया हूँ और तुम्हारे लिये अल्लाह तआला का सलाम लाया हूँ, और अल्लाह तआला का यह पैग़ाम है कि अब ! मैं उन होंटों से नापाक शराब को नहीं लगने दूँगा जिन होंटों ने मेरे नाम को बोसा दिया है और उस मुंह में पलीद शराब को नहीं जाने दूँगा जिस मुंह ने मेरे नाम को चूमा है। बस हज़रत बशर पर वज्द की कैफ़ियत तारी हो गई और बार, बार यह कहते थे कि अल्लाह तआला ने मुझे सलाम कहा है मेरे रब तआला ने मुझे सलाम कहा है और बे खुदी के आलम में नंगे पेर जंगल की तरफ़ चले गए सच्ची तौबह की और अल्लाह के वली हो गए।

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

हज़रात ! हाफ़ी का मअना नंगे पेर वाला हज़रत बशर हाफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़िन्दगी भर नंगे पेर रहे। (1) आप फ़रमाया करते थे कि जिस वक़्त मेरे पास अल्लाह का

सलाम आया था उस वक़्त मैं नंगे पेर था इस लिये अब मैं नंगे पेर रहना पसन्द करता हूँ (2) और आप से यह भी फ़रमाते हुए सुना गया कि ज़मीन अल्लाह तआला का बिछाया हुआ फ़र्श है और शाही फ़र्श पर जूते पहन कर चलना अदब के ख़िलाफ़ है।

बुज़ुर्गों ने बयान किया है ! कि अल्लाह तआला ने हज़रत बशर हाफी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अदब को इस क़दर पसन्द फ़रमाया और क़ुबूल किया कि जंगल में या जहाँ भी हज़रत बशर हाफी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रहते थे वहाँ के चरिन्द व परिन्द और गाए, बेल तमाम जानवरों को हुक्म दे दिया कि उस जगह पाखाना, पेशाब न करना, जहाँ मेरा बशर रहता है। कहीं मेरे बशर का पांव गन्दा न हो जाए।

(गुलख़्वरान क़श्फ़ुल महजूब, स. 163, गुलख़्वरान तज़किरतुल औलिया, स. 69)

हज़रात ! हज़रत फ़ुज़ेल बिन अयाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत बशर हाफ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने गुनाह पर नादिम व शर्मिन्दा हुए और अल्लाह तआला की बारगाह में सच्ची तौबह की तो अल्लाह तआला ने उन के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा कर गिरोहे औलिया की सरदारी अता फ़रमा दी।

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

और ! तौबह करने वाले को, पिछले गुनाहों से तौबह कर के नेक बनने वाले को, शराबी ज्वारी ने तौबह की और नमाज़ी और हाजी बन गया तो उस को तअना नहीं देना चाहिये कि तो चूहा खाके बिल्ली चली हज करने। मआज़ल्लाह तआला। मुलाहज़ा कीजिये।

तौबह करने वाले को तअ़ना देना बड़ा गुनाह है

पीरों के पीर, हुज़ूर गौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं :

महबूबे ख़ुदा, मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि जो शख़्स किसी (तौबह करने वाले) मुसलमान को उस के पिछले गुनाह की वजह से उस को तअ़ना देता है, तो वह तअना देने वाला शख़्स उस वक़्त तक दुनिया से नहीं जाएगा जब तक वह तअ़ना देने वाला उसगुनाह में मुब्तला न हो जाए और ज़लील व रुसवा न हो जाए। (गुलख़्वरान, गुनियतुत तालिबीन, स. 265)

हज़रात ! बड़े पीर, रौशन ज़मीर हुज़ूर गौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बयान की हुई हदीस शरीफ़ से पता चला कि बड़े से बड़ा गुनाहगार ख़ता कार, जब अपने गुनाहों और ख़ताओं से तौबह करके नेक व सालेह हो जाए तो उस के पिछले गुनाहों की वजह से उस को तअना नहीं देना चाहिये वर्ना अल्लाह तआला तअ़ना देने वाले शख़्स को उसी गुनाह में मुब्तला करके उस को जलील व रुसवा फ़रमा देगा, अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! तौबह और दुआ को मक़बूल बनाने के लिये ज़रूरी है कि हम उसी तरह तौबह व

दुआ करें ज़ैसा कि हमारे बुज़ुर्गों ने हम को बताया है।

अव्वलव आख़िर दुरूद शरीफ़ : मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब भी दुआ मांगी जाए तो अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ लेना चाहिये, ताकि अल्लाह तआला, महबूबे करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुरूद शरीफ़ की बरकत से बन्दे की दुआ को शरफ़े कुबूलियत अता फ़रमा दे।

लिहाज़ा ! जब भी हम तौबह व इस्तिग़फ़ार करें तो पहले आक़ा करीम, महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ लिया करें और यक़ीन रखें कि दुरूद शरीफ़ की बरकत से हमारी तौबह ज़रूर कुबूल हो जाएगी। इन्शाअल्लाहु तआला।

हज़रात ! अल्लाह तआला की बारगाह में तौबह करना और ख़ूब रोना बहुत ही पसन्दीदा अमल है। मुलाहज़ा हो।

हदीस शरीफ़ : आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि कुरआन पढ़ो, और रोओ, अगर रोना न आए तो रोने वाले शख़्स जैसा चेहरा बनाओ। (इब्ने माजह, स 309)

अल्लाह तआला हमें भी रो, रोकर तौबह करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। आमीन सुम्मा आमीन

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत से दुनिया में तशरीफ़ लाए तो तीन सो बरस तक अल्लाह तआला की बारगाह में रोते और गिड़गिड़ाते रहे और तौबह करते रहे लेकिन अल्लाह तआला ने उन की तौबह कुबूल न की।

लेकिन जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाहे करम में यूँ अर्ज़ किया कि या रब اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ اَنْ تَغْفِرَلِیْ यानी ऐ रब तआला तेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तुफ़ैल मुझे मुआफ़ फ़रमा दे।

तो ! अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को बख़्श दिया और उन की तौबह कुबूल फ़रमा ली। (इमाम बैहक़ी, दलाइलुन्नुबुव्वत, रूहुल बयान, स. 230)

हज़रात ! महबूबे करीम, मस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के नामे पाक की बरकत से अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की तौबह कुबूल की।

यानी अल्लाह तआला ने बग़ैर महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के न किसी को बख़्शा है और न क़ियामत तक बख़्शेगा।

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो ! हर गिज़ खुदा मिलता नहीं

हजरत अबू लुबाबा की तौबह : हजरत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का एक पोशीदा राज़ फ़ाश कर दिया तो अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम नाराज़ हो गए और उन के हक में आयते करीमा नाज़िल हुई और हज़रत लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अभी मेरे क़दम अपनी जगह से हटे भी नहीं थे कि मेरे ज़मीर ने मुझे झिन्झोड़ा कि बिला शुबह उस वक़्त मैं ने अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अमानत में ख़यानत की है। (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने यहूदियों को क़त्ल करने के बारे में फ़रमाया था और यह राज़ की बात थी जिस को हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यहूदियों को बता दिया) चुनाँचे हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने उस गुनाह के तसव्वुर से लरज़ गए और अपने उस गुनाह पर नादिम व शर्मिन्दा हो कर मदीना तैयिबा हाज़िर हुए और अपने आप को मस्जिदे नबवी शरीफ़ के एक सुतून में रस्सी से बाँध लिया और क़सम खा ली कि जब तक अल्लाह तआला मेरी तौबह कुबूल न फ़रमाएगा और आका करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने दस्ते मुबारक से मुझे नहीं खोलें गे। खुदा की कसम न मैं कुछ खाऊँगा न पियूँगा चुनाँचे छः दिन छः रात तक हज़रत लुबाबा मस्जिद के सुतून में बन्धे रहे, नमाज़ों और इन्सानी हाजतों के वक़्त उन की बीवी साहिबा उन को खोल दिया करती थीं फिर वही उन को बाँध दिया करती थीं, भूक, प्यास की शिद्दत से उन की कुव्वते समाअत जाती रही और आँखों की रोशनी में भी कमी आ गई उसी हालत में एक रात जब कि सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुजरे में तशरीफ फ़रमा थे, सुबह सादिक के वक़्त आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को नागहां, हंसी आ गई हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम अल्लाह तआला आप के दांतों को हमेशा हंसता रखे इस वक़्त आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हंसी क्यों आ रही है ? तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उम्मे सलमा ! मैं इस खुशी में हंस रहा हूँ कि अबू लुबाबा की तौबह अल्लाह तआला की बारगाह में कुबूल हो गई।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने इजाज़त ले कर हुजरे के दरवाज़े पर खड़े हो कर ब आवाज़ बलन्द फ़रमाया कि ऐ अबू लुबाबा ! तुम्हें बशारत मुबारक हो कि तुम्हारी तौबह कुबूल हो गई है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की आवाज सुनना था कि लोग अपने घरों से निकल आए और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की तरफ़ दौड़ पड़े और हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सुतून से खोलने लगे। मगर हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रोते हुए भराई हुई आवाज़ में फ़रमाया कि ख़बरदार ! हर गिज़, हरगिज़ कोई मुझे न खोले, ख़ुदा की क़सम जब तक ख़ुद आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझे अपने दस्ते मुबारक से न खोलेंगे। मेरे मुजरिम व गुनाहगार दिल को तसल्ली नहीं हो सकती कि मेरे रब तआला ने मेरी ख़ता को मुआफ़ फ़रमा दिया है और मेरी तौबह को कुबूल फ़रमा लिया है चुनाँचे लोग हट गए और हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त तक बन्धे रहे और लोग उन के इर्द गिर्द खड़े आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आमद का इन्तिज़ार करते रहे। यहाँ तक कि मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब मस्जिदे नबवी में नमाज़े फ़ज्र के लिये तशरीफ़ लाए तो अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बड़ी ही प्यार की निगाह से देखा और मुस्कुराया और अपने दस्ते करम से हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रस्सियों को खोल दिया।

(सावी, जि. 1, स. 122)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

हज़रात ! हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से गुनाह व ख़ता हो गया तो सीधे अपने आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम की बारगाह में हाज़िर हुए और मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतून से अपने आप को बाँध लिया क्यों कि वह जानते थे कि अल्लाह करीम ने गुनाहगार बन्दों को महबूब रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में आने का हुक्म दिया है।

आयत : جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ (पारा 5, रुकू 6)

मुजरिम बुलाए आए हैं जाऊका है गवाह
फिर रद हो कब यह शान करीमों के दर की है

और वह यह भी जानते थे कि :

ब ख़ुदा, ख़ुदा का यही है दर, नहीं और कोई मफ़र, मक़र
जो वहाँ से हो यहीं आ के हो जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं

हज़रात ! हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तौबह इस क़दर कुबूल हुई कि अब कितना बड़ा कोई ख़ता कार गुनाहगार क्यों न हो मस्जिदे नबवी शरीफ़ में सुतूने

लुबाबा के पास जा कर तौबह करे तो अल्लाह तआला हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मक़बूल तौबह की बरकत से उस की तौबह को क़ुबूल फ़रमा लेता है।

मज़ारे अनवर की हाज़री से गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं

एक आराबी सहाबी जब मदीना तैय्यिबा में आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िर हुए तो महब्बत का यह आलम था कि क़ब्र शरीफ़ के इर्द गिर्द की मिट्टी को अपने सर पर डालने लगे फिर बड़े ही दर्द भरे अन्दाज़ से रो, रो कर अर्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जो कुछ खुदाए तआला का पैग़ाम लाए, हम ने उस को पढ़ा, और उस पर ईमान लाए या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप पर अल्लाह तआला ने जो किताब नाज़िल फ़रमाई है उस में यह आयत भी है : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ (पारा 5, रुकू 6)

तो या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं ने गुनाह कर के बे शक अपनी जान पर ज़ुल्म किया है, लिहाज़ा मैं अल्लाह तआला के फ़रमान जाऊका पर अमल करते हुए आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम के दरबार में अपने गुनाहों की मग़फ़िरत के लिये हाज़िर हुआ हूँ इस लिये या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मेरे रब तआला से मेरे गुनाहों की बख़्शिश करा दीजिये तो मज़ारे अनवर, क़ब्रे अक़दस से आवाज़ आई कि ऐ आराबी तू बख़्श दिया गया। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 105)

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी ज़ाहिरी हयात में भी अपने गुलामों को नजात व बख़्शिश का मुज़्दा सुनाते थे और आज क़ब्रे करीम में आराम फ़रमा हैं और अपने ख़ताकार गुलामों को नवाज़ते हैं और मग़फ़िरत व नजात की ख़ुशख़बरी देते हैं।

दूसरी बात ! इस हदीस शरीफ़ से यह मालूम हुई कि सहाबा किराम अपने आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ाहिरी हयात में भी या रसूलल्लाह कह कर पुकारते थे, और विसाल के बाद भी या रसूलल्लाह ! कहते थे तो या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कहना शिर्क व बिदअत नहीं बल्कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की आदत व सुन्नत है।

बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये
ग़ैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

अल्लाह वालों के पास जाने से भी तौबह कुबूल हो जाती है

बनी इसराईल में एक शख्स बड़ा ही गुनाहगार व ख़ताकार था, जिस ने सो आदमियों को कत्ल किया था अल मुख़्तसर यह है कि तौबह की गरज से अल्लाह वालों के पास जा रहा था कि रास्ते ही में उस गुनाहगार का इन्तिक़ाल हो गया अज़ाब के फरिश्ते और रहमत के फ़रिश्ते दोनों उस के पास पहुँचते हैं और अल्लाह तआला का हुक्म होता है कि ज़मीन को नापा जाए अगर अल्लाह वालों की बस्ती से क़रीब है तो रहमत के फ़रिश्ते ले जाएं और उस को जन्नत में दाखिल कर दें और अगर अपने घर से क़रीब है तो अज़ाब के फ़रिश्ते उस को अज़ाब दें,, जब ज़मीन नापी गई तो अल्लाह वालों की बस्ती से क़रीब था तो उस की तौबह कुबूल हो गई और उस शख्स को अल्लाह वालों के क़रीब होने की वजह से रहमत के फ़रिश्तों ने मुआफ़ कर दिया और वह जन्नत में दाखिल किया जाएगा।

(मौलाना रूम मसनवी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, जि. 2, स. 407, मिश्कात शरीफ, स. 203)

सोहबत की बरकत से एक गवय्या मुहद्दिस बन गया

हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहर कूफ़ा की एक गली से गुज़र रहे थे कि एक फ़ासिक़ के घर में बहुत से ओबाश जमा थे और शराब पी जा रही थी, उन लोगों में एक गाने वाला भी था जिस का नाम ज़ादान था वह बरबत पर उमदह आवाज़ से गा रहा था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस की उमदह आवाज़ को सुन कर फ़रमाया कैसी अच्छी आवाज़ है काश यह शख्स अपनी उमदह आवाज़ से कुरआने मजीद की तिलावत करता तो कितना अच्छा होता फिर आप चले गए, ज़ादान ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आवाज़ सुन ली थी लोगों से पूछा कि यह कौन साहब थे लोगों ने बताया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, ज़ादान ने कहा यह किया कह रहे थे, तो लोगों ने बताया कि वह कह गए हैं कि कितनी उमदह आवाज़ है काश गाने की बजाए कुरआन मजीद की तिलावत की जाती तो कितना अच्छा होता यह सुनते ही ज़ादान के दिल पर ख़ौफ़ व हैबत तारी हो गई और उसी वक़्त बरबत को तोड़ डाला और दोड़ता, भागता हुआ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और रोने लगा, आप ने ज़ादान को गले लगा लिया और उस के साथ खुद भी रोने लगे और फ़रमाया, मैं कैसे उस से महब्बत न करूँ जिस से अल्लाह तआला को महब्बत है, उस के बाद ज़ादान ने गाने बजाने से तौबह कर ली और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में रहने लगा। यहाँ तक कि

क़ुरआने पाक पढ़ लिया और इतना इल्म हासिल किया कि इमाम बन गया, चुनाँचे हज़रत ज़ादान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत सी हदीसें हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की हैं। (गुनियतुत तालिबीन, स. 262)

हज़रात! मुस्लिम शरीफ़ की हदीस और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बयान से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि सो आदमियों के क़ातिल की तौबह को अल्लाह वालों के क़रीब होने की वजह से अल्लाह तआला क़ुबूल फ़रमा कर जन्नत का हक़दार बना देता है और एक गाने बजाने वाला एक सहाबी की सोहबत की बरकत से तमाम गुनाहों से तौबह कर लेता है और दीन का इमाम और मुहद्दिस बनता नज़र आता है।

सुब्हानल्लाह! सुब्हानल्लाह! तो मालूम हुआ कि अल्लाह वालों के क़रीब जाकर तौबह करने से बहुत जल्द तौबह क़ुबूल हो जाती है और सारे गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं:

सोहबत सालेह तुरा, सालेह कुनद........यानी नेक की सोहबत नेक बना देती

सोहबते तालेह तुरा, तालेह कुनद........और बुरे की सोहबत बुरा बना देती है।

अल्लाह तआला हम को भी नेकों की सोहबत में रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

बे हिसाब गुनाह सच्ची तौबह से मुआफ़ हो जाते हैं: महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदमी के गुनाह सातों आसमानों, ज़मीनों और पहाड़ों के बराबर (या उस से भी ज़्यादा हों तो) अल्लाह तआला सच्ची तौबह करने वाले को अपनी रहमत से बख़्श देता है। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 117)

सच्ची तौबह की बरकत: अल्लाह तआला के हबीब हम बीमारों के तबीब, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जब बन्दा (सच्ची) तौबह करता है तो अल्लाह तआला उस की तौबह क़ुबूल कर लेता है। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उस के माज़ी के गुनाहों को भूल जाते हैं।

उस के जिस्म के आज़ा उस की ख़ताओं को भूल जाते हैं। ज़मीन का वह टुकड़ा जिस पर उस ने गुनाह किया है और आसमान का वह हिस्सा जिस के नीचे उस ने गुनाह किया है उस के गुनाहों को भूल जाते हैं जब वह शख़्स क़ियामत के दिन आएगा तो उस के गुनाहों पर गवाही देने वाला कोई नहीं होगा। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 115)

हदीस शरीफ़: हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि

मख़लूक़ की पैदाइश से चार हज़ार साल पहले अर्श पर लिखा था कि :

إِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ○ (पारा 16, रुकू 13)

यानी जिस ने तौबह की और ईमान लाया और नेक अमल किये मैं उसे बख़्शने वाला हूँ।
(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 115)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ की रोशनी में समझिये कि सच्ची तौबह का कितना बलन्द मक़ाम है कि तौबह करने वाले के तमाम गुनाहों को अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमा कर उस को बख़्श देता है।

तौबह के आंसुओं ने जहन्नम बुझा दिया
तौबह बड़ी सिपर है गुनाहगार के लिये

हज़रात !

1) सच्ची तौबह करने से बुराइयाँ, नेकियों में बदल जाती हैं। (कुरआने करीम)
2) सच्ची तौबह अज़ाब से बचाती है। (कुरआने करीम)
3) सच्ची तौह करने से बख़्शिश होती है और जन्नत मिलती है। (कुरआने करीम)
4) सच्ची तौबह करने वालों से अल्लाह तआला महब्बत फ़रमाता है। (कुरआने करीम)
5) सच्ची तौबह करने वाले से अल्लाह तआला बहुत ख़ुश होता है। (मिश्कात शरीफ़, स. 202)
6) सच्ची तौबह करने से रिज़्क़ बढ़ता है और ग़म दूर हो जाते हैं। (मिश्कात शरीफ़, स. 204)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(11)

ज़िल क़अदह शरीफ़

पहले जुमे का बयान

हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलातो वस्सलाम

ब हैसियते ख़लीलुल्लाह

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى حَبِيْبِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى اٰلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ

وَاَصْحَابِهِ الْمُكَرَّمِيْنَ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيِّ الْبَغْدَادِيِّ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ

الْخَوَاجِهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيِّ اَجْمَعِيْنَ ۝

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝

तर्जमा : और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना गेहरा दोस्त बनाया।

(पारा 5, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ : हमारे प्यारे रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जद्दे करीम हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातो वस्सलाम की पैदाइश बाबिल के शहर में नमरूद मरदूद के दौरे सलतनत में हुई।

नमरूद बादशाह की हुकूमत पूरी दुनिया पर थी, तारीख़ से साबित है कि चार ऐसे बादशाह गुज़रे हैं जिन की बादशाहत पूरी दुनिया पर थी, उन चारों में दो बादशाह मोमिन थे और दो बादशाह काफ़िर थे, मोमिनों में एक हज़रत सिकन्दर ज़ुल क़रनैन अलैहिर्रहमा और दूसरे हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम थे और काफ़िरों में एक बख़्त नस्र और दूसरा बादशाह नमरूद मरदूद था। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 310)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से हमारा प्यारे नबी अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम दोनों आलम के बादशाह हैं।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस को शायां है अर्शे ख़ुदा पर जुलूस
है वह सुल्ताने वाला हमारा नबी

अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनों आलम का दूल्हा हमारा नबी

दुरूद शरीफ़ :

जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की पैदाइश का वक़्त क़रीब आया, तो आप की वालिदा माजिदा नमरूद बादशाह के डर से एक तह खाना में चली गईं, जो आप के वालिदे माजिद ने शहर से दूर तय्यार किया था, उसी तह खाना में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और वहीं रहे रोज़ाना आप की वालिदा उस तह खाना में तशरीफ़ लातीं और दूध पिला कर वापस आ जातीं आप बहुत जल्द बढ़ रहे थे, एक माह में इतना बढ़ते थे जितना दूसरे बच्चे एक साल में बढ़ते हैं। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 310)

एक रिवायत के मुताबिक़ जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ तेरह बरस या सतरह बरस की हुई तो एक रोज़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी वालिदा से सवाल किया कि मेरा रब कौन है ? यानी मेरा पालने वाला कौन है ? तो वालिदा ने जवाब दिया मैं हूँ फिर सवाल किया कि तुम्हारा रब (पालने वाला) कौन है ? तो आप की वालिदा ने फ़रमाया ख़ामोश रहो और कोई जवाब न दे सकीं और अपने शोहर से जाकर कहा कि जिस लड़के की निस्बत जो मशहूर है कि वह ज़मीन वालों के दीन को बदल देगा वह फ़रज़न्द यही है और सारी गुफ़्तुगू अपने शोहर को बताया और जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तह ख़ाना से बाहर तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त सूरज गुरूब हुआ और आसमान पर सितारा तुलूअ हुआ तो आप ने देखा कि क़ौम के लोग शिर्क में मुब्तला हैं तो आप ने बातिल परस्ती का इनकार किया और अल्लाह तआला की वहदानियत पर इस्तिदलाल फ़रमाया जिस को क़ुरआने करीम ने बयान किया।

और फ़रमाया ऐ लोगो ! चाँद व सूरज और सितारे माबूद नहीं हैं जो कभी डूबे और फिर निकले और डूबने वाला हमारा ख़ुदा नहीं है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने चाँद व सूरज और सितारों की परस्तिश के ख़िलाफ़ बेज़ारी का ऐलान किया और एक ख़ुदा की वहदानियत को मानने और अल्लाह वहदहू ला शरीका की इबादत व बन्दगी की दावत पेश की।

आप का चचा आज़र बुत बनाता और बेचता था

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने चचा आज़र से फ़रमाया :

يَآاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَالَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْئًا 0

तर्जमा : ऐ मेरे बाप क्यों ऐसे को पूजता है जो न सुने, न देखे और न कुछ तेरे काम आए।

(पारा 16, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आप का चचा आज़र ला जवाब हो गया और कहा ऐ इब्राहीम अगर यह बुत तेरी रिसालत और तेरे ख़ुदा की वहदानियत की गवाही दे दें तो मैं तुम पर ईमान ले आऊँगा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की तो तमाम बुतों से यह आवाज़ आई।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِبْرَاهِيْمُ خَلِيْلُ اللّٰه आज़र ने जब यह मोअजिज़ा देखा तो कहने लगा ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) तू बड़ा जादूगर है और ईमान न लाया। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 319)

हजरात ! नमरूद की क़ौम का साल में एक ईद का दिन होता था जिस को वह लोग मेले के तौर पर मनाते थे।

एक रोज जो उन के मेले का दिन था, उमदा लिबास पहन कर मेले में जाते और किस्म किस्म के खेल कूद में मशगूल हो जाते वापस होकर बुत खाना में ज़ाते और बुतों की पूजा करते अल्लाह के खलील हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने देखा कि सब मेले में जा चुके हैं और बुत खाने में बुत अकेले रह गए हैं तो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने देखा कि सब मेले में जा चुके हैं और बुत खाने में बुत अकेले रह गए हैं तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कुलहाडी ली और तमामबुतों को तोड डाला और एक बड़े बुत के कन्धे पर कुलहाड़ी रख कर चले गए जब नमरूद की क़ौम के लोग मेले से वापस हुए और बुत खाना में जाकर अपने बुतों की बद हाली देखी तो सब भड़क गए और कहा कि यह काम इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) का है उसी ने हमारे बुतों के साथ यह मुआमला किया है।

जब यह वाक़िआ नमरूद को बताया गया तो नमरूद मरदूद ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बुलाया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो नमरूद को सज्दा नहीं किया जो उस के दरबार में हर आने वाले का तरीक़ा था तो नमरूद ने आप से कहा कि तुन ने मुझे सज्दा नहीं किया तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं अपने रब तआला के अलावा किसी को सज्दा नहीं करता हूँ। तो नमरूद ने कहा तेरा रब कौन है ?

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ ط

तर्जमा : मेरा रब अब वह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूँ।
(पारा 3, रुकूअ 3, तर्जमा कन्जुल ईमान)

चुनाँचे नमरूद ने दो क़ैदियों को बुलाया, एक क़ैदी जो रिहा होने वाला था उस को मार दिया और जो क़त्ल होने वाला था उस को रिहा कर दिया और कहा मैंने उसको ज़िन्दा कर दिया। ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) देखो मैं भी ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ।

हज़रात ! हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जान लिया कि नमरूद बड़ा बे वक़ूफ़ और नादान है अब उस के सामने ऐसी दलील पेश की जाए जिस से ज़ालिम नमरूद बे बस और लाचार हो और उस की झूटी खुदाई का भांडा फूट जाए इस लिये हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने एक ऐसी दलील क़ाइम फ़रमाई जिस का कोई जवाब नमरूद के पास न था उस को क़ुरआने करीम बयान फ़रमाता है :

قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ

तर्जमा : इब्राहीम ने फ़रमाया तो अल्लाह सूरज को लाता है पूरब से, तो उस को पश्चिम से ले आ, तो होश उड़ गए काफ़िर के। (पारा 4, रुकू 3, तर्जमा कन्जुल ईमान)

नमरूद मरदूद गुस्सा में आ कर कहने लगा ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) तूने ही हमारे बुतों को तोड़ा है तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उस बड़े बुत से पूछ जिस के कन्धे पर कुलहाड़ी रखी हुई है ऐसा लगता है कि उसी बड़े बुत ने नाराज़ होकर तमाम बुतों को तोड़ दिया है तो नमरूद ने जवाब दिया कि तुम्हें ख़ूब मालूम है कि यह बुत सुनते नहीं और बोलते नहीं, तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَالَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ٥

तर्जमा : कहा तो क्या ? अल्लाह के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे और न नुक़सान पहुँचाए। (पारा 17, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

खुलासा ! यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की गुफ़्तुगू का नमरूद मरदूद के पास कुछ जवाब न था। इस लिये आजिज़ व शर्मिन्दा हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को क़ैद कर दिया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर नारे नमरूद गुलज़ार हो गई

नमरूद ने अपने ख़ास लोगों से मशवरा किया कि इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के साथ किया सुलूक किया जाए, मशवरा में तय हुआ कि आप को आग के शोअलों में ज़िन्दा डाल कर जला दिया जाए।

नमरूद मरदूद ने हुक्म दिया कि एक पत्थर की तीस गज़ लम्बी और बीस गज़ चोड़ी एक चहार दीवारी तय्यार की जाए और हर छोटे, बड़े मर्द, औरत उस चहार दीवारी में लकड़ियाँ जमा करें और जो इस हुक्म की ना फ़रमानी करेगा उस को भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ उसी आग में डाल दिया जाएगा, कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुश्मनी और नमरूद मरदूद को ख़ुश करने के लिये इस जोश के साथ लकड़ियाँ जमा कीं। एक माह कामिल तक लकड़ियाँ जमा की जाती रहीं। जब चहार दीवारी लकड़ियों से भर गई तो उन में आग लगा दी गई आग के शोअले आसमान को छूने लगे अगर कोई परिन्दा आग के ऊपर से गुज़रता तो जल कर राख हो जाता था, आग की गर्मी और हरारत से शहर के लोग परेशान होने लगे और आबादी के लोगों का अपने घरों में रहना दुश्वार हो गया था।

जब आग अपने पूरे शबाब पर आ गई और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुन्जनीक़ के ज़रीए आग में ड़ाले जा रहे थे कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया :

يَا اِبْرَاهِيْمُ اَلَكَ حَاجَةٌ

यानी ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम कोई हाजत हो तो बताइये जिब्रईल ख़िदमत के लिये

हाज़िर है, आप ने इरशाद फ़रमाया : نَعَمْ اَمَّا اِلَيْكَ فَلَا

हाँ हाजत तो है मगर ऐ जिब्रईल अलैहिस्सलाम तुम से कोई हाजत नहीं है, हज़रत जिब्रईल अलैहिस्लाम ने अर्ज़ की। आप, को जिस से हाजत है उस से तलब करो, तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

عِلْمُهٗ بِحَالِيْ حَسْبِيْ مِنْ سُوَالِيْ

यानी वह मेरे हाल को खूब जानता है और वह मेरे सवाल से बा ख़बर है और वही मेरे लिये काफ़ी है गोया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रमा रहे थे।

जानता है वह मेरा रब्बे जलील
आग में ज़ाता है अब उस का ख़लील

अब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग के क़रीब पहुँच चुके थे कि अल्लाह तआला का हुक्म होता है :

يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ۝

तर्जमा : ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर।

(पारा 17, रुकू 5, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

रब तआला का हुक्म सुनते ही आग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर गुलज़ार हो गई।

नमरूद मरदूद बलन्द मकान पर चढ़ कर देखने लगा कि हज़रत (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) हलाक और आग में ज़ल कर राख हो गए होंगे, जब देखा तो आग के तमाम शोअले फूल बन चुके थे और तमाम आतिश कदा गुले गुलज़ार बना हुआ था और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों के झुरमुट में फूलों के तख़्त पर जलवा गर थे पूछा ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम किस तरह उस आग से बच कर उस नाज़ व नेअमत में पहुँच गए हो तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ

यह मेरे रब तआला के फ़ज़्ल से है। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 326)

नमरूद की बेटी का ईमान लाना

हज़रात ! जब नमरूद की बेटी रग़फ़ा ने बलन्द मकान से देखा कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम सही व सालिम हैं और नारे नमरूद गुलज़ार बना हुआ है तो रग़फ़ा के दिल में ईमान पैदा हो गया और उस ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से इजाज़त लेकर कलमा पढ़ते हुए यानी لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِبْرَاهِيْمُ خَلِيْلُ اللّٰهِ पढ़ते हुए बलन्द मकान से नारे नमरूद में कूद गई। सलामती से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास हाज़िर हुई और अपने ईमान को ताज़ा किया फिर सलामती से अपने बाप के पास चली गई जब नमरूद ने अपनी बेटी का ईमान और फिर उस का बलन्द मकान से आग में जाना और आग से सलामत रहना मुशाहदा किया। बड़ा तअज्जुब में पड़ा मगर लोगों की सलामत से डरते हुए अपने बातिल दीन पर क़ाइम

रहा अगरचेह उस के सामने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दीन की हक्क़ानियत आफ़ताब से ज़्यादा ज़ाहिर हो चुकी थी पहले तो लड़की को प्यार व महब्बत से समझाया कि दीने इब्राहीम से फिर जाए मगर नेक बेटी अपने सचे दीन से न फिरी तो अब उस को तरह तरह की तकलीफ़ पहुँचाने का इरादा किया और उस के हाथों और पेरों को बाँध कर सख़्त धूप में गर्म रेत पर लिटा दिया। इधर दरयाए रहमत जोश में आया अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने रिग़फ़ा को उस के ज़ालिम बाप नमरूद मरदूद के ज़ुल्म से छुड़ा कर हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलातो वस्सलाम के पास ले आए, कुछ मुद्दत के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस का निकाह अपने बेटे मदयिन के साथ कर दिया। अल्लाह तआला ने उस सआदत मन्द लड़की से बीस फ़रज़न्द बतनन बादे बतन पैदा फ़रमाए जो सब के सब मस्नदे नुबुव्वत पर फ़ाइज़ हुए।

فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذٰلِكَ

(मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 337)

ऐ ईमान वालो ! नमरूद मरदूद की बेटी रुफ़ग़ा कलमा शरीफ़ पढ़ते हुए बलन्द मकान से कूद कर नारे नमरूद में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास पहुँचती हैं तो वह भी आग से महफ़ूज़ रहती हैं,. यह है कलमा शरीफ़ की बरकत और नबी की महब्बत का असर अगर हम भी कलमा शरीफ़ पढ़ना अपनी आदत बना लें और प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सची महब्बत करें तो बरोज़े क़ियामत कलमा शरीफ़ पढ़ना अपनी आदत बना लें और प्यारे नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सची महब्बत करें तो बरोज़े क़ियामत कलमा शरीफ़ की बरकत और प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत से दुनिया की हर बला व मुसीबत की आग से और क़ियामत के दिन दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रहेंगे। इन्शाअल्लाहु तआला।

नबी के दुश्मन का बुरा अन्जाम : नमरूद मरदूद बड़ा ज़ालिम व सफ़्फ़ाफ़ बादशाह था, अपने को ख़ुदा कहलवाता था उस को सज्दा किया जाता था।

अल्लाह तआला की गिरफ़्त बहुत मज़बूत है। अल्लाह तआला ज़ालिमों और सरकशों को ढील देता है और वह इस छूट और ढील को अपनी कामयाबी समझते हैं और जब ज़ुल्म व गुनाह हद से ज़्यादा बढ़ जाते हैं तो अल्लाह तआला का अज़ाब आकर रहता है।

एक रिवायत के मुताबिक़ नमरूद की उम्र एक हज़ार साल से ज़्यादा थी और तीन सो साल तक बीमार न पड़ा था, उस ने समझ लिया कि अगर मैं बन्दा होता तो ज़रूर बीमार होता, उस के सरकश और ज़ालिम होने के बहुत से अस्बाब थे, एक वजह यह भी थी जो वह बीमार नहीं होता था, अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने की बजाए ख़ुद को ख़ुदा कहलवाने लगा और झूटा ख़ुदा बन बेठा।

अल्लाह तआला ने उस की झूटी ख़ुदाई का भांडा फोड़ने के लिये एक लंगड़े मच्छर को भेजा जो उस के नाक के रास्ते से दिमाग़ में चला गया और उस को काटने लगा, नमरूद सख़्त

परेशान हुआ, एक लंगड़े मच्छर के अज़ाब से बचने की उस के पास कोई तदबीर न थी, दिन व रात दर्द व कर्ब में मुब्तला रहने लगा, हकीमों से इलाज कराता मगर मर्ज बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवा की उस के हलाक व बरबाद होने का वक़्त क़रीब आ गया, एक माहिर हकीम जो गालिबन उस के ज़ुल्म व सितम से परेशान और उस की झूटी ख़ुदाई से आगाह था, उस ने मशवरा दिया कि बादशाह ! एक पुराने चमड़े के जूते से आप के सर पर मालिश किया जाए तो हो सकता है कि आप के सर का दर्द कुछ कम हो जाए और आप को आराम नसीब हो।

हुक्म हुआ कि पुराना चमड़े का जूता लाया जाए जूता हाज़िर किया गया और एक शख़्स को मुतअय्यन किया गया कि उस पुराने जूते से नमरूद के सर पर मालिश किया करे जब जूता नमरूद के सर पर पड़ने लगता तो मच्छर दिमाग़ के एक कोने में बैठ जाता और तकलीफ़ व दर्द कम हो जाता और नमरूद समझता कि बीमारी का इलाज हो रहा है, फिर मच्छर दिमाग़ में काटता फिर जूते से उस के सर को पीट जाता फिर दर्द कम हो जाता। इसी तरह जूता सर पर पड़ता रहा यहाँ तक कि सर फट गया और दिमाग़ बाहर आ गया और अल्लाह तआला के नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का दुश्मन और झूटा ख़ुदा नमरूद, ज़िल्लत व रुसवाई के साथ तड़प, तड़प कर मर गया।

हज़रात ! यह है अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दुश्मन का बुरा अन्जाम।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दुश्मन नमरूद का कितना बुरा हाल हुआ आप हज़रात ने देख लिया और आज भी जो लोग नबी से दुश्मनी करते हैं और नबी पर तरह तरह का एतराज़ करते नज़र आते हैं वह लोग भी किसी न किसी बड़ी बीमारी में मुब्तला मिलेंगे, इस लिये अल्लाह तआला के महबूब बन्दे, अम्बियाए किराम और औलियाए किराम से अदावत व दुश्मनी से बचना लाज़िम व ज़रूरी है, अल्लाह तआला अपने प्यारों की अदावत व दुश्मनी से बचाए और उन से महब्बत व अक़ीदत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बाबिल से शाम तशरीफ़ ले गए

जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बाबिल से शाम की तरफ़ हिजरत फ़रमाई आप के हमराह हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा थीं पहले आप हिरा में मुक़ीम हुए कुछ दिन के बाद मिस्र की तरफ़ हिजरत फ़रमाई वहाँ का बादशाह बड़ा ज़ालिम और फ़ासिक़ था, उस की आदत थी कि जिस की शादी होती वह दुल्हन उस के सामने पेश की जाती अगर उसे पसन्द आती तो अपने पास रख लेता वर्ना वापस भेज देता, उस बद बख़्त बादशाह ने हर जानिब आदमी मुक़र्रर कर रखे थे, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ आप की बीवी हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा थीं ज़ो हसीन व जमील थीं बादशाह को ख़बर दी गई

कि एक मुसाफ़िर के साथ एक औरत है जो बड़ी हसीन व जमील है, ज़ालिम बादशाह ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने पास बुला लिया ज़ालिम बादशाह हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को देखते ही आप पर फ़रेफ़्ता हो गया हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बाहर रहने दिया और हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बन्द कमरे में ले गया, अल्लाह तआला ने कमरे के दरो दीवार को शीशे की तरह कर दिया कि आप को कमरे के अन्दर के सब हालात नज़र आते थे, जब ज़ालिम बादशाह ने ख़याले फ़ासिद (बुरी नज़र) से अपना हाथ हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तरफ़ बढ़ाया तो उस का हाथ ख़ुश्क हो गया, ज़ालिम बादशाह तौबह करने लगा और मजबूर हो कर आप से मुआफ़ी मांगी और आप से दुआ की दरख़्वास्त की, आप ने दुआ फ़रमाई उस का हाथ दुरुस्त हो गया फिर शैतान ने वसवसा डाला और आप की तरफ़ ज़ालिम ने हाथ दराज़ किया तो फिर उस का हाथ ख़ुश्क (शल) हो गया इसी तरह जब उस की नियत ख़राब होती और आप की तरफ़ हाथ बढ़ाता तो उस का हाथ ख़ुश्क हो जाता, ज़ालिम बादशाह कहने लगा कि मेरे लिये दुआ करो और मैं मुआफ़ी मांगता हूँ कि कभी भी बुरी नियत नहीं क़रूँगा और आप को कोई तकलीफ़ न दूँगा, आप ने दुआ की तो उस का हाथ दुरुस्त हो गया, यह सारा क़िस्सा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कमरे से बाहर मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे, ज़ालिम बादशाह ने हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की करामत देख कर अपनी एक नेक व पारसा कनीज़ हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में दे दिया। और हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपनी नेक कनीज़ हज़रत हाजरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने शोहर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का सुपुर्द कर दिया अब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वहाँ से मुल्के शाम तशरीफ़ लाते हैं और अर्ज़े मुक़द्दस (पाक ज़मीन) में सुकूनत पज़ीर हो जाते हैं। हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से अभी तक कोई औलाद नहीं हुई। इस लिये हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपनी नेक व पारसा कनीज़ हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने शोहर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बख़्श दी।

رَدَّ اللّٰهُ كَيْدَ الْكَافِرِ اَوِ الْفَاجِرِ فِيْ نَحْرِهٖ وَاَخْدَمَ هَاجِرَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

(बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 474)

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पैदाइश

जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मुल्के शाम में अर्ज़े मुक़द्दस पर आबाद हो गए बीस साल का अर्सा गुज़र गया आप के कोई औलाद नहीं हुई तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ की। رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ

यानी ऐ रब तआला मुझे नेक बेटा अता फ़रमा। (पारा 23, रुकू 7)

हुई चन्द दिन से इख़्लास के साथ निकली हुई दुआ अल्लाह तआला की बारगाह में कबूल हुई।

हो करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता
जो मांगने का तरीका है उस तरह मांगो

चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बुढ़ापे में आप की बीबी हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के बत्ने पाक से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए, जिन को जद्दे अमजद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और ज़बीहुल्लाह के मुबारक लक़ब से याद किया जाता है।

शहरे मक्का का वुजूद में आना और तामीरे कअ़बा

ज़ाहिर बात है कि जो बच्चा दुआ़ओं से और बड़ी दुआओं और इल्तिजाओं के बाद पैदा हुआ होगा वह बच्चा मां, बाप की नज़र में कितना अज़ीज़ और किस क़द्र ज़्यादा प्यारा होगा।

हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अपनी गोद में बिठातीं और प्यार करतीं तो हज़रत सारा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपनी गोद को खाली देख कर रश्क करने लगीं इसी वजह से आप ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अर्ज़ किया कि आप हज़रत हाजिरा और उन के बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को यहाँ से कहीं दूर मकाम पर छोड़ आओ, अस्ल में यह राज़ व हिक्मत है, शहरे मक्का के वुजूद में आने का और अल्लाह तआला के घर कअबए मुअज़्ज़मा की तामीर का, इस लिये अल्लाह तआला ने एक सबब पैदा फ़रमा दिया था।

चुनांचे वही नाज़िल हुई अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उस सर ज़मीन पर छोड़ आओ जो अब मक्का मुअज़्ज़मा के नाम से मशहूर है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी बीवी हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा और अपने बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को अपने हमराह लेकर मुल्के शाम से कअबा मुअज़्ज़मा के नज़दीक उस मक़ाम पर छोड़ा जहाँ आज ज़म ज़म का चश्मा है, यहाँ उस वक़्त न कोई आबादी थी न कोई चश्मा, न साया दार दरख़्त था, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी नेक बख़्त बीवी हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को एक तोशा दान खजूरों का और एक बरतन पानी का देकर वापस तशरीफ लाने लगे तो हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने आवाज़ दी और अर्ज़ की ऐ मेरे सरताज :

اَيْنَ تَذْهَبُ وَتَتْرُكُنَا بِهٰذَا الْوَادِي الَّذِي لَيْسَ فِيْهِ اِنْسٌ وَّلَا شَيْءٌ ○

यानी ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ! आप कहाँ तशरीफ ले जा रहे हैं। हमें इस वादी में अकेले और तन्हा छोड़ कर, जिस में न कोई इन्सान है और न ही और कोई चीज़। आप ने कोई जवाब न दिया और न ही तवज्जोह फ़रमाई, हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने

चन्द मरतबा यही सवाल किया मगर कोई जवाब न आया तो अर्ज़ की कि ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम क्या अल्लाह तआला के हुक्म से आप मुझे इस वादी में अकेले और तन्हा छोड़ कर जा रहे हैं तो आप ने फ़रमाया हां मैं अपने रब तआला के हुक्म से ऐसा कर रहा हूँ तो हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने कहा :

إِذًا لَّا يُضَيِّعُنَا رَضِيتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۝

यानी जब रब तआला का हुक्म है तो फिर कुछ ख़ौफ़ नहीं अल्लाह तआला ख़ुद ही हिफ़ाज़त फ़रमाएगा उस पर मेरा भरोसा है।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वहाँ से चलते वक़्त दुआ करते हैं

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मैं ने अपनी कुछ औलाद एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती, तेरे हुरमत वाले घर के पास, ऐ मेरे रब ! इस लिये कि वह नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उन की तरफ़ माइल कर दे और उन्हें कुछ फल खाने को दे, शायद वह एहसान मानें।

(पारा 13, रुकू 18, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

आबे ज़म, ज़म का चश्मा : कुछ दिनों तक हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन खजूरों और पानी से गुज़ारा किया और अपने फ़रज़न्द को दूध पिलाती रहीं, जब वह पानी ख़त्म हो गया प्यास की शिद्दत हुई और छाती से दूध ख़ुश्क हो गया तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम का हलक़ मुबारक प्यास की शिद्दत से सूख गया, नन्हे शीर ख़्वार बच्चे की जान जाने का ख़तरा पैदा हो गया, तो हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु अन्हा पानी की तलाश में पहले सफ़ा पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गईं और चारों तरफ़ नज़र किया मगर किसी तरफ़ भी पानी नज़र आया तो सफ़ा पहाड़ी से दौड़ीं और मरवा पहाड़ी पर तशरीफ़ लाईं और चारों तरफ़ देखती रही कि पानी कहीं मिल जाए मगर किसी तरफ़ भी पानी का नाम व निशान तक न मिला। इसी तरह हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु अन्हा सात मरतबा सफ़ा से मरवा पहाड़ी पर दौड़ीं और आप पलट पलट कर अपने शीर ख़्वार बच्चे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तरफ़ भी देखती रहती थी कि कोई मूज़ी जानवर मेरे बेटे को तकलीफ़ न पहुँचा दे और जब भी नज़र करतीं तो देखती थी कि हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के हाथ और पैर हिल रहे हैं मगर जब सातवीं मरतबा वह पहाड़ी से हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को देखा तो उन के क़दमों के रिगड़ने की जगह साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पानी का चश्मा उबल रहा था, हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दौड़ती हुई आती हैं और पानी के चश्मे के चारों तरफ़ रेत और मिट्टी रख कर पानी को रोकती हैं और कहती जाती हैं ज़म, ज़म यानी ऐ पानी ठहर जा, ठहर जा।

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पानी को ज़म ज़म यानी ऐ पानी ठहर जा न कहतीं तो यह पानी सारी दुनिया की ज़रूरत को पूरा करने के लिये काफ़ी होता।

ऐ ईमान वालो ! हक़ीक़त में ज़म ज़म कोई नाम नहीं है, ज़म ज़म के मअना हैं ठहर जा, और यह कोई नाम ज़म ज़म फ़रमाया तो अब क़ियामत तक के लिये उस पानी का नाम ज़म ज़म ही पड़ गया।

गोया नेक बन्दे या नेक बन्दी की ज़बान से जो लफ़्ज़ निकल जाता है उसे अल्लाह तआला मक़बूले अनाम बना देता है।

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का सफ़ा पहाड़ी से मरवा और मरवा पहाड़ी से सफ़ा तक दौड़ना इस क़दर पसन्द फ़रमाया कि सफ़ा और मरवा पहाड़ी को अपनी निशानी क़रार दे दिया।

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ط

तर्जमा : सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों से हैं। (पारा 2, रुकू 3, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

सफ़ा और मरवा को निशानी क्यों बनाया गया ?

इस लिये कि इन दोनों पहाड़ियों पर अल्लाह तआला की नेक बन्दी का क़दम पड़ गया है, इस लिये अब वह जगह आम जगहों से मुमताज़ होकर अल्लाह तआला की निशानी क़रार पाई

हज़रात ! जब क़दम पड़ गया तो वह जगह बरकत व रहमत वाली हो गई, तो उन क़ब्र की अज़मत व बुज़ुर्गी और रहमत व बरकत का क्या आलम होगा जिस क़ब्र में अल्लाह तआला का नेक बन्दा या नेक बन्दी आराम कर रहे हों और फिर तुरबते पांके मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अज़मत व बरकत का अन्दाज़ा कौन लगा सकता है जिस में ख़ुद महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा फ़रमा हैं, इसी लिये आशिक़े मुस्तफ़ा हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

पेशे नज़र वह नो बहार सज्दे को दिल है बे क़रार
रोकिये सर को रोकिये हाँ यही इम्तिहान है

हज़रात ! अल्लाह तआला को अपनी नेक बन्दी का दौड़ना इस क़दर पसन्द आया कि हर हाजी को क़ियामत तक के लिये सफ़ा व मरवा के दरमियान दौड़ने का हुक्म दे दिया ताकि दुनिया वाले मेरे मुहिब्बों और नेकों की क़दर व मन्ज़िलत को पहचान लें और जान लें कि मेरी नेक बन्दी हाजिरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) तो ज़रूरत के वक़्त दौड़ी थीं लेकिन आज हर हाजी सफ़ा व मरवा के दरमियान बग़ैर ज़रूरत दौड़ते हैं और यही अल्लाह तआला का

हुक्म भी है ताकि मेरी नेक बन्दी हाजिरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) की सुन्नत बाक़ी रहे और उन की दौड़ने की वह अदा ज़िन्दा और जारी रहे और अगर किसी हाजी ने हज़रत हाजिरा की इस सुन्नत पर अमल नहीं किया यानी सई नहीं की तो उस का हज मुकम्मल नहीं हुआ।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

दुरूद शरीफ़ :

आबे ज़म ज़म की फ़ज़ीलत : ऐ ईमान वालो ! आबे ज़म ज़म बड़ी फ़ज़ीलत व बरकत वाला है। ज़म ज़म के पानी को अम्बियाए किराम और औलियाए इज़ाम ने नोश फ़रमाया है और ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने पिया और उस की फ़ज़ीलत व बरकत को अपनी मुबारक ज़बान से बयान फ़रमाया। मुलाहज़ा फ़रमाइये।

हदीस शरीफ़ : हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खड़े खड़े डोल से ज़म ज़म पिया और बाक़ी जो बचा उसे ज़म ज़म के कुंए में डाल कर आबे ज़म ज़म को मज़ीद बरकत वाला बना दिया।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, तारीख़े मक्का, जि. 2, स. 403, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 12, स. 102)

आबे ज़म ज़म तबर्रुक के लिये ले जाना सुन्नत है

हज के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आबे ज़म ज़म मुश्कीज़ों और बरतनों में भर कर साथ ले गए थे, अर्से तक वह पानी बीमारों को पिलाते रहे और हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहल बिन उमर के ज़रीए आबे ज़म ज़म के दो मुश्कीज़े मदीने मुनव्वरा मंगवाए।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, तारीख़ मक्का, जि. 2, स. 403)

ऐ ईमान वालो ! हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आबे ज़म ज़म को साथ ले जाना और फिर मक्का शरीफ़ से मदीना मुनव्वरा मंगवाना और आबे ज़म ज़म को शिफ़ा के लिये बीमारों को पिलाना, यक़ीनन आबे ज़म ज़म को फ़ज़ीलत व बरकत को साबित करता है।

आबे ज़म ज़म पेट भर के पीना सुन्नत है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बे शक आबे ज़म ज़म भूक के लिये ग़िज़ा है। और बीमारी के लिये शिफ़ा है और हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हम में और मुनाफ़िक़ों में यह फ़र्क़ है कि हम आबे ज़म ज़म को पेट भर कर पीते हैं और मुनाफ़िक़ पेट भर कर नहीं पीते।

(मुस्लिम शरीफ़, इब्ने माजह, हदीस 3061, स. 220, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 12, स. 102, मिश्कात शरीफ़)

आबे ज़म ज़म जिस मक़सद के लिये पियोगे कामयाबी है

हुज़ूर रहमते आलम मुख़्तारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया आबे ज़म ज़म जिस नियत से पिया जाएगा अल्लाह तआला उस में कामयाबी अता फ़रमाएगा। अगर तुम ज़म ज़म के पानी को हुसूले शिफ़ा की नियत से पियोगे तो अल्लाह तआला शिफ़ा बख़्शेगा अगर तुम आबे ज़म ज़म (भूक की हालत में) पेट भरने के लिये पियोगे तो अल्लाह तआला पेट भर देगा यह पानी हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम की ठोकर और हज़रत इस्माईल अलैहिस्लाम के क़दमे मुबारक की बरकत से जारी हुआ है।

(इब्ने माजह, स. 220, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 12, स. 101, हाकिम)

हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं आबे ज़म पीते वक़्त जो दुआ की जाती है अल्लाह तआला कुबूल फ़रमा लेता है।

हदीस शरीफ़ में जिस दुआ का ज़िक्र है वह यह है :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ۝

यानी ऐ अल्लाह तआला मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ और रिज़्क़ की कुशादगी और मक़बूल अमल और हर बीमारी से शिफ़ा का तलबगार हूँ। (बहारे शरीअत, हि. 6, स. 68)

अब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वह दुआ कुबूल हुई, क़बीलए जुरहम के कुछ लोग तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम जा रहे थे रास्ता वही था देखा कि कुछ परिन्दे मन्डला रहे हैं यक़ीनन उस जगह पानी है जब क़रीब आए तो देखा कि एक औरत है और उस की गोद में एक नन्हा सा बचा है क़बीला जुरहम के लोग सुनसान जंगल में तन्हा औरत और उस की गोद में बचा को देख कर हैरान व शुशदिर रह गए और देखा कि इस ख़ातून के क़रीब साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ पानी का चश्मा जारी है तो क़बीला के लोगों से हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से उस जगह क़याम करने की इजाज़त मांगी। हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने इजाज़त अता फ़रमा दी वह सब आबाद हो गए इस तरह मक्का मुअज़्ज़मा का शहर वुजूद में आया। (मआरिजुन्नुबुव्वत, स. 339)

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(11)

ज़िल क़अदह शरीफ़

दूसरे जुमे का बयान

शहरे मक्का की फ़ज़ीलत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ

तर्जमा : मुझे उस शहर की क़सम कि ऐ महबूब तुम इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हो।

(पारा 30, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने शहरे मक्का की क़सम याद फ़रमाई, अल्लाह तआला का किसी शहर की क़सम याद फ़रमाना उस शहर की अज़मत व बुज़ुर्गी को ज़ाहिर फ़रमाता है अब एक सवाल पैदा होता है कि अल्लाह तआला ने जो शहरे मक्का की क़सम याद फ़रमाई है तो उस की वजह और बुनियाद किया है ? क्या मक्का शहर में खानए कअ़बा है इस लिये इस की क़सम याद फ़रमाई या मक्का शहर में हजरे असवद और मक़ामे इब्राहीम जन्नती पत्थर हैं इस लिये उस की कसम याद फ़रमाई या मक्का शहर में आबे ज़म ज़म का कुंवा है सफ़ा व मरवह की पहाड़ियाँ हैं या अरफ़ात व मुज़दलफ़ा के मुक़द्दस मैदान और ग़ारे हिरा व ग़ारे सोर हैं ? तो जवाब मिलेगा नहीं हर गिज़ नहीं यह क़सम मैं ने इन के सबब याद नहीं फ़रमाई है।

बल्कि मैं ने क़सम इस लिये याद फ़रमाई है :

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝

तर्जमा : कि इस शहर में (ऐ महबूब) तुम तशरीफ़ फ़रमा हो। (कन्ज़ुल ईमान)

ऐ मेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! मैं ने इस शहरे मक्का की क़सम इस लिये याद फ़रमाई है कि मुक़द्दस ज़मीन ने तेरे क़दमों के बोसा का शरफ़ हासिल किया है।

खूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

खाई क़ुरआं ने ख़ाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुरमत पे लाखों सलाम

हज़रात ! शहर मक्का जिस की जमीन ने महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमों का बोसा लिया उसे उम्मुल कुरा, सय्यिदुल बलाद और बलदे अमीन का लकब हासिल हुआ। अल्लाह तआला को वह ज़मीन इतनी पसन्द आई कि उस को ज़ियारत गाहे आलम बना दिया और उस ज़मीन को अपने मुक़द्दस घर खाना कअ़बा के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। इरशाद है :

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ٥

तर्जमा : बे शक सब में पहला घर, जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ वह है जो मक्का में है। बरकत वाला और सारे जहान का राह नुमा। (पारा 4, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हदीस शरीफ़ (1) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, मैं ने अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मक्का मुकर्रमा के मक़ाम हुज़ूरह पर खड़े हुए देखा और आप सर ज़मीने मक्का के मुतअल्लिक़ फ़रमा रहे थे, खुदा की क़सम ! तू अल्लाह तआला की सारी ज़मीन में अफ़ज़ल है और अल्लाह तआला को प्यारी है। अगर मैं तुझ से निकाला न जाता तो कभी न निकलता।

(इब्ने माजह, मिश्कात शरीफ़)

हदीस शरीफ़ (2) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत है कि हमारे हुज़ूर रहमत व बरकत वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा से फ़रमाया : तू कैसा पाकीज़ा शहर है और तू मुझे बहुत प्यारा है।

(तिर्मिज़ी, मिश्कात शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! मक्का मुअज़्ज़मा का शहर नुज़ूले कुरआन और ज़हूरे इस्लाम का मुक़द्दस मरकज़ है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की विलादत इसी शहर में हुई, बे शुमार अम्बियाए किराम और रसूलाने इज़ाम खानए कअ़बा की ज़ियारत के लिये इस शहरे मुअज़्ज़म में तशरीफ़ लाए, कअ़बा शरीफ़ के इर्द गिर्द तीन सो अम्बियाए किराम की मुक़द्दस क़ब्रें हैं। रुक्ने यमानी और हजरे असवद के दरमियान सत्तर अम्बियाए किराम की क़ब्रें हैं और हतीम के अन्दर जो खाना कअ़बा का हिस्सा है उस में मीज़ाबे रहमत के नीचे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलम और उन की वालिदा माजिदह हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की क़ब्र है, मक्का शरीफ के क़ब्रिस्तान जन्नतुल मुअल्ला से क़ियामत के दिन ऐसे सत्तर हज़ार इन्सान उठाए जाऐंगे जो बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाखिल किये जाएंगे और उन में से हर एक सत्तर, सत्तर हज़ार गुनाहगारों की शफ़ाअत करेगा। उन के चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। (तारीख़े मक्का, जि. 1, स. 67)

तामीरे कअ़बा : तामीरे कअ़बा के मुतअल्लिक़ मुख्तलिफ़ रिवायात हैं, एक रिवायत के मुताबिक़ अल्लाह तआला के हुक्म से सब से पहले तामीरे कअ़बा फ़रिश्तों ने की और फिर फ़रिश्तों ने कअ़बा का तवाफ़ किया जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से ज़मीन पर उतरे तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम के साथ मक्का शरीफ़ गए और कअ़बा की तामीर फ़रमाई।

तूफ़ाने नूह अलैहिस्सलाम के बाद कअ़बा शरीफ़ की जगह एक सुर्ख़ टीला सा रह गया था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि तूफ़ाने नूह (अलैहिस्सलाम) के वक़्त अल्लाह तआला ने कश्तीए नूह (अलैहिस्सलाम) का रुख़ मक्का शरीफ़ की तरफ़ फेर दिया था, जिस में अस्सी (80) मर्द व ज़न सवार थे। उस कश्ती ने रात व दिन कअ़बा शरीफ़ का तवाफ़ किया। (तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 2, स. 447)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्लाम ने तूफ़ाने नूह (अलैहिस्सलाम) के चार सो साल के बाद अल्लाह तआला के हुक्म से तामीरे कअ़बा किया।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और आप के प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने कअ़बा शरीफ़ की तामीर के सिलसिले में खुदाई शुरू की तो कअ़बा की बुनियाद ज़ाहिर हो गई

तामीरे कअ़बा में इस्तिमाल होने वाले पत्थर फ़रिश्ते पाँच पहाड़ों, जबले तूरे सीना, तूरे ज़ैतून, कोहे लिबनान, कोहे जूदी और हिरा पहाड़ी से लाए।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पत्थर देते और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कअ़बा तामीर करते थे। (तारीख़े मक्का मुकर्रमा, जि. 2, स. 43, तफ़सीरे मज़हरी, जि 2, स. 224)

तारीख़े मक्का मुकर्रमा में है कि तामीर के बाद मुख़्तलिफ़ ज़मानों में कअ़बा मुअज़्ज़मा की तामीर होती रही है, कबीला जुरहम, इमालक़ा, क़ुसय बिन कलाब, क़ुरैश, अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर और हज्जाज बिन यूसुफ़ ने भी कअ़बा तामीर की। (तारीख़े मक्का मुकर्रमा, जि. 2, स. 43)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने तामीरे कअ़बा के वक़्त दुआ मांगी। अल्लाह तआला उस का ज़िक्र क़ुरआने करीम में फ़रमाता है।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

तर्जमा : और जब उठाता था इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) उस घर की नीवें और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) यह कहते हुए ऐ रब हमारे ! हम से क़ुबूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता। (पारा 1, रुकू 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल जब तामीरे कअ़बा कर रहे थे तो उसी वक़्त यह भी दुआ मांगी कि :

कि ऐ हमारे रब ! अपने महबूब रसूल, नबीए आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को हमारी नस्ल में पैदा फ़रमा और यह शरफ़ व बुज़ुर्गी हमें नसीब फ़रमा। क़ुरआने करीम इरशाद फ़रमाता है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

तर्जमा : ऐ रब हमारे ! और भेज उन में एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमाए बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला। (कन्ज़ुल ईमान)

ख़लील व ज़बीह अलैहिमस्सलाम की दुआ क़ुबूल हुई आप दोनों की नस्ले पाक से अल्लाह तआला ने हमारे प्यारे रसूल प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मब्ऊस फ़रमाया।

हज़रत अरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَنَا دَعْوَةُ اَبِیْ اِبْرَاهِیْمَ وَبِشَارَةُ عِیْسٰی ٥

यानी मैं अपने बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्लाम की दुआ और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की बशारत हूँ।

(मुस्नद इमाम अहमद, तफ़सीर इब्ने कसीर, जि. 2, स. 184)

कअ़बा मुअज़्ज़मा की शान व अज़मत

हदीस शरीफ़ 1 : कअ़बा पर पहली नज़र पड़ते ही जो दुआ की जाए मक़बूल है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 458)

हदीस शरीफ़ 2 : उम्मुल मोमिनीन आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اَلنَّظْرُ اِلَی الْکَعْبَةِ عِبَادَةٌ यानी कअ़बा को देखना इबादत है।

(कन्ज़ुल उम्माल, किताबुल अमल, जि. 4, स. 458)

हदीस शरीफ़ 3 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की एक सो बीस रहमतें हर दिन कअ़बा मुअज़्ज़मा पर नाज़िल होती हैं जिन में से

سِتُّوْنَ لِلطَّائِفِیْنَ यानी साठ रहमतें कअ़बा के तवाफ़ करने वालों पर

وَاَرْبَعُوْنَ لِلْمُصَلِّیْنَ और चालीस रहमतें वहाँ नमाज़ पढ़ने वालों पर।

وَعِشْرُوْنَ لِلنَّاظِرِیْنَ और बीस रहमतें कअ़बा को देखने वालों पर नाज़िल होती हैं।

(बैहकी फ़ज़ाइले हज, 105)

मस्जिदे कअ़बा में एक नमाज़, एक लाख नमाज़ के बराबर है

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَصَلٰوةٌ فِیْ مَسْجِدِیْ خَمْسِیْنَ اَلْفَ صَلٰوةٍ وَصَلٰوتُهٗ فِی الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ بِمِائَةِ اَلْفِ صَلٰوةٍ

यानी मदीना मुनव्वरा की मेरी मस्जिद में पचास हजार का सवाब है और मक्का मुकर्रमा की मस्जिदे हराम में एक लाख नमाजों का सवाब है। (इब्ने माजह, जि. 1, स. 102, मिश्कात, स. 72)

दरे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर कअ़बा की हाज़री

हदीस शरीफ़ 5 : हजरत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि कअ़बा के कअ़बा महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन कअ़बा को सजा कर मेरी क़ब्रे अनवर के पास लाया जाएगा।

فَتَقُوْلُ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدُ ۝

यानी कअ़बा अर्ज करेगा या नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप पर सलाम हो, तो मैं उस को जवाब में कहूँगा।

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ يَا بَيْتَ اللّٰهِ

सलाम हो तुझ पर ऐ अल्लाह के घर।

फिर हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कअ़बा से फ़रमाएंगे कि ऐ कअ़बा ! मेरे बाद मेरी उम्मत तेरे साथ कैसे पेश आई ? तो कअ़बा कहेगा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप की उम्मत में से जो मेरे पास आया था बरोज़े क़ियामत में उस की किफ़ायत व शफ़ाअत करूँगा और जो मेरे पास नहीं आया तो आप उस की किफायत व शफ़ाअत करें। (दुर्रे मन्सूर, जि. 1, स. 137)

हजरे असवद जन्नती पत्थर है

ऐ ईमान वालो ! हजरे असवद जन्नती पत्थर है जो कअ़बा मुअज़्ज़मा के जुनूब मशरिक़ी कोने में नसब है और लोगों के गुनाहों को चूसते चूसते काला पड़ गया।

हदीस शरीफ़ 1 : हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हजरे असवद जन्नत से आया है।

وَاَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ

और दूध से ज़्यादा सफ़ेद था उसे लोगों के गुनाहों ने स्याह कर दिया।
(तिर्मिज़ी, जि. , स. 177, मिश्कात)

हदीस 2 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे आक़ा रहमत व बरकत वाले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : रब्बे कअ़बा की क़सम अल्लाह तआला हजरे असवद को क़ियामत के दिन उठाएगा। لَهٗ عَيْنَانِ يُبْصِرُ بِهِمَا وَلِسَانٌ يَّنْطِقُ بِهٖ यानी उस की दो आँखें होंगी जिन से वह देखता होगा

और उस की एक ज़बान होगी जिस से वह बोलता होगा।
जिस ने उस को चूमा होगा उस के मुतअल्लिक़ गवाही देगा।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजह, जि. 2, स. 211)

हदीस शरीफ़ 3 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हजरे असवद के पास ईमान के साथ हाज़िर हो तो हजरे असवद क़ियामत के दिन उस शख़्स की शफ़ाअत करेगा।

(दुर्रे मन्सूर, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 12, स. 98)

हदीस शरीफ़ 4 : जलीलुल क़द्र मुहद्दिस इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस शरीफ़ नक़्ल की है कि हजरे असवद के क़रीब मुसलमान ख़ुलूसे नियत के साथ अल्लाह तआला से जो भी दुआ मांगे वह उसे मिल कर रहेगा। (मुसन्निफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हदीस शरीफ़ 5 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हजरे असवद के पास तशरीफ़ लाए और अपने मुबारक होंटों से बहुत देर तक हजरे असवद का बोसा लेते रहे। हजरे असवद के क़रीब हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को रोते हुए देखा तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ! ऐ उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) यही जगह है जहाँ रोया और आंसू बहाया जाता है। (इब्ने माजह, जि. 2 स. 211)

हदीस शरीफ़ 6 : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हजरे असवद का बोसा लिया और फ़रमाया कि मैं जानता हूँ तू एक पत्थर है न तो नफ़ा दे सकता है और न नुक़सान पहुँचा सकता है। अगर मैं ने अपने आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तुझे बोसा लेते न देखता तो मैं तुझे कभी भी बोसा न लेता। (मुस्लिम जि. 1, स. 413, इब्ने माजह, जि. 2, स. 211, बुख़ारी, जि. 1, स. 217)

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो क़रीब ही खड़े थे, हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गुफ़्तुगू सुन कर फ़रमाया। ऐ उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैं ने अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि हजरे असवद नफ़ा भी देता है और नुक़सान भी। जब मोमिन हजरे असवद को चूमता है तो हजरे असवद उस मोमिन को नफ़ा देता है कि उस के गुनाहों को चूस लेता है और जब काफ़िर हजरे असवद को हाथ लगाता है तो उस को नुक़सान पहुँचाता है। यानी मोमिन के गुनाहों को काफ़िर की तरफ़ मुन्तक़िल कर देता है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बात को सुन कर रो पड़े और इरशाद फ़रमाया : मैं अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूं उस दिन से कि उमर रहे और अली का साया न रहे।

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) (तारीख़े मक्का, जि. 2, स. 1209, अल मुस्तदरिक, जि 1, स. 457, फ़तहुल बारी, जि. 3, स. 462)

इस रिवायत को तब्लीग़ी जमाअत के अमीर मौलवी मुहम्मद ज़करिया और देवबन्दी जमाअत के मौलाना मौलवी मुहम्मद अब्दुल मअबूद देवबन्दी ने नक़ल किया है। (फ़ज़ाइले हज, स. 108)

ऐ ईमान वालो ! ज़ाती तौर पर यानी बज़ाते खुद नफ़ा और नुक़सान देना यह शान सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की है और अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से हजरे असवद भी नफ़ा और नुक़सान पहुँचाने की शान रखता है। बस इसी तरह अम्बियाए किराम और औलियाए किराम का भी मुआमला है कि यह हज़रात ज़ाती तौर पर यानी बज़ाते खुद बग़ैर अल्लाह तआला की बख़्शिश व अता के न नफ़ा दे सकते हैं और न ही नुक़सान।

लेकिन अल्लाह तआला की दी हुई ताक़त व कुव्वत से हर नबी और हर वली नफ़ा भी दे सकते हैं और नुक़सान भी पहुँचा सकते हैं जैसे हिन्द के राजा हमारे प्यारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ग़ुलामों की मदद फ़रमाते हैं और हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मुरीदों को और हमारे आक़ा सरकार इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने आशिक़ों की और हमारे मालिक व मुख़्तार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने हर उम्मती की मदद फ़रमाते हैं और नफ़ा भी देते हैं और नुक़सान से बचाते भी हैं।

बद नसीब हैं वह लोग जो हजरे असवद की ताक़त व कुव्वत को तो मानते हैं मगर अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम और औलियाए इज़ाम अलैहिमुर्रिज़वान की ताक़त व कुव्वत का इनकार करते हैं।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यानी महबूब व मुहिब्ब में नहीं मेरा तेरा

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

दुरूद शरीफ़ :

इसी तरह की बात हज़रत अल्लामा इमाम अहमद क़स्तलानी ने इरशादुस्सारी, जि. 3, स. 1056 पर। हज़रत अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ने फ़तहुल बारी, जि. 3, स. 462 पर और मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात शरह मिश्कात, जि. 5, स. 325 पर तहरीर फ़रमाया है कि :

बज़ाते ख़ुद ज़ाती तौर पर किसी की मदद करना यह शान अल्लाह तआला की है।

और अल्लाह तआला की अता व बख़्शिश से नफ़ा और नुक़सान पहुँचाना और लोगों की मदद करना यह शान हर नबी और हर वली को हासिल है मगर मानेगा मोमिन और मुनाफ़िक़ इनकार करेगा।

हमारे आक़ा के सलाम की रहमत व बरकत

रहमत वाले नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐलाने नुबुव्वत से पहले जब भी मैं क़अबा मुअज़्ज़मा में तशरीफ़ लाता तो हजरे असवद ही वह पत्थर है जो मुझे पहचानता था और मुझे सलाम करता था।

ऐ ईमान वालो ! अपने प्यारे नवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सलाम की अज़मत व बरकत को अच्छी तरह जान लो कि हजरे असवद एक पत्थर होकर मेरे प्यारे नबी और प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को पहचानता था और आप पर सलाम पढ़ता था तो अल्लाह तआला का इनआम व इकराम हजरे असवद जन्नती पत्थर को यह मिला कि जब तो तू मेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम करता था तो अब मेरे महबूब के उम्मती, कअबा का तवाफ़ करने वाले, हर चक्कर में तुझे कियामत तक सलाम करते रहेंगे। एक पत्थर को नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ महब्बत करने का इतना बड़ा सिला दिया गया, और हम तो मोमिन, मुसलमान। आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कलमे पढ़ने वाले उम्मती हैं अगर हम महब्बत व अक़ीदत के साथ आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ते रहेंगे तो अल्लाह तआला उस का अज़ीम सिला व बदला हम को दोनों ज़हाँ में बरकत व रहमत और बख़्शिश व नजात व जन्नत की शक्ल में नसीब फ़रमाएगा।

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

बुज़ुर्गों के हाथ, पांव चूमने का सुबूत

अहादीसे करीमा और बुज़ुर्गों के अक़वाल बयान किये जाते हैं ताकि उन बद दीनों और गुमराहों के लिये दलील क़ाइम हो जाए जो बुज़ुरगाने दीन और मशाइख़े इज़ाम के हाथ पांव के चूमने को नाजाइज़ व हराम समझते हैं, बल्कि शिर्क व कुफ़्र भी कह देते हैं।

हदीस शरीफ़ : 1 हज़रत वाज़ेअ बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए।

فَاَخَذْنَا بِيَدِهٖ وَرِجْلَيْهِ وَقَبَّلْنَاهَا ٥

(यानी हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते मुबारक और पाए अक़दस का बोसा लिया। (अल अदबुल मुफरद, इमाम बुख़ारी, स. 47)

हदीस शरीफ़ : 2 हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं। 0 فَقَبَّلْنَا يَدَهٗ हम ने नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ मुबारक को चूमा। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 326, अल अदबुल मुफरद, स. 436)

हदीस शरीफ़ 3 : हज़रत ज़ारेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते मुबारका में मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए और अपनी सवारियों से जल्दी से उतरने लगे।

فَنُقَبِّلُ يَدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَرِجْلَيْهِ 0

तो हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हाथ और पांव मुबारक को बोसा दिया। (अबू दाऊद, जि. 2, स. 363, मिश्कात शरीफ, स. 402)

हदीस शरीफ़ 4 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा जब अपने अब्बाजान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन के लिये खड़े हो जाते और उन का हाथ पकड़ते, उन्हें चूमते और अपने पास बिठाते और जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी प्यारी बेटी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले जाते तो हज़रत फ़ातिमतुज़्ज़हा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप की ताज़ीम के लिये खड़ी हो जातीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दस्ते मुबारक पकड़तीं और उसे बोसा देतीं और अपनी जगह पर बिठातीं। (अबू दाऊद जि. 2, स. 362, मिश्कात, स. 402)

हदीस शरीफ़ 5 : इमामुल मुहद्देसीन हज़रत क़ाज़ी अयाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अल्लामा इब्ने आबेदीन शामी हन्फ़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हदीस नक़्ल की। हज़रत बुरीदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक आराबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ और मोअजिज़ा तलब किया कि यह दरख़्त जो बहुत पुराना है उस को आप अपने पास बुला लें अगर यह दरख़्त आप के पास आ गया तो मैं आप पर ईमान ले आऊँगा तो हमारे प्यारे रसूल, मुख़्तार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस आराबी से फ़रमाया तू उस दरख़्त के पास जा और उस से कह कि

يَآ اَيُّهَا الشَّجَرُ اَنَّ مُحَمَّدًا يَدْعُوْكَ 0

ऐ दरख़्त ! तुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बुलाते हैं।

दरख़्त के पास आराबी पहुँचा और उस ने दरख़्त को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुक्म सुनाया तो दरख़्त दाहिने और बाएं झुका और अपनी जड़ों के साथ हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर अर्ज़ करने लगा। 0 اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

आराबी ने अर्ज़ किया अब आप उस को हुक्म फ़रमाएं कि यह दरख़्त अपनी जगह वापस चला जाए सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हुक्म दिया वह दरख़्त अपनी जगह वापस लौट गया यह अज़ीमुश्शान मोअजिज़ा देख कर आरावी मुसलमान हो गया और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुझे इजाज़त दीजिये ! कि मैं आप को सज्दा करूँ तो हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ आराबी ! अगर मेरी शरीअत में अल्लाह के अलावा किसी को सज्दा करना जाइज़ होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि वह अपने शोहर को सज्दा करे।

फिर आराबी ने अर्ज़ किया : فَأْذَنْ لِيْ أَنْ أُقَبِّلَ يَدَيْكَ وَرِجْلَيْكَ فَأَذِنَ لَهُ ۝

यानी आप मुझे इजाज़त दें कि आप के हाथ, पैर मुबारक को चूमूं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस आराबी को अपने हाथ और पाऊँ मुबारक को चूमने की इजाज़त दी। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 1, स. 299)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से दस्त बोसी और सज्दे का फ़र्क़ वाज़ेह हो गया कि सज्दा अल्लाह तआला के अलावा जाइज़ नहीं है और बुज़ुर्गों के हाथ और पैर को चूमना जाइज़ व हलाल है बल्कि सुन्नत से साबित है।

हदीस 6 : हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सरे मुबारक और दस्ते मुबारक को बोसा दिया। (मदारिजुन्नुवुव्वत, जि. 2, स. 694)

हदीस शरीफ़ 7 : हज़रत सुहेब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :

رَأَيْتُ عَلِيًّا يُقَبِّلُ يَدَيِ الْعَبَّاسِ وَرِجْلَيْهِ ۝

मैंने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथों और पांव को चूमते देखा। (अल अदबुल मुफ़रद, इमाम बुख़ारी, स. 437)

हदीस शरीफ़ 8 : हज़रत तमीम बिन सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि : हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मुल्के शाम तशरीफ़ लाए तो हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन का इस्तिक़बाल किया और उन से मुसाफ़हा कर के हाथों को बोसा दिया।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 9, स. 220, शरह मुस्लिम, जि. 3, स. 497)

हदीस शरीफ़ 9 : अल्लामा इब्ने कसीर दमिश्क़ी ने नक़्ल किया कि हज़रत साबित ताबई ने ख़ादिमे रसूल हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा तुम ने कभी अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मस किया था, फ़रमाया हाँ: तो हज़रत साबित ताबई रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मुझे अपना हाथ दो ताकि उस को चूमूं।

فَقَبَّلَهَا यानी हज़रत साबित ताबई ने हज़रत अनस सहाबी के हाथ को चूम लिया। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 9, स. 90, अदबुल मुफ़रद, स. 436)

मुहद्दिसे जलील अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी तहरीर फ़रमाते हैं कि नेक व सालेह बुज़ुर्गों के हाथ, पांव को चूमना बाइसे बरकत और मुस्तहसन फ़ेअल है। (उमदतुल कारी, जि. 9, स. 241)

फ़तावा आलमगीरी में है कि आलिमे दीन और आदिल बादशाह का हाथ चूमना जाइज़ है।
(फ़तावा आलमगीरी, जि 4, स. 250 फ़तावा अब्दुल हैय्यि, जि. 3, स. 120)

उलमाए देवन्बद के नज़दीक भी बुज़ुर्गों के हाथ, पांव चूमना जाइज़ है

मौलवी रशीद अहमद गंगोही ने फ़तवा दिया कि दीन दार लोगों क़ी ताज़ीम के लिये खड़ा होना दुरुस्त है और उन के पांव को चूमना भी दुरुस्त है। हदीस से साबित है।
(फ़तावा रशीदिया, स. 459)

फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द में है। आलिम व सूफ़ी पाबन्दे शरीअत का हाथ चूमना जाइज़ है। (फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द, जि. 1, स. 66)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम, ताबेईने इज़ाम और बुज़ुर्गों के अ क़वाल व बयानात और उन की ज़िन्दगी से साफ़ तौर पर वाज़ेह और साबित हो गया कि नेक व सालेह के हाथ पांव चूमना सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं बल्कि हुसूले बरकत का सबब है। मुख़ालिफ़े अहले सुन्नत देवबन्दी, वहाबी और तब्लीग़ी जमाअत के मौलवियों ने भी अल्लाह वालों के हाथ चूमना और उन के लिये ताज़ीमन खड़ा होना जाइज़ व दुरुस्त लिखा जैसा कि हवाला गुज़रा।

मगर अफ़सोस सद अफ़सोस ! कि आज कल के वहाबी, देवबन्दी और तब्लीग़ी अल्लाह वालों की इज़्ज़त व ख़िदमत को और उन के हाथ चूमने को नाजाइज़ बल्कि शिर्क तक कह देते हैं। कम से कम अपने घर के मौलवियों की बात मान लेते तो एक मुस्तहसन फ़ेअल को नाजाइज़ और शिर्क न कहते।

अल्लाह तआला हिदयात नसीब फ़रमाए और हम सुन्नियों को अपने बुज़ुर्गों के हाथ, पांव चूमने और उन की ताज़ीम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

मक़ामे इब्राहीम : मक़ामे इब्राहीम भी जन्नती पत्थर है जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कअबा मुअज़्ज़मा की तामीर फ़रमाई। जब कअबा की दीवार ऊंची उठती तो यह पत्थर खुद ब खुद ऊँचा हो जाता और ख़ुद ब ख़ुद नीचा हो जाता था। यह मोअजिज़ा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़दमे मुबारक का है।

उस पत्थर यानी मक़ामे इब्राहीम पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के दोनों क़दमों के निशान ज़ाहिर हो गए जो आज तक मौजूद हैं।

हज़रात ! अल्लाह तआला को अपने महबूब बन्दों से तअल्लुक़ व निस्बत रखने वाली हर चीज़ से प्यार व महब्बत होती है कि एक पत्थर जिस को अल्लाह तआला के ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पांव से छू जाने का शरफ़ मिल गया तो वह पत्थर अल्लाह तआला को इस क़दर महबूब व पसन्दीदा हो गया कि मुसलमानों को क़ियामत तक के लिये हुक्म दे दिया कि उस को अपनी नमाज़ के लिये मुसल्ला बना लो।

وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى

तर्जमा : और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ।

(पारा 1, रुकू: 15, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

और कुरआने करीम में एक और जगह अल्लहा तआला इरशाद फ़रमाता है :

فِيْهِ اٰيٰتٌ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرَاهِيْمَ ج

तर्जमा : उस में खुली निशानियाँ हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह।

(पारा 4, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला अपने नेक व प्यारे बन्दों से किस क़दर महब्बत व प्यार फ़रमाता है कि जिस जगह पर नेक व सालेह का क़दम पड़ जाए तो उस जगह को मुसल्ला बनाने का हुक्म होता है तो जब नेकों के क़दम की बरकत व रहमत का यह आलम है तो खुद नेक व सालेह की अज़मत व बुज़ुर्गी का क्या आलम होगा।

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(11)

ज़िल क़अदह शरीफ़

तीसरे जुमे का बयान

हज की फ़ज़ीलत व अहम्मियत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ط

तर्जमा : और हज और उमरह अल्लहा के लिये पूरा करो। (पारा 2, रुकू 8, तर्जमा कन्जुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला के ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब कअ़बा मुअज़्ज़म की तामीर से फ़ारिग़ हो गए तो अल्लाह तआला ने उन को एलाने हज का हुक्म दे दिया।

وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ

तर्जमा : और लोगों में हज की आम निदा कर दे। (पारा 17, रुकू 11, तर्जमा कन्जुल ईमान)

अल्लाह तआला का हुक्म पाकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का शरीफ़ के जबल अबू क़ुबैस पर खड़े होकर ऐलान किया कि मैं ने अल्लाह तआला का घर कअ़बा तामीर कर दिया है। ऐ लोगो ! कअ़बा का हज और उस की ज़ियारत के लिये आओ।

एक रिवायत के मुताबिक़ अल्लाह तआला की जानिब से आम ऐलान का हुक्म सुन कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ऐ मौलाए करीम मेरे बन्दे सारी दुनिया में आबाद हैं, मेरी आवाज़ कहाँ तक पहुँचेगी, तो अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि आवाज़ देना ऐ इब्राहीम ! तेरा काम है और पूरी दुनिया के इन्सानों तक आवाज़ को पहुँचा देना मेरा काम है। आप की उस आवाज़ को अल्लाह तआला के हुक्म से ज़मीन व आसमान। शिमाल व जुनूब मशरिक़ व मग़रिब (पूरब, पश्चिम, उत्तर दक्षिण) में

रहने वाली तमाम मखलूक़ ने सुना। यह सदा चार दांगे आलम में गूंज गई। न सिर्फ़ दुनिया में मौजूद इन्सानों के कानों में यह आवाज़ पहुँची बल्कि औरतों के इरहाम और मर्दो के अस्लाब में जो बच्चे थे उन्होंने भी यह आवाज़ सुनी। क़ियामत तक पैदा होने वाले इन्सानों की रूहों ने भी अल्लाह तआला के ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का यह ऐलान सुना और जिस ने उस ऐलाने इब्राहीमी पर लब्बैक कही। उसे ही हज की सआदत नसीब होगी और जितनी बार जिस ने लब्बैक कही है उतनी मरतबा वह शख्स हज करेगा।

(तारीखे मक्का, रूहुल बयान शरीफ़)

अल्लाह तआला का इरशाद :

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعٰلَمِينَ ○ فِيهِ اٰيٰتٌ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ إِبْرٰهِيمَ ج
وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ اٰمِنًا ط وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ط
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِينَ ○

तर्जमा : बे शक सब में पहला घर जो लोगों की इबादत को मुक़र्रर हुआ वह है जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहान का राहनुमा, उस में खुली निशानियाँ हैं इब्राहीम के खडे होने की जगह, और जो उस में आए अमान में हुआ और अल्लाह के लिये लोगों पर उस घर का हज करना है जो उस तक चल सके और जो मुनकिर हो तो अल्लाह तआला सारे जहान से बे परवाह है। (पारा 4, रुकू 1, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है

शाहे तैबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशाद :

हदीस शरीफ़ 1 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खुतबा पढ लिया और फ़रमाया ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ किया गया। लिहाज़ा हज करो एक शख्स ने अर्ज़ की। क्या हर साल ? या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुकूत फ़रमाया (जवाब न दिया)। उन्होंने तीन बार यह कलमा कहा। इरशाद फ़रमाया अगर मैं हाँ कह देता तो तुम पर (हर साल हज करना) वाजिब हो जाता और तुम से न हो सकता फिर फ़रमाया जब तक मैं किसी बात को बयान न करूँ तुम मुझ से सवाल न करो। अगले लोग कसरते सवाल और फिर अम्बियाए किराम की मुखालिफ़त से हलाक हुए। लिहाज़ा जब मैं किसी बात का हुक्म दूँ तो जहाँ तक हो सके उसे करो और जब मैं किसी बात से मना करूँ तो उसे छोड़ दो।

(सही मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 432)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर से सुनो और याद रखो कि हमारे सरकार अहमदे मुख्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम पर हज फ़र्ज़ किया गया। वह कौन लोग हैं जिन को आक़ाए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम मुखातब कर के फरमा रहे है वह ईमान वाले है सावाए किराम अलैहिमुर्रिज़्वान हैं। मालूम हुआ कि हज बे ईमान, बद अक़ीदा पर फ़र्ज़ नहीं है बल्कि सिर्फ़ सहीहुल अक़ीदा मोमिन, मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

और दूसरी बात यह है कि पूछने वाले ने कहा कि क्या हर साल हज फ़र्ज़ है ? तो हमारे हुज़ूर सरापा नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सुकूत फ़रमाया यानी खामोश रहे हत्ता कि पूछने वाले ने तीन बार सवाल किया क्या हर साल हज फ़र्ज़ है ? तो हमारे रसूल मालिको मुख़्तार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अगर मैं हाँ कह देता तो तुम पर हर साल हज करना फ़र्ज़ हो जाता। मालूम हुआ कि अल्लाह तआला कादिर व कय्यूम ने अपने महबूब रसूल अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मोहताज व मजबूर नहीं बनाया बल्कि दीन हो या दुनिया हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार बनाया है।

खालिके कुल ने आपको मालिके कुल बना दिया
दोनों जहाँ हैं आपके कब्ज़ा व इख़्तियार में

अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी ज़ीनते अर्श व कअबा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ऐसी शान व शौकत अता की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अगर हाँ फ़रमा देते तो हर साल हज करना फर्ज़ हो जाता। लेकिन आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सुकूत व खामोशी ने उम्मत को एक बड़ी दुश्वारी और मुश्किल से बचा लिया। कभी आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का बोलना उम्मत को दुशवारी से बचाता है और कभी खामोश रहना बचा लेता है।

खूब फ़रमाया आशिके मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

वह ज़बां जिस को सब कुन की कन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

वह दहन जिस की हर बात वहिये खुदा
चश्मए इल्मो हिकमत पे लाखों सलाम

हज करने वाला ऐसा पाक हो जाता है जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुआ है

हदीस शरीफ 2 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जिस ने हज किया और रफ़स (फ़हश कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुआ। (बुखारी, मुस्लिम [illegible])

हज्जे मक़बूल का सवाब जन्नत है

हदीस शरीफ़ 3 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उमरह से उमरह तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो दरमियान में हुए और हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है। (बुख़ारी, मुस्लिम, जि. 1, स. 436)

हज पिछले गुनाहों को मिटा देता है

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत इब्ने आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला के हबीब उम्मत के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज उन तमाम गुनाहों को दफ़ा कर देता है जो पेश्तर (हज से पहले) हुए हैं। (सही मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 76)

हज कमज़ोरों के लिये जिहाद है

हदीस शरीफ़ 5 : हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरताज ज़ीनते अर्श व कअ़बा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज कमज़ोरों के लिये जिहाद है। (इब्ने माजह शरीफ़, जि. 2, स. 127)

ऐ ईमान वालो ! चौदह सो बरस पहले हमारे रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया था कि कमज़ोरों के लिये हज करना ऐसा है जैसे जिहाद करना है और आज के दौर में जहाँ बे शुमार सहूलतें और आसानियाँ हैं मगर हम देखते हैं कि आज भी हज करना आसान नहीं है। अच्छे अच्छे को पसीना आ जाता है गोया हज करना जिहाद करना है।

हज व उमरह से मोहताजी दूर हो जाती है और दौलत मन्द हो जाता है

हदीस शरीफ़ 6 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आफ़ताबे रिसालत माहताबे नुबुव्वत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हज व उमरह मोहताजी और गुनाहों को ऐसे दूर करते हैं जैसे भट्टी लोहे और चाँदी और सोने के मेल को दूर करती है और हज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है। (तिर्मिज़ी शरीफ़, इब्ने माजह, जि. 2, स. 213)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने तमाम रहमत व बरकत और रोज़ी व जन्नत के तमाम ख़ज़ानों का क़ासिम हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को बनाया है और क़ासिमे नेअमत व जन्नत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया है कि हज व उमरह से मोहताजी व मुफ़लिसी ख़त्म हो जाती है और तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं , गोया हज व उमरह करने वाला गुनाहों से पाक और ग़नी व दौलत मन्द हो जाता है।

रमज़ान शरीफ़ में उमरह करना नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हज करना है

हदीस शरीफ़ 7 : हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि मक्के के सरकार, मदीने के ताजदार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : रमज़ान शरीफ़ में उमरह करना मेरे सथ हज करने के बराबर है।

(बुखारी, मुस्लिम जि. 1, स. 409)

ऐ ईमान वालो ! हो सके तो रमज़ान शरीफ़ में उमरह करो। इस लिये कि रमज़ान शरीफ़ में जिस शख़्स ने उमरह किया गोया उस शख़्स ने अल्लाह के महबूब रसूल, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हज किया और उस उमरह का सवाब प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हज करने के बराबर है।

हाजी चार सौ की शफ़ाअत कराएगा

हदीस शरीफ़ 8 : हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार शफ़ीए रोज़े शुमार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया हाजी अपने घर वालों में चार सो की शफ़ाअत करेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा जैसे उस दिन मां के पेट से पैदा हुआ। (तरग़ीब व तरहीब, जि. 2, स. 166)

ऐ ईमान वालो ! हदीस शरीफ़ आप हज़रात ने सुन ली कि एक हाजी चार सो अफ़राद की बख़्शिश कराएगा। जब एक हाजी को अल्लाह तआला ने ऐसा इख़्तियार अता फ़रमाया है तो हमारे ख़्वाजा, हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ और हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा और फिर हमारे प्यारे रसूल सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किस क़दर इख़्तियार व कुव्वत अता किया होगा तो यक़ीनन हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बे हिसाब गुनाहगारों क़ी शफ़ाअत व बख़्शिश फ़रमाएंगे।

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

पेशे हक़ मुज़्दा शफ़ाअत का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएंगे हम को हंसाते जाएंगे

वुसअतें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाऐंगे और आप छुपाते जाऐंगे

दुरूद शरीफ़ :

पैदल हज करने वाले को हर क़दम पर सात करोड़ नेकियाँ मिलती हैं

हदीस शरीफ़ 9 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मक्का से पैदल हज को जाए यहाँ तक कि मक्का वापस आ जाए। उस के लिये हर क़दम पर सात सो नेकियाँ हरम शरीफ़ की नेकियों के मिस्ल लिखी जाएंगी। पूछा गया हरम की नेकियों की क या मिक़दार है ? फ़रमाया हर नेकी एक लाख नेकी है तो उस हिसाब से हर क़दम पर सात करोड़ नेकियाँ मिलती हैं। (इब्ने खुज़ैमा, हाकिम, तरगीब तरहीब, जि. 2, स. 166)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़े वह दिन नसीब फ़रमाए कि आप हज के लिये मक्का शरीफ़ जाएं तो मक्का मुकर्रमा से मिना व अरफ़ात हज के लिये पैदल जाऐंगे और अरफ़ात से मुज़दलफ़ा और मिना और फिर मक्का शरीफ़ पैदल आएं कि अल्लाह तआला हर क़दम पर सात करोड़ नेकियाँ अता फ़रमाता है।

हाजी की दुआ से बख़्शिश हो जाती है

हदीस शरीफ़ 10 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि शफ़ीए मेहशर महबूबे दावर, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि (हज की बरकत से) हाजी की मग़फ़िरत हो जाती है और हाजी जिस शख़्स के लिये इस्तिग़फ़ार व बख़्शिश की दुआ करे उस शख़्स की भी मग़फ़िरत व बख़्शिश हो जाती है। (मगर ईमान वाला होना शर्त है) (बज़ार तबरानी, तरगीब तरहीब, जि. 2, स. 167)

हज के लिये निकला और मर गया तो क़ियामत तक हज का सवाब

हदीस शरीफ़ 11 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आफ़ताबे नुबुव्वत माहताबे रिसालत प्यारे मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हज के लिये निकला और मर गया तो क़ियामत तक उस के लिये हज करने का सवाब लिखा जाएगा और जो उमरह के लिये निकला और मर गया तो उस शख़्स के लिये क़ियामत तक उमरह का सवाब लिखा जाएगा। (अबू यअला, ब हवाला बहारे शरीअत, हि. 6, स. 6)

हदीस शरीफ़ 12 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स हज या उमरह के लिये निकला और मर गया उस की पेशी नहीं होगी और न उस का हिसाब होगा और उस से कहा जाएगा तू जन्नत में दाखिल हो जा।

(तबरानी, अबू यअला, दार कुतनी बेहकी, तरगीब तरहीब, जि. 2, स. 178)

ताक़त होते हुए हज न करने वाला यहूदी या ईसाई हो कर मरेगा

हदीस शरीफ़ 13 : अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स इस्तिताअत व ताक़त रखते हुए भी हज न करे तो हो सकता है कि या तो यहूदी होकर मरे या ईसाई होकर मरे।

(मिश्कात शरीफ़, स. 222, तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 167)

हाजी से मिलना और दुआ करवाना सुन्नत है

हदीस शरीफ़ 14 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब तुम हाजी से मिलो तो उसे सलाम करो और मुसाफहा करो। हाजी के घर में दाखिल होने से पहले उस से दुआ कराओ। इस लिये कि वह बख़्शा हुआ है। (मिश्कात शरीफ, स. 223)

ऐ ईमान वालो ! हज 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुआ।

मस्अला : (1) हराम माल से हज करना नाजाइज़ व हराम है। हज को जाने के लिये जिस से इजाज़त लेना वाजिब है बग़ैर उस की इजाज़त के जाना मकरूह है। मसलन मां, बाप अगर उस की ख़िदमत के मोहताज हों और अगर मां बाप न हों तो यही हुक्म दादा, दादी का भी है। यह हुक्म फ़र्ज़ का है और अगर नफ़्ल हज हो तो मुतलकन मां, बाप की इताअत करे।

(दुर्रे मुख़्तार व हवाला बहारे शरीअत, हि. 6, स. 7)

मस्अला : (2) औरत जवान हो या बुढ़या अगर बग़ैर महरम या शोहर के हज को गई तो गुनाहगार हुई। मगर हज करेगी तो हज हो जाएगा। यानी फ़र्ज़ अदा हो जाएगा।

(बहारे शरीअत, हि. 6, स. 14)

दुआ : हम रब तआला जव्वादो करीम, रहमान व रहीम मौला तआला की बारगाह में दुआ करते हैं कि वह हमें बैतुल्लाह शरीफ़ का बार बार हज और कअबे का कअबा रोज़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पाक बारगाह की हाज़री बार बार नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(11)

ज़िल क़अदह शरीफ़

चौथे जुमे का बयान

फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ○

तर्जमा : और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाजिर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह तआला को बहुत तौबह कुबूल करने वाला महरबान पाएं।

(पारा 5, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! शहरे मदीना मुनव्वरा की हाज़री खुश नसीब मुसलमान को अता होती है। अल्लाह तआला वह दिन लाए जब हम सब मदीना शरीफ़ हाज़िर हों तो हम पर लाज़िम है कि शहरे महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब व एहतिराम हर क़दम पर मलहूज़ रखें और हम सांस भी लें तो अदब के साथ। आवाज़ पस्त हो, निगाह नीची हो, सर झुका हो। दस्त बस्ता अदब व एहतिराम का मुजस्समा बन कर हाज़िरी का शरफ़ हासिल करें।

संभल कर पांव रखना हाजियो शहरे मदीना है
कहीं ऐसा न हो कि सारा सफ़र बेकार हो जाए

और आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले
मदीना के ख़ित्ते ख़ुदा तुझ को रखे
ग़रीबों फ़क़ीरों को ठहराने वाले
चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

मदीना शरीफ़ का मक़ाम व मरतबा : एक मरतबा अल्लाह तआला के नबी हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम अपने तख़्त पर सवार होकर सारी दुनिया का गश्त कर रहे थे, आप के साथ उस जमाने के अम्बिया व उलमा थे और तख़्त के कनारे पर जिन्नात खड़े थे, तख़्त बराबर उड़ रह था, एक ऐसा मक़ाम आया जहाँ पहुँच कर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने तख़्त को नीचे उतरने का हुक्म दिया और तमाम हाज़िरीन को हुक्म दिया कि यह ज़मीन पैदल चल कर तय करो ? सब ने हुक्म की तामील की और पैदल चलने लगे, खुद हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम भी पैदल चलने लगे, जब उस ज़मीन का सफ़र पूरा हो गया तो उस मैदान से निकल कर तख़्त पर सवार हो गए और तख़्त परवाज़ करने लगा। हाज़िरीन में से किसी ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी ! हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम आप ने उस ज़मीन और मैदान का इस क़दर अदब व एहतिराम क्यों किया और आप ने पैदल चल कर उस ज़मीन और मैदान को क्यों तय किया ? आख़िर उस ज़मीन के अदब व एहतिराम की वजह किया है ?

तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अभी यह जगह जंगल है। एक ज़माना आएगा उस जगह पर एक शहर आबाद होगा। उस शहर का नाम मदीना मुनव्वरा होगा। उस शहर में अल्लाह तआला का प्यारा और आख़री नबी इमामुल अम्बिया अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी ज़िन्दगी का आख़री ज़माना गुज़ारेंगे और उसी ज़मीन पर आप का विसाल होगा और उसी ज़मीन में आप मदफ़ून होंगे, जहां आप की तुरबत बनाई जाएगी (जो कअबा और बैतुल मुक़द्दस और अर्शे आज़म से भी अफ़ज़ल व आला होगी) इस लिये उस ज़मीन और मैदान का अदब बजा लाया (मुलख़्ख़सन) (रूहुल बयान शरीफ़)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला के नबी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उस वक़्त अपने ज़माने में हमारे नबी सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तशरीफ़ आवरी से एक हज़ार साल पहले उस ज़मीन और चटयल मैदान का अदब व एहतिराम करते नज़र आते हैं जब हमारे मदीने वाले आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस ज़मीन में तशरीफ़ नहीं लाए थे और न ही उस चटयल मैदान में शहरे महबूब मदीना मुनव्वरा आबाद हुआ था तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम उस ज़मीन पर पैदल, बा अदब चलते नज़र आते हैं।

तो अगर आज हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम मदीना मुनव्वरा में आ जाएं जहाँ आक़ाए दो जहाँ महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आराम फ़रमां हैं तो उन के अदब व एहतिराम का किया आलम होगा।

खूब फ़रमाया हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

अल्लाहु अकबर अपने क़दम और यह ख़ाके पाक
हसरत मलायका को जहाँ वज़अ सर की है

हां हां रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग
ऊ तपाऊँ रखने वाले यह जा चश्मो सर की है

ऐ ईमान वालो ! शहरे पाक, मदीना मुनव्वरा में अपने प्यारे नबिये रहमत व बरकत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पुर नूर बारगाह की हाज़री के लिये ईमान वाले तड़पते और मचलते रहते हैं और अपने प्यारे रब, अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते हैं।

इलाही दिखा दे वह मदीना कैसी बस्ती है
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसाती है

और जब एक आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शहरे पाक महबूब, मदीना मुनव्वरा में हाज़री का शरफ़ हासिल कर लेता है और वहाँ के दिन व रात के अनवार व बरकात अपनी माथे की आँखों से देख लेता है और शहरे महबूब की गली और कूचे का नज़ारा कर लेता है तो बस उसी शहरे महबूब में ज़ीने और मरने की आरज़ू और तमन्ना करने लगता है।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हजरत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

रुख़सते क़ाफ़ला का शोर ग़श से हमें उठाए क्यों
सोते हैं उन के साए में कोई हमें जगाए क्यों
फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यों
दिल को जो अक़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यों

हज़रात ! शहरे मदीना मुनव्वरा वह अज़मत व बुज़ुर्गी और रहमत व बरकत की जगह है जहाँ जन्नत भी है और मालिके जन्नत भी। जहाँ रहमत ही रहमत है और रहमतुल लिल आलमीन भी हैं। इसी लिये [illegible] यारे ग़ार व यारे मज़ार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म, [illegible] उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन, हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा, हज़रत बिलाल हब्शी और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन ने मक्का मुकर्रमा में ज़िन्दगी के सारे अस्बाब व सामान छोड कर मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके शहर महबूब मदीना मुनव्वरा में अपने प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक कदमों के साए में सुकूनत पज़ीर हो गए और उन में से अकसर आज तक कुब महबूब में आराम फ़रमां हैं।

महबूबे रब्बे अर्श है उस सब्ज़ कुबा में
पहलू में जलवा गाह अतीक़ व उमर की है

हज़रात ! अल्लाह तआला ने क़ुरआने करीम में शहर मक्का मुकर्रमा की क़सम याद फ़रमाई है (जिस का बयान फ़ज़ाइले शहर मक्का में गुज़र चुका है) जिस की वजह भी क़ुरआने

करीम में वाज़ेह तौर से बयान कर दी है कि अल्लाह तआला के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़दमे नाज़ उस शहर में पड़ गया है तो शहरे मक्का इस क़दर फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी वाला हो गया कि अल्लाह तआला ने शहरे मक्का की क़सम याद फ़रमाई तो मुझे अर्ज़ यह करना है कि महबूब का क़दमे मुबारक शहरे मक्का में पड़ा और महबूब का क़दम ज़मीने मक्का से लगा। मगर हमेशा हमेश के लिये महबूब का क़दमे मुबारक मक्का मुकर्रमा में नहीं रहा।

लेकिन मदीना मुनव्वरा को यह शरफ़ व बरतरी हसिल है कि क़दमे महबूब उस ज़मीन में सिर्फ़ पड़ा ही नहीं बल्कि महबूबे खुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जिस्मे नूर व मरहत मदीना मुनव्वरा की पाक ज़मीन में मौजूद है और महबूबे खुदा ब नफ़्से नफ़ीस चौदह सो बरस से आज तक इसी पाक ज़मीन में आराम फ़रमा है तो अब मदीना मुनव्वरा की फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी का क्या आलम होगा।

इसी राज़ व हिकमत को आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं :

पेशे नज़र वह नो बहार सज्दे को दिल है बेक़रार
रोकिये सर को रोकिये हाँ यही इम्तिहान है

दुरूद शरीफ़ :

(1) शहरे महबूब की बुज़ुर्गी और नेकी

मस्जिदे नबवी में दो रकअत नमाज़ का सवाब हज्जे कामिल का सवाब है। हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं हमारे महबूब व महरबान नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स मस्जिदे नबवी में दो रकअत नमाज़ अदा करे तो वह शख़्स हज्जे कामिल का सवाब पाता है और जो शख़्स मस्जिदे कुबा में दो रकअत नमाज़ पढ़े तो उस शख़्स को उमरह का सवाब हासिल होता है। (बैहक़ी शरीफ़, जज़्बुल क़ुलूब, स. 17)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मस्जिदे नबवी शरीफ़ में किस क़दर रहमत व बरकत रखी है कि उस में मोमिन, सुन्नी मुसलमान दो रकअत नमाज़ अदा करेगा तो हज्जे कामिल का सवाब हासिल होता रहेगा।

और शैख़ मुहक़्क़िक़ लिखते हैं कि मक्का मुकर्रमा में पूरे साल में सिर्फ़ एक हज है और हमारे मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में हर दिन कई हज का सवाब हासिल किया जा सकता है।
(जज़्बुल क़ुलूब, स. 17)

हज़रात ! महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा को जो बुज़ुर्गी और बरतरी हासिल है वह दुनिया के किसी शहर हत्ता कि मक्का

मुकर्रमा को भी हासिल नहीं।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

शहरे मदीना तैय्यिबा

हदीस शरीफ़ 1 :हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मदीना मुनव्वरा के रास्तों पर फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं उस में ताऊन और दज्जाल दाख़िल नहीं हो सकता। (बुख़ारी, जि. 1, स. 252 मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 444, जज़बुल क़ुलूब, स. 27)

हज़रात ! मदीना तैय्यिबा वह प्यारा और अज़मत व बरकत वाला शहर है जिस की हर गली और कूचा में अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा दिया है जो मदीना तैय्यिबा की पास्बानी और हिफ़ाज़त करते हैं।

दुनिया के बादशाहों के शहरों की हिफ़ाज़त व चौकीदारी के लिये इन्सान चौकीदारी करते हैं मगर महबूबे ख़ुदा सुल्ताने दो जहाँ सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा की पासबानी और चौकीदारी अल्लाह तआला की नूरी मख़लूक़ फ़रिश्ते करते हैं।

अजब रंग पर है बहारे मदीना
कि सब जन्नती हैं निसारे मदीना

न जन्नत, न जन्नत की गलियों में देखा
मज़ा जो मदीने की गलियों में देखा

दुरूद शरीफ़ :

मदीना की तकलीफ़ पर जो सब्र करे शफ़ाअत पाएगा

हदीस शरीफ़ 2 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मदीना की तकलीफ़ व शिद्दत पर मेरी उम्मत में से जो कोई सब्र करे क़ियामत के दिन में उसका शफ़ीअ होऊँगा। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 444)

हदीस शरीफ़ 3 : हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मदीना लोगों के लिये बहतर है अगर जानते। मदीना को जो शख़्स बतौर एराज़ छोड़े गा अल्लाह तआला उस के बदले में उसे लाएगा जो उस से बेहतर होगा और दमीना की तकलीफ़ व मशक़्क़त पर जो साबित क़दम रहेगा रोज़े क़ियामत में उस का शफ़ी या शहीद होंगा। (सही मुस्लिम, जि. 1, स. 440)

मदीना में मरने वाला शफ़ाअत पाएगा

हदीस शरीफ़ 4 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस से हो सके कि मदीना में मरे तो मदीना ही में मरे कि जो शख़्स मदीना में मरेगा मैं उस की शफ़ाअत करूँगा। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स 229, इब्ने माजह, स 225, मिश्कात, स 240)

ऐ ईमान वालो ! हमारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तो अपनी उम्मत के सारे गुनाहगार मोमिनों की शफ़ाअत फ़रमाएंगे, मगर मदीना तैय्यिबा में मरने वालों के लिये ख़ास शफ़ाअत फ़रमाएंगे।

और मदीना तैय्यिबा में मरने वाला मरते ही जन्नत में दाख़िल कर दिया जाता है।

आशिके मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तैबा में मर के ठन्डे चले जाओ आँखें बन्द
सीधी सड़क यह शहर शफ़ाअत नगर की है

दुरूद शरीफ़ :

आशिके रसूल शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि इस्लाम के फ़ुतूहात (कामयाबियों) के ज़माने में जितने शहरों पर इस्लाम का गलबा और क़ब्ज़ा हुआ वह सब तलवारों की ताक़त से हासिल किये गए हत्ता कि मक्का मुशर्रफ़ा की फ़तह भी तलवार से हुई। मगर मदीना मुनव्वरा बग़ैर जंग व जिदाल और बग़ैर तलवार के इस्लाम के दामन में आया। अल्लाह तआला ने यह पसन्द नहीं फ़रमाया कि जो शहर मेरे महबूब रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मसकन और आख़री आराम गाह हो वहाँ लड़ाई, झगड़ा हो और तलवार चले। (जज़बुल कुलूब, स. 29)

महबूबे ख़ुदा का महबूब मदीना

हदीस शरीफ़ 5 : हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मदीना शरीफ़ के लिये दुआ की : اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا الْمَدِيْنَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ اَوْ اَشَدَّ

ऐ अल्लाह तआला मदीना को मेरे लिये महबूब बना जैसे हम को मक्का महबूब है बल्कि उससे ज़्यादा (मदीना को महबूब बना दे)

(बुख़ारी, जि. 1, स. , स. 253. मुस्लिम, जि. 1, स. 443, मुअत्ता इमाम मालिक, मिश्कात, 239)

हदीस शरीफ़ 6 : हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम शहरे मदीना तैय्यिबा से अपनी महब्बत व उल्फ़त को ज़ाहिर करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं :

مَا عَلَى الْاَرْضِ بُقْعَةٌ اَحَبُّ اِلَيَّ اَنْ يَكُوْنَ قَبْرِيْ رूए ज़मीन में उस टुकड़े (यानी मदीना तैय्यिबा) से ज़्यादा कोई टुकड़ा महबूब नहीं जिस में मेरी क़ब्र होगी। (मिश्कात शरीफ़, स 241)

मदीना मुनव्वरा के लिये दुआए बरकत

हदीस शरीफ़ 7 : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जब मदीना मुनव्वरा लोग पहला फल देखते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में ले कर हाज़िर होते और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फल को कुबूल फ़रमाने के बाद दुआ मांगते।

ऐ अल्लाह ! हमारे फलों में बरकत अता फ़रमा।

وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا

और ऐ अल्लाह तआला ! हमारे मदीना में बरकत अता फ़रमा।

और फ़रमाते ऐ अल्लाह तआला ! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे बन्दे, तेरे ख़लील और तेरे नबी थे।

وَاِنِّيْ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ

और ऐ अल्लाह तआला ! मैं तेरा बन्दा (और तेरा हबीब) और तेरा नबी हूँ।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मक्का मुकर्रमा के लिये दुआ की थी और मैं उन की दुआओं से ज़्यादा मदीना तैय्यिबा के लिये दुआ करता हूँ। इस दुआ के बाद हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वह फल किसी छोटे बच्चे को अता फ़रमा देते। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 1, स. 442, मिश्कात शरीफ)

ऐ ईमान वालो ! चलो मदीना तैय्यिबा चलो कि उस शहरे पाक में हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआओं की बरकतें आठों पहर बरसती हैं। कुछ न कुछ उन रहमतों और बरकतों के छींटे हम को नसीब हो ही जाएंगे और इस हदीसे पाक से यह भी पता चला और मालूम हुआ कि हर नई नेअमत व दौलत के मिलने पर सब से पहले अपने बुज़ुर्गों की बारगाह में उस में से कुछ नज़राना ज़रूर पेश करना चाहिये ताकि सहाबए किराम की सुन्नत पर अमल हो जाए और सुन्नत की बरकत से हमारे माल व दौलत में इज़ाफ़ा होता रहे।

महबूब के महबूब शहर की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ 8 : मदीना की मिट्टी में शिफ़ा है। हमारे सरकार मदीने के मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ اِنَّ فِيْ غُبَارِهَا شِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ ۝

क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ा कुदरत में मेरी जान है। मदीने की मिट्टी में हर बीमारी के लिये शिफ़ा है। (वफ़ाउल वफ़ा, जि. 1, स. 47, किताबुल अमल, जि. 4, स. 501)

मदीने की मिट्टी कोढ़ की बीमारी को दूर कर देती है : हज़रत साबित इब्ने क़ैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे मदीना मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

غُبَارُ الْمَدِيْنَةِ شِفَآءٌ مِّنَ الْجُذَامِ

मदीने के गर्दो गुबार जुज़ाम यानी कोढ़ की बीमारी के लिये शिफ़ा है।

(ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब, जि. 8, स. 336, जामेउल फवाइद, स. 201)

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाज़ लोगों के हालात तहरीर फ़रमाते हैं कि जिन को बर्स यानी कोढ़ की बीमारी थी उन लोगों ने मदीना तैय्यिबा की पाक मिट्टी को अपने बीमार जिस्म से मला तो वह लोग कोढ़ की बीमारी से शिफ़ा पा गए और ठीक और तन्दुरुस्त हो गए। (जज़बुल क़ुलूब, स. 27)

न हो आराम जिस बीमार को सारे ज़माने से
उठा ले जाए थोड़ी ख़ाक उन के आस्ताने से

और शाइरे मशरिक़ इक़बाल फ़रमाते हैं:

ख़ीरा न कर सका मुझे जलवए दानिश फ़िरंग
सुर्मा है मेरी आँख का ख़ाके मदीना व नजफ़

शैख़ मुहक़्क़िक़ का तजरबा : आशिक़े दीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपना तजरबा और मुशाहदा बयान फ़रमाते हुए लिखते हैं:

कि जिस ज़माने में मदीना का क़याम मेरे लिये बाइसे शरफ़ था मेरे पैरों में वरम हुआ कि अतिब्बा (हकीमों) ने उस बीमारी को बिल इत्तिफ़ाक़ हलाकत व बरबादी की अलामत क़रार दिया मैं ने मदीना तैय्यिबा की पाक मिट्टी से अपना इलाज किया और थोड़े ही दिनों में सहूलत और आसानी के साथ आराम हो गया। (जज़बुल क़ुलूब, स. 28)

देवबन्दी मौलवी साहब की भी सुन लीजिये : मौलवी आशिक़ इलाही देवबन्दी लिखते हैं कि सफ़रे हज में मेरे चचा भी मेरे साथ थे, मेरे चचा के मुंह में वर्म आ गया और वह मोहलिक मरज़ में मुब्तला हो गए। मैं ने अपने चचा की यह परेशानी मौलवी ख़लील अहमद अम्बेठवी को बताई तो उन्होंने कहा, घबराओ नहीं सरकार के रोज़ा शरीफ़ के क़रीब से मिट्टी ले लो और मुंह पर मल दो। मैं ने नमाज़े ज़ोहर से फ़ारिग़ हो कर मिट्टी हासिल की और चचा के चेहरे पर मली उस ख़ाके मदीना ने इकसीर से ज़्यादा काम किया। उस की बरकत से मेरे चचा को शिफ़ा हासिल हो गई। (तज़किरतुल ख़लील, स. 394, तारीख़े मदीना, स. 73)

ऐ ईमान वालो ! ख़ूब ग़ौर करो और उन बे ईमान देवबन्दियों को पहचानो ! कि कितने नमक हराम और एहसान फ़रामोश हैं कि जब बला व मुसीबत में गिरफ़्तार होते हैं तो बिदअत व शिर्क का नअरा भूल जाते हैं जैसा कि उन देवबन्दियों का अक़ीदा है अल्लाह तआला के सिवा किसी नबी या वली से मदद मांगना शिर्क है। (तक़वीयतुल ईमान, स. 83)

यहाँ तो मदद भी ली तो मेरे मुख़्तार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे पाक की मिट्टी से मदद ली और शिफ़ा हासिल की। मगर फिर भी ईमान नहीं लाए कि जब दयारे पाक की मिट्टी में इस क़दर मदद व शिफ़ा पहुँचाने की ताक़त है तो अल्लाह तआला की बख़्शिश व अता से महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मदद व शिफ़ा देने की किस क़दर ताक़त व कुव्वत होगी।

हज़रात ! हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रहमते आलम हैं, दुश्मनों को भी अपनी रहमत से हिस्सा अता फ़रमा देते हैं जैसा कि देवबन्दी मौलवी साहब को अपने जवारे करम की मिट्टी से शिफ़ा अता फ़रमा दी। मगर मोमिन वफ़ादार और मुनाफ़िक़ ग़द्दार में फ़र्क़ है कि मोमिन वफ़ादार अपने प्यारे नबी, रहमत व बरकत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अब्रे करम की बारिश में दुनिया में भी नहाते हैं और बरोज़े क़ियामत भी सेराब होंगे लेकिन मुनाफ़िक़ ग़द्दार व मुश्रिक और काफ़िर सिर्फ़ और सिर्फ़ दुनिया में कुछ हिस्सा पाएंगे और क़ियामत के दिन हर नेअमत व दौलत से महरूम कर दिये जाएंगे।

ख़ूब फ़रमाया मोमिन वफ़ादार अहले सुन्नत के सरदार इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

तुझ से और जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के जन्नत रसूलुल्लाह की

नज्दी उस ने तुझ को मोहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िर व मुरतद पे भी रहमत रसूलुल्लाह की

दुरूद शरीफ़ :

मदीना तैय्यिबा के गर्दो गुबार की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ 9 : शैख़ मुहक़्क़िक़ अलैहिर्रमतो वरिज़्वान तहरीर फ़रमाते हैं कि आफ़ताबे रिसालत, माहताबे नुबुव्वत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब कहीं बाहर से मदीना तैय्यिबा में तशरीफ़ लाते तो जो गर्दो ग़ुबार आप के चेहरए अनवर पर पड़ जाता उस को साफ़ न फ़रमाते अगर सहाबए किराम में से कोई शख़्स अपने चेहरे और सर को गर्दो गुबार की वजह से छुपाता तो आप मना फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते कि ख़ाके मदीना में शिफ़ा है। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 22)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला वह दिन दिखाए कि हम सब भी मदीना तैय्यिबा जाएं और ऐ काश कि मदीना तैय्यिबा के पाक गर्दो गुबार हमारे सर और चेहरे पर पड़े हों तो हर गिज़ हम उन प्यारे रहमत व नूर वाले गर्दो गुबार को झटकारें नहीं और न ही साफ़ करें बल्कि उन को अपने चेहरे और जिस्म पर मल लें अगर बीमारी होगी तो शिफ़ा नसीब हो जाएगी और हमारे चेहरे रौशन और बा रौनक़ भी हो जाएंगे।

हज़रात ! शहरे पाक महबूब मदीना तैय्यिबा की ज़मीन की मिट्टी भी रहमत व शिफ़ा वाली है यह बुज़ुर्गी और बरतरी सिर्फ़ मदीना तैय्यिबा को हासिल है जो दुनिया के किसी शहर को नसीब नहीं।

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

(3) मदीना तय्यिबा के फलों में शिफ़ा है

हदीस शरीफ़ 10 : हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि मदीना मुनव्वरा के शहरे पाक के तमाम फलों में शिफ़ा है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, जज़्बुल क़ुलूब, स. 28)

अजवा खजूर की फ़ज़ीलत

हदीस 1 : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :

كَانَ اَحَبُّ التَّمْرَاءِ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْعَجْوَةُ

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तमाम क़िस्म के खजूरों में अजवा खजूर ज़्यादा पसन्द थी।

हदीस 2 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि अजवा खजूर की असलियत उस दरख़्त से है जिस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दस्ते मुबारक से लगाया था।

(जज़्बुल क़ुलूब, स. 28)

हदीस शरीफ़ 3 : अजवा जन्नत के खजूरों में से है और यह ज़हर का तिरयाक़ है।

(इब्ने माजह, जि. 2, स. 247, मिश्कात शरीफ़)

उजवा खजूर में शिफ़ा है

हदीस 4 : सरकारे मदीना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स सात अदद अजवा खजूर नहार मुंह (सुबह को) खाए उस पर ज़हर और जादू असर न करे। (बुख़ारी, जि. 2, स. 819, मुस्लिम, जि. 2, स. 181, जज़्बुल क़ुलूब, स. 28)

ऐ ईमान वालो ! मदीना तैय्यिबा की तमाम क़िस्म की खजूरों में ख़ास कर अजवा खजूर में जो बरकात और शिफ़ा हैं वह सब हमारे हुज़ूर सरापा रहमत व नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दस्ते रहमत की निस्बत से हैं और आप की दुआओं की बरकत से हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा, इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह दुआ जिस का जोबने बहार क़ुबूल
उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

जिस के हर ख़ित्ते में है मोजे नूरे करम
उस कफ़े बहरे हिम्मत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! महबूबे पाक के शहर मदीना तैय्यिबा दुनिया के तमाम शहरों पर यह शरफ़ और फ़ज़ीलत रखता है कि उस ज़मीन के फलों में भी रहमत व शिफ़ा है जो किसी ज़मीन को नसीब नहीं।

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

(4) मदीना तैय्यिबा की हवाओं में शिफ़ा है

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि मदीना तैय्यिबा में जो हवाएं चलती हैं वह ख़ुश्बू दार होती हैं और उन हवाओं में रहमत व शिफ़ा है मुलख़्ख़सन। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 21)

हज़रात ! महबूबे पाक के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा को अल्लाह तआला ने जिस क़दर इज़्ज़त व अज़मत से नवाज़ा है दुनिया के दूसरे शहरों को कहाँ नसीब कि उस शहरे पाक में चलने वाली हवाओं में अल्लाह तआला ने बरकत और शिफ़ा की तासीर अता फ़रमा दी है।

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का फ़ज़्ले अज़ीम जिस वक़्त आप पर बरस पड़े और आप को महबूबे पाक के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा के सुबह व शाम और दिन व रात की बहारों में उस के पाक और ख़ुश्बू दार हवाओं के पुर कैफ़ झोंकों में कुछ साअतें गुज़ारने का मौक़ा मयस्सर आ जाए तो रहमत व शिफ़ा वाली पाक हवाओं से ख़ूब ख़ूब मुस्तफ़िद और फ़ैज़ियाब होने की कोशिश करना चाहिये और किसी बे ईमान और बद अक़ीदा शख़्स की गुमराह करने वाली किसी बात पर कान नहीं धरना चाहिये वर्ना ईमान से भी हाथ धोना पड़ सकता है और हासिल होने वाली नेअमत व दौलत से भी आप महरूम हो सकते हैं अल्लाह तआला अपने दामन व पनाह में रखे आमीन सुम्मा आमीन।

मदीना तैय्यिबा, मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है

(पहली दलील)

महबूब का क़याम मदीना तैय्यिबा में : अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी और महबूब रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मक्का मुकर्रमा से हिजरत फ़रमा कर मदीना तैय्यिबा में क़याम व आराम फ़रमाने का हुक्म अता किया, हम ईमान वाले आशिक़ों के लिये यही दलील है कि मक्का से मदीना तैय्यिबा अफ़ज़ल है। इस लिये कि अगर अल्लाह तआला को मदीना तैय्यिबा की ज़मीन और उस का शहर पसन्द और महबूब न होता तो शहरे मदीना तैय्यिबा में अपने प्यारे नबी महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क़याम व आराम फ़रमाने का हुक्म न देता। अल्लाह तआला

की बारगाह में मदीना तैय्यिबा इस क़दर महबूब और पसन्दीदा है कि अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मदीना तैय्यिबा में बसने और आख़री आराम गाह बनाने का हुक्म अता फ़रमा दिया।

اِذَا الْحَبِیْبُ لَا یَخْتَارُ لِحَبِیْبِہٖ اِلَّا مَا ھُوَ اَحَبُّ وَاَکْرَہُ عِنْدَہٗ ○

यानी महबूब नहीं पसन्द करता है अपने महबूब के लिये मगर वह चीज़ जो महबूब के नज़दीक सब से ज़्यादा बेहतर और पसन्दीदा हो। (जज़बुल क़ुलूब, स. 18)

हज़रात ! मुहिब्बे हक़ीक़ी अल्लाह तआला ने अपने महबूबे आज़म रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़याम व सुकूनत और आख़री आराम गाह के लिये जिस प्यारी ज़मीन और जिस मुबारक शहर को पसन्द फ़रमाया वह दुनिया की तमाम ज़मीनों और शहरों में सब से बुज़ुर्ग और अफ़ज़ल है। इस रिवायत से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल है।

हदीस शरीफ़ : मक्का के सरकार मदीने के सरदार, मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने जब मक्का शरीफ़ से हिजरत का इरादा किया तो दुआ मांगी।

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ اِنْ اَخْرَجْتَنِیْ مِنْ اَحَبِّ الْبِقَاعِ اِلَیَّ فَاسْکُنِّیْ فِیْ اَحَبِّ الْبِقَاعِ ○

यानी ऐ अल्लाह तआला ! अगर तू मुझ को मेरी बहुत पसन्दीदा जगह (मक्का) से बाहर लाता है तो मेरी सुकूनत और क़याम के लिये ऐसी जगह मुन्तख़ब फ़रमा जो तेरे नज़दीक तमाम मक़ामात में महबूब तरीन मक़ाम हो। (मुस्तदरिक, जज़्बुल क़ुलूब, स. 18)

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस हदीस शरीफ़ को बयान फ़रमाने के बाद तहरीर फ़रमाते हैं कि हमारे मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ यक़ीनन क़ुबूल हुई जिस की बरकत से यह मक़ाम (यानी मदीना तैय्यिबा) तमाम मक़ामात में अफ़ज़ल तरीन हो गया और इसी वजह से फ़तह मक्का के बाद भी हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा में क़याम व सुकूनत को पसन्द नहीं फ़रमाया बल्कि मदीना तैय्यिबा ही के क़याम व आराम को पसन्द किया। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 18)

हज़रात ! साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा, मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है।

(दूसरी दलील)

शैख़ मुहक़्क़िक़ का फ़ैसला : आशिक़े मदीना मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं हर मोमिन और मुसलमान को चाहिये कि निस्बत व तअल्लुक़ का ख़याल व लिहाज़ रहे और महब्बत के मशरब पर क़ाइम रहा जाए।

ईमान वालों को इस अक़ीदे पर क़ाइम रहना चाहिये कि ख़ालिक़ व मालिक अल्लाह

तआला की फ़ज़ीलत के बाद सारी फ़ज़ीलत खालिक़ व मालिक के महबूब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये है और हर शख़्स पर वाजिब है कि वह शख़्स हर चीज़ हर वजह और हर जहत से महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही को फ़ज़ीलत दे। उस में कुछ भी लिहाज व पास न करे और सारे आलम की चीज़ों में अलग अलग जो फ़ज़ीलत है उस की वजह भी निस्बत व तअल्लुक़ ही है। इस बात पर अम्बियाए किराम, रसूलाने इज़ाम और जुमला सहाबा किराम व मुहद्देसीन व अइम्मए दीन और औलिया उलमा व बुज़ुरगाने दीन का बिल इज्माअ इत्तिफ़ाक है कि महबूबे खुदा प्यारे मुस्तफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को जो तअल्लुक़ और निस्बत अल्लाह तआला की ज़ाते पाक से हासिल है और आप को जो मक़ाम व दरजा अल्लाह तआला की बारगाह में मिला है वह मक़ाम व दरजा और निस्वत व तअल्लुक़ न कअ़बा मुअज़्ज़मा को हासिल है और न ही अर्शे आज़म को मिला है। मुलख़्ख़सन। (जज़्बुल कुलूब, स. 14)

फ़िदाए मुस्तफ़ा सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ज़हे इज़्ज़तो इअतिलाए मुहम्मद
कि है अर्शे हक़ ज़ेर पाए मुहम्मद
मैं कुरबान क्या प्यारी प्यारी है निस्बत
यह आने खुदा वह खुदाए मुहम्मद

और फ़रमाते हैं :

कअ़बा भी है उन्हीं की तजल्ली का एक ज़िल
रौशन उन्हीं के अक्स से पुतली हजर की है
होते कहाँ ख़लीलो बिना कअ़बा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है

जिस चीज़ को जितनी निस्बत और तअल्लुक़ महबूबे ख़ुदा मदनी आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ हासिल है उतनी ही ज़्यादा उस चीज़ की फ़ज़ीलत है। अगर मक्का मुकर्रमा आप की जाए पैदाइश है तो मदीना तैय्यिबा आप का दारे क़रार क़ियामत तक के लिये आराम गाह है। ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल व आला है। मुलख़्ख़सन (जज़बुल कुलूब, स. 19)

(तीसरी दलील)

मदीना मेरा हरम है : मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत है कि :

اَلْمَدِيْنَةُ حَرَمٌ मदीना तैय्यिबा हरम है।

और तबरानी शरीफ़ की हीदस में है कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : حَرَمُ اِبْرَاهِيْمَ مَكَّةُ وَحَرَمِىْ اَلْمَدِيْنَةُ ○

यानी हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम का हरम मक्कतुल मुकर्रमा है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा हबीबुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मेरा हरम मदीना तैय्यिबा है। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रात! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत के इमाम व नबी हैं और हमारे आक़ा प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जुमला अम्बियाए किराम व रसूलाने इज़ाम और तमाम अव्वलीन व आख़रीन कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भी इमाम और नबी हैं।

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी

करूँ अम्बिया से अर्ज़ क्यों मालिको
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी
सब से आला व औला हमारा नबी

सब से बाला व वाला हमारा नबी

हज़रात! ख़ूब अच्छी तरह साबित और ज़ाहिर हो गया कि हमारे प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से अफ़ज़ल व आला हैं तो अफ़ज़ल व आला रसूल मदनी आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हरमे पाक मदीना तैय्यिबा भी अफ़ज़ल व आला है मक्का मुकर्रमा से।

(चौथी दलील)

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आल व अस्हाब और अकाबिर बुज़ुरगाने दीन जो जुमला बरकात व करामात के जामेअ हैं वह सब मदीना तैय्यिबा में आराम फ़रमा हैं यह सारी ख़ूबियाँ मदीना तैय्यिबा के पास शहर की ज़मीन को हासिल हैं जो मक्का मुकर्रमा में नहीं है।

शैख़ मुहक़्क़िक़ फ़रमाते हैं। मेरा मज़हब तो यह है कि मकान की क़दर व मन्ज़िलत और उस की शान व शौकत मकान के मकीन की वजह से होती है। मगर उन लोगों के लिये जो इश्क़ व महब्बत रखते हैं।

ख़ुदा की क़सम सच्ची महब्बत और पुख़्ता अक़ीदत के हुस्नो जमाल के साथ बातिनी लज़्ज़तें जो क़ल्ब व जिगर की आँखों से हासिल होती हैं वह उसी शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में हैं जो किसी दूसरे शहर में देखी न सुनी। अलबत्ता बाज़ दूसरी जगहों में जो चमक और नूरानियत नज़र आती है वह उसी मक़ाम का हुस्नो ज़ेबाई है और उसी जगह यानी मदीना तैय्यिबा के अनवारे तजल्लियात और बरकातो हसनात हैं जो बाज़ दूसरे मक़ामात पर नज़र

आते हैं और उस दर्सगाह के ख़ादिम व ख़ाकसार हैं जो दूसरे मक़ामात पर सोए हुए हैं। आराम फ़र रहे हैं। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 10)

ख़ूब फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा तमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

हरम व तैबा व बग़दाद जिधर कीजिये निगाह
जोत पड़ती है तेरी नर है छंता है तेरा

आसमान ख्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान
साहिबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

हज़रात ! साबित हुआ कि मदीना तैय्यिबा, मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है।
दुरूद शरीफ़ :

पांचवीं दलील

अकाबिर सहाबा के नज़दीक मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल है : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर और भी दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की जमाअत और इमाम मालिक व अकसर उलमाए मदीना का मज़हजब यही है कि मदीना तैय्यिबा को मक्का शरीफ़ पर फ़ज़ीलत देते हैं।

उन की दलील यह है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को उस शहर शरीफ़ की यानी मदीना तैय्यिबा की जितनी ज़्यादा महब्बत है इस क़दर महब्बत किसी दूसरे शहर की नहीं है। इसी शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में आप ने इक़ामत फ़रमाई और इसी शहर पाक मदीना तैय्यिबा में आप ने तमाम फ़ुतूहात हासिल कीं। उसी शहरे पाके मदीना तैय्यिबा की पाक ज़मीन तमाम बरकात व हसनात का सर चश्मा और जुमला कमालात ज़ाहिर व बातिन का मअदन और सआदते उज़्मा और नेअमते कुबरा का मुब्दा है और सब से बड़ी फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी की ख़ास वजह यह है कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मज़ार शरीफ़ और क़ब्रे पाक शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में है जो मक्का शरीफ़ को नसीब नहीं है शहरे पाक मदीना तैय्यिबा की इस बुज़ुर्गी और बरतरी का कोई नेअमत बल्कि दुनिया और आख़िरत की सारी नेअमतें मिल कर भी मुक़ाबला और बराबरी नहीं क़र सकतीं।

और कोई अमल फ़राइज़ व वाजिबात के बाद मज़ारे पाक व क़ब्रे पाक की ज़ियारत की बराबरी नहीं कर सकता।

अहादीसे सहीहा है कि हर जान की पैदाइश उस मिट्टी से है जिस में वह दफ़्न होता है यानी जहाँ उस की क़ब्र बनी है इस से साबित हो जाता है कि महबूबे ख़ुदा हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लभ मदीना तैय्यिबा की जिस ज़मीन में आराम कर रहे हैं उसी ज़मीने पाक की मिट्टी से आप की पैदाइश अमल में आई और

यह पाक और अज़मत वाली मिट्टी मक्का शरीफ़ की नहीं बल्कि मदीना तैय्यिबा की है और इसी तरह आलो अस्हाब और दूसरे बुज़ुरगाने दीन अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान जो शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सायए करम में सो रहे हैं उन के नुफ़ूसे पाक भी उसी पाक मिट्टी से बने थे और मदीना मुनव्वरा के लिये यह फ़ज़ीलत व शराफ़त काफ़ी है साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व अशरफ़ है। (जज़्बुल कुलूब, स. 15)

सरकार आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ऐ मुद्दइयो ! ख़ाक को तुम ख़ाक न समझे
उस ख़ाक में मदफ़ून शहे बतहा है हमारा
हम ख़ाक उड़ाएंगे जो वह ख़ाक न पाई
आबाद रज़ा जिस पे मदीना है हमारा

दुरूद शरीफ़ :

(छटी दलील)

मक्का में अन्धेरा छा गया और मदीना रौशन हो गया : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान है कि जब आफ़ताबे नुबुव्वत माहताबे रिसालत मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मक्का शरीफ़ से हिजरत की तो मक्का में अन्धेरा छा गया और जब मदीना तैय्यिबा में तशरीफ़ लाए तो मदीना तैय्यिबा में ऐसी रौशनी ज़ाहिर हुई कि वहाँ का ज़र्रा ज़र्रा रौशन और मुनव्वर हो गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया मदीना मेरा मसकन है और मदीना ही में मेरी क़ब्र भी होगी। (मिश्कात, स. 546)

मक्का की फ़ज़ीलत पर दलील दी जा सकती है : कोई कह सकता है कि हदीस शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَكَّةُ خَيْرُ بِلَادِ اللّٰهِ ۝ यानी मक्का अल्लाह तआला के तमाम शहरों में बहतर है।

और दूसरी रिवायत में है : وَمَكَّةُ اَحَبُّ اَرْضِ اللّٰهِ और मक्का अल्लाह तआला की ज़मीन में पसन्दीदा है।

तो हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह मदीना तैय्यिबा की अफ़ज़लियत को उजागर करते हुए जवाब तहरीर फ़रमाते हैं कि :

हमारे सरकार मदीने के मुख़्तार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का यह इरशादे पाक मदीना तैय्यिबा की फ़ज़ीलत से बहुत पहले इब्तिदा में था मगर अल्लाह तआला ने वही के ज़रीए जो फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी मदीना तैय्यिबा की ज़ाहिर फ़रमाई इस हदीस शरीफ़ के बाद की है और अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़बर दी कि मक्का मुकर्रमा को जो बरकत हासिल है उस से दुगनी बरकत बल्कि उस से ज़्यादा बरकत व सवाब मदीना तैय्यिबा को हासिल है। (जज़बुल कुलूब, स. 17)

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

(सातवीं दलील)

मदीना तैय्यिबा बेहतर है मक्का से : हज़रत राफ़ेअ बिन खदीज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि : الْمَدِينَةُ خَيْرٌ مِنْ مَكَّةَ ० मदीना तैय्यिबा बहतर है मक्का मुकर्रमा से।

(तबरानी, मोअजम कबीर, कन्ज़ुल उम्माल, जि 12, स. 104)

हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नाराज़ होकर डांटते हुए अब्दुल्लाह बिन अब्बास मखज़ूमी से फ़रमाया कि तुम कहते हो कि मक्का अफ़ज़ल है मदीना से और इसी तरह तीन मरतबा फ़रमाया।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस गुफ़्तुगू से साफ़ साफ़ ज़ाहिर है कि मक्का शहर पर मदीना शहर अफ़ज़ल है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

(आठवीं दलील)

मदीना तैय्यिबा से किस कदर महब्बत है : हमारे प्यारे आका मुशफ़िक़ व महरबान नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब किसी सफर से मदीना तैय्यिबा वापस तशरीफ़ लाते और जब मदीना मुनव्वरा के करीब पहुँचते तो अपनी सवारी को हरकत देकर तेज़ कर देते थे।

और हमारे आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यिबा की महब्बत में बेचैन हो जाते कि मैं किसी तरह जल्द से जल्द मदीना तैय्यिबा में दाख़िल हो जाऊँ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ल्बे मुबारक मदीना तैय्यिबा में पहुँच कर सुकून व क़रार पाता।

हदीस शरीफ़ में है कि हमारे सरकार मदीने के ताजदार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में से जो लोग सब से पहले हमारी शफ़ाअत के शरफ़ को हासिल करेंगे वह लोग अहले मदीना हैं उस के बाद अहले मक्का। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 22)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ की रौशनी में फ़ैसला हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है।

(नवीं दलील)

मदीने में मरने की दुआ मांगना सुन्नत है : हदीस शरीफ़ में है कि नबिये रहमत शफ़ीए उम्मत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने रब तआला की बारगाह में दुआ मांगते हैं।

اللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ مَنَايَايَ بِمَكَّةَ यानी ऐ अल्लाह तआला मुझे मक्का में मौत न दे बल्कि मुझे मदीना तैय्यिबा में मौत अता फ़रमा।

और एक रिवायत में आया है कि तमाम रूए ज़मीन पर मदीना तैय्यिबा के सिवा कोई ज़मीन का हिस्सा ऐसा नहीं है कि मैं जिस में अपनी क़ब्र को पसन्द करूँ। (जज़्बुल क़ुलूब, स 22, 23)

अल्लाहु अकबर ! अल्लाहु अकबर !! क्या शान है मदीना तैय्यिबा की।

सब्ज़ गुम्बद की बहारों में वह ज़ेबाई है
अर्शे आज़म भी मदीने का तमन्नाई है

हज़रात ! वाज़ेह और रौशन सुबूत मौजूद है कि मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ से अफज़ल व आला है

(दसवीं दलील)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म का मदीने में मरने की दुआ : रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु अकसर यह दुआ किया करते थे।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ

ऐ अल्लाह तआला मुझे अपनी राह में शहादत नसीब फरमा और मेरी मौत अपने रसूल के शहरे मुक़द्दस में मुक़द्दर फरमा। (बुखारी शरीफ, जि 1, स 253)

ऐ ईमान वालो ! बुखारी शरीफ की हदीस शरीफ जो बयान की गई उस से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि मदीना तैय्यिबा की क़द्र व मन्ज़िलत इस क़दर बलन्द व बाला है कि मुरादे मुस्तफा ख़लीफ़ए मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा मदीना तैय्यिबा में मौत आने की यानी मरने की दुआ किया करते थे। आप की यह दुआ क़ुबूल हुई और दमीना तैय्यिबा में जामे शहादत नोश किया और मदीना तैय्यिबा में क़ब्रे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़रीब पहलूए यार ग़ार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में मदफ़ून हुए।

हज़रात ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मक्का शरीफ में मरने की दुआ नहीं मांगते हैं बल्कि अपने महबूब व मेहरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शहरे पाक मदीना तैय्यिबा में मौत आने की आरज़ू और तमन्ना करते नज़र आते हैं जिस से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ से अफज़ल व आला है।

क्या प्यारी तरजमानी फ़रमाई है। आशिक़े मदीना प्यारे प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यदे आलम
उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

और फ़रमाते हैं :

मुफ़्लिसो ! उन की गली में जा पड़ूँ
बाग़े ख़ुल्द इकराम हो ही जाएगा

दुरूद शरीफ़ :

साइलो ! दामन सखी का थाम लो
कुछ न कुछ इनआम हो ही जाएगा

(ग्यारहवीं दलील)

मदीना तैय्यिबा ही में हयात व मौत की आरज़ू : मशहूर आशिके रसूल, मदीना मुनव्वरा के मअरूफ आलिम, मालिकी मस्लक के इमाम हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़रीबन चालीस साल बल्कि सारी ज़िन्दगी मदीना तैय्यिबा में बसर फरमाई। सिर्फ एक मरतबा फरीज़ए हज की अदाएगी के लिये मक्का मुकर्रमा हाज़िर हुए। हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाया करते थे सिर्फ एक बार हज ज़िन्दगी में फ़र्ज़ था वह मैं ने अदा कर लिया। अब बाक़ी ज़िन्दगी महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब शहर में गुज़ारना चाहता हूँ। इस लिये उस शहरे पाक से बाहर कहीं नहीं जाता हूँ और हज के लिये मक्का मुकर्रमा भी नहीं जाता हूँ। कहीं मुझे मौत न आ जाए और शहरे पाक, मदीना तैय्यिबा छूट न जाए और मेरी आरज़ू और तमन्ना है कि शहरे पाक मदीना तैय्यिबा ही में मौत आए और उसी शहरे पाक में दफ़्न किया जाऊँ। मुलख्खसन (जज़्बुल कुलूब, स. 23)

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यूँ बयान फरमाते हैं :

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आलम
उस ख़ाक पे कुरबान दिले शैदा है हमारा

हज़रात ! हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कितने बड़े आशिके रसूल और बुजुर्ग इमाम व आलिम हैं जो जहाने इल्म में पोशीदा नहीं। तो ऐसे अज़ीमुश्शान बुजुर्ग व इमाम और आलिम का शहरे पाक, मदीना तैय्यिबा में मौत व दफ्न की आरज़ू और तमन्ना करना और उस ख्वाहिश की तकमील के लिये जद्दो जहद करते हुए शहरे पाक मदीना तैय्यिबा से बाहर न जाना उन का यह फेअल व अमल लारैब ला कलाम साबित करता है कि मदीना मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व अशरफ है।

(बारहवीं दलील)

मदीना ज़ाहिर व बातिन की मेल को दूर कर देता है : हमारे प्यारे मुस्तफ़ा महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया :

اَلْمَدِيْنَةُ تَنْفِيْ خُبْثَ الرِّجَالِ كَمَا يَنْفِي الْكِيْرُ خُبْثَ الْحَدِيْدِ

यानी मदीना तैय्यिबा लोगों के मेल और गन्दगी को दूर कर देता है जैसे लोहार की भट्टी की आग लोहे के मेल और जंग को दूर कर देती है। (बुखारी, जि 1, स. 253)

दूसरी रिवायत : اِنَّهَا طَيْبَةُ تَنْفِي الذُّنُوْبَ كَمَا يَنْفِي الْكِيْرُ خُبْثَ الْفِضَّةِ

यानी बे शक मदीना पाक है और गुनाहों से ऐसा पाक व साफ़ कर देता है जैसे सुनार की भट्टी की आग चाँदी के मेल को साफ कर देती है। (बुखारी शरीफ, जि. 1, स. 253)

और हज़रत शैख़ मुहक्क़िक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फ़रमाते हैं कि मदीना तैय्यिबा के बरकात व हसनात जो ज़िक्र किये गए हैं किसी ख़ास ज़माने के लिये मख़सूस नहीं हैं बल्कि हर ज़माने के लिये हैं हत्ता कि क़ियामत तक के लिये हैं। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 23)

हज़रात! कलाम अपने मुन्तहा को पहुँचा हक़ीक़त रोज़े रौशन की तरह अयां और ज़ाहिर हो गई कि हर तरह से हर हाल में मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है। इश्क़ो महब्बत के मतवाले, मदीने के दीवाने, प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इश्क़ में डूबा हुआ शेअर सुन लीजिये जो मेरे इमाम का और हम गुलामाने रज़ा का भी यही आख़री फ़ैसला है।

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है
ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह में मदीना तैय्यिबा की जो फ़ज़ीलत व बुज़ुर्गी है उस में से कुछ और बल्कि बहुत कम और मुख़्तसर बयान कर दिया है जो ईमान वाले आशिक़ों के लिये बहुत कुछ है मगर बे ईमान व बद अक़ीदे के लिये जब महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही कुछ नहीं हैं तो उन के शहरे पाक की अज़मत व बुज़ुर्गी को वह क्या जानेंगे।

अल्लाह तआला अपने महबूबे आज़म, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आशिक़ बनाए। आमीन सुम्मा आमीन।

इमाम मालिक का अदब : मशहूर वाक़िआ है कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चालीस साल मदीना तैय्यिबा में ज़िन्दगी बसर की मगर बोल व बराज़ नहीं किया। यानी पेशाब, पाख़ाना नहीं किया। उस की वजह यह थी कि जब आप को हाजत होती तो मदीना तैय्यिबा के दूर दराज़ इलाक़ों में पहाड़ियों और जंगलात में तशरीफ़ ले जाते मगर जिस जगह पर रफ़अ हाजत के लिये बैठना चाहते तो ख़याल आता कि यह महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जवार व इलाक़ा है कहीं इस मक़ाम पर मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुबारक क़दम न पड़े हों बस यह ख़याले मुबारक आप को बे चैन व बे क़रार कर देता और हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़ैर फ़राग़त के वापस तशरीफ़ ले आते थे और इसी तरह अल्लाह तआला ने हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को चालीस साल तक शहर महबूब (मदीना तैय्यिबा) में क़ाइम और सलामत रखा और हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बग़ैर बोल व बराज़ के सारी उमर मदीना तैय्यिबा में गुज़ार दी।

हज़रात! एक ख़ास हिकमत ज़हन नशीं फ़रमा लें कि तमाम आलमे अस्बाब का मोहताज

है जिस के बग़ैर चारह नहीं मगर अल्लाह तआला है कि वह हर शय और तमाम अस्बाब से बे नियाज़ व बे परवाह है जो बन्दा इस सबब व ज़रीआ का मोहताज नहीं है उस की शान तो यह है कि वह हर शय और तमाम अस्बाब से बे नियाज़ व बे परवाह है जो बन्दा उस सबब व ज़रीए के बग़ैर ज़िन्दा व सलामत नहीं रह सकता, मगर अल्लाह तआला क़ादिरे मुतलक़ चाह ले तो अपने बन्दे को बग़ैर इस सबब और ज़रीए के भी ज़िन्दा और सलामत रखे जैसा कि अल्लाह तआला की कुदरत व करामत का ज़हूर हज़रत इमाम मालिक के लिये हुआ।

तो अब ज़ाहिर और साबित हो गया कि अल्लाह तआला अपनी ख़ास कुदरत व करामत का ज़हूर उस शख्स के लिये फ़रमा देता है जो शख्स उस के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का आशिक़ और दीवाना होता है।

दीवानगी अजब चीज़ है सीमाब
यह उस का करम है जिसे दीवाना बनाले

दुरूद शरीफ़ :

एक वाक़िआ : यह भी मशहूर वाक़िआ है कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़दम में मदीना तैय्यिबा का एक कांटा चूभ गया तो बार बार शहरे महबूब के उस कांटे को चूमते और चलने में संभल संभल कर क़दम रखते कि कहीं ऐसा न हो कि यह कांटा मेरे क़दम से निकल जाए। आप की इस हालत को देख कर किसी ने आप से कह दिया कि हज़रत! जब इस कांटे की वजह से आप तकलीफ़ में हैं और आप को चलना फिरना दुश्वार हो गया है धीरे धीरे संभल संभल कर चलते हैं तो कांटे को क़दम से निकाल क्यों नहीं देते इतना सुनना था कि इश्क़ भड़क उठा, महब्बत तड़प उठी और जो जवाब इरशाद फ़रमाया कि यह शहरे महबूब का कांटा है जो निकालने के लिये नहीं है बल्कि क़ल्ब व जिगर में जगह देने के लिये है। काश! शहर महबूब का यह कांटा मेरे क़ल्ब व जिगर में चूभ जाता तो कितना बहतर होता।

और हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं ऐ लोगो ! बरोज़े क़ियामत जब मेरा रब तआला मुझ से पूछेगा कि मालिक ! तू मेरे पास आया है तो मेरे लिये किया लाया है तो मैं अर्ज़ करूँगा, मेरे रहमान व रहीम परवरदिगार मैं तेरा बन्दा मालिक तेरी बे नियाज़ बारगाह में तेरे महबूब पाक के शहर महबूब, मदीना तैय्यिबा का एक कांटा लाया हूँ, मुझे उम्मीदे वासिक़ और यक़ीने कामिल है कि शहरे महबूब के कांटे के वसीले से मेरा रहमान व रहीम और करीम मौला तआला ख़ुश और राज़ी होकर मुझ को जन्नत का हक़दार बना देगा।

ख़ूब फ़रमाया आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने :

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मामूली शख्सियत का नाम नहीं है। आप की ज़ात को अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अज़ीम मक़ाम व मरतबा हासिल है और बुज़ुरगाने

दीन के नज़दीक महबूब इमाम और आशिके सादिक़ हैं जब उन की महब्बत और अक़ीदत शहरे महबूब के एक कांटे के साथ इस क़दर ज़्यादा है तो फ़ैसला कीजिये कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नज़र व निगाह में मदीना के आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़दर व मन्ज़िलत, इज़्ज़त व हुरमत और महब्बत व अक़ीदत का क्या आलम होगा।

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

उन की हरम के ख़ार कशीदा हैं किस लिये
आँखों में आएं सर पे रहें दिल में घर करें

और फ़रमाते हैं :

फूल क्या देखो मेरी आँखों में
दश्ते तैबा के ख़ार फिरते हैं

और हमारे मुर्शिदे आज़म कुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

यह कैसे यह गुलो गुन्चे हों ख़्वार आँखों में
बसे हुए हैं मदीने के ख़ार आँखों में
नज़र में कैसे समाएंगे फूल जन्नत के
कि बस चुके हैं मदीने के ख़ार आँखों में

और उस्ताज़े ज़मन मौलाना हसन रज़ा बरैलवी फ़रमाते हैं :

मुबारक रहे इन्दलीबो तुम्हें गुल
हमें गुल से बेहतर है ख़ारे मदीना

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत इमाम मालिक मदीने की दरो दीवार को चूमते थे

यह भी एक मशहूर वाक़िआ है कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा की गली व कूचे से गुज़रते तो शहरे महबूब की पुरानी इमारतों की दीवारों को बोसा देते और चूमते। किसी ने पूछ लिया कि आप की ज़ात बहुत बलन्द व बाला है, आप उम्मत के पेशवा और इमाम हैं अप का हर अमल बन्दगाने ख़ुदा के लिये रौशन मीनारह है और वसीलए हिदायत है। आप उन क़दीम और बोसीदा दीवारों को क्यों चूमते हैं ? उन को बोसा देने की क्या वजह है ?

तो हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया यह मदीना तैय्यिबा के रास्ते हैं और यह दीवारें उन रास्तों के क़रीब हैं जब हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन रास्तों से गुज़रे होंगे तो मेरे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जिस्मे पाक और जिस्मे

पाक का पैरहने मुबारक व कपड़ा शरीफ़ कभी न कभी उन दीवारों से मस हुआ होगा इसलिये मैं उन मुबारक दीवारों को चूमता हूँ। पूछने वाले ने कहा कि आप दीन व शरीअत के इमाम व पेशवा हैं दीन मुझ से ज़्यादा जानते हैं तो बताइये कि सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आदते शरीफ़ा राह चलने में कैसी थी ? यह तो बच्चों की आदत होती है कि दीवारों से खेल करते हुए गुज़रते हैं तो हज़रत इमाम मालिक जवाब देते हैं कि मैंने माना कि हमारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का जिस्मे पाक और पैरहने मुबारक उन दीवारों से मस नहीं हुआ होगा लेकिन जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन राहों से गुज़रे होंगे तो आप की प्यारी नज़र व निगाह ने उन दीवारों को ज़रूर देखा होगा तो फिर पूछने वाले ने कहा कि इमाम साहब ! हमारे नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब रास्ता चलते थे तो सर झुका होता था और निगाहें नीची कर के चलते थे तो आप बताइये कि जब सर झुका होगा और निगाहें नीची होंगी तो दीवारों पर निगाह कैसे पड़ी होगी ? तो जवाबन हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि तुम्हारे कहने के मुताबिक़ हम ने मान लिया और तस्लीम कर लिया कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का न जिस्मे मुबारक और न ही कपड़ा मुबारक उन दीवारों से लगा है और न ही मस हुआ है और न ही उन दीवारों पर निगाह व नज़र पड़ी है लेकिन तुम को यह तो तस्लीम करना पड़ेगा और मानना पड़ेगा कि जब हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उन राहों से उन दीवारों के क़ुर्ब से गुज़रे होंगे तो उन दीवारों ने हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़रूर व ज़रूर देखा होगा।

लिहाज़ा हम तो उन को बोसा दे रहे हैं और चूम रहे हैं जिन दीवारों ने हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दीदार किया है।

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की महब्बत व उल्फ़त, अक़ीदत व इश्क़ से लबरेज़ दास्तान आप हज़रात ने समाअत फ़रमा ली कि हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से इस क़दर इश्क़ व महब्बत करते थे कि शहरे महबूब मदीना तैय्यिबा की दरो दीवार को चूमते हैं और बोसा देते नज़र आते हैं मगर आज तक किसी इमाम या मुहद्दिस या वली या बुज़ुर्ग ने हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस अमल को न बुरा कहा और न ही अपनी किताबों में उस को बुरा लिखा। लेकिन आज कल कुछ बद अक़ीदे, ईमान के लुटेरे यह बकवास करते फिरते हैं कि अंगूठा चूमना बिदअत व नाजाइज़ है और अगर उन से सवाल किया जाए कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक अफ़ज़ल है या मदीना तैय्यिबा के दरो दीवार तो मानना और कहना पड़ेगा कि महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक अफ़ज़ल व आला है।

तो साबित हो गया कि जब मदीना शरीफ़ के दरो दीवार चूमना जाइज़ व दुरुस्त है तो सरकारे मदीना मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का नामे पाक सुन कर अंगूठा चूमना भी बदरजए ऊला जाइज़ व दुरुस्त है।

ऐ ईमान वालो ! अगर कोई बद अक़ीदा शख़्स नामे पाक के चूमने को बिदअत व नाजाइज़ कहे तो उस बद अक़ीदा शख़्स से सवाल कीजिये और उस से पूछिये कि बिदअत व नाजाइज़ काम को हमारे अस्लाफ़, बुज़ुरगाने दीन ने अपनी किताबों में लिख दिया है ताकि उम्मत बिदअत व नाजाइज़ काम से बचती रहे तो सहाबए किराम से लेकर अइम्मए मुहद्देसीन, औलियाए उम्मत व उलमाए दीन का कोई क़ौल बताइये उन की किसी किताब को दिखा दीजिये जिस में यह लिखा हो कि नामे पाक को सुन कर अंगूठा चूमना बिदअत व नाजाइज़ है मगर शर्त यह है कि अल्लाह वाले जन्नती बुज़ुर्गों की किताब का हवाला चाहिये क़ियामत तो आ सकती है मगर ऐसी किसी किताब का हवाला नहीं दे सकते जिस में नामे पाक सुन कर अंगूठा चूमने को बिदअत व नाजाइज़ लिखा गया हो बल्कि बुज़ुरगाने दीन की किताबों में इस बात का हवाला ज़रूर मिलेगा कि नामे पाक सुन कर अंगूठा चूमना सुन्नत व मुस्तहब है।

जैसा कि हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि नामे पाक सुन कर अंगूठा चूम कर आँखों से लगाना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत है और जिस फ़ेअल व अम्र का सुबूत हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ज़ाहिर व साबित हो जाए तो मज़ीद और किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं। उम्मत को अमल के लिये काफ़ी है। (मिरक़ात शरह मिश्कात)

ऐ ईमान वालो ! बड़े इत्मीनान और सुकून के साथ और काफ़ी वज़ाहत और बे शुमार दलाइल के साथ आप हज़रात को मालूम हो गया कि अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और सहाबए किराम व अइम्मए दीन व मुहद्देसीने इज़ाम और औलियाए किराम व उलमाए ज़विल एहतिराम के अक़वाल व अफ़आल से सूरज की रोशनी से ज़्यादा ज़ाहिर और साबित हो गया कि मदीना तैय्यिबा मक्का शरीफ़ से अफ़ज़ल व आला है।

आक़ाए नेअमत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि :

गुले तैबा की सना गाते हैं
नख़्ले तूबा पे चहकने वाले

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढाई है

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

पहला जुमा .... पहला बयान

●

हाजियो !
आओ शहंशाह का रौज़ा देखो

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ وَنُوْرِ عَرْشِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ
وَاَزْوَاجِهٖ وَعِتْرَتِهٖ وَاَوْلِيَاءِ اُمَّتِهٖ وَعُلَمَاءِ مِلَّتِهٖ وَشُهَدَاءِ مُحَبَّتِهٖ اَجْمَعِيْنَ لَاسِيَّمَا عَلَى ابْنِهِ الْغَوْثِ الْاَعْظَمِ الْجِيْلَانِيْ
وَابْنِهِ الْخَوَاجِهِ الْاَعْظَمِ الْاَجْمِيْرِيْ وَشَبِيْهِ مُحَبَّتِهِ الْاِمَامِ اَحْمَدَ رَضَا الْبَرِيْلَوِيْ رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝

तर्जमा : और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह तआला को बहुत तौबह कुबूल करने वाला महरबान पाएं। (पारा 5, रुकू 6, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

मदीना तैय्यिबा में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मुत्तसिल उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का हुजरा है जिस हुजरे पर अब गुन्बदे ख़ज़रा है। उसी सब्ज़ गुन्बद में हमारे मुशफ़िक़ नबी, महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की कब्रे अनवर है। जिस में आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लेटे हुए हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

महबूबे रब्बे अर्श हैं जलवा गर इस सब्ज कुबा में
पहलू में जलवा गाह अतीको उमर की है

क़ब्रे अनवर तमाम रूए ज़मीन से अफ़ज़ल है

हज़रत इमाम क़ाज़ी अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस बात में उलमा के दरमियान किसी क़िस्म का इख़्तिलाफ़ नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की जगह तमाम रूए ज़मीन से अफ़ज़ल व आला है। (शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 75)

क़ब्रे अनवर, कअ़बा और अर्श से भी अफ़ज़ल है : हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन खिफ़ाजी, हज़रत अल्लामा महमूद आलूसी बग़दादी, हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी, हज़रत अल्लामा क़स्तलानी, हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन तहरीर फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर का वह हिस्सा जो आप के जिस्मे अनवर के साथ मुत्तसिल है कअ़बा मुअज़्ज़मा और अर्शे आज़म से अफ़ज़ल है। (नसीमुर्रियाज, जि. 3, स. 532, मवाहिबुल लदुन्नियह, मिरक़ात, जि. 2, स. 190, तारीख़े मदीना, स. 52, रूहुल मआनी, जि. 13, स. 112)

हज़रात ! मोअतमद व मुस्तनद बुज़ुरगाने दीन अइम्मा व मुहद्देसीन के अक़वाल से रोज़े रोशन की तरह अयां और ज़ाहिर व साबित हो गया कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ का वह हिस्सा जो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के जिस्मे नूर से मुत्तसिल है।

क़ब्रे अनवर, अर्श और कअ़बा और आठों ख़ुल्द से अफ़ज़ल है

आशिक़े रसूल मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

कअ़बा व अर्श में कोहराम है नाकामी का
आह किस बज़्म में है जलवए यकताई दोस्त

और फ़रमाते हैं :

हाजियो ! आओ शहंशाह का रोज़ा देखो
कअ़बा तो देख चुके कअ़बा का कअ़बा देखो

और फ़रमाते हैं :

हश्त ख़ुल्द आई वहाँ कस्बे लताफ़त को रज़ा
चार दिन बरसे जहाँ अब्रे बहाराने अरब

दुरूद शरीफ़ :

क़ब्रे अनवर की ज़ियारत और दरे नूर की हाज़री

मशहूर बुज़ुर्ग आशिक़े दमदीना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि :

बुज़ुरगाने दीन ने क़ब्रे अनवर की ज़ियारत की सआदत के हुसूल का क़स्द फ़रमाया और बारगाहे नूर की हाज़री का शरफ़ हासिल किया इमामुल अव्वलीन वल आख़रीन, सय्यिदुल

अम्बिया वल मुरसलीन, रहमतुल लिल आलमीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबारे नूर की हाजरी और कब्रे अनवर की जियारत उलमाए दीन के नजदीक बिल इत्तिफाक कौलन व फेअलन बहतरीन सुन्नत और मुअक्कद तरीन मुस्तहबात में से है।

हजरत काजी अयाज रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कब्रे नूर की जियारत एक मुत्तफक अलैह सुन्नत और मरगूब फजीलत है और बाज उलमाए मालिकिया दरे नूर की हाजरी और कब्रे नूर की जियारत को वाजिब कहते हैं।

और हजरत इमामे आजम अबू हनीफा रजियल्लाहु तआला अन्हु के नजदीक बारगाहे नूर की हाजरी और कब्रे नूर की जियारत मुअक्कद तरीन मुस्तहब बल्कि करीब वाजिब है।

(जज़बुल कुलूब, स 224)

चलो आशिक़ो ! गुम्बदे ख़ज़रा की बहारों में चलो !

महबूबे खुदा मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब हस्ती, आशिके मुस्तफा, मुजद्दिदे आजम इमाम अहमद रजा फाजिले बरैल्वी रजियल्लाहु तआला अन्हु ने दरे नूर की हाजरी और कब्रे नूर की जियारत के आदाब अपनी किताब अनवारुल बशारा में तहरीर फरमाए है। अनवारुल बशारा की तलखीस पेश करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ।

हाजियो आओ शहंशाह का रोज़ा देखो
कअबा तो देख चुके कअबा का कअबा देखो
ग़ौर से सुन तू रज़ा कअबा से आती है सदा
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रोज़ा देखो

(1) ज़ियारते अक़दस क़रीब ब वाजिब है

बहुत लोग दोस्त बन कर तरह तरह से डराते हैं राह में खतरा है, वहाँ बीमारी है, खबरदार किसी की न सुनो! और हर गिज महरूमी का दाग ले कर न पलटो, जान एक दिन जानी जरूर है, इस से क्या बहतर कि उन की राह में जाए।

और तजरबा है कि जो उन का दामन थाम लेता है उसे अपने साए करम में आराम से ले जाते है किसी तरह का खटका नहीं रहता। वलहम्दु लिल्लाह

प्यारे रजा फरमाते हैं :

हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए
हीले बहाने वालों को यह राह डर की है
शुक्रे खुदा कि आज घड़ी उस सफर की है
जिस पर निसार, जान फलाहो जफर की है

(2) हाज़री में ख़ालिस ज़ियारते अक़दस की निय्यत करो

यहाँ तक कि इमाम इब्नुल हम्माम फ़रमाते हैं इस बार मस्जिद शरीफ़ की निय्यत भी शरीक न करे। अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

उसके तुफ़ैल हज भी खुदा ने करा दिये
अस्ल मुराद हाज़री उस पाक दर की है

3) रास्ते भर दुरूद शरीफ़ व ज़िक्र शरीफ़ में डूब जाओ।

4) जब हरमे मदीना नज़र आए। बहतर यह है कि पैदल चलो रोते सर झुकाए आँखें नीची किये और हो सके तो नंगे पाऊँ चलो।

प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

अल्लाहु अकबर अपने क़दम और यह ख़ाके पाक
हसरत मलायका को जहाँ वज़ए सर की
हरम की ज़मीन और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़ा है ओ जाने वाले

जब गुम्बदे ख़ज़रा पर नज़र पड़े दुरूदो सलाम की कसरत करो।

5) जब शहरे अक़दस तक पहुँचो तो जलाल व जमाले महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाओ।

6) मस्जिद शरीफ़ की हाज़री से पहले तमाम ज़रूरियात से बहुत जल्द फ़ारिग़ हो जाओ जिस की वजह से दिल व दिमाग़ व पाकीज़ा कपड़े पहन लो। और कपड़े नए हों तो बहतर है। सुर्मा और खुश्बू लगा लो और मुश्क अफ़ज़ल है।

7) अब फ़ौरन दरे नूर आस्तानए अक़दस की तरफ़ निहायत खुशूअ व खुज़ूअ से मुतवज्जह हो।

अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

महबूबे रब्बे अर्श है उस सब्ज़ क़ुबा में
पहलू में जलवा गाह अतीक़ो उमर की है
मेअराज का समां है कहाँ पहुँचे ज़ाइरो
कुर्सी से ऊँची कुर्सी उसी पाक दर की है

रोना न आए तो रोने का मुंह बनाओ और दिल को बज़ोर रोने पर लाओ और अपनी संग दिली से मुशफ़िक़ व महरबान आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की तरफ़ इल्तिजा करो।

8) जब मस्जिद शरीफ़ के दरवाज़े पर हाज़िर हो सलातो सलाम अर्ज़ कर के थोड़ा ठहरो जैसे सरकार से हाज़री की इजाज़त मांगते हो। बिस्मिल्ला कह कर सीधा पांव पहले रख कर हम तन अदब हो कर दाख़िल हो।

9) उस वक़्त जो अदब व ताज़ीम फ़र्ज़ है हर मुसलमान का दिल जानता है। आँख, कान, ज़बान, हाथ, पांव, दिल सब को ख़याल ग़ैर से पाक करो। मस्जिदे अक़दस के नक़्शो निगार को न देखो।

10) अगर कोई ऐसा शख़्स सामने आ जाए। जिस से सलाम, कलाम ज़रूरी हो तो जहाँ तक हो सके बचो, वर्ना ज़रूरत से ज़्यादा न बढ़ो। फिर भी दिल सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही की तरफ़ हो।

11) हरगिज़, हरगिज़ मस्जिदे अक़दस में कोई बात चिल्ला कर न निकले।

12) यक़ीन जानो कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सच्ची, हक़ीक़ी दुनियावी, जिस्मानी हयात के साथ वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे विसाल शरीफ़ से पहले हयात थे। उन की और तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम की मौत सिर्फ़ वअ़दए ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिये थी। उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ नज़रे अवाम से छुप जाना है।

प्यारे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

इमाम मुहम्मद बिन हाज मक्की मुदख़ल जि. 1, स. 215 में और इमाम अहमद क़स्तलानी मवाहिबुल लदुन्नियह में और अइम्मए दीन रहमतुल्लाहि अलैहिम अजमईन फ़रमाते हैं।

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हयात व वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उन की हालतों व नियतों को और उन के इरादों व उन के दिलों के ख़यालों को पहचानते हैं और सब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ऐसा रौशन है जिस में असलन पोशीदगी नहीं।

इमाम रहमतुल्लाहि तआला अलैह के तिलमीज़ इमाम मुहक़्क़िक़ इब्नुल हम्माम मुनसिक मुतवस्सित में और मुल्ला अली क़ारी मक्की उस की शरह मस्लाके मुनक़सित में फ़रमाते हैं।

बेशक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तेरी हाज़री, और तेरे खड़े होने, और तेरे सलाम, बल्कि तेरे तमाम अफ़आल व अहवाल, और कूच व क़याम से आगाह हैं।

इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

उन को दुरूद जिन को कसे बे कसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

13) अगर जमाअत क़ाइम हो तो शरीक हो जाओ कि उस में तहियतुल मस्जिद भी अदा हो जाएगी वर्ना अगर ग़लबा शौक़ मोहलत दे और उस वक़्त कराहत न हो तो दो रकअत तहियतुल मस्जिद व शुक्राना हाज़री दरबारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम सिर्फ़ कुल या कुल से बहुत हलकी मगर रिआयते सुन्नत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के नमाज़ पढने की जगह जहाँ अब वस्त मस्जिदे करीम में मेहराब बनी है और वहाँ जगह न मिले तो जहाँ तक हो सके उस के नज़दीक नमाज़ अदा करो फिर सज्दए शुक्र में गिरो और दुआ करो कि इलाही अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का अदब और अपना अदब क़ुबूल फ़रमा। आमीन।

14) अब कमाले अदब में डूबे हुए गरदन झुकाए, आँखें नीची किये, लरज़ते, कांपते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अफ़्वो करम की उम्मीद रखते, हुज़ूरे वाला की पाएं यानी मशरिक़ की तरफ़ से मवाजह आलिया में हाज़िर होकर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मज़ारे अनवर में रू ब क़िब्ला जलवा फ़रमा हैं। उस सम्त से हाज़िर हो के हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाह बेकस पनाह तुम्हारी तरफ़ होगी और यह बात तुम्हारे लिये दोनों जहान में काफ़ी है। वलहम्दु लिल्लाह।

15) अब कमाले अदब व हैबत व ख़ौफ़ व उम्मीद के साथ ज़ेरे क़न्दील उस चाँदी की कील के सामने जो हुजरए मुतह्हरा की जुनूबी दीवार में चेहरए अनवर के मुक़ाबिल लगी है कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासले से क़िब्ला को पीठ और मज़ारे अनवर को मुंह कर के नमाज़ की तरह हाथ बाँधे खड़े हो। लिबाब व शरह लिबाव, व इख़्तियार शरह मुख़्तार, और फ़तावा आलमगीरी वग़ैरहा मोअतमद किताबों में इस अदब की तसरीह फ़रमाई कि يَقِفُ كَمَا فِي الصَّلٰوةِ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सामने ऐसा खड़ा हो जैसा नमाज़ में ख़ड़ा होता है यह इबादत आलमगीरी व इख़्तियार की है और लिबाब में फ़रमाया: وَاضِعًا يَمِيْنَهٗ عَلٰى شِمَالِهٖ दस्त बस्ता दाहिना हाथ बाएं पर रख कर खड़ा हो। (फ़तावा आलमगीरी, जि. 1, स. 265, लिबाब, स. 508)

16) ख़बरदार ! जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़े अदब है बल्कि चार हाथ के फ़ासले से ज़्यादा क़रीब न जाओ यह उन की रहमत क्या कम है कि तुम को अपने हुज़ूर बुलाया। अपने मवाजहे अक़दस में जगह बख़्शी। उन की निगाहे करीम अगरचेह हर जगह तुम्हारी तरफ़ थी। अब ख़ुसूसियत और उस दरजे क़ुर्ब के साथ है। वलहम्दु लिल्लाह।

17) अलहम्दु लिल्लाह ! अब कि दिल की तरह तुम्हारा मुंह भी उस पाक जाली की तरफ़ हो गया। जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ला के महबूब अज़ीमुश्शान सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की आराम गाह है। निहायत अदब व वक़ार के साथ, ब आवाजे हज़ीं व सूरत दर्द आगीं व दिल शर्मनाक व जिगर चाक, चाक मोअतदल आवाज से न बलन्द व सख़्त (कि उन के हुज़ूर आवाज़ बलन्द करने से अमल अकारत हो जाते हैं)

न निहायत नर्म व पस्त कि सुन्नत के खिलाफ़ है अगर चेह वह तुम्हारे दिलों के खतरों तक से आगाह हैं, जैसा कि अभी तसरीहात अइम्मा से गुज़रा मुकम्मल आदाब व तस्लीम बजालाओ और अर्ज़ करो।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ

18) जहाँ तक मुमकिन हो और ज़बान यारी दे और मलाल व कसल (यानी सुस्ती व काहिली) न हो, सलातो सलाम की कसरत करो। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अपने और अपने मां, बाप, पीर, उस्ताद, औलाद, अज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिये शफ़ाअत मांगो, बार बार अर्ज़ करो।

اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يَارَسُوْلَ اللهِ

हो सके तो सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वह अशआर जो यक़ीनन महबूब व मक़बूल हैं दरे नूर पर अर्ज़ करें।

सरकार हम गंवारों में तर्ज़े अदब कहाँ
हम को तो बस तमीज़ यही भीक भर की है

मांगेंगे मांगे जाएं मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न हाज़त अगर की है

तुझ से छुपाऊँ मुंह तो करूँ किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ नज़र की है

जाऊँ कहाँ पुकारूँ किसे किस का मुंह तकूं
क्या पुरसिश और जा भी सगे बे हुनर की है

लब वा हैं आँखें बन्द हैं फैली हैं झोलियाँ
कितने मज़े की भीक तेरे पाक दर की है

क़िस्मत में लाख पेच हों सो बल हज़ार कज
यह सारी गुत्थी एक तेरी सीधी नज़र की है

मैं ख़ाना ज़ाद कोहना हूँ सूरत लिखी हुई
बन्दों, कनीज़ों में मेरे मादर पिदर की है

मंगता का हाथ उठते ही दाता की देन थी
दूरी कुबूल व अर्ज़ में बस हाथ भर की है

और मुमकिन हो तो अपने मुशफ़िक व महरबान आक़ा जो आप के सामने हैं यूँ अर्ज़ करो। अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

सरकार हम कमीनों के अतवार पर न जाएं
आक़ा हुज़ूर अपने करम पर नज़र करें
बद हैं तो आप के हैं भले हैं तो आप के हैं
टुकड़ों से तो यहाँ के पले रुख़ किधर करें

और हो सके तो फिर यूँ अर्ज़ करो।

मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं दुरबे बहा दिये हैं

और यूँ फ़रियाद करो।

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सचा हमारा नबी

19) फिर अगर किसी ने अर्ज़ सलाम की वसियत की है बजालाओ। शरअन उस का हुक्म है और यह फ़क़ीर ज़लील उन मुसलमानों को जो इस रिसाला को देखें वसियत करता है कि जब उन्हें हाज़री बारगाह नसीब हो, फ़क़ीर की ज़िन्दगी में या बाद कम अज़ कम तीन बार मवाजए अक़दस में ज़रूर यह अलफ़ाज़ अर्ज़ कर के इस नालाइक़ नंग ख़लाइक़ पर एहसान फ़रमाएं। अल्लाह उन को दोनों ज़हान में जज़ा बख़्शे आमीन।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللہِ وَعَلٰی اٰلِكَ وَذَوِیْكَ فِیْ كُلِّ اٰنٍ وَّلَحْظَةٍ عَدَدَ كُلِّ ذَرَّةٍ
اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ مِّنْ عُبَیْدِكَ اَحْمَدْ رَضَا بْنِ نَقِیْ عَلِیْ یَسْاَلُكَ الشَّفَاعَةَ فَاشْفَعْ لَهٗ وَلِلْمُسْلِمِیْنَ٥

20) फिर अपने दाहिने हाथ यानी मशरिक़ की तरफ़ हाथ भर हट कर हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरए नूरानी के सामने खड़े होकर अर्ज़ करें।

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا خَلِیْفَةَ رَسُوْلِ اللہِ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاوَزِیْرَ رَسُوْلِ اللہِ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَاصَاحِبَ رَسُوْلِ اللہِ
فِی الْغَارِ وَرَحْمَةُ اللہِ وَبَرَكَاتُهٗ

21) फिर इतना ही और हट कर हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रू बरू खड़े होकर अर्ज़ करो।

اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِیْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَرَحْمَةُ اللہِ وَبَرَكَاتُهٗ٥

22) फिर बालिश्त भर मग़रिब की तरफ़ पलटो और हज़रत सिद्दीक़ व हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु ताला अन्हुमा के दरमियान खड़े होकर अर्ज करो।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَاخَلِيْفَتَىْ رَسُوْلِ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَىْ رَسُوْلِ اللهِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَاضَجِيْعَىْ رَسُوْلِ اللهِ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَسْئَلُكُمَا الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمَا وَبَارِكْ وَسَلِّمْ ط

23) यह सब हाज़रियाँ महले इजाबत हैं दुआ में कोशिश करो दुआएं जामेअ करो। दुरूद पर क़नाअत बहतर है।

इज़ाफ़ा : हो सके तो सरकार आला हज़रत का लिखा हुआ क़सीदए दुरूद पढ़ो, इस लिये कि मक़बूल का दुरूद भी मक़बूल है।

कअ़बा के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के शमसुद्दुहा तुम पे करोरों दुरूद
दिल करो ठन्डा मेरा वह कफ़े पा चाँद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद
गरचेह हैं बेहद क़ुसूर तुम हो अफ़ुवो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़ता तुम पे करोरों दुरूद
बे हुनर बे तमीज़ किस को हुए हैं अज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो जव्वादो करीम तुम हो रऊफ़ो रहीम
भीक हो दाता अता तुम पे करोरों दुरूद
ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद
बरसे करम की भरन फूलें नअम के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद
अपने ख़ता वारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे यह भला तुम पे करोरों दुरूद
कर के तुम्हारे गुनाह मांगे तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोरों दुरूद
क्यों कहूँ बे कस हूँ मैं, क्यूँ कहूँ बेबस हूँ मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

काम वह ले लीजिये तुम को जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

मुमकिन हो तो प्यारे रज़ा, मक़बूल रज़ा का प्यारा और मक़बूल सलाम भी पढ़ लें।

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

वह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठा ग़नी कर दिया
मौजे बेहरे समाहत पे लाखों सलाम

जिस को बारे दो आलम की परवाह नहीं
ऐसे बाज़ू की क़ुव्वत पे लाखों सलाम

साया मुस्तफ़ा मायए इस्तिफ़ा
इज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

वह उमर जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

उन के मौला के उन पर करोरों दुरूद
उनके अस्हाबो इतरत पे लाखों सलाम

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने क़ुदरत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश ! मेहशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उन की शौकत पे लाखों सलाम

मुझसे ख़िदमत के क़ुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

24) फिर मिम्बरे अतहर के क़रीब दुआ मांगो।

25) फिर रोज़ए जन्नत में (यानी जो जगह मिम्बर व हुजरा मुनव्वरा के दरमियान है और उसे हदीस में जन्नत की क्यारी फ़रमाया) दो रकअत नफ़्ल ग़ैरे वक़्त मकरूह में पढ़ कर दुआ करो।

26) यूँ ही मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो, दुआ मांगो कि महल्ले बरकात हैं खुसूसन बाज़ में खास खुसूसियत।

27) जब तक मदीना तैय्यिबा की हाज़री नसीब हो। एक सांस बे कार न जाने दो। ज़रूरियात के सिवा अकसर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा तहारत हाज़िर हो। नमाज़ व तिलावत व दुरूद में वक़्त गुज़ारो। दुनिया की बात किसी मस्जिद में न करनी चाहिये न यहाँ।

28) हमेशा हर मस्जिद में जाते वक़्त एतिकाफ़ की नियत कर लो यहाँ तुम्हारी याद दहानी ही को दरवाज़े से बढ़ते ही यह कतबा मिलेगा। نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَافِ ०

29) मदीना तैय्यिबा में रोज़ा नसीब हो। खुसूसन गर्मी में तो क्या कहना कि उस पर वादए शफ़ाअत है।

30) यहाँ हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है। लिहाज़ा इबादत में ज़्यादा कोशिश करो, खाने पीने की कमी ज़रूर करो।

31) कुरआने मजीद का कम से कम एक ख़त्म यहाँ और हतीमे कअ़बा मुअज़्ज़मा में कर लो

32) रोज़ए अनवर पर नज़र भी इबादत है। जैसे कअ़बा मुअज़्ज़मा या कुरआने मजीद का देखना, तो अदब के साथ उस की कसरत करो और दुरूदो सलाम अर्ज़ करो।

33) पंजगाना या कम से कम सुबह व शाम मवाजह शरीफ़ में अर्ज़े सलाम के लिये हाज़िर हो

34) शहर में ख़्वाह शहर के बाहर जहाँ कहीं गुम्बद मुबारक पर नज़र पड़े फ़ौरन दस्त बस्ता इधर मुंह कर के सलातो सलाम अर्ज़ करो बग़ैर उस के हरगिज़ न गुज़रो कि ख़िलाफ़े अदब है।

35) तर्के जमाअत बिला उज़्र हर जगह गुनाह है और कई बार हो तो सख़्त हराम व गुनाहे कबीरा और यहाँ तो गुनाह के अलावा कैसी सख़्त महरूमी है। वल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

सहीह हदीस में है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं जिसकी मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें फ़ौत न हों, उस के लिये दोज़ख़ व निफ़ाक़ से आज़ादियाँ लिखी जाएं। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 4, स. 311)

36) क़ब्रे करीम को हर गिज़ पीठ न करो। और हत्तल इमकान नमाज़ में भी ऐसी जगह खड़े हो कि पीठ करनी न पड़े।

37) रोज़ए अक़दस व अनवर का न तवाफ़ करो न सज्दा न इतना झुकना कि रुकूअ के बराबर हो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताज़ीम उन की इताअत में है।

प्यारे रज़ा के प्यारे व मक़बूल अशआर

अब्रे रहमत के सलामी रहना
फलते हैं पोदे लचकने वाले

आसियो ! थाम लो दामन उन का
वह नहीं हाथ झटकने वाले

अरे यह जलवा गह जानां है
कुछ अदब भी है फड़कने वाले

सालिको ! दर से नज़र मांगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले

जब गिरे मुंह सूए मैखाना था
होश में हैं यह बहकने वाले

और फ़रमाते हैं :

सर सूए रोजए झुका फिर तुझको क्या
दिल था साजिद नजदिया फिर तुझको क्या

बे खुदी में सज्दए दर, या तवाफ़
नजदी मरता है कि क्यों ताज़ीम की

जो किया अच्छा किया फिर तुझको क्या
यह हमारा दीन था फिर तुझ को क्या

और एक जगह फ़रमाते हैं :

उस में रोज़े का सज्दा हो कि तवाफ़
होश में जो न हो वह क्या न करे

38) बक़ीओ उहद व क़ुबा की ज़ियारत सुन्नत है

मस्जिदे क़ुबा की दो रकअत का सवाब एक उमरह के बराबर है और चाहो तो यहीं हाज़िर हो। सय्यिदी इब्ने अबी हमज़ह क़ुद्दिसा सिर्रहू जब हाज़िरे हुज़ूर होते तो आठों पहर बराबर हुज़ूरी में खड़े रहते। एक दिन बक़ी वग़ैरह की ज़ियारत का ख़याल आया। फिर फ़रमाया यह है अल्लाह का दरवाज़ा भीक मांगने वालों के लिये खुला हुआ। उसे छोड़ कर कहाँ जाऊँ।

सर ईजा, सज्दा ईजा, बन्दी ईजा, क़रार ईजा

39) वक़्ते रुख़सत मवाजहे अनवर में हाज़िर हो और हुज़ूर से बार बार उस नेअमत की अता का सवाल करो। और तमाम आदाब कि मक्का मुअज़्ज़मा से रुख़सत में गुज़रे मलहूज़ रखो और सच्चे दिल से दुआ करो कि इलाही ईमान व सुन्नत पर मदीना तैय्यिबा में मरना और बक़ीअ पाक में दफ़्न होना नसीब हो।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا اٰمِیْنَ اٰمِیْنَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ
وَصَحْبِهٖ وَابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ اٰمِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ملخصاً

(अनवारुल बशारह, स 74)

ज़रूरी गुज़ारिश : सरकार आला हज़रत ने यह रिसाला उस वक़्त तहरीर फ़रमाया है जब हरमैन तैय्यिबैन में ख़ुश अक़ीदा सुन्नी इमाम थे। उन के पीछे नमाज़ दुरुस्त थी लेकिन अब हरमैन शरीफ़ैन में नजदी इमाम हैं और हुज़ूर आला हज़रत ने जो नमाज़ बा जमाअत की ताकीद फ़रमाई है उस के लिये शर्त है ख़ुश अक़ीदा सुन्नी मुसलमान का इमाम होना। अब शर्त मफ़क़ूद है इस लिये नजदी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने से बचना फ़र्ज़ है। वर्ना नमाज़ तो एक तरफ़ रह जाएगी और ईमान के तबाह व बरबाद होने का ख़तरा है। इस लिये अगर कोई सुन्नी ख़ुश अक़ीदा इमाम मिल जाए तो उस की इक़्तिदा में नमाज़े बा जमाअत पढ़ी जाए वर्ना तन्हा बग़ैर जमाअत के नमाज़ अदा की जाए। दुआओं का तालिब : अनवार अहमद क़ादरी

जन्नत की क्यारी : मज़ारे अक़दस से मुत्तसिल जन्नत की क्यारी है। मक्का शरीफ़ में हज व उमरह और तवाफ़े कअ़बा मुअज़्ज़मा करने वाले से जन्नत के मिलने का वादा किया गया है यानी मक्का शरीफ़ में ज़न्नत मिलेगी जो उधार है।

मगर मदीना तैय्यिबा की अज़मत व शान का क्या कहना कि मदीना तैय्यिबा की मस्जिद शरीफ़ में ज़न्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और क़रीब में मालिके जन्नत लेटे हुए आराम फ़रमा हैं गोया मदीना तैय्यिबा में जन्नत भी है और मालिके जन्नत भी और मदीना तैय्यिबा में मुआमला उधार नहीं रहता कि जन्नत मिलेगी बल्कि सोदा नक़द है। रियाज़ुल जन्नह में हाज़री दो, गोया जन्नत में बैठे हो।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरी गली को छोड़ कर बाग़े जनां में जाए कौन
नक़द मिले जो मुद्दुआ वादे पे दिल लगाए कौन

और ख़ूब कसरत से दुरूदो सलाम पेश करते रहो और सामने अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की अता व बख़्शिश से मालिके जन्नत हैं उन का दीदार भी करते रहो।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

जन्नत में आके नार में जाता नहीं कोई
शुक्रे ख़ुदा नवेद नजातो ज़फ़र की है
मोमिन हूँ मोमिनों पे रऊफ़ो रहीम हो
साइल हूँ साइलो को ख़ुशी ला नहर की है

हदीस शरीफ़ : हज़रात ! आज भी रोज़ए नूर के क़रीब जली हरफ़ों में लिखा हुआ है।

مَابَيْنَ بَيْتِىْ وَمِنْبَرِىْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِّيَاضِ الْجَنَّةِ ٥

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 12, स. 107)

यानी मेरे घर (हुजरा) और मेरे मिम्बर के बीच की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(शिफा शरीफ़, जि. 2, स. 71)

और एक रिवायत में है :

مَا بَيْنَ قَبْرِيْ وَمِنْبَرِيْ رَوْضَةٌ مِّنْ رِّيَاضِ الْجَنَّةِ ۝

यानी मेरे क़ब्र और मेरे मिम्बर के दरमियान जो जगह है वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

(कन्जुल उम्माल, जि. 12, स. 116)

उसी हदीस शरीफ़ की तर्जमानी आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

इस तरफ़ रोज़े का नूर उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी वाह वाह

सदक़ा इस इनआम के कुरबान इस इकराम के
हो रही है दोनों आलम में तुम्हारी वाह वाह

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! हमारे करीम व रहीम आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का हुजरा शरीफ़ मस्जिद शरीफ़ से मुत्तसिल था आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने हुजरा शरीफ़ से मस्जिद शरीफ़ में जलवा अफ़रोज़ होते, नमाज़ पढ़ते और सहाबए किराम को नमाज़ पढ़ाते और सहाबए किराम ज़ियारत की लज़्ज़त से मुशर्रफ़ होते थे, हुजरा शरीफ़ और मिम्बर शरीफ़ के दरमियान वाली मुक़द्दस जगह जहाँ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मुक़द्दस क़दम बार बार तशरीफ़ लाते और इस नूरानी ज़मीन से क़दम शरीफ़ बार बार लगते थे तो अल्लाह तआला ने उस प्यारी जगह व ज़मीन को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ बना दिया। मस्जिद शरीफ़ की उसी जगह को रियाज़ुल जन्नह और जन्नत की क्यारी कहा जाता है।

अब ग़ौर करो और सोचो ! कि जब क़दम शरीफ़ की अज़मत व बरकत का यह आलम है तो क़दम वाले आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बरकत व अज़मत का क्या आलम होगा।

मेरे मुर्शिदे आज़म, क़ुतबे आलम, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बलन्द इतना तुम्हें हक़ ने किया है
कि अर्शे हक़ भी ज़ेरे पा है

अगरचेह है मक्का की अज़मत मुसल्लम
मगर मेरा दिल तैबा ही पर फ़िदा है

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

पहला जुमा .... दूसरा बयान

हाजियो !

आओ शहंशाह का रौज़ा देखो

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ۝

तर्जमा : और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाजिर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाएं तो ज़रूर अल्लाह तआला को बहुत तौबह क़ुबूल करने वाला महरबान पाएं।

(पारा 5, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ मुद्दइयो ख़ाक को तुम ख़ाक न समझो
उस ख़ाक में मदफूं शहे बतहा है हमारा

हम ख़ाक उड़ाएंगे जो वह ख़ाक न पाई
आबाद रज़ा जिस पे मदीना है हमारा

दरे रसूल पर दुरूदो सलाम के बरकात व हसनात

हज़रत इमाम बैहक़ी बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने ज़माने के मशाइख़ से सुना है कि जो शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे नूर के पास यह आयत पढ़ेगा।

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(पारा 22, रुकू 4)

और इस आयत के पढ़ने के बाद सत्तर मरतबा यह यह दुरूद शरीफ़ पढ़े।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَاٰلِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ۝

तो दरे नूर पर ख़िदमत के लिये मुक़र्रर फ़रिश्ता उस शख़्स को कहता है। ऐ फ़लाँ तेरी हर हाजत व ज़रूरत पूरी होगी। (शुअबिल ईमान, ज. 8, स. 102)

दरे नूर पर फ़रिश्तों की हाज़री

हदीस शरीफ : हजरत कअ़ब अहबार रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :

مَا مِنْ يَوْمٍ يَطْلَعُ إِلَّا نَزَلَ سَبْعُونَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ حَتَّى يَحُفُّوا بِالْقَبْرِ النَّبِيِّ
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَضْرِبُونَ بِأَجْنِحَتِهِمْ وَيُصَلُّونَ عَلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
حَتَّى إِذَا أَمْسَوْا عَرَجُوا وَهَبَطَ مِثْلُهُمْ فَصَنَعُوا مِثْلَ ذٰلِكَ حَتَّى إِذَا انْشَقَّتِ الْأَرْضُ
خَرَجَ فِي سَبْعِينَ أَلْفًا مِنَ الْمَلَائِكَةِ يَزِفُّونَهُ ٥

यानी हर तुलूअ फ़ज्र के वक़्त सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हो कर क़ब्रे अनवर को घेर लेते हैं और दुरूदो सलाम अर्ज़ करते हैं ज़ब शाम होती है तो वह वापस चले जाते हैं और दूसरे सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत हाज़िर हो जाती है इस तरह मलाइका की हाज़री हर दिन व रात होती है हत्ता कि जब क़ियामत क़ाइम होगी तो उस वक़्त भी आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत के साथ तशरीफ़ लाएंगे। (सुनने दारमी, जि. 1, स. 75, शुअ़बिल ईमान, ज. 8, स. 102, जज़्बुल, स. 252)

हज़रत कअ़ब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब सुबह होती है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मज़ारे अनवर, क़ब्रे अनवर के गिर्द इगिर्द यानी क़ब्र शरीफ के चारों तरफ़ हाज़िर हो जाते हैं और शाम तक दुरूदो सलाम भेजते रहते हैं और जब शाम होती है तो वह फ़रिश्ते चले जाते हैं और दूसरा गिरोह सत्तर हज़ार फ़रिश्तों का हाज़िरे दरबार हो जाता है और सुबह होने तक तमाम फ़रिश्ते मज़ारे अनवर को घेरे रहते हैं और दुरूदो सलाम भेजते रहते हैं और फ़रिश्तों की हाज़री का यह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा हत्ता कि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम क़ब्रे नूर से निकलेंगे और सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के साथ क़ियामत के दिन तशरीफ़ लाएंगे। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 269)

ऐ ईमान वालो ! सत्तर हज़ार फ़रिश्तों का गिरोह हर दिन सुबह को और सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की जमाअत हर दिन शाम को हमारे हुज़ूर जाने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िर होती है और फ़रिश्ते मज़ारे नूर के चारों जानिब घेरा डाले रहते हैं और दुरूदो सलाम का नज़राना बारगाहे नूर में पेश करते रहते हैं

सत्तर हज़ार सुबह हैं सत्तर हज़ार शाम
यूँ बन्दगिए ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है

हदीस शरीफ़ से वाज़ेह तौर पर ज़ाहिर व साबित हो गया कि करीम व महरबान आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे नूर पर हाज़िर होना, सिर्फ़ जाइज़ व दुरुस्त ही नहीं बल्कि नूर वाले नूरी मख़लूक़ फ़रिश्तों की सुन्नत है और नूरी मख़लूक़ फ़रिश्तों का आना जाना अल्लाह तआला के हुक्म पर है तो साबित व ज़ाहिर हुआ कि रहमान

व रहीम रब तआला की रज़ा व ख़ुश्नोदी भी महबूब व मक़बूल नबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे नूर क़ब्रे नूर की हाजरी में है।

और हदीस शरीफ़ में है कि जो फ़रिश्ता एक बार मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िरी का शरफ़ हासिल कर लेगा फिर उसे क़ियामत तक दूसरी मरतबा हाज़री नसीब नहीं होगी।

हज़रात ! उम्मती दिन व रात ज़िन्दगी भर अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस क़ब्रे अनवर पर हाज़री देता रहे तो उस के लिये कोई पाबन्दी नहीं है।

इमामे इश्क़ो महब्बत आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

जो एक बार आए दो बारह न आएंगे
रुख़सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है

मअसूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार बार
आसी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है

उम्मती कैसा भी हो : नेक हो या बद, बुरा हो या भला, हर वक़्त हाज़री की सआदत हासिल कर सकता है कोई रोक टोक नहीं।

आसी भी हैं चहीते यह तैबा है ज़ाहिदो
मक्का नहीं कि जांच जहाँ ख़ैरो शर की है

ऐ ईमान वालो ! दरे शाह पर फ़रिश्ते हाज़िर हो कर दुरूदो सलाम पेश करते हैं तो जिन पर दूसरी हाज़री की पाबन्दी है जब दुरूद शरीफ़ उन फ़रिश्तों की आदत है तो फ़ैसला करो कि हम उम्मतियों का हक़ फ़रिश्तों से ज़्यादा है कि नहीं ? इस लिये हम ग़ुलामों पर लाज़िम व ज़रूरी है हम दुरूदो सलाम का हदिया व नज़राना अपने मुशफ़िक़ व महरबान आक़ा महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबारे नूर व रहमत में पेश करते रहें जिस के सदक़ा व तुफ़ैल हम उम्मत पर हाज़िरी की कोई पाबन्दी नहीं है।

एक ख़ास बात ! यह अर्ज़ करना है कि कुछ लोग इस तरह की बात करते हैं कि जब दुरूद शरीफ़ पढ़ा और भेजा जाता है तो फ़रिश्ते, उम्मती का दुरूद आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरबार में पेश करते हैं उस वक़्त आप की रूह क़ब्र में लोटा दी जाती है।

अब मुझे कहना और बताना यह है कि जब फ़रिश्ते हज़ारों की तादाद में और बे शुमार उम्मती सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक हर वक़्त दरे शाह पर हाज़िर रहते हैं और दुरूदो सलाम पेश करते रहते हैं तो कोई सांस और लम्हा और सेकन्ड मिनट और कोई वक़्त ऐसा गुज़रता ही नहीं है कि जिस में हाज़री देने वाले हाज़िरे बारगाह न रहते हों और दुरूदो सलाम पढ़ने वाले दुरूदो सलाम पढ़ते न नज़र आते हों, तो साबित हो गया कि आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रूहे अनवर जिस्मे अनवर के साथ हर आन व लम्हा और हर दिन व रात बल्कि हर वक़्त हाज़िर व मौजूद रहती है रूहे नूर के गाइब व

ग़ैर हाजिर होने का अकीदा बे अस्ल है और मोमिन खुश अकीदा जन्नती मुसलमान का ईमान व अकीदा तो यह है कि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम बि इजनिल्लाह हर वक़्त जिन्दा हैं अपने दरे नूर पर हाजिर होने वालों को देखते हैं और पहचानते भी हैं और गुलामों को जियारत की लज्जत से नवाजते हैं और उम्मती हाजिर दरबार है या दुनिया के किसी हिस्से में मौजूद है हर हाल में उस की फ़रियाद सुनते हैं और उस शख्स की मदद फ़रमाते हैं।

सरकार आला हजरत इमाम अहमद रजा फाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को खबर न हो
उन पर दुरूद जिनको किसे बे कसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

दूसरी ख़ास बात ! यह अर्ज़ करना है कि उम्मती का दुरूदो सलाम फ़रिश्ते ले जाते हैं और पेश करते हैं और वह फ़रिश्ते जो ज़मीन व आसामानों के मुख्तलिफ़ जगहों पर और जन्नत में बैतुल मुकद्दस और कअबा मुअज़्ज़मा में खिदमत पर मामूर हैं जो अपनी जगहें छोड़ कर जा नहीं सकते और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढ़ते हैं तो सवाल यह है कि उन फ़रिश्तों का दुरूद व सलाम कौन ले जाकर बारगाहे नूर में पेश करता है ? क्या नदवा और देवबन्द वाले यह काम करते हैं । अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

अल्लाह तआला जब दीन व ईमान सल्ब कर लेता है तो दिमाग़ व अक़्ल टेढ़ी हो जाती है। अल्लाह तआला अपने अमन व पनाह में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रात ! अल्लाह तआला की बख़्शी हुई ताक़त व कुव्वत से, फर्श से अर्श तक, मग़रिब से मशरिक तक, शिमाल से जुनूब तक। कहीं से भी आप का आशिक़ जब दुरूदो सलाम पढता है तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस आशिक़ को देखते भी हैं और उस के दुरूदो सलाम को ख़ुद सुनते हैं और फ़रयाद सुन कर उस की मदद भी फ़रमाते हैं। (मुस्तदरिक, इमाम हाकिम, जि. 3, स. 10, दलाइलुन्नुबुव्वत, इमाम बैहकी, जि. 1, स. 280)

जैसा कि हदीसे सही में है कि महबूबे ख़ुदा ग़ैब दां रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम आसमानों से ज़मीन पर नुज़ूल फरमाने के लिये आसमानों का दरवाज़ा खोलते हैं तो दरवाज़े के खुलने की आवाज़ को मैं अपने हुजरा में सुनता हूँ।

जब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आसमानों के दरवाज़ों के खुलने की आवाज़ को सुनते हैं तो उम्मती जहाँ से पुकारे उस की आवाज़ भी सुनते हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दूर व नज़दीक के सुनने वाले वह कान
काने लअ़ले करामत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

दरे शाह पर दुरूदो सलाम का तोहफ़ा : दरे नूर, बारगाहे हुज़ूर, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हाज़री के वक़्त मलाइका और आशिक़ों का दुरूदो सलाम पेश करना अल्लाह तआला की बारगाह में दूसरे आमाल के मुक़ाबिल ज़्यादा महमूद व मक़बूल होता है।

मुख़्तसर मगर जामेअ फ़ज़ाइले दुरूद : हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ ने तहरीर फ़रमाया है कि बाज़ बुज़ुर्गों से मनकूल है कि कुल हुवल्लाहु अहद शरीफ़ के पढ़ने से हम ने अपने रब तआला रहमान व रहीम अल्लाह तआला को पहचाना।

(1) और दुरूद शरीफ़ पढ़ने से हम को महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पाक सोहबत नसीबत हुई।

(2) और फ़रमाते हैं कि जो ख़ुश नसीब शख़्स दुरूद शरीफ़ पढ़ता है वह शख़्स महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब या बेदारी में ज़रूर देखेगा।

(3) हुलया अबू नुएम में है। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि दुरूद शरीफ़ गुनाहों क़ो ऐसा मिटा देता है जैसे आग पानी को ठन्डा कर देती है। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर सलाम भेजना ग़ुलाम आज़ाद करने से अफ़ज़ल है।

(4) अस्बहानी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब दो मुसलमान एक दूसरे से मुसाफ़हा करते हैं और मुझ पर दुरूद भेजते हैं तो दोनों का हाथ जुदा होने से पहले उन दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

(अबू दाऊद जि. 2, स. 708, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 9, स. 49)

(5) हज़रत ख़िज़्र व इलयास अलैहिमस्सलाम रास्ता बताते हैं। हदीसे सही से मनक़ूल है कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह समर क़न्दी फ़रमाते हैं कि मैं रास्ता भूल गया दो बुज़ुर्ग शख़्स तशरीफ़ लाए और मुझे रास्ता दिखाया। मालूम किया तो पता चला कि हज़रत ख़िज़्र और हज़रत इल्यास अलैहिमस्सलाम हैं। मैं ने उन दोनों बुज़ुर्गों से दरयाफ़्त किया कि आप हज़रात ने हमारे प्यारे नबी महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को देखा है। उन्होंने कहा हाँ। मैं ने अर्ज़ किया मुझे वह बातें बताइये जो आप हज़रात ने हमारे

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुनी हैं। अल्लाह के नबी हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम और अल्लाह तआला के नबी हज़रत इल्यास अलैहिस्सलाम ने बयान किया कि हम ने महबूबे ख़ुदा इमामुल अम्बिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सुना है आप फ़रमाते थे जो शख़्स मुझ पर दुरूद शरीफ पढ़ता है तो उस का दिल निफ़ाक़ की गन्दगी से इस तरह पाक व साफ़ हो जाता है जिस तरह पानी से कपड़ा पाक व साफ़ हो जाता है।

दुरूद शरीफ़ मोहताजी को ख़त्म कर देता है : हदीस शरीफ का खुलासा यह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला मोहताज नहीं रहता। अल्लाह तआला अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूदो सलाम पढने वाले को अपनी हिक्मते कामिला से ढेरों रोज़ियाँ अता फ़रमाता है। मुलख़्ख़सन। (जज्बुल क़ुलूब, स. 260, ता 270)

ऐ ईमान वालो ! हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर व साबित हो गया कि दुरूदो सलाम के बरकात व हसनात कसीर हैं जो दूसरे आमाल से नसीब नहीं। मज़ारे अनवर के पास दुरूदो सलाम पढ़ने वाले को आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पहचानते हैं और उस का दुरूदो सलाम ख़ुद सुनते हैं और आशिक़ जब दूर दराज़ में रहते हुए इश्क़ो महब्बत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ता है तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने आशिक़ को देखते हैं और उसका दुरूदो सलाम ख़ुद समाअत फ़रमाते हैं। दुरूद शरीफ़ की बरकत से मोहताजी दूर रहती है और रोज़ी कसरत से मिलती है दुरूद शरीफ़ की बरकत से मख़लूक़ के दरमियान महबूब व मक़बूल हो जाता है और दुनिया व आख़िरत के हर ग़म व तकलीफ़ से ज़ादी नसीब होती है और दुरूद शरीफ़ वह महबूब व पसन्दीदा अमल है जिस के सबब अल्लाह तआला राज़ी हो जाता है और महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले उम्मती को देखकर मुस्कुराते हैं और क़ियामत के दिन महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का क़ुर्ब अता होगा।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

हाज़री के वक़्त चेहरे क़ब्रे नूर की तरफ़ रहे : ख़बरदार !! मज़ारे अनवर क़ब्रे नूर की हाज़री के वक़्त मुंह क़ब्र शरीफ़ की तरफ़ रहे। दुरूदो सलाम के वक़्त और दुआ के वक़्त भी। आज कल कुछ लोग मजारे अनवर के चारों जानिब मौजूद होते हैं जिस में हुकूमत के मुक़र्रर करदा मौलवी और पुलिस वाले जो यह कहते नज़र आते हैं कि सलाम कर लो ! बस दुआ क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके मांगो।

हज़रात ! इस तरह की बे अदबी व गुस्ताख़ी करने वालों का मज़हब व मस्लक है कि मज़ारे

अनवर, क़ब्रे नूर की कोई हैसियत व फ़ज़ीलत नहीं है यह अक़ीदा व ईमान यहूदो नसारा का दिया हुआ है जिस से मज़हबे इस्लाम का कोई तअल्लुक़ नहीं है। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला बुज़ुरगाने दीन अल्लाह वालों का इस बारे में मज़हबो मस्लक मुलाहज़ा फरमाइये।

हज़रत इमाम मालिक का इरशाद : (1) ख़लीफ़ा मन्सूर अबू जअफ़र ने हज़रत इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा ऐ इमाम मालिक मज़ारे अनवर के क़रीब दुआ के वक़्त में अपना चेहरा किस तरफ़ करूँ ? आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब या क़िब्ला की तरफ़ ?

हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया :

وَلِمَ تَصْرِفُ وَجْهَكَ عَنْهُ وَهُوَ وَسِيْلَتُكَ وَوَسِيْلَةُ اَبِيْكَ اٰدَمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ

اِلَى اللهِ تَعَالٰى يَوْمَ الْقِيَامَةِ بَلِ اسْتَقْبِلْهُ وَاسْتَشْفِعْ بِهٖ فَيُشَفِّعُهُ اللهُ قَالَ اللهُ تَعَالٰى

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ ٥ الاٰية

यानी अपना मुंह उस शख़्सियत से क्यों फेरता है जो तेरा और तेरे बाप आदम अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला की बारगाह में क़ियामत के दिन वसीला हैं आप की तरफ़ रुख़ कर के आप से शफ़ाअत का सवाल कर, अल्लाह तआला आप की शफ़ाअत क़ुबूल फ़रमाता है फिर यह आयत पढ़ी : وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ الاٰية

(शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 86, मशारिक़ुल अन्वार)

(2) मुस्नद अबू हनीफ़ा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मनक़ूल है कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

قَدِمَ اَيُّوْبُ السَّخْتِيَانِيُّ وَاَنَا بِالْمَدِيْنَةِ فَقُلْتُ لَاَنْظُرَنَّ مَا يَصْنَعُ فَجَعَلَ ظَهْرَهٗ مِمَّا يَلِى الْقِبْلَةَ

وَوَجْهَهٗ مِمَّا يَلِى وَجْهَ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبَكٰى غَيْرَ مُتَبَاكٍ ٥

हज़रत अय्यूब अस्सख़तियानी (जो एक बड़े बुज़ुर्ग हैं) हाज़िरी के लिये आए तो मैं मदीना तैय्यिबा में था मैं ने चाहा कि देखो कि यह (बुज़ुर्ग) हाज़िरी के वक़्त क्या करते हैं तो उन (बुज़ुर्ग) ने पुश्त क़िब्ला की तरफ़ किया और चेहरा आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब किया और ख़ूब आंसुओं से रोते रहे।

(3) हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैह और हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मस्लक व मज़हब यही है कि हाज़री के वक़्त सलाम व दुआ के लिये पुश्त क़िब्ला की तरफ़ और चेहरा क़ब्रे नूर की तरफ़ होना चाहिये।

हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हम्बली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताब ग़ुनियतुत तालिबीन में और इमाम नववी शाफ़ई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी किताबुल मनासिक में तहरीर फ़रमाया है कि मज़ारे अनवर व अक़दस की हाज़री के वक़्त सलाम व दुआ के लिये पुश्त क़िब्ला की तरफ़ और चेहरा क़ब्रे नूर

की तरफ़ होना चाहिये और इस तरह की इबारत जज़्बुल क़ुलूब, स. 251 पर है।

(1) सहाबए किराम और बुज़ुर्गों की मज़ारे अनवर पर हाज़री : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए बैतुल मुक़द्दस की चाबी आप को सुपुर्द की गई बग़ैर जंग व जिदाल के बैतुल मुक़द्दस फ़तह हुआ।

इस वक़्त कअब अहबार मुसलमान हुए। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत कअब से फ़रमाया क्या तुम मेरे साथ मदीना तैय्यिबा चलो गे ताकि हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत नसीब हो। हज़रत कअब अहबार राज़ी हो गए। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बैतुल मुक़द्दस से वापस तशरीफ़ लाए।

اَوَّلُ مَابَدَأَ بِالْمَسْجِدِ وَسَلَّمَ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

सब से पहले मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हाज़िर हुए और मज़ारे अनवर क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम किया।

(वाक़दी, फ़ुतूहुश्शाम, जि. 1, स. 644, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 56, अल जवाहिरुल मन्तिक, स. 27)

(2) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हाज़री :

اَتٰى قَبْرَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَقَفَ فَرَفَعَ يَدَيْهِ حَتّٰى ظَنَنْتُ اَنَّهٗ اِفْتَتَحَ الصَّلٰوةَ فَسَلَّمَ

عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ انْصَرَفَ ٥

यानी हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबिये पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुए खड़े हो कर अपने हाथों को इस क़दर उठाया कि गुमान होने लगा कि नमाज़ पढ़ने जा रहे हैं और नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सलाम अर्ज़ किया फिर चले गए।

(बैहक़ी, शअबिल ईमान, ज. 2, स. 491, शिफ़ा शरीफ़, जि. 2, स. 671, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 70)

(3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जब भी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होते : فَقَالَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَابَكْرٍ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَتَاهُ

(शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 73, अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अल मुसन्निफ़, जि. 3, स. 576 बैहक़ी अस्सुननुल कुबरा, जि. 5, स. 245)

(4) हज़रत अबू उबैद बिन जराह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मैसरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़ासिद बना कर मदीना तैय्यिबा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म की ख़िदमत में भेजा। जब हज़रत मैसरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा में रात के वक़्त दाख़िल हुए।

وَدَخَلَ الْمَسْجِدَ وَسَلَّمَ عَلٰى قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى قَبْرِ اَبِيْ بَكْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ٥

यानी मस्जिद शरीफ़ में पहुँच कर नबिये मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होकर सलाम किया और फिर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सलाम किया। (शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 73)

हज़रत बिलाल हब्शी की मज़ारे अनवर पर हाज़री : आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अकाबिर मुहद्देसीने किराम हज़रत बिलाल मुअज़्ज़िने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वाक़िआ बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़त के ज़माना में मुल्के शाम फ़तह हुआ और हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुल्के शाम में सुकूनत इख़्तियार कर ली।

इब्ने असाकिर अबी दरदा से रिवायत करते हैं कि हजरत बिलाल हब्शी रजियल्लाहु तआला अन्हु नेअपने मुशफ़िक़ व महरबान आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने आशिक़े सादिक हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाते हैं।

مَا هٰذِهِ الْجَفْوَةُ يَا بِلَالُ اَمَا اٰنَ لَكَ اَنْ تَزُوْرَنِیْ ۝

यानी ऐ बिलाल यह कैसा ज़ुल्म व जफ़ा है कि तुम मेरी ज़ियारत को नहीं आते।

(सुबकी शिफ़ाउस्सिक़ाम, स 53, इब्ने हजर मक्की अल जवाहिरुल मुन्तिज़, स. 27)

इस होश रुबा और दिल रुबा ख़्वाब ने हज़रत बिलाल को बे चैन व बे क़रार कर दिया। दीदारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के लिये आँखें अश्कबार हो गई।

मज़ारे अनवर व अक़दस की हाज़री और क़ब्रे अनवर की ज़ियारत के लिये फ़ौरन सफ़र किया और मदीना तैय्यिबा के लिये रवाना हो गए। जब अपने महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर, क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुए तो इस क़दर रोए कि आंसुओं की झड़ियाँ बह रही थीं और शैख़ मुहक्क़िक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि रोते और बिलकते हुए अपने चेहरे को क़ब्र शरीफ़ की ख़ाक पर रख दिया। आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की आमद से मदीना तैय्यिबा वालों के लिये ग़मे जानां ताज़ा हो गया और महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हयाते ज़ाहिरी के शब व रोज़ मदीना वालों की निगाहों में घूमने लगे और मदीना वाले मज़ारे नूर और क़ब्रे नूर के आस पास जमा हो गए और सब की ख़्वाहिश व तमन्ना थी कि हज़रत बिलाल मुअज़्ज़िने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी मीठी और प्यारी आवाज़ में आज अज़ान दे दें ताकि पुरानी याद ताज़ा हो जाए और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी तशरीफ़ लाए। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दोनों शहज़ादों से लिपट गए और ख़ूब रोए और उन के सर और आँखों को चूमा और गोद में उठा लिया। सब ने मशवरा किया कि हमारे कहने से हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु क़ुबूल नहीं कर रहे हैं अगर इमाम हसन व इमाम हुसैन फ़रमा देंगे तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन का पास व लिहाज़ करना ही पड़ेगा वर्ना हजरत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद अज़ान नहीं दी है हत्ता कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से चाहा था कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अज़ान दें तो हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया था कि ऐ हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप ने अपने माल से मुझे खरीदा और राहे खुदा में आज़ाद कर दिया। यह सब आप ने अल्लाह तआला के लिये किया था या अपनी ज़ात के लिये किया था तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मैं ने अल्लाह तआला के लिये किया था, हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया मुझ को अब भी अल्लाह तआला के लिये छोड़ दो और मुझ में इतनी ताक़त व कुव्वत नहीं है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद किसी और के लिये अज़ान कहूँ।

कलाम का खुलासा यह है कि जब हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से फ़रमाया कि ऐ बिलाल जो अज़ान हमारे नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सुनाते थे हम को भी सुना दीजिये अब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये इनकार का कोई चारा नहीं था। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ की छत पर चढ़े। जिस जगह पर महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़माने में खड़े हो कर अज़ान देते थे।

जब अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर कहा तो लोगों में शोर मच गया। आँखों से आंसुओं का सैलाब बह निकला। महबूबे खुदा, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़माने की अज़ान की याद ताज़ा हो गई और पूरा मदीना हिल गिया। अज़ान होती रही और बे क़रारी का तूफ़ान पढ़ता गया और पूरे मदीना पर अजीब व ग़रीब कैफ़ व सुरूर छाया हुआ था मगर जब हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ने اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ फ़रमाया तो कोई औरत व मर्द, छोटा बड़ा मदीना तैय्यिबा में ऐसा न था जो घर से बाहर न निकल आया हो और न रोया हो। ऐसा लग रहा था जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के दिन का ग़म ताज़ा हो गया हो और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाले ज़ार भी अजीब व ग़रीब हो रहा था इस लिये कि अज़ान तो दे रहे हैं लेकिन अज़ान वाला महबूब करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का नूर व रहमत वाला चेहरा सामने न था। दिल पर एसी चोट लगी कि अज़ान के अगले कलेमात न पढ़ सके और मस्जिद शरीफ़ की छत से नीचे उतर आए। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 230)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मज़ारे अनवर पर : अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल हुए :

ثُمَّ انْصَرَفَ اِلٰى قَبْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَبَكٰى

फिर क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुए और ख़ूब रोए। (दार कुतनी)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ क़ासिद भेजते हैं। यह बात शोहरत पा चुकी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुल्के शाम से मदीना तैय्यिबा क़ासिद भेजा करते थे उस क़ासिद से कहते थे :

سَلِّمْ لِيْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

जाकर मेरी तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते आलिया में सलाम अर्ज़ करो। (शअबिल ईमान, जि. 8, स. 100, अल मुदख़ल, स. 261)

ऐ ईमान वालो ! मदीना तैय्यिबा में आक़ाए नेअमत व दौलत, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िर होना सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और चारों मस्लक के अइम्मए किराम और औलियाए उम्मत और सुलहाए उम्मत की सुन्नत है जो उन के अक़वाल व अफ़आल से ज़ाहिर व साबित है।

ऐ ईमान वालो ! आक़ाए नेअमत व दौलत, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर रात व दिन आठों पहर दोनों जहान की नेअमत व दौलत बटती रहती है ऐ आशिक़ो ! कभी भी अपने प्यारे नबी से मांग कर और उन की बारगाह बे कस पनाह में झोली फैला कर देख लो।

अल्लाह तआला के फ़ज़्लो करम से सब कुछ नसीब हो जाएगा।

मुरीदे रज़ा मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी फ़रमाते हैं :

चाहे जो मांगो अता फ़रमाएंगे
ना मुरादो हाथ उठा कर देख लो
यह कभी इनकार करते ही नहीं
बे नवाओ ! आज़माकर देख लो
सेरे जन्नत देखना चाहो अगर
रोज़ए अनवर पे आकर देख लो
दो जहाँ की सर फ़राज़ी हो नसीब
उन के आगे सर झुका कर देख लो

और प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सच्चा हमारा नबी

मज़ारे अनवर पर साइल का हर मक़सद पूरा होता है

मुहम्मद इब्ने मुकन्दर रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान करते हैं कि एक शख़्स ने मेरे वालिद के पास अस्सी दीनार बतौरे अमानत रखे और उस शख़्स ने मेरे वालिद को इजाज़त भी दे दी कि जरूरत के वक़्त तुम इस में से खर्च भी कर लेना, यह कह कर वह शख़्स चला गया मेरे वालिद वक़्ते जरूरत उस में से ख़र्च करते रहे, एक दिन वह शख़्स वापस आया और अपनी रक़म का मुतालबा किया, मगर मेरे वालिद उस की रकम को अदा करने से क़ासिर थे, उस शख़्स से कहा कल आना, अभी मेरे पास इन्तिज़ाम नहीं है। अब मेरे वालिद ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में रात गुज़ारी और मज़ारे अनवर पर फ़रियाद की और दुआ मांगी कि इतने में क्या देखते हैं कि अन्धेरी रात है और एक शख़्स ज़ाहिर हुआ और उस ने अस्सी दीनार की एक थेली मेरे वालिद के हाथ में थमा दी और वह शख़्स चला गया सुबह हुई मेरे वालिद ने उस शख़्स को बुलाया जिस की अमानत थी अस्सी दीनार उस शख़्स के सुपुर्द की और मुतालबा की ज़ेहमत से नजात पाई। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 239)

कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सचा हमारा नबी

चाहे जो मांगो अता फ़रमाएंगे
ना मुरादो हाथ उठाकर देख लो

हमारे हुज़ूर खिलाते हैं : हज़रत इमाम अबू बक्र मुक़री रहमतुल्लाहि तआला अलैह मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हाज़िर हुए आप के साथ दो साथी तबरानी और अबू शैख़ भी थे दो दिन भूके रहे फिर इशा के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर व अक़दस पर हाज़िर हुए और अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया : يَارَسُوْلَ اللّٰهِ الْجُوْعُ

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिकासल्लम में भूका हूँ।

हज़रत इमाम अबू बक्र बयान करते हैं कि रोज़ए अतहर क़ब्रे नूर पर दिल का हाल अर्ज़ कर के वापस आ गया मैं और मेरा साथी अबू शैख़ दोनों तो सो गए मगर मेरा एक साथी तबरानी जागता रहा कि मज़ारे अनवर पर इल्तिजा और दुआ क़ुबूल की जाती है और मांगने वाले को महरूम नहीं रखा जाता है अभी कुछ ही वक़्त गुज़रा था कि दरवाज़े पर दस्तक हुई दरवाज़ा खोला गया एक अलवी साहब दो गुलामों के साथ मौजूद थे हर एक के हाथ में खजूरें और खानों से भरी थेलियाँ थीं। अलवी साहब ने खाना तनावुल फ़रमाया और हमें भी खिलाया, और बाक़ी बचा खाना भी हमें दे दिया।

अलवी साहब ने फ़रमाया कि तुम ने अपनी भूक की शिकायत मज़ारे अनवर व अक़दस पर की थी, तो हमारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे हुक्म दिया कि फ़ौरन जाओ और मेरी बारगाह में आने वाले जो भूके हैं उन को खाना खिलाओ। आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के हुक्म से हाज़िर हुआ हूँ। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 240)

सरकार आला हज़रत इमामे इश्क़ो महब्बत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वाह क्या जूदो करम है शहे बतहा तेरा
नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

और मुरीदे रज़ा फ़रमाते हैं :

यह कभी इनकार करते ही नहीं
बे नवाओ आज़माकर देख लो

दुरूद शरीफ़ :

मज़ारे अनवर से रोटी मिली : हज़रत इब्नुल जला रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान करते हैं कि मैं मदीना तैय्यिबा में आया कुछ अस्बाब ऐसे बने कि एक दो वक़्त खाना नसीब नहीं हुआ एक दो फ़ाक़े बरदाश्त करने पड़े थे कि मैं अपने प्यारे आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस, क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ और क़ब्रे अनवर के क़रीब खड़े होकर अर्ज़ किया।

اَنَا ضَيْفُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَاٰلِكَ وَسَلَّمَ)

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप का मेहमान हूँ।

और मैं क़ब्र शरीफ़ के पास सो गया। महबूबे ख़ुदा, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को एक रोटी अता फ़रमाई आधी रोटी मैंने ख़्वाब ही में ख़ा ली। जब मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो बक़िया आधी रोटी मेरे हाथ में मौजूद थी। (जज़्बुल कुलूब, स. 240)

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न हाजत अगर को है

रब है मोअत्ती यह हैं क़ासिम
रिज़्क़ उस का है खिलाते यह हैं

दुरूद शरीफ़ :

मज़ारे अनवर पर हर सवाल पूरा होता है : हज़रत अबू बक्र अक़तअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैं शहरे महबूब मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुआ और मुझे पाँच दिन गुज़र गए कि मुझे खाना नसीब नहीं हुआ। छटे दिन मज़ारे अनवर, क़ब्रे नूर पर हाज़िर हुआ और अपने प्यारे नबी रहमत व बरकत वाले रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया। اَنَا ضَيْفُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं आप का मेहमान हूँ।

इस के बाद मैं ने ख़्वाब में देखा कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ लाए हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु दाहिनी जानिब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु बाएं जानिब हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु आगे थे और मुझ से फ़रमा रहे थे कि ऐ अबू बक्र अक़तअ उठो ! महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तशरीफ़ ले आए। मैं ज़ल्दी से उठा और आगे बढ़ कर अपने प्यारे सरकार उम्मत के ग़मख़्वार सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दोनों आँखों के दरमियान मैंने बोसा दिया। महबूबे ख़ुदा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को एक रोटी अता की। मैं ने उस रोटी में से खाया और जब ख़्वाब से बेदार हुआ तो रोटी का एक टुकड़ा मेरे हाथ में बचा हुआ था। (जवाहिरुल बिहार, जि. 4, स. 34, जज़्बुल कुलूब, स. 240)

क्या ही ख़ूब फ़रमाया मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने

ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद
कौन देता है देने को मुंह चाहिये
देने वाला है सचा हमारा नबी

दुरूद शरीफ़ :

महरूम वापस होता नहीं मांगने वाला तेरा : हज़रत अहमद बिन मुहम्मद सूफ़ी बयान फ़रमाते हैं कि मैं तीन महीने तक जंगल में फिरता रहा। यहाँ तक कि मेरे बदन की खाल फटने लगी। मैं मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुआ और अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम को और आप के दोनों यार हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सलाम किया और फिर सो गया हमारे हुज़ूर जाने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया। ऐ अहमद ? तू आ गया तेरा हाल क्या है। मैंने अर्ज़ किया कि मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम मैं भूका हूँ और आप का मेहमान हूँ, तो आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि हाथ खोल? मैंने हाथ फैला दिये। आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने चन्द दिरहम मेरे हाथ में दिये। जब मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो वह दिरहम मेरे हाथ में थे। मैं बाज़ार गया। गर्म रोटी और फ़ालूदा ख़रीदा। फिर जंगल को चला गया। (जज़्बुल कुलूब, स. 241)

प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

मंगता का हाथ उठते ही दाता की दैन थी
दूरी कुबूलो अर्ज़ में बस हाथ भर की है
मांगेंगे मांगें जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न हाजत अगर की है

मज़ारे नूर पर फ़रियाद की और बारिश होने लगी : इब्ने अबी शैबा सही सनद से बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़त के ज़माने में एक मरतबा क़हत पड़ा। एक शख़्स मज़ारे अनवर, क़ब्रे अक़दस पर हाज़िर हुआ और बारिश के लिये अर्ज़ किया।

يَارَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ وَسَلَّمَ اِسْتَسْقِ لِاُمَّتِكَ فَاِنَّهُمْ قَدْ هَلَكُوْا ○

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम बे शक आप की उम्मत हलाक हो रही है आप अल्लाह तआला की बारगाह में बारिश के लिये दुआ कीजिये।

(मअरूज़ा पेश करने के बाद वह शख़्स जवाब का इन्तिज़ार करता रहा) तो महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उस शख़्स के ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ए फ़लां ! तुम उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पास जाओ और ख़ुश ख़बरी सुना दो कि बारिश होगी) खूब बारिश हुई पूरा मदीना तैय्यिबा सैराब हो गया) (जज़्बुल क़ुलूब, स. 238, जवाहिरूल बिहार, स. 33)

क़ब्रे अनवर पर चलो मुराद पूरी हो जाएगी : अज़ीमुश्शान मुहद्दिस इब्ने जोज़ी से रिवायत है कि एक ज़माना ऐसा आया कि मदीना तैय्यिबा के बाशिन्दे सख़्त क़हत में मुब्तला हो गए मदनी तैयेबा के लोगों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से क़हत के बारे में शिकायत की। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ़ के पास चलो और क़ब्र शरीफ़ के ऊपर वाली छत में सूराख़ कर के एक ख़िड़की बनाओ और उस ख़िड़की को आसमान की तरफ़ खोल दो ताकि क़ब्रे अनवर और आसमान में कोई पर्दा न रहे।

मदीना तैय्यिबा के लोगों ने हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुक्म से ऐसा ही किया। बहुत बा[illegible] हुई पूरा मदीना तैय्यिबा जल थल हो गया। (दारमी सुनन, जि. 1, स. 56, वफ़ाउल वफ़ा, बा अहवा[illegible]ुल मुर[illegible]फ़ा, [illegible] 17, शिफ़ाउस्सिक़ाम, 128, जज़्बुल क़ुलब़, स. 238)

ऐ ईमान वालो ! कुछ बद अक़ीदा लोग गुमराह करते नज़र आते हैं कि जो मांगना हो अल्लाह तआला से मांगो। और यह भी कहते नज़र आते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस क़ब्रे अनवर के पास सिर्फ़ सलाम कर सकते हैं कोई सवाल नहीं कर सकते हैं और यह भी बकते हैं कि मज़ारे नूर, क़ब्रे अक़दस के पास किसी मुसीबत व परेशानी का ज़िक्र करना शिर्क है। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

तो उस बद अक़ीदा शख़्स के लिये जवाब यह है कि मदीना तैय्यिबा के लोगों को हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया क़हत की मुसीबत से रिहाई के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर, क़ब्रे अक़दस पर चलो। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुक्म पर सहाबए किराम मदीना तैय़्यबा के बाशिन्दे अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अनवर क़ब्रे अक़दस पर हाज़िर हुए और क़हत की मुसीबत व परेशानी से नजात हासिल की, पानी ख़ूब बरसा। बारिश इस शान की हुई कि मदीना तैय्यिबा के बाशिन्दे सैराब हो गए।

पता चला और मालूम हुआ कि मुसीबत और परेशानी में मज़ारे अनवर, क़ब्रे अक़दस पर हाज़िर हो कर महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मदद मांगना हज़रत आएशा सिद्दीक़ा और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की सुन्नते मुबारका है।

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसादे बरसाने वाले
चमक तुझसे पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमका दे चमकाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! महबूबे ख़ुदा, रहीम व करीम नबी, मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़दस, क़ब्रे अनवर की हाज़िरी अल्लाह तआला की बारगाह में बहुत महबूद व मक़बूल अमल है। यह सआदत व बरकत ख़ुश नसीब मोमिन को हासिल होती है।

अब रही बात मुनाफ़िक़ की : बद अक़ीदा व बे ईमान शख़्स की कि यह लोग तो महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ज़ाते नूर पर तरह तरह का सवाल और एतराज़ करते नज़र आते हैं तो आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मज़ारे अनवर, क़ब्रे नूर तो उन गुमराहों की निगाह में कोई हैसियत व हक़ीक़त नहीं रखता है। (अल अयाज़ बिल्लाहि तआला) हवाला मुलाहज़ा फ़रमाइये।

वहाबियों का अक़ीदा : हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे मुक़द्दस हर लिहाज़ से बुत है। (हाशिया, शरहुस्सुदूर, स. 25, मतबुआ साऊदिया)

और देवबन्दी वहाबी मौलाना इस्माईल देहलवी का अक़ीदा गुम्बदे ख़ज़रा वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बारे में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

सब अम्बिया और औलिया उस के रूबरू एक ज़र्रा नाचीज़ से भी कमतर हैं।

(तक़वीयतुल ईमान, स. 119)

अल अयाज़ बिल्लाहि तआला। अल्लाह तआला ईमान के साथ हम सब को अपनी पनाह और अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

इस लिये ऐ सुन्नियो ! अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुस्ताख़ों, ग़द्दारों से हर हाल में बचो और उन से दूर रहो। नमाज़, रोज़ा, हज,

ज़कात, तमाम फ़राइज़ से फ़र्ज़े अकबर ईमान की हिफ़ाज़त है अगर ईमान चला गया (अल्लाह न करे) तो सब बेकार व मरदूद है।

मुहाफ़िज़े ईमान, आशिक़े जाने ईमान सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कितने वाज़ेह लफ़्ज़ों में फ़रमाते हैं :

सूना जंगल रात अनधेरी, छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है
आँख से काजल साफ़ चुरा लें यां वह चोर बला के हैं
तेरी गठरी ताकी है और तूने नीन्द निकाली है

आओ मदीना तैय्यिबा चलें : ताक़त व हिम्मत है, नेअमत व दौलत है, तो देरी नहीं करना चाहिये। मदीना तैय्यिबा का मुसाफ़िर बन ज़ाना चाहिये किसी वहकाने वाले मुनाफ़िक़ की एक न सुनो। अपने प्यारे रब तआला की सुनो!

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने आशिक़ों, ग़ुलामों को अपने मज़ारे अनवर पर बुलाया है इस लिये इस नेअमत व दौलत के हुसूल के लिये दौड़ो और हाज़िर हो जाओ और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और तमाम नेकों अल्लाह वालों, बुज़ुर्गाने दीन की सुन्नत पर नज़र रखो। सरकार आला हज़रत फ़रमाते हैं।

तेरे ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ ले के चले

मांगो ख़ूब मांगो : दरे शाह, मज़ारे अक़दस, क़ब्रे अनवर पर हर फ़रियादी की फ़रियाद सुनी जाती है। दुनिया की नेअमत व दौलत और रहमत व बरकत भी अता की जाती है और आख़िरत के लिये नेकी व सवाब और बख़्शिश व नजात का परवाना दे कर जन्नत का हक़दार बना दिया जाता है।

मुरीदे आला हज़रत मौलाना [illegible]हमान रज़वी फ़रमाते हैं :

चाहे जो मांगो अता फ़रमाएंगे
यह कभी इनकार करते ही नहीं
सेरे जन्नत देखना चाहो अगर
ना मुरादो हाथ उठा कर देख लो
बे नवाओ ! आज़मा कर देख लो
रोज़ए अनवर पे आकर देख लो

गुज़ारिश :

मज़ारे अनवर व अक़दस पर यह आख़री हाज़री न हो : दरे नूर की हाज़री की सआदत और क़ब्रे नूर की ज़ियारत की नेअमत व दौलत से मालामाल होने के बाद जब वापसी का दिन हो मुसल्ला नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम या उस के आस पास दो

रकअत नमाज़ अदा करो यह मस्जिद शरीफ़ से अलविदा की नमाज़ है उस के बाद दुरूदो सलाम की कसरत करो और खूब गिड़ गिड़ा कर रोओ और अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करो कि ऐ अल्लाह तआला ! मेरे रहमान व रहीम रब तआला मैं तुझ से इस सफ़र में नेकी और तक़्वा का सवाल करता हूँ और ऐसे अमल का जो तुझे महबूब व पसन्दीदा है और ख़ूब मांगो, दिल खोल कर मांगो और यह भी दुआ करो।

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ اٰخِرَ الْعَهْدِ لِهٰذَا الْمَحَلِّ الشَّرِيْفِ O

यानी ऐ अल्लाह तआला हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे नूर व अक़दस पर मेरी यह हाज़री आखरी न हो, उस के बाद अपने रहीम व करीम नबी, मुशफ़िक़ व महरबान रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के मज़ारे अक़्दस, क़ब्रे अनवर पर हाज़िर होकर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूदो सलाम पेश करो और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे रहमत व शफ़ाअत में अर्ज़ करो

نَسْأَلُكَ يَارَسُوْلَ اللهِ اَنْ تَسْئَلَ اللهَ اَنْ لَّا يَقْطَعَ اٰثَارَنَا مِنْ زِيَارَتِكَ وَاَنْ يُّعِيْدَنَا سَالِمِيْنَ وَاَنْ يُّبَارِكَ لَنَا فِيْمَا وَهَبْلَنَا وَيَرْزُقَنَا الشُّكْرَ عَلٰى ذٰلِكَ O

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम आप की ख़िदमत में हमारी गुज़ारिश है कि आप अल्लाह तआला से अर्ज़ करें कि हमारी ज़ियारत मुनक़तअ न फ़रमाए और हमें वापसी पर सलामती नसीबत हो। अपने अतियात में मज़ीद बरकत अता फ़रमाए।

इसी तरह ख़ूब रो रो कर दुआ मांगो कि यह हाज़री इस सफ़र की आख़री हाज़िरी है। अपने मां, बाप और पीरो मुर्शिद व उस्ताज़ और तमाम उम्मत के लिये दुआ मांगो। आप से मेरी गुज़ारिश है कि अगर याद रहे तो इस बे इल्म व बे अमल अनवार अहमद क़ादरी और मेरे मां बाप और बच्चों और मेरे अहबाब को भी दुआ में शामिल कर लें तो बड़ा करम होगा।

गुम्बदे ख़ज़रा की दीद का तालिब
अनवार अहमद क़ादरी रज़वी

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

दूसरा जुमा .... पहला बयान

क़ुरबानी की तारीख़ और उसकी फ़ज़ीलत व अहम्मियत

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ يٰبُنَیَّ اِنِّیْ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی

قَالَ يٰاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِیْ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ

तर्जमा : फिर जब वह उस के साथ काम के क़ाबिल हो गया, कहा ऐ मेरे बेटे, मैं ने ख़्वाब देखा, मैं तुझे ज़िबह करता हूँ अब तू देख तेरी क्या राए है, कहा ! ऐ मेरे बाप कीजिये ! जिस बात का आप को हुक्म होता है। ख़ुदा ने चाहा तो क़रीब है कि आप मुझे साबिर पाएंगे।

(पारा 23, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ मुसलमां सुन यह नुकता दर्से कुरआनी में है
अज़मते इस्लाम व मुस्लिम सिर्फ़ कुरबानी में है
सआदत मन्द बेटा झुक गया फ़रमाने बारी पर
ज़मीन व आसमां हैरां थे इस ताअत गुज़ारी पर
यह फ़ैज़ाने नज़र था या कि मकतब की करामत थी
सिखाए किसने इस्माईल को आदाबे फ़रज़न्दी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बुढ़ापे में बड़ी दुआओं और इल्तिजाओं के बाद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के बत्ने पाक से पैदा हुए जैसा कि वाक़िआ गुज़रा।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से बहुत प्यार व महब्बत फ़रमाते थे।

रिवायत है कि फ़रिश्तों ने अल्लाह तआला की बारगाहे अज़मत में सवाल किया कि ऐ परवरदिगारे आलम ! तूने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपना खलील फ़रमाया है और इरशाद फ़रमाया कि

وَاتَّخَذَ اللّٰهُ اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝

(पारा 5, रुकू 14)

लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तो यह हाल है कि अब उन के दिल में उन के फ़रज़न्द की महब्बत भी पैदा हो चुकी है। ऐ अल्लाह तआला ! तेरा खलील और दोस्त कहलाने का तो वही हक़ रखता है जिस के दिल में तेरी महब्बत के सिवा किसी दूसरे की गुन्जाइश ही न हो।

ऐ ईमान वालो ! यही वजह थी कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इस तरह इम्तिहान लिया कि उन के प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी का हुक्म दे दिया ताकि फ़रिश्तों के सवाल का जवाब हो जाए और फ़रिश्ते भी देख लें कि बिला शक व शुबह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के ख़लील और दोस्त हैं

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ख़्वाब : आठवीं ज़िल हिज्जा की रात में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में देखा कि एक फ़रिश्ता अल्लाह तआला का हुक्म सुना रहा है कि ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम ! कुरबानी करो। आप ने सुबह होते ही एक सौ ऊंटों की क़ुरबानी अल्लाह तआला के नाम पर कर दी मगर जब दूसरी रात हुई यानी नवीं ज़िल हिज्जा की रात भी यही ख़्वाब देखा तो आप ने फिर दो सौ ऊंट की कुरबानी पेश की, मगर जब तीसरी रात भी यही ख्वाब देखा तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया। या अल्लाह तआला मैं क्या चीज़ तेरी राह में कुरबान करूँ। जिस का तू मुतालबा फ़रमा रहा है तो अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) तुम मेरी राह में उस चीज़ को कुरबान करो? जिस को तुम दुनिया में सब से ज़्यादा महबूब रखते हो और पसन्द करते हो, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम समझ गए कि मेरे प्यारे बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी का हुक्म है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम यह ख़्वाब देख कर अल्लाह तआला का हुक्म सुन कर न घबराए और न ही परेशान हुए बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुश्नोदी के लिये अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुरबानी के लिये तय्यार हो गए।

इस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलम की उम्र शरीफ़ सात बरस या तेरह बरस की थी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी नेक बीवी हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फ़रमाया ऐ नेक बख़्त बीवी ! आज तुम्हारे प्यारे बेटे इस्माईल की एक बहुत बड़े बादशाह के दरबार में दावत है यह सुन कर हज़रत हाजिरा बहुत ख़ुश हुईं और अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को नहलाया और अच्छे कपड़े पहानए। आँखों में सुर्मा डाला और बालों में कंघी क़िया और दूल्हा बनाकर बाप के साथ कर दिया। इधर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी आस्तीन में रस्सी और छुरी छुपा कर ज़िल हिज्जा की दस तारीख़ को मक्का मुकर्रमा से मिना के मैदान की तरफ़ रवाना हो गए इधर शैतान मरदूद,

इब्लीसे लईन बड़ा परेशान था कि किसी तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को कुरबानी करने से और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को कुरबान होने से रोका जाए इस लिये कि कुरबानी का बहुत बड़ा इनआम है और इस इनआम व इकराम को न मिलने दिया जाए। सब से पहले शैतान एक बूढ़े की शक्ल बनाकर हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास गया और कहने लगा ऐ हाजिरा ! आज हज़रत इब्राहीम तेरे प्यारे बेटे को कहाँ ले गए हैं। हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया अपने दोस्त से मुलाक़ात और मेहमानी के लिये ले गए हैं । शैतान बोला मेहमानी वग़ैरह कुछ नहीं है वह इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िबह करनेले गए हैं ।

हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया क्या कोई महरबान बाप अपने प्यारे बेटे को ज़िबह करता है ? तो शैतान ने कहा अल्लाह तआला का हुक्म है कि इस्माईल अलैहिस्सलाम को मेरी राह में ज़िबह करो। हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया तू शैतान, इब्लीस मालूम होता है जो मुझे धोका देना चाहता है। अगर अल्लाह तआला का हुक्म है तो यह तो एक इस्माईल हैं अगर हज़ारों हों तो मैं हर एक को अपने प्यारे अल्लाह तआला के नाम पर कुरबान कर दूँ और अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुशनोदी हासिल हो जाए यह तो हमारे लिये और हमारे बेटे के लिये बड़ी सआदत की बात है। शैतान का मक्र हज़रत हाजिरा पर न चल सका और इब्लीस ज़लील हो कर वहाँ से भागा और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के पास हाज़िर हुआ और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से कहने लगा कि आप के बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आप को कहाँ ले जा रहे हैं। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, अपने दोस्त के यहाँ मेहमानी में ले जा रहे हैं। शैतान दुश्मने इन्सान बोला। नहीं बल्कि वह आप को ज़िबह करने के लिये ले जा रहे हैं। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या कोई मुशफ़िक़ व महरबान बाप अपने हसीन व जमील बेटे को ज़िबह करता है ? तो शैतान मरदूद ने कहा कि ऐ इस्माईल तुम को ज़िबह करने का हुक्म अल्लाह तआला ने दिया है कि इब्राहीम तुम को अल्लाह तआला की राह में ज़िबह करें। हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर अल्लाह तआला का हुक्म है कि मैं ज़िबह किया जाऊँ तो यह मेरे लिये बड़ी सआदत की बात है कि :

जान दी दी हुई उसी की थी
हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ

फिर इब्लीसे लईन उन से ना उम्मीद हो कर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास आया और कहने लगा ऐ इब्राहीम अलैहिस्सलाम तू तो एक ख़्वाब की बुनियाद पर अपने प्यारे और ख़ूबसूरत बेटे को ज़िबह करना चाहते हो।

हज़रात ! नबी का ख़्वाब हक़ीक़त में वहिये इलाही और हुक्मे इलाही होता है इस लिये आम बन्दों का ख़्वाब देखना ग़लत हो सकता है लेकिन नबी का ख़्वाब ग़लत नहीं हो सकता और न उस में शैतान का वसवसा शामिल हो सकता है।

हमारे हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम वादिये मिना में तशरीफ़ लाए तो शैतान मरदूद, जुमरए उक़बा के पास आप के सामने आ गया और आप को कुरबानी से रोकना चाहा तो आप ने शैताने लईन को सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वह ज़मीन में धंस गया फिर शैतान मरदूद जुमरए सानिया के पास आया तो फिर उसे सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वह ज़मीन में धंस गया फिर तीसरी मरतबा शैतान लईन जुमरए कुबरा के पास आया तो फिर उसे सात कंकरियाँ मारीं यहाँ तक कि वह ज़मीन में धंस गया। (तबरानी व हवाला बहारे शरीअत, हि. 6, स. 101)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का शैतान मरदूद को कंकर मारना इतना पसन्द आया कि क़ियामत तक के हाजियों को हुक्म दे दिया कि अगर चेह आज शैतान उस जगह पर नज़र नहीं आता है लेकिन तीनों जुमरात पर कंकर मारना है और सुन्नते इब्राहीमी को ज़िन्दा रखना है।

ख़लील व ज़बीह की गुफ़्तुगू : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम से जो गुफ़्तुगू की उस को कुरआने करीम ने बयान फ़रमाया है।

قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ
سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝

यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ बेटा! मैं ने ख़्वाब देखा है कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ तो ऐ बेटा, अब तू बता कि तेरी क्या राए है? हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ! ऐ अब्बा जान ! अल्लाह तआला ने आप को जिस बात का हुक्म दिया है उस को आप कर डालिये। इन्शाअल्लाह तआला आप मुझ को साबिर पाएंगे।

हज़रात ! अगर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम नेक व सालेह बाप होने में ला जवाब हैं तो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम भी सआदत मन्द बेटा होने में बे मिस्ल व बे मिसाल हैं। अगर अज़ीमुश्शान बाप कुरबान करने के लिये तय्यार है तो अज़ीमुल मरतबत बेटा भी कुरबान होने के लिये तय्यार है।

न इस बाप का कोई जवाब है न ही इस बेटे का कोई सानी है।

सआदत मन्द बेटा झुक गया फ़रमाने बारी पर
ज़मीन व आसमान हैरां थे इस ताअत गुज़ारी पर
यह फ़ैज़ाने नज़र था या कि मकतब की करामत थी
सिखाए किस ने इस्माईल को आदाबे फ़रज़न्दी

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की तीन वसियत : हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया अब्बा जान ! मेरी तीन वसियत है।

पहली वसियत : मुझे कुरबान करने से पहले आप मेरे हाथ, पांव को रस्सी से बाँध दें ताकि ज़िबह के वक़्त मेरा तड़पना देख कर आप को रहम न आ जाए।

दूसरी वसियत : यह है कि आप मुझ को मुंह के बल लिटाना क्यों कि आप के सीने में बाप का दिल है कहीं ऐसा न हो कि मेरे ख़ूबसूरत चेहरे को देख कर आप के सीने में दिल धड़क जाए और आप का हाथ ज़िबह करने से रुक जाए।

तीसरी वसियत : यह है कि मेरे ज़िबह होने की ख़बर मेरी प्यारी मां को न दीजियेगा वर्ना मेरी मां मेरे ग़म को बरदाश्त न कर पाएगी और उस का दिल पाश पाश हो जाएगा। इस गुफ़्तुगू के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल के हाथ, पांव को रस्सी से बाँधा और आप को मुंह के बल एक पत्थर की चट्टान पर लिटा दिया और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर अपने प्यारे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के नर्म व नाज़ुक गले पर छुरी चला दी। लेकिन अल्लाह तआला की शान का जलवा देखिये कि तेज़ छुरी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गरदन तो क्या काटती, गरदन का एक बाल भी न काट सकी।

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम दोनों बाप और बेटे रोते हुए अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करते हैं ऐ मौलाए करीम ! तू हमारी कुरबानी को कुबूल क्यों नहीं फ़रमा रहा है।

फिर दूसरी मरतबा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पूरी ताक़त से छुरी चलाते हैं और ज़िबह करना चाहते हैं मगर फिर भी छुरी एक बाल भी नहीं काट पाती है तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जलाल में आकर छुरी को एक भारी पत्थर पर पटक देते हैं जिस से पत्थर दो टुकड़े हो जाता है तो आप छुरी से फ़रमाते हैं कि ऐ छुरी तू एक भारी और मज़बूत पत्थर को काट कर दो टुकड़े कर सकती है और मेरे बेटे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के नर्म व नाज़ुक गले को क्यों नहीं काटती ? तो छुरी ज़बाने हाल से अर्ज़ करती है। ऐ अल्लाह के ख़लील ! जब आप नारे नमरूद भड़कती हुई आग में तशरीफ़ ले गए तो आग के शोअलों ने आप को क यों नहीं जलाया था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आग को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था कि मेरे ख़लील इब्राहीम (अलैहिस्सराम) को न जलाना तो छुरी ने कहा ऐ इब्राहीम ! आग को एक मरतबा अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था कि इब्राहीम को न जलाना और मुझे सत्तर मरतबा अल्लाह तआला का हुक्म हुआ है कि इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के नर्म व नाज़ुक गला को न काटना। अब मैं अल्लाह तआला का हुक्म मानूँ या ख़लीलुल्लाह के हुक्म पर अमल करूँ।

हज़रात ! यह वह मन्ज़र था कि फ़रिश्ते भी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला से तअल्लुक़ व महब्बत और उस की रज़ा व ख़ुश्नोदी के लिये कुरबानी का जज़्बा देख कर पुकार उठे कि बे शक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के ख़लील और दोस्त हैं।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के इस जज्बा वफ़ादारी और शाने इख़्लास व ईसार पर अल्लाह तआला की रहमत को प्यार आ गया और अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि ऐ सिदरा के मकीन जिब्रईले अमीन जन्नत से एक मेन्ढा

लाकर हज़रत इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की जगह लिटा दो और मेरे ख़लील के प्यारे बेटे इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को उठा कर उन के हाथ, पांव की रस्सी को खोल दो।

चुनाँचे हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उठा लिया और उन की जगह पर जन्नती दुम्बा लिटा दिया। अब तीसरी मरतबा जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने छुरी चलाई तो छुरी चल गई और दुम्बा ज़िबह हो गया और क़ुरबानी हो गई।

मगर जब आँख की पट्टी खोल कर देखा तो अजीब व ग़रीब मन्ज़र नज़र आया कि मेरे बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की जगह एक दुम्बा ज़िबह किया हुआ पड़ा है और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम एक तरफ़ खड़े होकर मुस्कुरा रहे हैं। उस वक़्त हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर का नअरा बलन्द किया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर पढ़ा और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने व लिल्लाहि हम्दु कहा। (सावी, मआरिजुन्नुबुव्वत)

सदा आई! ऐ मेरे ख़लील तेरा इम्तिहान हो गया और तू इम्तिहान में क़ामयाब हो गया और तेरा बेटा भी बचा लिया गया और उस की जगह जन्नती दुम्बा ज़िबह हो गया और यह क़ुरबानी क़ियामत तक के लिये तेरी सुन्नत और यादगार बना दी गई।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस क़ुरबानी को अल्लाह तआला क़ुरआने करीम में बयान फ़रमाता है।

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ 0 وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ 0

तो जब इन दोनों ने हमारे हुक्म पर गरदन रखी और बाप ने बेटे को माथे के बल लिटाया। उस वक़्त का हाल न पूछ और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम!

(पारा 23, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ 0 اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ 0

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ 0 وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ 0 سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ 0

तर्जमा : बे शक तूने ख़्वाब सच कर दिखाया हम ऐसा ही सिलादेते हैं नेकों को, बे शक यह रौशन जाँच थी और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के फ़िदया में दे कर उसे बचा लिया और हम ने पिछलों में उस की तारीफ़ बाक़ी रखी। सलाम हो इब्राहीम पर।

(पारा 23, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत जिब्रईल पूरी ताक़त से चार मरतबा ज़मीन पर आए : अल्लामा अस्क़लानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अल्लामा बदरुद्दीन ऐनी रहमतुल्लाहि तआला अलैह और अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तहरीर फ़रमाया कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम चार मरतबा अपनी पूरी ताक़त सर्फ़ करके परवाज़ करते हुए ज़मीन पर तशरीफ़ लाए।

पहली मरतबा : जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मिनजनीक़ के ज़रीए आग में डाला गया। आप आग की तरफ़ जा रहे थे तो मैंने सिदरा से परवाज़ की और इस कुव्वत से चला कि अल्लाह तआला के ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का आग में पहुँचने से पहले आप के पास पहुँच गया और अल्लाह तआला का हुक्म सुना कर आग को गुलज़ार बना दिया।

दूसरी मरतबा : मैं सिदरा पर था जब तीसरी बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने छुरी को उठाया और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़िबह करना चाहा, थोड़ा सा फ़ासला बाक़ी था कि छुरी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के गले तक पहुँच जाती। मैं ने बड़ी कुव्वत के साथ सिदरा से परवाज़ किया। जन्नत में ग़या और मेन्ढा लिया छुरी का हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के गले तक पहुँचने से पहले वादिये मिना में आप के पास पहुँच कर हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को उठा लिया और उन की जगह जन्नती मेन्ढा को लिटा दिया।

तीसरी मरतबा : जब हज़रत यूसुफ अलैहिसलाम को कुंए में डाला जा रहा था। रस्सी काट दी गई थी, कुंए का आधा रास्ता तय हो चुका था कि मैं सिदरा से पूरी कुव्वत के साथ चला जन्नत में गया और एक तख़्त लिया उसे उठा कर उस कुंए में हाज़िर हुआ अभी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पानी पर नहीं पहुँचे थे कि मैं ने तख़्त बिछा कर उस पर आप को बिठा दिया।

चौथी मरतबा : जब जंगे उहद में हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का दंदाने मुबारक शहीद हो गया। ख़ूने पाक का क़तरा ज़मीन की तरफ़ आ रहा था तो अल्लाह तआला का हुक्म हुआ कि ऐ जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) अगर मेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़ूने पाक का क़तरह ज़मीन पर गिर गया तो तमाम ज़मीन जल कर राख हो जाएगी तू जल्दी जा और ज़मीन पर गिरने से पहले उठा ले। मैं पूरी ताब व ताक़त से सिदरा की बलन्दी से चला और ख़ूने पाक का क़तरह ज़मीन पर पड़े उस से पहले मैं ने पहुँच कर उठा लिया। मुलख़्ख़सन

(फ़तहुल बारी, शरह बुख़ारी, ऐनी शरह बुख़ारी, तफ़सीर रूहुल बयान)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दर के ख़ादिम और आप की बारगाह के गुलाम हैं। जब ख़ादिमे दर और ग़ुलामे बारगाह हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की ताक़त व कुव्वत का यह आलम है तो मालिके जिन व बशर महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ताक़त व कुव्वत का क्या आलम होगा।

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़रिश्ते ख़ुद्दामे रसूले हशम तमाम उमम गुलामे करम
वुजूदो अदम हुदूसो क़दम जहाँ में अयां तुम्हारे लिये
असालते कुल इमामते कुल सयादते कुल अमारते कुल
हुकूमते कुल विलायते कुल ख़ुदा के यहाँ तुम्हारे लिये

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहाँ तुम्हारे लिये

दुरूद शरीफ़ :

कुरबानी की बरकत

हज़रात ! कुरबानी करने से बरकत व रहमत होती है। ज़ाहिर में माल व दौलत ख़र्च होता है मगर हक़ीक़त में ज़ो माल अल्लाह तआला की राह में ख़र्च किया जाता है वह घटता नहीं है बल्कि वह माल बढ़ता ही चला जाता है।

दिन व रात हम लोग अपनी माथे की आँखों से देखते हैं कि जो जानवर अल्लाह तआला के नाम पर ज़िबह किये जाते हैं वह ज़्यादा तादाद में पाए जाते हैं और वह जानवर जो अल्लाह तआला के नाम पर ज़िबह नहीं होते वह ज़्यादा तादाद में मौजूद नहीं मिलते हैं ?

तो यक़ीनन आप का सच और हक़ फ़ैसला यही होगा कि जो जानवर अल्लाह तआला के नाम पर हज़ारों बल्कि लाखों की तादाद में हर दिन ज़िबह होते हैं फिर भी उन जानवरों की तादाद घटती नहीं बल्कि एक ही मक़ाम पर हज़ारों गाए, भैंस, ऊंट और भेड़, बकरियाँ मौजूद नज़र आती हैं इस कसरत में जो बरकत है उस की वजह सिर्फ़ और सिर्फ़ यह है कि यह जानवर अल्लाह तआला के नाम पर ज़िबह किये जाते हैं और उन की कुरबानी दी जाती है।

लिहाजा साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि जान हो या माल अगर अल्लाह तआला की राह में दिये जाते रहेंगे तो उस में बे पनाह बरकत व रहमत होती रहेगी और वह फूलता और फलता रहेगा और जिस चीज़ को अल्लाह तआला के नाम पर कुरबान नहीं किया जाता वह धीरे धीरे घटती चली जाती है और एक दिन आता है कि वह चीज़ बरबाद व फ़ना हो जाती है।

ऐ ईमान वालो ! आज जितनी कुरबानियाँ हो रही हैं या कियामत तक होती रहेंगी। कुरबानी करने वाले को अज्रो सवाब तो मिलेगा ही लेकिन जुमला कुरबानियों का अज्रो सवाब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को भी मिलता रहेगा। इस लिये कि इस नेक काम की शुरूआत उन बुज़ुर्गों ने की हैं। इस लिये अगर अल्लाह तआला ने माल व दौलत से नवाज़ा है तो हम को भी कोई नेक काम कर गुज़रना चाहिये। हो सके तो अल्लाह तआला का घर, मस्जिद तामीर कर दें, कियामत तक नमाज़ व इबादत होती रहेगी और उन सब का अज्रो सवाब अल्लाह तआला उस खुश नसीब को अता फ़रमाता रहेगा जिस ने मस्जिद तामीर की है। हो सके तो कोई मदरसा बना डालें। कुरआनो हदीस की तालीम होती रहेगी। हाफ़िज व आलिम बनते रहेंगे और नमाज़ व रोज़ा और हज व ज़कात के मसाइल बताते रहेंगे और अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की महब्बत व उल्फ़त का पैग़ाम देते रहेंगे और इस्लाम व ईमान का पैग़ाम बताते और सुनाते रहेंगे और इन तमाम उमूरे ख़ैर का अज्रो सवाब अल्लाह तआला उस खुश

नसीब शख़्स को क़ियामत तक अता फ़रमाता रहेगा जिस शख़्स ने मदरसा तामीर किया है। अल्लाह तआला ऐसे नेक कामों की हमें भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

कुरबानी का मक़सद : हज़रात ! हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अल्लाह तआला की रज़ा व ख़ुश्नोदी के लिये बहुत ख़ुश होकर कुरबानी करे कि अल्लाह तआला दिलों के हालात से वाक़िफ़ व ख़बरदार है। कुरबानी करने में न दिखावा हो और न ही नामवरी हो। सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला के लिये और सुन्नते इब्राहीमी पर अमल करने के लिये कुरबानी की जाए। अल्लाह तआला उन्हीं बन्दों की कुरबानी को कुबूल फ़रमाता है जिन के आमाल में तक़वा और परहेज़गारी पाई जाती हो।

कुरबानी की हक़ीक़त : हज़रत ज़ैद बिन अरकुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सहाबा किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने हमारे हुज़ूर नूरुन अला नूर मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में अर्ज़ किया।

مَا هٰذِهِ الْاَضَاحِیْ

यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इस कुरबानी की हक़ीक़त क्या है तो हमारे सरकार अहमदे मुख़्तार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : سُنَّةُ اَبِیْکُمْ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِ السَّلَامُ ٥

तुम्हारे बाप हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है।

قَالُوْا فَمَا لَنَا فِیْهَا یَارَسُوْلَ اللّٰهِ (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْكَ وَاٰلِكَ وَسَلَّمَ)

सहाबए किराम अलैहिर्रहमतो वर्रिज़वान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम इस कुरबानी से हमें क्या सवाब मिलेगा।

قَالَ بِكُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةٌ ٥

तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, हर बाल के बदले एक नेकी मिलेगी। (इब्ने माजह, जि. 2, स. 226, तिर्मिज़ी, मिश्कात शरीफ)

ऐ ईमान वालो ! जब सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पूछा कि कुरबानी की हक़ीक़त क्या है तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि कुरबानी, अल्लाह तआला के प्यारे ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है, गोया अल्लाह व रसूल जल्ला शानुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लोगों को बताना चाहते हैं कि जो नेक अम्र व भले काम, अल्लाह के नेक बन्दों की आदत व सुन्नत हैं उसी को अल्लाह तआला अपनी इबादत बना देता है। इसी लिये सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कुरबानी जैसी अज़ीम इबादत

को अल्लाह तआला के ख़लील हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत क़रार दिया है।

पता चला कि अल्ला तआला अपने नेक और अच्छे बन्दों से इस क़दर प्यार व महब्बत फ़रमाता है कि उन की अदा और तरीक़ा को सवाब व रहमत का ज़रीआ बना देता है। बस जब हम ने यह हिकमत व नुकता समझ लिया है तो हम पर लाज़िम है कि जो हज़रात अल्लाह वाले हैं, अल्लाह के महबूब हैं, उन के तरीक़ों को हम अपनाएं और उन के दामन से वाबस्ता रहें। इसी में दोनों जहाँ की कामरानी व कामयाबी है।

इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या भटक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

कुरबानी के दिन सब से ज़्यादा महबूब अमल : क़ुरबानी के दिनों में जो अमल अल्लाह तआला को सब से ज़्यादा पसन्द है वह अमल कुरबानी करना है। हमारे हुज़ूर आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ 1 : हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की औलाद यानी इन्सान का कोई अमल कुरबानी के दिन अल्लाह तआला की बारगाह में ख़ून बहाने यानी कुरबानी करने से ज़्यादा महबूब व पसन्दीदा नहीं है। बे शक कुरबानी का जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों व बालों और खुरों के साथ आएगा। إِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ مِنَ اللّٰهِ بِمَكَانٍ قَبْلَ أَنْ يَقَعَ مِنَ الْأَرْضِ فَطِيبُوا بِهَا نَفْسًا ٥

यानी बे शक कुरबानी के जानवर का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह की बारगाह में कुबूल हो जाता है। बस ख़ुश होकर कुरबानी करो। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 275, इब्ने माजह, स. 226, मिश्कात)

हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

हदीस शरीफ़ 2 :

سَمِّنُوا ضَحَايَاكُمْ فَإِنَّهَا عَلَى الصِّرَاطِ مَطَايَاكُمْ ٥

यानी तुम लोग मोटे और तन्दुरुस्त जानवरों की कुरबानी करो इस लिये कि यह कुरबानी के जानवर पुल सिरात पर तुम्हारी सवारी होंगे।

(गुनियतुत तालिबीन, मिश्कात शरीफ़, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 35)

कुरबानी वाजिब है

हदीस शरीफ़ 3 : साहिबे निसाब मुसलमान मर्द व औरत पर हर साल कुरबानी करना वाजिब है। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर साल कुरबानी फ़रमाते और उम्मत को भी हर साल कुरबानी करने का हुक्म दिया और ताक़त रखते हुए कुरबानी न करने वाले से सख़्त नाराज़गी का इज़हार करते हुए इरशाद फ़रमाया कि जो

शख़्स ताक़त होते हुए कुरबानी नहीं करता, हो सकता है कि वह यहूदी हो कर मरे या ईसाई हो कर मरे। (इब्ने माजह, स. 226, मिश्कात शरीफ)

उम्मत की जानिब से कुरबानी

हदीस शरीफ़ 4 : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार मदीने के ताजदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने कुरबानी का बकरा ज़िबह किया और दुआ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنْ مُّحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ وَّمِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ

(सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) यानी ऐ अल्लाह तआला इस कुरबानी को मेरी और मेरी आल और मेरी उम्मत की तरफ़ से कुबूल फ़रमा। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 156, अबू दाऊद, जि. 2, स. 386, मिश्कात शरीफ)

ग़रीब व नादार उम्मती की तरफ़ से कुरबानी

हदीस शरीफ़ : जो मोमिन मुसलमान उम्मती ग़रीब व नादार हैं और गुरबत व मुफ़्लिसी के सबब वह कुरबानी नहीं कर सकते तो खुद हम ग़रीबों के आक़ा हम फ़क़ीरों की सरवत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन की जानिब से कुरबानी का एक मेन्ढा ज़िबह किया और दुआ फ़रमाई। (तिर्मिज़ी, जि. 1, स. 277, मिश्कात शरीफ)

اَللّٰهُمَّ هٰذَا عَنِّیْ وَعَمَّنْ لَّمْ يُضَحِّ مِنْ اُمَّتِیْ

यानी ऐ अल्लाह तआला इस कुरबानी को मेरी जानिब से और मेरे इस उम्मती की तरफ़ से जो कुरबानी की ताक़त नहीं रखता है तू कुबूल फ़रमा ले।

उम्मती की जानिब से कुरबानी का तोहफ़ा

हदीस शरीफ़ (6) : हज़रत हनश रज़ियल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दो मेन्ढों की कुरबानी करते हुए देखा तो मैं ने उन से दरयाफ़्त किया कि यह दो कुरबानी आप ने क्यों किया। तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया :

اِنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوْصَانِیْ اَنْ اُضَحِّیَ عَنْهُ فَاَنَا اُضَحِّیْ عَنْهُ ۝

यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझे वसियत फ़रमाई कि मैं आप की तरफ़ से कुरबानी किया करूँ। इस लिये मैं आप की तरफ़ से कुरबानी करता हूँ। (अबू दाऊद शरीफ़, जि. 2, स. 385, मिश्कात शरीफ़, 128)

ऐ ईमान वालो! हदीस शरीफ़ से साबित हो गया कि बुज़ुरगाने दीन औलियाए किराम हुज़ूर ग़ौसे आज़म, हुज़ूर ख़्वाजा गरीब नवाज़, सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम

अपने शैख़, अपने मां, बाप हत्ता कि किसी भी मोमिन मुसलमान की जानिब से कुरबानी करना जाइज़ व दुरुस्त है।

चाहे वह ज़िन्दा हों या विसाल फ़रमा चुके हों।

वह मुसलमान बड़ा ख़ुश नसीब है जो अपने प्यारे नबी, महरबान रसूल, रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की जानिब से कुरबानी करता है। अल्लाह तआला हम सब को तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। आमीन सुम्मा आमीन।

आज भी हो जो बराहीम सा ईमां पैदा
आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

दूसरा जुमा .... दूसरा बयान

अजब रंग पर है बहारे मदीना

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ۝

तर्जमा : और अगर वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हो और फिर अल्लाह तआला से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाएं। तो ज़रूर अल्लाह तआला को बहुत तौबह कुबूल करने वाला महरबान पाएं।

(पारा 6, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

हाजियो ! आओ शहंशाह का रोज़ा देखो
कअ़बा तो देख चुके कअ़बे का कअ़बा देखो

आबे ज़म ज़म तो पिया ख़ूब बुझाई प्यासें
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरया देखो

ख़ूब आँखों से लगाया है ग़िलाफ़े कअ़बा
क़स्रे महबूब के परदे का भी जलवा देखो

वां मुतीओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पाया
यॉं स्यह कारों का दामन पे मचलना देखो

कर चुकी रिफ़अते कअ़बा पे नज़र परवाज़ें
टोपी अब थाम के ख़ाके दरे वाला देखो

ग़ौर से सुन तू रज़ा कअ़बा से आती है सदा
मेरी आँखों से मेरे प्यारे का रोज़ा देखो

दुरूद शरीफ़ :

तम्हीद : इश्क़ो महब्बत ही मर्दे मोमिन का सरमायए हयात और दौलते दारैन है। इश्क़ ही ने हजरत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआा अन्हु को तमाम सहाबा ही नहीं बल्कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से क़ियामत तक के लिये अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया का अज़ीम व बलन्द मन्सब अता किया। इश्क़ ही की वजह व सब से आशिक़े रसूल हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे अज़ीमुल मरतबत या सय्यदी कह कर पुकारते थे। इश्क़ ही के सबब उहद पहाड़ जन्नती पहाड़ बन गया। इश्क़ ही की बुनियाद पर भूके, प्यासे और नन्हे सहाबए किराम मैदाने जंग में कामयाब व सरफ़राज़ होते थे। इश्क़ ही के तुफ़ैल सारे आलम में इस्लाम का डंका बज रहा था और बोल बाला था इश्क़ ही था जिस के सबब हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हमारे प्यारे ख़्वाजा हिन्द के राजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को औलिया की जमाअत में जो मन्सब व मरतबा अता हुआ वह दूसरे औलिया को कहाँ नसीब।

वह इश्क़ ही था जिस ने अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आला हज़रत और इमामे अहले सुन्नत का अज़ीम व बलन्द मन्सब अता किया।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहान क्या चीज़ है लोहो क़लम तेरे हैं

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! इश्क़ो महब्बत का सिला बड़ा ही ख़ूब तर है और इश्क़ व महब्बत की तारीख़ बड़ी क़दीम है। इश्क़ो महब्बत ही के राज़ व हिकमत को समझाने और बताने के लिये अल्लाह तआला ने सारे आलम को वुजूद का शरफ़ बख़्शा। इश्क़ो महब्बत से लबरेज़ सोहबते नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैज़ान था जो अरब के ज़ालिम व जाबिर इन्सानों क़ो सहाबियत के आला व अशरफ़ मक़ाम व मरतबे तक पहुँचा दिया। अब क़ियामत तक कोई दूसरा इस मक़ाम व मरतबा तक नहीं पहुँच सकता है।

यह इश्क़ व महब्बत की जलवा फ़रमाइयाँ थीं कि उस की गर्मी और तपिश जब हद से तजावुज़ करती तो सहाबा किराम अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत के लिये बे क़रार हो जाते तो प्यासी और उदासी आँखों क़ी प्यास बुझाने और ताज़गी बख़्शने के लिये अपने महबूब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो जाते। रूख़े ज़ैबा की एक ही झलक आशिक़ के क़ल्ब व जिगर को सुकून बख़्श देती और वह पुर सुकून व ताज़ा ज़िन्दगी लेकर दूसरी मुलाक़ात तक लिये रवाना हो जाता। यह दस्तूर था उन आशिक़ाने बा सफ़ा का। और यही रीत थी उन की लाज़वाल महब्बत की।

दो आलम से करती है बे गाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आश्नाई

मगर महबूब करीम, मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल के बाद आने वाले बादए इश्क़ के मतवालों और सर मस्तों के लिये यह क़रार बख़्श और हयात अफ़रोज़ सहूलत बज़ाहिर मुमकिन न थी कि महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत की नेअमत व दौलत का हुसूल किस तरह हो सकेगा। अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को क़ियामत तक के लिये नबी व रसूल बनाया है और आप की ज़ात को रहमतुल लिल आलमीन बना कर भेजा है। रहमते तमाम शफ़ीए उम्मत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शाने रहीमी व करीमी ने यह गवारा न किया कि मेरे विसाल के बाद मेरे उश्शाक़ मेरी बारगाह की हाज़री और मेरी ज़ियारत की नेअमत से महरूम रह जाएं यह कैसे हो सकता है ?

चुनाँचे उश्शाक़ के क़ल्ब व रूह की तस्कीन और दीदार की नेअमत के मतलाशियों के लिये अल्लाह तआला की बारगाह से यह फ़रहत बख़्श ख़ुश ख़बरी सुना दी गई।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝

तर्जमा : और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह तअला से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाएं तो ज़रूर अल्लाह तआला को बहुत तौबह कुबूब करने वाला महरबान पाएं। (पारा 5, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

नबिये रहमत, शफ़ीए उम्मत महबूब व मुशफ़िक़ रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद एक आराबी (देहाती) रोज़ए अक़दस पर हाज़िर हुआ और क़ब्रे पाक की ख़ाके पाक अपने सर पर डालने लगा और अर्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जो आप ने फ़रमाया मैं ने सुना, जो आप पर नाज़िल हुआ (यानी कुरआने करीम) उस में यह आयत भी है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا मैंने बेशक अपनी जान पर ज़ुल्म और मैं आप के हुज़ूर अल्लाह तआला से अपने गुनाह की बख़्शिश चाहने हाज़िर हुआ हूँ तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये। इस पर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर से निदा आई कि तेरी बख़्शिश की गई। (तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

दुरूद शरीफ़ :

क़ब्रे नूर की ज़ियारत से नजात का परवाना मिला

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि एक आराबी सहाबी का वाक़िआ बहुत मशहूर है जो विसाल शरीफ़ के बाद इस आयते मुबारका को पढ़ने के बाद अपने गुनाहों की बख़्शिश के लिये क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुआ। मुहम्मद बिन हरब हिलाली कहते हैं कि जब मैं मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुआ तो नबिये रहमत

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत के लिये क़ब्र शरीफ़ के पास आप के सामने बैठा ही था कि एक आराबी आया और आप की ज़ियारत की और कहने लगा या रसूलल्लाह ! सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम आप पर अल्लाह तआला ने जो सच्ची किताब नाज़िल की है उस में लिखा है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْا मैं आप के पास अपने गुनाहों से बख़्शिश का परवाना लेने आया हूँ आप मेरे लिये बख़्शिश की दुआ कर दें और यह शेअर पढ़ा।

يَا خَيْرَ مَنْ دُفِنَتْ بِالْقَاعِ اَعْظُمُهٗ فَطَابَ مِنْ طِيْبِهِنَّ الْقَاعُ وَالْاَكَمُ
نَفْسِيْ الْفِدَاءُ الْقَبْرَ اَنْتَ سَاكِنُهٗ فِيْهِ الْعِفَافُ وَ فِيْهِ الْجُوْدُ وَالْكَرَمُ

इसके बाद मुझे नीन्द आ गई मैं ने ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मुझ से फ़रमाते हैं इस आराबी शख़्स को बुला कर ख़ुश ख़बरी सुना दो कि अल्लाह तआला ने उस के गुनाहों को बख़्शिश दिया है और उस को मुआफ़ कर दिया है। (इब्ने असीर, जज़्बुल क़ुलूब, स 26)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला का इरशादे पाक क़ुरआने करीम की आयते मुबारका आप हज़रात ने सुन लिया कि ख़ालिक़ व मालिक मौला तआला कितने साफ़ और वाज़ेह तौर पर अपने गुनाहगार बन्दों को हुक्म देता है और गुनाह की बख़्शिश कहाँ और कैसी होगी उस का पता भी बताता नज़र आता है कि ऐ मेरे बन्दो ज़ुल्म व गुनाह हो गया है तो मुआफ़ी व बख़्शिश के लिये मेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हो जाओ और अल्लाह तआला से मुआफ़ी चाहो और मेरा महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तुम्हारे गुनाहों की मुआफ़ी व बख़्शिश के लिये सिफ़ारिश फ़रमा देंगे तो अल्लाह तआला रहमान व रहीम तुम्हारे गुनाहों को बख़्श कर तुम्हें मुआफ़ फ़रमा देगा।

यानी इस आयते करीमा से साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित हो गया कि अल्लाह तआला की बारगाह से मुआफ़ी व नजात का परवाना हासिल करने के लिये मदीने वाले महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे रहमो करम में हाज़िरी देना और आप के वसीले से दुआ मांगना और आप को मदद के लिये पुकारना लाज़िम व ज़रूरी है और फिर रहीम व करीम आक़ा सिफ़ारिश व शफ़ाअत फ़रमा दें तो अल्लाह तआला की रहमत व बख़्शिश का अब्रे करम झमा झम बरसने लगता है। ज़ुल्म व गुनाह धुल जाते हैं और बन्दा मोमिन पाक व साफ़ हो जाता है।

हज़रात ! ईमाने मोहकम और यक़ीने कामिल के साथ मदीना तैय्यिबा में अपने प्यारे नबी महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के प्यारे प्यारे रोज़ए पाक पर हाज़िर हो कर और जिस तरह क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगने का हुक्म दिया गया है उस पर अमल कर के देख लो और आज़मा लो और सब

से बड़ी बात तो यह है कि खुद अल्लाह तआला अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हाज़िर होने की दावत दे रहा है। क्या मजे की बात है कि अल्लाह तआला दावत देने वाला महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मेज़बान और हम उम्मती मेहमान हुए।

क्या ही सच फ़रमाया आशिके मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाजिले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मुजरिम बुलाए आए हैं जाऊका है गवाह
फिर रद हो कब यह शान करीमों के दर की है
गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दावत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

हज़रात ! कुरआने करीम का इरशादे पाक सुन लिया। अब महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमाने ज़ीशान भी सुन लीजिये :

(1) مَنْ زَارَنِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ فَکَاَنَّمَا زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ ٥

यानी जिस शख्स ने मेरी ज़ियारत की मेरे विसाल शरीफ़ के बाद तो गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। (मिश्कात, जि. 1, स. 241, अशिशफाउस्सिकाम, स. 32)

इस हदीस शरीफ़ में वाज़ेह इशारा है कि ऐ मेरे गुलामो ! बे क़रार व मुजतरिब और सुकून व करार से महरूम लोगों को मेरी बारगाहे करम में अगर वैसे ही सुकून व करार का सरमाया नसीब होगा और ज़ियारत की लज़्ज़त व दीदार के अनवार हासिल होंगे। जिस तरह मेरी ज़ाहिर हयात में हाज़िर होने वालों को हासिल होता रहा है और मेरी क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत मेरी ही ज़ियारत है जो हदीस के अलफ़ाज़ से ज़ाहिर व साबित है।

रहमत ने पुकारा : मेरे प्यारे नबी अच्छे और सच्चे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रहमत ने पुकारा मेरे आशिक़ो ! मेरे गुलामो ! मेरे उम्मतियो ! सुनो और खूब ग़ौर व फ़िक्र से कान लगा कर सुनो कि हज अदा करने और कअबा शरीफ़ का दीदार कर लेने से सारे गुनाह मिटा दिये जाते हैं और मुआफ़ कर दिये जाते हैं मगर जब तुम मेरे दरबारे रहमत व नूर में हाज़िर हो जाओगे तो शक व शुबह का ज़र्रा बराबर भी ख़याल न आए कि महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के रोज़ा शरीफ और क़ब्रे अनवर की ज़ियारत से क्या हासिल होगा।

(2) مَنْ حَجَّ فَزَارَ قَبْرِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ کَانَ کَمَنْ زَارَنِیْ فِیْ حَیَاتِیْ ٥ यानी जिस शख्स ने हज किया फिर मेरी क़ब्र की ज़ियारत की मेरे विसाल के बाद तो गोया उस शख्स ने मेरी ज़ाहिरी हयात में मेरी ज़ियारत की। (मिश्कात, स. 241, शिफाउस्सिकाम, स. 18, तबरानी शरीफ़)

मेरा उम्मती सुन ले ! और यक़ीन जान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

(3) مَنْ زَارَ قَبْرِيْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِيْ ۝

यानी जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।

(शिफ़ा जि. 2, स. 183, अश्शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 3, अल ईज़ाह, बज़ार, दार कुतनी, जि 2 स. 278)

दूसरी रिवायत में है :

(4) مَنْ زَارَ قَبْرِيْ حَلَّتْ لَهٗ شَفَاعَتِيْ ۝

यानी जिस ने मेरी क़ब्रे अनवर की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअत साबित हो गई।

(शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 3, बिज़ार)

सिर्फ़ ज़ियारत की नियत : हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हमारे हुज़ूर जाने नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

(5) مَنْ جَاءَنِيْ زَائِرًا لَا تَعْمَلُهٗ حَاجَةٌ اِلَّا زِيَارَتِيْ. كَانَ حَقًّا عَلَيَّ اَنْ اَكُوْنَ شَفِيْعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

यानी जो शख़्स मेरी ज़ियारत के लिये आया मेरी ज़ियारत के अलावा उसे और कोई हाजत न थी तो मुझ पर उस का हक़ है कि मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँ।

(तबरानी मोअजम कबीर, जि. 12, स. 225, दार कुतनी, जज़्बुल कुलूब, स. 205)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला वह दिन नसीब करे कि हम मदीना तैय्यिबा अपने प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हों तो किसी और काम या हाजत की नियत न रहे सिर्फ़ हमारा इरादा अपने प्यारे सरदार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे पाक की हाज़री ही मक़सूद रहे।

सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

होते कहाँ ख़लीलो बिना कअ़बा व मिना
लौलाक वाले साहिबी सब तेरे घर की है

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ फ़ुरूअ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

दुरूद शरीफ़ :

(6) مَنْ زَارَنِيْ بِالْمَدِيْنَةِ مُحْتَسِبًا كُنْتُ لَهٗ شَفِيْعًا وَّشَهِيْدًا ۝

यानी जिस शख़्स ने सवाब की नियत से मदीना तैय्यिबा में मेरी ज़ियारत की मैं क़ियामत के दिन उस शख़्स की शफ़ाअत करूँगा और उस के लिये शहादत दूँगा।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 15, स. 274, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 8, जज़्बुल कुलूब, स. 206)

(7) مَنْ زَارَنِيْ مُتَعَمِّدًا كَانَ فِيْ جِوَارِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۝

यानी जिस शख़्स ने क़सदन, नियत कर के मेरी ज़ियारत की वह शख़्स क़ियामत के दिन मेरे पड़ोस में होगा। यानी मेरे बहुत क़रीब होगा।

(मिश्कात, स. 240, शिफ़ाउस्सिक़ाम, स. 26, जज़्बुल कुलूब, स. 206)

हज़रात ! हदीस शरीफ़ में मोहतसिबन और मुतअम्मिदन का कलमा बड़ा मअना ख़ेज़ और क़ाबिले ग़ौर है जिस के ज़रीए वाज़ेह तौर पर समझाया गया है कि ज़ियारत के लिये आना

क़ल्ब व रूह की तस्कीन का सामान ही नहीं बल्कि बाइसे अज्रो सवाब भी है किसी साहिबे ईमान सच्चे उम्मती को इस सआदते उज़्मा के हुसूल में कभी ग़फ़लत व बे नियाज़ी से काम नहीं लेना चाहिये।

(8) مَنْ حَجَّ الْبَيْتَ وَلَمْ يَزُرْنِي فَقَدْ جَفَانِي ٥

यानी जिस शख़्स ने हज किया और मेरी ज़ियारत नहीं की तो यक़ीनन उस शख़्स ने मुझ पर ज़ुल्म किया। (वफ़ाउल वफ़ा, जि. 2, स. 398, कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 135, जज़्बुल क़ुलूब, स. 206)

(9) مَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ اُمَّتِيْ لَهٗ سِعَةٌ ثُمَّ لَمْ يَزُرْنِيْ فَلَيْسَ لَهٗ عُذْرٌ ٥

यानी मेरे जिस उम्मती के पास दौलत व वुसअत थी फिर भी उस उम्मती ने मेरी ज़ियारत न की तो उस का कोई उज़्र क़ाबिले क़ुबूल नहीं। (जज़्बुल क़ुलूब, स. 206)

(10) مَنْ حَجَّ اِلٰى مَكَّةَ ثُمَّ قَصَدَنِيْ فِيْ مَسْجِدِيْ كُتِبَتْ لَهٗ حَجَّتَانِ مَبْرُوْرَتَانِ ٥

यानी जिस शख़्स ने हज किया फिर मेरी ज़ियारत और मेरी मस्जिद की ज़ियारत का क़स्द किया तो उस शख़्स के लिये दो मक़बूल हज लिख दिये जाते हैं।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 5, स. 52, जज़्बुल क़ुलूब, स. 206)

ऐ ईमान वालो ! हमारे प्यारे आक़ा आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्रे अनवर, तुरबते पाक की ज़ियारत और आप की बारगाह में हाज़री की नेकी व सवाब किस क़दर ज़्यादा और अज़ीम है कि ज़ियारत की सआदत पाने वाला और हाज़री के शरफ़ से मुशर्रफ़ होने वाला दो हज्जे मक़बूल का सवाब पाता है।

बल्कि शैख़ मुहक़्क़िक़ रहमतुल्लाहि अलैह लिखते हैं कि महबूबे ख़ुदा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के दरे अक़दस की हाज़री और आप की ज़ियारत के सबब अल्लाह तआला की बारगाह में हज्जे कअ़बा भी मक़बूल व महबूब हो जाता है (जज़्बुल क़ुलूब, स. 206)

आशिक़े रसूल सरकार आला हज़रत इमामअहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : مَنْ زَارَ تُرْبَتِيْ وَجَبَتْ لَهٗ شَفَاعَتِيْ

उन पर दुरूद जिन से नवैद उन बशर की है
उस के तुफ़ैल हज भी ख़ुदा ने करा दिये
अस्ल मुराद हाज़री उस पाक दर की है

हज़रात ! हमारे हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने करम बालाए करम किया और अपनी नूरानी बारगाह में हाज़री देने वाले और ज़ियारत करने वाले मोमिनों को क़ियामत तक के लिये उन के हक़ में दुआ करते रहने का वादा फ़रमाया।

इस लिये हर उम्मती पर फ़र्ज़ है जब आप के दरे पाक पर हाज़िर हो तो ईमाने कामिल और यक़ीने मोहकम रखे कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जैसे अपनी ज़ाहिरी हयात में मौजूद थे और हर आने वाले की बातों को मुलाहज़ा फ़रमा कर उस के हक़ में दुआ फ़रमाते थे बिल्कुल इसी तरह आज भी हमारे प्यारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम अपने मज़ारे पाक में नूरानी क़ब्र शरीफ़ के अन्दर ज़िन्दा और मौजूद हैं और हर आने वाले को मुलाहज़ा फ़रमाते हैं और उस की आहो ज़ारी और

फ़रियाद को सुनते हैं और उस के हक़ में दुआ फ़रमाते हैं : क्या ही खूब फ़रमाया मेरे आक़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

उन पर दुरूद जिन को कसे बे कसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है
सब खुश्क व तर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह जलवा गाह मालिके हर खुश्को तर की है

मेरी उम्मत के लिये मेरी हयात व विसाल दोनों बहतर हैं

(11) حَيَاتِيْ خَيْرٌ لَّكُمْ وَمَمَاتِيْ خَيْرٌ لَّكُمْ تُعْرَضُ عَلَيَّ اَعْمَالُكُمْ فَمَا رَأَيْتُ مِنْ خَيْرٍ
حَمِدْتُ اللهَ عَلَيْهِ وَمَا رَأَيْتُ مِنْ شَرٍّ اِسْتَغْفَرْتُ لَكُمْ

यानी मेरी हयाते तैय्यिबा तुम्हारे लिये बहतर है और मेरा विसाल शरीफ़ भी तुम्हारे लिये बेहतर है। तुम्हारे आमाल मेरे सामने पेश किये जाते हैं तुम्हारी नेकियाँ मैं देख कर अल्लाह तआला की हम्द करता हूँ और तुम्हारे गुनाहों को मैं देख कर तुम्हारे लिये बख़्शिश की दुआ करता हूँ। (अल बिदाया वन्निहाया, जि 5, स. 275, कन्जुल उम्माल, जि. 11, स. 183)

आगाह : हज़रात ! इस इरशादे पाक में उम्मत को आगाह किया गया है और बताया गया है कि ऐ मेरे उम्मतियो ! हमारे दरबार में आने के लिये ज़ाहिरी हयात का ज़माना ख़ास नहीं है कि मेरी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में तो गुनाहगार इस रिआयत से फ़ायदे उठाते रहें और मेरे विसाल शरीफ़ के बाद इस रिआयत व सुहूलत से महरूम कर दिये जाएंगे बल्कि समझाया गया और बता दिया गया है कि मेरी उम्मत के लिये इस्तिग़फ़ार व बख़्शिश का यह रहमत व बरकत का सिलसिला बराबर क़ियामत तक जारी व सारी रहेगा और जो भी मेरा उम्मती मेरे दरे पाक, क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो कर अल्लाह तआला, रहमान व रहीम, मौला तआला से मुआफ़ी मांगेगा तो हम उस खुश नसीब उम्मती के हक़ में इस्तिग़फ़ार करेंगे तो अल्लाह तआला उस के गुनाहों को बख़्श कर उस की दुआ को क़ुबूल फ़रमालेगा और यक़ीनी तौर पर वह मेरा उम्मती बख़्शा जाएगा।

मेरे आक़ाए नेअमत इमामे इश्क़ो महब्बत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकियों की दावत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

और फ़रमाते हैं :

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले
बरसता नहीं देख कर अब्रे रहमत
बदों पर भी बरसादे बरसाने वाले

दुरूद शरीफ़ :

अम्बियाए किराम ज़िन्दा हैं

हदीस शरीफ़ 1 : हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ اللهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللهِ حَيٌّ يُرْزَقُ ٥

बे शक अल्लाह तआला ने ज़मीन पर हराम कर दिया है कि अम्बियाए किराम के जिस्मों को खाए। तो अल्लाह के नबी ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

(इब्ने माजह, स. 118, अल जवाहिर इब्ने हजर मक्की, स. 25, हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन, जि. 1, स. 713 अल क़ौलुल बदीअ, स. 321, मदारिजुन्नुबुव्वत जि. 1 स. 338)

हदीस शरीफ़ 2 : हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हमारे ग़म ख़्वार नबी महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

أَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ

अम्बियाए किराम अलैहिमस्सलाम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और नमाज पढ़ते है।

(मुस्नद अबू यअला, जि. 6, स. 147, मजमउज़्ज़वाइद जि. 8 स. 211, फ़ैज़ुल क़दीर जि. 3 स. 184, सिराजे मुनीर, जि. 2, स. 356, फ़त्हुल बारी शरह बुख़ारी, जि. 6, स. 352, [illegible], स. 207)

हदीस शरीफ़ 3 : एक शख़्स मज़ारे अनवर से मुत्तसिल अपनी दीवार में कील ठोंक रहा था जिस की आवाज़ मज़ारे पाक तक पहुँच रही थी। तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़ौरन आदमी भेज कर मना किया और फ़रमाया।

لَا تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللهِ فِيْ قَبْرِهٖ ٥ यानी ईज़ा न पहुँचाओ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को इस लिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी क़ब्र शरीफ़ में ज़िन्दा मौजूद है।

हदीस शरीफ़ 4 : मायए नाज़ मुहद्दिस हज़रत मुल्ला अली कारी रहमतुल बारी तहरीर फ़रमाते हैं कि दो शख़्स मस्जिदे नबवी शरीफ़ में ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहे थे।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत साइब बिन यज़ीद से फ़रमाया कि उन दोनों आदमियों को बुलाओ जो ज़ोर, ज़ोर से बातें कर रहे हैं उन दोनों को बारगाह फ़ारूक़ी में हाज़िर किया गया तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन दोनों से पूछा कि तुम कहाँ के रहने वाले हो। उन्हों ने जवाब दिया कि हम ताइफ़ के रहने वाले हैं। तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया :

تَرْفَعَانِ أَصْوَاتَكُمَا فِيْ مَسْجِدِ رَسُوْلِ اللهِ ٥ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

यानी तुम दोनों बलन्द आवाज़ से बातें कर रहे हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मस्जिद में। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 67)

और आगे हज़रत मुल्ला अली कारी रहमतुल बारी आख़री जुमला हदीस शरीफ़ [illegible] नक़ल करते हैं कि :

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन दोनों से फ़रमाया, [illegible]

मुसाफ़िर न होते तो मैं तुम दोनों को सज़ा देता और तुम को इतना मालूम नहीं कि मस्जिद की क या इज़्ज़त होती है और फिर मस्जिदे नबवी शरीफ़ जिस में अज़मत व शराफ़त बहुत ज़्यादा है और फ़रमाया : إِنَّهُ عَلَيْهِ السَّلَامُ فِي قَبْرِهِ حَيٌّ وَقَالَ تَعَالَى لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ 0

और मस्जिद शरीफ़ से मुत्तसिल रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम अपने क़ब्र शरीफ़ में ज़िन्दा हैं और अल्लाह तआला ने फ़रमाया (कुरआने करीम में) कि अपनी आवाज़ों को मेरे महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आवाज़ पर बलन्द न करो। (मिरक़ात शरह मिश्कात, जि 2, स 223)

ऐ ईमान वालो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़र... मां आएशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अन्हा और जुमला सहाबा किराम का अक़ीदा व ईमान था कि महबूबे खुदा हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी क़ब्रे पाक में ज़िन्दा हैं।

तू ज़िन्दा है वल्लाहु तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ब्र में ज़िन्दा हैं और नमाज़ पढ़ते हैं

हदीस शरीफ़ 5 : मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि इमामुल अम्बिया महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَرَرْتُ عَلَى مُوسَى لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِي عِنْدَ الْكَثِيبِ الْأَحْمَرِ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي قَبْرِهِ 0

शबे मेअराज मेरा गुज़र हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र के पास से हुआ जो क़ब्र में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे थे। (मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 268, जज़्बुल कुलूब, स. 211)

हदीस शरीफ़ 6 : इसी तरह हदीस में मज़कूर है कि मेअराज के दूल्हा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम शबे मेअराज बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले गए। अम्बियाए किराम अलैहिमुस्लाम से मुलाक़ात हुई और तमाम अम्बियाए किराम ने हमारे नबी मदीने वाले सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की इमामत में नमाज़ अदा की। (मिश्कात शरीफ़, जि. 2, स. 528, जज़्बुल कुलूब, स. 211)

ऐ ईमान वालो ! छः मुस्तनद हदीसें आप हज़रात ने मुलाहज़ा फ़रमा लीं कि अम्बियाए किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और यह भी सुन लिया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ब्र में और सारे अम्बिया व रुसुल बैतुल मुक़द्दस में ख़ड़े थे।

रुकूअ व सज्दा किया और हमारे मदीने वाले नबी मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी और हमारे आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया।

ग़ौर करो और सोचो ! क्या क़ब्र में ख़ड़ा होना, रुकूअ करना और बैतुल मुक़द्दस में

अम्बियाए किराम से मुलाक़ात करना यह जुमला अफ़आल व हरकात वह शख़्स कर रहा है जो मर कर मिट्टी में मिल गया है। क्या यह सारे अफ़आल मुर्दा अन्जाम दे सकता है ? तो आप जवाब देंगे हर गिज़ नहीं, तो साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि अम्बियाए किराम अल्लाह तआला की अता से अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और जहाँ चाहते हैं तशरीफ़ भी ले जाते हैं

अब चलते चलते बद दीन और बद अक़ीदा देवबन्दी, वहाबी जमाअत के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी का अक़ीदा मुलाहज़ा फ़रमा लें।

वहाबियों का अक़ीदा

नबी भी एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाले हैं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 123)

अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ज़िन्दा कहा ख़ुद आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं बादे विसाल इसी तरह ज़िन्दा हूँ जैसे विसाल से पहले ज़िन्दा था सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अइम्मए दीन व मुहद्देसीन और आज तक के बुज़ुरगाने दीन का अक़ीदा है कि हमारे आक़ा महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी क़ब्रे पाक में ज़िन्दा हैं और अपनी उम्मत के सलाम व कलाम को सुनते हैं और सलाम का जवाब भी देते हैं और अल्लाह तआला के करम से मदद भी करते हैं इस लिये हर सुन्नी मुसलमान पर लाज़िम है कि गुमराह बद अक़ीदा, वहाबी, देवबन्दी जमाअत से दूर रहे वर्ना एक दिन ईमान बरबाद होने का डर है। ख़ूब सो चो और फ़ैसला करो कि जो क़ौम और जमाअत नबी अलैहिस्सलातो वस्सलाम को सिर्फ़ मुर्दा कहने और लिखने पर इक्तिफ़ा नहीं करती है बल्कि यह कहती है कि नबी मर कर मिट्टी में मिल गए, तो जो क़ौम ऐसा गन्दा अक़ीदा रखती हो तो गोया उस क़ौम और जमाअत का इस्लाम व ईमान और अक़ीदा मुर्दा हो गया है और उस का ईमान व अक़ीदा भी मर कर मिट्टी में मिल चुका है। जिस का सुबूत दुनिया के सामने मौजूद है कि मारे, काटे जा रहे हैं और उजाड़े और बरबाद किये जा रहे हैं।

हज़रात ! वहाबियों ने किस ज़ात को मुर्दा और मर कर मिट्टी में मिल जाने वाला कहा है। ज़िन्दगी ख़ुद उसी महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सदक़ा और अतिया है।

हदीसे लौलाक ! से साफ़ ज़ाहिर है कि सब कुछ उसी ज़ात के लिये पैदा किया गया है। हत्ता कि वहाबी, देवबन्दी जैसे बे ईमान व बद अक़ीदा भी उसी महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सदक़ा व तुफ़ैल पैदा हुए। कुछ तो नमक का हक़ अदा करते और उन के अज़ीम एहसान को हचानते ! क़ब्र की तारीक व अन्धेरी कोठरी सामने है अल्लाह तआला मकान से पाक है। उस की ज़ात ला महदूद है, कोई मकान ही नहीं जिस में उस की पाक ज़ात समा सके। अल्लाह तआला के नूर र करम का मुजस्समा मदीने वाले आक़ा महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हर उम्मती की क़ब्र में

तशरीफ़ लाते हैं मोमिन आशिक की कब्र जगमगाने लगती है। मोमिन खुश अक़ीदा पहचान लेता है कि दुनिया में जिस का कलमा पढ़ा था। जिन का नामे पाक सुन कर अंगूठा चूमता था। मदद के लिये हर वक़्त जिन को या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम कह कर पुकारता था वही हमारे प्यारे नबी और अच्छे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जलवा गर हैं।

मेरे मुर्शिदे आजम हुज़ूर मुफ्तिये आजमे हिन्द रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

नसीब तेरा चमक उठा देख तू नूरी
लहद के सरहाने अरब के चाँद आए हैं

मगर मुनाफ़िक़, बद अकीदा पहचान नहीं पाएगा। महबूबे आजम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को न पहचानना ही अल्लाह तआला के क़हर व अज़ाब के आने का सबब बन जाएगा। क़ब्र व क़ियामत और दोजख़ में हमेशगी के अज़ाब में मुब्तला रहेगा।

तौबह का दरवाजा खुला है। ईमान ले आओ। आशिके मदीना बन जाओ। चेहरा रौशन और दिल मुनव्वर हो जाएगा। जन्नत के हक़दार बना दिये जाओगे।

आशिके मुस्तफा सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

आज ले उन की पनाह आज मदद मांग उन से
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया
उन्हें जाना, उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द में दुनिया से मुसलमान गया

मोमिन अपनी क़ब्र पर आने वाले को पहचानता है

हदीस शरीफ़: हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करते हैं कि प्यारे मुस्तफा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया, जब कोई शख्स अपने शनासा की क़ब्र पर गुज़रे और सलाम करे तो क़ब्र वाला उस शख्स को पहचान लेता है और उस के सलाम का जवाब देता है।

इसी तरह बहुत सी हदीसें मौजूद हैं जो आम मोमिनीन के ज़िन्दा होने का सुबूत देती हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लमर जो जाने ईमान हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की हयाते तैय्यिबा तो सब से अरफ़अ व आला है।

पेशवाए अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

जिस के तलवों का धोवन है आबे हयात
है वह जाने मसीहा हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी

आशिके मुस्तफ़ा हज़रत शैख़ मुहक्क़िक़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि सुलैमान ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को ख़्वाब में देखा, मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जो लोग आप की ज़ियारत को आते हैं और आप को सलाम अर्ज करते हैं : क्या आप उन का सलाम सुनते हैं ? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : 0 نَعَمْ وَاَرُدُّ عَلَيْهِمْ हाँ मैं सुनता हूँ और उन के सलाम का जवाब भी देता हूँ। (जज़्बुल कुलूब, स. 210)

इसी तरह की एक और हदीस शरीफ़ है : इब्ने नजार ने इब्राहीम बिन बशार से रिवायत की है वह कहते हैं कि मैं ने एक साल हज अदा किया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत के लिये मदीना तैय्यिबा आया। जब मैं आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की क़ब्र शरीफ पर पहुँचा और सलाम अर्ज किया तो क़ब्र शरीफ़ के अन्दर से मैं ने एक आवाज़ सुनी कि इरशाद फ़रमाते हैं : व अलैकस्सलाम इसी तरह की बहुत सी हदीसें मनकूल हैं और तमाम उलमा मुत्तफ़िक़ हैं कि जाने मसीहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद हयात में कोई शुबह नहीं है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का इरशादे पाक है कि : 0 عِلْمِىْ بَعْدَ وَفَاتِىْ كَعِلْمِىْ فِىْ حَيَاتِىْ यानी मेरा इल्म मेरे विसाल के बाद ऐसा ही है जैसा मेरी ज़ाहिरी हयात में था। (जज़्बुल कुलूब, स. 210)

आशिके मुस्तफा प्यारे रज़ा अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बाद उन की हयात
मिस्ले साबिक़ वही जिस्मानी है

तू ज़िन्दा है वल्लाह, तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आलम से छुप जाने वाले

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

तीसरा जुमा .... पहला बयान

हज़रत फ़ारूक़े आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

फ़ज़ाइलो ख़साइस

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ

تَرٰىهُمْ رُکَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ز

तर्जमा : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सज्दे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रज़ा चाहते। (पारा 26, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

ऐ ईमान वालो ! जाने शाने अदालत, मुरादे मुस्तफ़ा, दुआए महबूबे ख़ुदा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत, इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह उमर जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

तर्जमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

तम्हीद : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना ख़िलाफ़त में अल्लाह की ज़मीन अद्लो इन्साफ़ से भर गई दुनिया में हक़ व रास्ती और दयानत दारी का सिक्का राइज हुआ। मख़्लूक़े ख़ुदा के दिलों में हक़ परस्ती व पाक बाज़ी का जज़्बा पैदा हुआ। इस्लाम के बरकात व हसनात से एक आलम फ़ैज़ियाब हुआ।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोअब व हैबत व जलाल का यह आलम था कि बातिल हर वक़्त लरज़ा बरन्दाम रहता था। और बातिल व ज़ालिम हुकूमतें और सलतनतें ख़ौफ़ से लरज़ती थीं।

वह उमर फ़ारूके आज़म जिन को महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने रहमान व रहीम रब तआला की बारगाह से दामने दुआ फैला कर मांगा था, वह उमर फ़ारूके आज़म जिन के मुसलमान होने से कुफ़्र व शिर्क के ऐवानों में सफ़ मातम बिछ गई थी और बातिल के सनम कदों में कोहराम मच गया था, इस्लाम की बे बसी का दौर ख़त्म हो गया था और इस्लाम की शौकत व सतवत के नए अहद का आग़ाज़ हो गया था।

वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अपने आक़ाए नेअमत व दौलत मुर्शिदे करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निगाहे लुत्फ़ व करम के चाँद तारा थे, जिन को आग़ोशे रहमत ने बड़े नाज़ व अन्दाज़ से पाला था उसी सबब से उन की ज़बान पर हक़ गोया था।

वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन का क़ल्ब व सीना इश्क़े खुदा और महब्बत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का मदीना था जिस पर अनवारे खुदा और अनवारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का पैहमे नुज़ूल हुआ करता था।

वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन का नामे नामी आज भी अद्ल व इन्साफ़, दयानत व अमानत, हक़ गोई व बे बाकी, जुरअत व हिम्मत का नूरानी और इरफ़ानी उनवान बन कर चमक रहा है।

वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन की दुरवेशाना और फ़क़ीराना ज़िन्दगी का हाल यह था कि लिबास पर पेवन्द पर पेवन्द लगे होते थे मगर उन की वसीअ व अरीज़ सलतनत में कोई भूका नहीं सोता था और उन का यह ऐलान था कि इस्लामी सलतनत में कोई कुत्ता और बकरी भी भूका न रहे वर्ना उमर से उस की बाज़ पुर्स होगी।

वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस की रिआया रात को आराम से सोती थी और वह ख़ुद रातों को जाग कर पहरा दिया करते थे। वह उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन का मक़ाम व मरतबा अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया बित्तहक़ीक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तमाम सहाबा में अफ़ज़ल व आला है।

तर्जमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

वह उमर जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत

आप वाक़िआ फ़ील के तेरह साल के बाद मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए, आप ने जब इस्लाम कुबूल किया उस वक़्त तक चालीस मर्द और ग्यारह औरतें इस्लाम में दाख़िल हो चुकी थीं

और एक रिवायत के मुताबिक उन्तालीस मर्द और तेईस औरतों के बाद इस्लाम से मुशर्रफ हुए। एलाने नुबुव्वत के छटे साल सत्ताईस या छब्बीस साल की उम्र में आप ने इस्लाम कुबूल किया। (तारीखुल खुलफ़ा, अरबी 86)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम व नसब

आप का नाम उमर है और आप की कुन्नियत अबू हफ्स है और आप का लकब फारूके आज़म है। आप के वालिद का नाम खत्ताब और वालिदा का नाम अन्तमा है जो हश्शाम बिन मुग़ीरा की बेटी और अबू जहल लईन की बहन हैं, आप का शजरह नसब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आठवीं पुश्त के खानदानी शजरह से मिलता है।

(तारीखुल खुलफ़ा, अरबी, 86, तबकात इब्ने सअद : जि. 3, स. 59)

मुरादे मुस्तफ़ा हजरत उमर फ़ारूके आज़म : हमारे आका महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जब कभी उमर बिन खत्ताब या अबू जहल को देखते तो अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते अल्लाह तआला ! इन दोनों में जो तेरे नज़दीक ज़्यादा पसन्दीदा है उस से अपने दीन को इज़्ज़त व कुव्वत अता फ़रमा। हदीस शरीफ़ की रिवायत इस तरह से है :

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है।

كَانَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا رَأٰى عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ اَوْ اَبَا جَهْلِ بْنَ هِشَامٍ

قَالَ اَللّٰهُمَّ اشْدُدْ دِيْنَكَ بِاَحَبِّهِمَا اِلَيْكَ (तबकात इब्ने सअद : जि. 3, स. 58)

यानी जब भी हमारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उमर बिन खत्ताब या अबू जहल लईन को देखते तो दुआ करते ऐ अल्लाह तआला उन दोनों में से जो तेरे नज़दीक महबूब है उस से अपने दीन को कुव्वत व ताकत अता फ़रमा।

وَكَانَ اَحَبُّهُمَا اِلَيْهِ عُمَرُ ٥ उन दोनों में अल्लाह तआला को महबूब व पसन्दीदा हज़रत उमर थे।

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 209)

महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये खास दुआ फ़रमाई थी।

اَللّٰهُمَّ اَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً

यानी या अल्लाह तआला खास तौर से उमर बिन खत्ताब को मुसलमान बना कर इस्लाम को इज़्ज़त व ताक़त अता फरमा।

(इब्ने माजह, स. 11, अल मुस्तदरिक इमाम हाकिम, जि. 3, स. 83)

हज़रत उमर फ़ारूक़ का कुबूले इस्लाम

इस्लाम की बढ़ती हुई ताक़त व कुव्वत को देख कर कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन घबरा गए। आखिर एक दिन कुफ़्फ़ारे मक्का जमा हुए अबू जहल ने मजमे में ऐलान किया कि जो शख़्स मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को क़त्ल करेगा (मआज़ल्लाहि तआला) उस शख़्स को इनआम के तौर पर एक सौ ऊंट और चालीस हज़ार दिरहम दिया जाएगा, उस वक़्त हज़रत उमर भी मौजूद थे। हज़रत उमर ने कहा मैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को क़त्ल करूँगा, नंगी तलवार ली और कत्ल के इरादे से चल पड़े।

हज़रात! बे ख़बर हज़रत उमर को पता न था कि उस ज़ाते नूर को क़त्ल करने जा रहा हूँ जिस ज़ाते पाक की हिफ़ाज़त की जिम्मेदारी खालिक़ व मालिक अल्लाह तआला ने ले रखी है, यह वह शमा नूर व हिदायत है जो न बुझा है और न ही बुझाया जा सकता है।

आक़ाए नेअमत व बरकत सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं:

क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए
पर न डूबे न डूबा हमारा नबी
बज़्मे आख़िर का शमा फ़रोज़ां हुआ
नूरे अव्वल का जलवा हमारा नबी

और किसी ने कहा है:

नूरे ख़ुदा है कुफ़्र की हरकत पे ख़न्दा ज़न
फूंकों से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा

दुरूद शरीफ़:

बहर हाल हज़रत उमर चले रास्ते में हज़रत नुएम बिन अब्दुल्लाह मिल गए, हज़रत उमर का तेवर देख कर फ़रमाया उमर! कहाँ जा रहे हो? हज़रत उमर ने कहा मैं आज मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) का फ़ैसला करने जा रहा हूँ हज़रत नुएम ने फ़रमाया: ऐ उमर! पहले तुम अपने घर की ख़बर लो! तुम्हारी बहन फातिमा बिन्ते ख़त्ताब और तुम्हारे बहनोई सईद बिन ज़ैद ने इस्लाम कुबूल कर लिया है। यह ख़बर सुनते ही हज़रत उमर पलट पड़े और बहन के घर पहुँचे उस वक़्त हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन दोनों मियां बीवी को क़ुरआने मजीद पढ़ा रहे थे, हज़रत उमर ने दरवाज़ा पर दस्तक दी, सूराख़ से देखा तो हज़रत उमर थे, हज़रत ख़ब्बाब मकान के दूसरे हिस्से में जा कर छुप गए और बहन ने क़ुरआने मजीद के वह औराक़ छुपा लिये जिन पर सूरह ताहा लिखी हुई थी, घर के अन्दर आए और पूछा यह आवाज़ कैसी आ रही थी जो मैं ने सुनी? बहन और बहनोई दोनों घबरा गए। हज़रत उमर ने कहा, मुझे मालूम हुआ है कि तुम दोनों मुसलमान हो गए हो यह कह कर अपने बहनोई हज़रत सईद को मारने लगे, बहन ने अपने

शोहर को बचाना चाहा तो उन को भी इतना मारा कि बहन लहू लुहान हो गई। बहन हजरत फ़ातिमा और बहनोई हज़रत सईद कहने लगे कि हम दोनों अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर ईमान ले आए हैं और इस्लाम कुबूल कर लिया है। अब तुम से जो हो सके कर लो ! बहन ने फरमाया ऐ उमर ! कान खोल कर सुन लो ! अगर तुम्हारी रगों में ख़त्ताब का खून है तो मेरी रगों में भी ख़त्ताब का खून है। तुम मार मार कर मेरी जान तो ले सकते हो मगर मेरा ईमान नहीं ले सकते। बहन के जिस्म से बहता हुआ खून देख कर और बहन की बातों को सुन कर हजरत उमर का दिल नर्म पड़ गया और बहन से कहने लगे कि वह किताब मुझे भी दिखाओ जो तुम लोग पढ रहे थे बहन ने कहा कि ऐ उमर : لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ

इस किताब को वही बाथ लगा सकता है जो पाक हो। हज़रत उमर ने गुस्ल किया और कुरआने मजीद के मुक़द्दस औराक़ को लेकर पढने लगे। जब सूरए ताहा की यह आयत पढी

اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ

यानी बे शक मैं अल्लाह हूँ, मेरे अलावा कोई मअबूद नहीं तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ाइम करो। (पारा 16, रुकू 10)

अब हज़रत उमर के दिल की दुनिया बदल चुकी थी, कहने लगे मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में लेचलो ! हज़रत उमर की बातों को सुन कर हज़रत ख़ुबाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बाहर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया ऐ उमर ! मैं तुम को ख़ुश ख़बरी सुनाता हूँ कि कल की रात में मेरे मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुआ फ़रमाई थी कि या अल्लाह तआला उमर बिन ख़त्ताब या अबू जहल उन दोनों में से जो तुझे ज्यादा महबूब हो, उस से इस्लाम को इज़्ज़त व कुव्वत अता फ़रमा। ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारे हक़ में दुआ कुबूल हो गई है।

हज़रत उमर, हज़रत ख़ुबाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ ख़िदमते अक़दस की हाज़री के लिये रवाना हो गए।

उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को सफ़ा के क़रीब हज़रत अरक़ुम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हज़रत हमज़ा, हज़रत तलहा, और भी दूसरे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हाज़िर थे। हज़रत उमर को आते हुए देख कर सब को तरद्दुद हुआ कि उमर क्यों आ रहे हैं और तलवार के साथ आ रहे हैं। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरवाज़े पर ख़िदमत के लिये खड़े थे, फ़रमाते हैं अगर उमर की नियत अच्छी है तो बेहतर वर्ना उन का सर क़लम कर दूँगा। जब हज़रत उमर दारे अरक़ुम के दरवाज़े पर पहुँचे तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मकान से बाहर तशरीफ़ लाए और हज़रत उमर पर निगाहे नुबुव्वत पड़ी।

जब सूए उमर उठी वह निगाहे इन्तिख़ाब
कुफ़्र कट के रह गया तेग़ काम कर गई

उमर सूए नबी गए नज़र सूए उमर गई
पड़ी निगाहे मुस्तफ़ा तो ज़िन्दगी संवर गई

सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर का दामन पकड़ कर फ़रमाया ऐ उमर! क्या फ़साद तुम उस वक़्त तक करते रहोगे जब तक तुम पर ज़िल्लत व रुसवाई मुसल्लत न हो जाए। यह सुनते ही हज़रत उमर पुकार उठे।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّكَ عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ ٥

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान ले आए तो सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने इतनी बलन्द आवाज से अल्लाहु अकबर की तकबीर पुकारी कि मक्का मुकर्रमा की तमाम पहाड़ियाँ गूंज उठीं और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दुआ हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में मुस्तजाब व मक़बूल हुई। (तबक़ात इब्ने सअद, जि. 3, स. 58, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 185)

मेरे मुर्शिदे आज़म व शैख़ेआज़म प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वह दुआ जिस का जोबन बहारे क़ुबूल
उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

जिस से तारीक दिल जगमगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम

महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने पास बिठाया और तीन मरतबा अपना दस्ते नुबुव्वत व बरकत उन के सीने पर फेरा और दुआ फ़रमाई।

اَللّٰهُمَّ اَخْرِجْ مَا فِيْ صَدْرِهٖ مِنْ غِلٍّ وَّاَبْدِلْهُ اِيْمَانًا يَّقُوْلُ ذٰلِكَ ثَلَاثًا ٥

यानी या अल्लाह तआला उम्र के सीने में जो ग़ुल व ग़श है उस को निकाल दे और उमर के सीने को नूरे ईमान से मुनव्वर व मुजल्ला फ़रमा दे और आप ने इस तरह तीन बार दुआ की। (अल मुस्तदरिक, इमाम हाकिम, जि. 3, स. 83)

ख़ूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

दिल करो ठन्डा मेरा वह कफ़े पा चाँद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद

सीने के हैं दाग़ दाग़ कह दो करें बाग़ बाग़
तैबा से आकर सबा तुम पे करोरों दुरूद

हज़रत उमर के इस्लाम लाने से आसमान वालों ने जश्न मनाया

हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि हमारे प्यारे हुज़ूर जाने नूर मुस्तफा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फरमाया :

لَمَّا اَسْلَمَ عُمَرُ نَزَلَ جِبْرَائِیْلُ فَقَالَ یَا مُحَمَّدُ لَقَدِ اسْتَبْشَرَ اَهْلُ السَّمَاءِ بِاِسْلَامِ عُمَرَ ٥

यानी जब हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए तो हजरत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की खिदमते अकदस में हाजिर हुए और अर्ज किया। या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिका वसल्लम हजरत उमर के इस्लाम लाने से आसमान वालों ने खुशी का जश्न मनाया।

(इब्ने माजह, स. 11, अल मुस्तदरक, [illegible] जि. 3, स. 83, [illegible])

हज़रत उमर फ़ारूक़ इस्लाम लाए तो मुसलमानों को ग़लबा अता हुआ

हजरात ! जिस अज़ीम मकसद के लिये महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फारूके आज़म रजियल्लाहु तआला अन्हु के मुसलमान होने के लिये बार बार दुआ मांगी थी उस का नूरानी नतीजा भी फौरन ज़ाहिर हो गया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते है :

وَاللّٰهِ مَا اسْتَطَعْنَا اَنْ نُّصَلِّیَ عِنْدَ الْکَعْبَةِ ظَاهِرِیْنَ حَتّٰی اَسْلَمَ عُمَرُ ٥

यानी खुदा की क़सम जब तक हजरत उमर ईमान नहीं लाए थे तो हम लोग कअबा के पास खुले तौर पर नमाज़ नहीं पढ सकते थे। (अल बिदाया वन्निहाया, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 190)

हज़रत सुहेब बिन सिनान रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है :

لَمَّا اَسْلَمَ عُمَرُ ظَهَرَ نَظَرُ الْاِسْلَامِ وَدَعٰی اِلَیْهِ عَلَانِیَةً وَجَلَسْنَا

حَوْلَ الْبَیْتِ حَلَقًا وَطُفْنَا بِالْبَیْتِ وَانْتَصَفْنَا مِمَّنْ غَلَظَ عَلَیْنَا ٥

यानी जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए तो इस्लाम को गलबा नसीब हुआ और इस्लाम की तब्लीग ऐलानिया शुरू हुई और हम लोग हलक बना कर कअबा शरीफ के इर्द गिर्द बैठने लगे और कअबा मुअज़्ज़मा का तवाफ करने लगे। अब जो शख्स हम पर ज़्यादती करता। हम उस से बदला लेने के काबिल हो गए।

(अल बिदाया वन्निहाया, तबकात इब्ने सअद, जि. 3, स. [illegible])

हज़रत उमर फारूके आज़म का हुलिया : इब्ने असाकिर रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लम्बे कद और मोटे बदन के थे। सर के बाल बहुत ज़्यादा झड़ हुए थे रंग बहुत गोरा था जिस में सुर्खी झलकती थी। आप के पास

अन्दर को धंसे हुए थे और आप के मूंछों के कनारे का हिस्सा बहुत लम्बा था।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 188)

हजरत उमर फ़ारूक़ की हिजरत : हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा मैं किसी और शख़्स को नहीं जानता हूँ जिस ने अलल ऐलान हिजरत की हो। सब लोगों ने कुफ्फारे मक्का के डर से छुप कर खुफ़िया तौर पर मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीना तैय्यिबा आए। लेकिन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अलल ऐलान कअ़बा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ किया और मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ी। फिर कुफ्फ़ारे मक्का के सरदार लोगों के पास आए जो उस वक़्त कअ़बा शरीफ़ के पास बैठे हुए थे, एक एक कुफ़्फ़ारे मक्का के सरदार के पास आ कर फ़रमाया।

وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى यानी तुम्हारे चेहरे ख़राब हों, बिगड़ जाएं और तुम्हारा बुरा हो और फ़रमाते जाते थे कि तुम में कौन शख़्स है ? जो अपनी मां की गोद ख़ाली करना चाहता है। तुम में कौन शख़्स है जो अपने बच्चों को यतीम करना चाहता है। तुम में कौन शख़्स है जो अपनी औरत को बेवा बनाना चाहता है।

अगर तुम में हिम्मत व ताक़त है तो उस पहाड़ी के उस तरफ़ आकर मुक़ाबला कर ले। इस तरह मुरादे मुस्तफ़ा इस्लाम के शहज़ादा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बुज़दिल नापाक काफ़िरों को ललकारते रहे मगर एक में भी हिम्मत व ताक़त न थी जो आप के मुक़ाबले में आता। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 188)

हज़रत उमर फ़ारूक़ की राए के मुताबिक़ कुरआन का नुज़ूल

इब्ने मरदूया ने मुजाहिद से रिवायत की है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब कभी किसी मुआमले में राए देते थे तो अल्लाह तआला हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राए के मुताबिक़ कुरआने करीम का हुक्म नाज़िल फ़रमाता।

(तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 209, असदुल ग़ाबा, जि. 3, स. 657, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 252)

(1) बुख़ारी और मुस्लिम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि बहुत से मौक़ों पर मेरे रब तआला ने मेरी राए के मुताबिक़ कुरआन को नाज़िल फ़रमाया।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि एक मरतबा मैं अपने प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ कर रहा था कि मेरे दिल में ख़याल पैदा हुआ कि मैं मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअत नमाज़ अदा करूँ। मैं ने अपने ख़याल और इरादे को महबूबे ख़ुदा

प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में बयान किया तो अल्लाह तआला ने मेरे ख़याल और इरादे को महबूबे ख़ुदा प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में बयान किया तो अल्लाह तआला ने मेरे ख़याल व इरादे के मुताबिक़ इस आयते मुबारका को नाज़िल फ़रमाया।

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى

यानी मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 57, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 197)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहलु तआला अन्हु किस क़दर महबूब व मक़बूल हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़याल व इरादे को तोड़ना गवारा नहीं फ़रमाया बल्कि अल्लाह तआला ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़याल व इरादे के मुताबिक़ आयते करीमा का नुज़ूल फ़रमाया।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तो एक मरतबा मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ने का ख़याल व इरादा ज़ाहिर फ़रमाया था मगर अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में उन का यह ख़याल व इरादा इस क़दर महबूब व मक़बूल हुआ कि क़ियामत तक के लिये कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा का हज करने वाले तमाम हाजियों और तवाफ़ करने वालों पर वाजिब व लाज़िम कर दिया कि कअ़बए मुअ़ज़्ज़मा का तवाफ़ करने वाला हर तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ अदा करे।

पता चला और मालूम हुआ कि अगर मक़ामे इब्राहीम हज़रत ख़लील अलैहिस्सलाम के क़दमों के निशान की बरकत से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की यादगार है तो मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत और यादगार है।

मगर मुनाफ़िक़ और बद अक़ीदा मुसलमान कहता है कि हम अल्लाह के घर कअ़बा मुअ़ज़्ज़मा को जानते हैं और मानते हैं इसके अलावा किसी नबी और वली की यादगार को न हम जानते हैं और न ही मानते हैं।

तो ऐसे मुनाफ़िक़ मुसलमान को चाहिये कि तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ न अदा करे क्यों कि ख़ुद मक़ामे इब्राहीम अल्लाह तआला के नबी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़दमों के निशान की वजह से अल्लाह की निशानी है और मक़ामे इब्राहीम के पास दो रकअत नमाज़ अदा करना अल्लाह तआला के नेक व महबूब बन्दा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत व यादगार है और ऐसे मुनाफ़िक़ व बद अक़ीदा मुसलमान को चाहिये कि ज़म ज़म का पानी न पिये इस लिये कि ज़म ज़म का पानी

अल्लाह तआला के जलीलुल क़द्र नबी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की यादगार है और सई के लिये सफ़ा व मरवा पहाड़ी पर दौड़ भी न लगाए क्यों कि सई करना अल्लाह तआला की नेक बन्दी हज़रत हाजिरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की सुन्नत व यादगार है।

अल्लाह वालों से दूर होगे तो अल्लाह तआला के सच्चे दीने इस्लाम से दूर हो जाओगे। इस्लाम के तमाम अरकान या तो अल्लाह तआला के किसी नबी की सुन्नत व यादगार हैं या अल्लाह तआला के किसी नेक व महबूब बन्दा की सुन्नत व यादगार हैं।

इस लिये अल्लाह वालों से महब्बत करो और उन से क़रीब रहो ताकि अल्लाह तआला अपना मुक़र्रब बन्दा होने का शरफ़ नसीब फ़रमा दे।

खूब फ़रमाया सरकार आला हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

मोमिन उन का क्या हुआ अल्लाह उन का हो गया
काफ़िर उन से क्या फिरा अल्लाह ही से फिर गया

दुरूद शरीफ़ :

उम्महातुल मोमिनीन के लिये परदे का हुक्म

बुख़ारी, जि. 1, स. 158 और मुस्लिम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप की ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अज़वाजे मुतहहरात (यानी आप की बीवियाँ) भी मौजूद होती हैं। बेहतर है कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपनी बीवियों को पर्दा करने का हुक म फ़रमा दें। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राए के मुताबिक़ अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा का नुज़ूल फ़रमाया :

وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَاءِ حِجَابٍ ط

यानी और जब तुम उम्महातुल मोमिनीन से इस्तिमाल करने की कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो। (पारा 22, रुकू 4, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 197)

मुनाफ़िक़ मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मना है

अब्दुल्लाह बिन अभी मुनाफ़िक़ जब मरा तो उस के घर वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को उस मुनाफ़िक़ मुसलमान (जैसे आज कल वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, ग़ैर मुक़ल्लिद, मुनाफ़िक़ मुसलमान हैं) की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिये बुलाया। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं उस वक़्त वहाँ मौजूद था और मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया कि अब्दुल्लाह इब्ने अबय तो बड़ा सख़्त दुश्मने ख़ुदा व रसूल और मुनाफ़िक़

था और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शाने अक़दस में बड़ी बुराइयाँ किया करता था। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ख़ुदाए तआला की क़सम अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ (पारा 10, रुकू 17)

यानी ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ! जब उन मुनाफ़िक़ों में से कोई मर जाए तो उस शख़्स पर कभी भी नमाज़ न पढ़ना और न ही उस मुनाफ़िक़ की क़ब्र पर खड़ा होना। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 198)

ऐ ईमान वालो ! वहाबी, देवबन्दी, तब्लीग़ी, ग़ैर मुक़ल्लिद और शीआ, राफ़ज़ी वग़ैरहुम यह सब के सब मुनाफ़िक़ और काफ़िर हैं। उन सब के बातिल अक़ीदे और गन्दे नज़रिये उन की किताबों में लिखा। इमामे अहले सुन्नत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुसामुल हरमैन शरीफ़ में और ख़लीफ़ए आला हज़रत, शेर बेशए सुन्नत, मौलाना हश्मत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अस्सवारिमुल हिन्दिया में और भी बहुत से बुज़ुर्गों ने अपनी किताबों में इन बद अक़ीदा और मुनाफ़िक़ों की कुफ़्री इबारतों की वजह से उन पर कुफ़्र का फ़तवा सादिर फ़रमाया है। जिस का जी चाहे उन किताबों का मुतालआ कर ले। इस लिये हम ईमान वालों पर फ़र्ज़ है कि हम ईमान वाले किसी भी मुनाफ़िक़ मुसलमान, बद अक़ीदा शख़्स की नमाज़े जनाज़ा हर गिज़ हर गिज़ न पढ़ें बल्कि शरीक तक न हों और न उस की क़ब्र पर जाएं वर्ना ईमान व अक़ीदा तबाह व बरबाद होने का ख़तरा है।

हज़रात ! हर तअल्लुक़ और रिश्ता ईमान के तअल्लुक़ से और रिश्ते से क़ाइम होता है और जब ईमान ही नहीं तो रिश्तेदारी और बिरादरी का इस्लाम में कोई मक़ाम व जगह ही नहीं है जैसा कि बयान की गई आयते करीमा से साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित है।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म का फ़ैसला मुनाफ़िक़ के हक़ में क़त्ल है

बिशर नामी एक मुनाफ़िक़ ने मुसलमान से कहा मेरे और तुम्हारे दरमियान जो लड़ाई है उस का फ़ैसला मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से करा लें। मुनाफ़िक़ ने पहले यह राए दी कि हम अपना फ़ैसला कअ़ब बिन अशरफ़ यहूदी से कराएंगे। यहूदी के बार बार इसरार पर कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अच्छा फ़ैसला करने वाला कोई पैदा ही नहीं हुआ है। इस लिये हम यह फ़ैसला मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ही से कराएं गे। मुनाफ़िक़ मुसलमान बादिले ना ख़्वास्ता मजबूर हो कर राज़ी हो गया। मुनाफ़िक़ मुसलमान और यहूदी दोनों अपना मुक़दमा ले कर हमारे आक़ा महबूबे ख़ुदा आदिल व मुंसिफ़ रसूल सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुआमला की तहक़ीक़ के बाद यहूदी के हक़ में फ़ैसला फ़रमा दिया।

मुनाफ़िक़ जो बज़ाहिर मुसलमान बना हुआ था बाहर निकल कर कहने लगा यह फ़ैसला ठीक नहीं हुआ है मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने जो फ़ैसला दिया है वह मुझे मन्ज़ूर नहीं है (हाए अफ़सोस मुनाफ़िक़ मुसलमान तेरी नमाज़ व दाढ़ी पर) इसी तरह आज के भी बहुत से दाढ़ी व नमाज़ वाले मुनाफ़िक़ मुसलमान हैं जो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर तरह तरह के सवाल करते नज़र आते हैं।

अल ग़रज़ ! मुनाफ़िक़ मुसलमान क़हहार क़हार में गिरफ़्तार हो चुका था और उस मुनाफ़िक़ की शामत आ चुकी थी। कहने लगा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने ठीक फ़ैसला नहीं किया है। इस लिये हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास चलते हैं और उन से फ़ैसला कराते हैं वह जो भी फ़ैसला कर देंगे वह हमें मन्ज़ूर होगा। मुनाफ़िक़ मुसलमान और यहूदी ! दोनों मुरादे मुस्तफ़ा, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरबारे अदालत में मुक़दमा लेकर पहुँचे। यहूदी ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रू बरू सारा वाक़िआ बयान कर दिया कि ऐ उमर फ़ारूक़े आज़म यह फ़ैसला जो आप के दरबार में लाया गया है। यह मुक़दमा आप के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पहले पेश हो चुका है और आप के नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मेरे हक़ में फ़ैसला दे दिया है तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि जब मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़ैसला फ़रमा दिया है तो मेरे पास क्यों आए हो ? यहूदी ने बताया कि यह शख़्स जो (मुनाफ़िक़) मुसलमान है वह कहता है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला मुझे मन्ज़ूर नहीं है और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो फ़ैसला करें वह हम को मन्ज़ूर होगा इस लिये हम यह फ़ैसला आप के पास ले कर आए हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ठीक है। मैं फ़ैसला कर देता हूँ यह फ़रमा कर आप अपने मकान में तशरीफ़ ले गए और मियान से तलवार निकाल कर बाहर आए और मुनाफ़िक़ मुसलमान की गरदन पर ऐसी तलवार मारी कि सर कलम हो गया और इरशाद फ़रमाया जिस शख़्स को मेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला मन्ज़ूर नहीं है उस शख़्स का फ़ैसला मेरी तलवार करती है।

मुनाफ़िक़ मुसलमान जब क़त्ल कर दिया गया तो उस मुनाफ़िक़ के रिश्तेदार दूसरे मुनाफ़िक़ सब एक साथ जमा हो कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाह में जमा हो गए और कहने लगे कि उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु) ने एक मोमिन, और मुसलमान को क़त्ल कर दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किसी मोमिन और मुसलमान को क़त्ल नहीं कर सकते ? मगर तमाम मुनाफ़िक़ीन मुतालबा कर रहे थे कि उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने एक मोमिन और मुसलमान को क़त्ल किया है और इस्लाम में क़िसास है यानी क़त्ल का बदला क़त्ल। तो आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया और फ़रमाया ऐ उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) क्या तुम ने किसी मोमिन और मुसलमान को क़त्ल किया है ? हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया ऐ मेरे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की क़सम मैं ने किसी मोमिन और मुसलमान को क़त्ल नहीं किया है बल्कि मैं ने उस शख़्स को क़त्ल किया है जो यह कहता है कि मुझे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला मन्ज़ूर नहीं है। ऐ आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मैं ने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़ैसला न मानने वाले को क़त्ल किया है। बस उसी वक़्त अल्लाह तआला ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ताईद व हिमायत में इस आयते करीमा को नाज़िल फ़रमाया।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتّٰى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ

यानी ऐ महबूब तुम्हारे रब तआला की कसम वह लोग मोमिन न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें हाकिम न तस्लीम कर लें। (तफ़सीरे ख़ाज़िन, जि. 1, स. 461, तफ़सीरे कबीर, जि. 3, स. 248, तफ़सीरे जलालैन व सावी, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 200)

नाइबे फ़ारूक़े आज़म मुजद्दिदे आज़म इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजिये
मुलहिदों की क्या मुरव्वत कीजिये
गैज़ में जल जाएं बे दीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कसरत कीजिये

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर के सबब रमज़ान की रात में खाना, पीना हलाल हुआ

इस्लाम से पहले तमाम शरीअतों में रोज़ा इफ़्तार करने के बाद खाना, पीना और बीवी के क़रीब जाना इशा की नमाज़ तक जाइज़ था। बाद नमाज़े इशा यह सारी चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं, यह हुक्म इब्तिदाए इस्लाम में भी बाक़ी रहा। एक मरतबा रमज़ान शरीफ़ की

रात में इशा की नमाज़ के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बीवी से कुरबत इख़्तियार कर ली मगर फिर बहुत नादिम और शर्मिन्दा हुए। अपने महबूब आक़ा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम व बख़्शिश में हाज़िर हुए और बीवी से कुरबत का वाक़िआ बयान किया तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा को नाज़िल फ़रमाया।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ ○ (पारा 2, रुकू 7)

यानी रोज़ों की रातों में तुम्हारी औरतों के पास जाना (यानी अपनी बीवी से) कुरबत इख़्तियार करना तुम्हारे लिये हलाल हो गया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 199)

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा पर लगाई गई तोहमत को बातिल क़रार दिया

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर जब तोहमत लगाई गई तो महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मशवरा फ़रमाया तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते नूर में अर्ज़ किया कि:

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का यह निकाह किस ने किया था ? आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने उस वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम यह ख़याल करते हैं कि आप के रब तआला ने आप से आप की बीवी आएशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के ऐब को छुपाया होगा (यह मुमकिन ही नहीं है) अल्लाह तआला की क़सम हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर यह सब कुछ बोहतान व इलज़ाम है और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया: سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ बस इसी तरह और इन्हीं अलफ़ाज़ के साथ जो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बाने मुबारक से निकले थे। अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में इस आयत को नाज़िल फ़रमाया:

سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ

(पारा 18, रुकू 8)

तर्जमा : मुफ़स्सिरे कबीर अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि:

अल्लाह तआला ने इक्कीस मरतबा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु की राए की ताईद व मुवाफ़िक़त में आयाते क़ुरआनी का नुज़ूल फ़रमाया।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 198)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म के फ़ज़ाइल में अहादीसे करीमा

हज़रत उमर का लक़ब, फ़ारूक़ (1) : हज़रत अय्यूब बिन मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे प्यारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

إِنَّ اللهَ جَعَلَ الْحَقَّ عَلٰى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهٖ وَهُوَ الْفَارُوْقُ فَرَّقَ اللهُ بِهٖ بَيْنَ الْحَقِّ وَالْبَاطِلِ ۝

यानी बे शक अल्लाह तआला ने हक़ को उमर की ज़बान पर जारी कर दिया है और उमर के दिल में हक़ को नक़्श कर दिया है और वह फ़ारूक़ हैं। अल्लाह ने उनके ज़रीए हक़ व बातिल के फ़र्क़ को वाज़ेह कर दिया है। (अबू दाऊद, जि. 2, स. 55, मिश्कात , स. 557, तबकात इब्ने सअद, जि. 1, स. 58, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 915)

(2) मुहद्दिसे कबीर हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं। जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए तो हुज़ूर जाने नूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मकान के अन्दर छुप कर नमाज़ पढ़ते हुए देखा (बाज उलमा फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ के ईमान लाने की ख़ुशी में अल्लाह तआला की बारगाह में दो रकअत नमाज़े शुक्राना अदा किया) तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम ! क्या हम हक़ पर नहीं हैं ? तो आक़ा करीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बे शक हम हक़ पर हैं तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज़ किया फिर यह पोशीदगी और पर्दा क्यों ? तो हुज़ूर सरापा नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ उमर फ़ारूक़ तुम्हारी क़ौम अलल ऐलान कअ़बा में मुझको नमाज़ नहीं पढ़ने देती है इस लिये मैं मकान के अन्दर छुप कर अपने रब तआला की इबादत व बन्दगी करता हूँ।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उसके बाद हम सब मुसलमान दो सफ़ें बना कर निकले। एक सफ़ में हज़रत अमीरे हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे और दूसरी सफ़ में मैं ख़ुद था और इसी तरह हम सब ग़ुलामाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम सफ़ों की शक्ल में मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन ने मुझे और हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब मुसलमानों के गिरोह के साथ देखा तो उन सब को बहुत सदमा हुआ। इसी दिन महबूबे ख़ुदा मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फ़ारूक़, का लक़ब अता फ़रमाया। इस लिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़रीए इस्लाम ज़ाहिर हो गया और हक़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ वाज़ेह हो गया। मुलख्ख़सन (तारीखुल खुलफ़ा, स. 189)

हज़रत उमर फ़ारूक़ के ख़ौफ़ से शैतान भागता है

(3) उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हमारे सरकार मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنِّیْ لَاَنْظُرُ اِلٰی شَیَاطِیْنِ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ قَدْ فَرُّوْا مِنْ عُمَرَ ۝

यानी बे शक मैं देख रहा हूँ कि जिन्नातों के शैतान और इन्सानों के शैतान दोनों हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के डर से भागते हैं। (मिश्कात, स. 558)

(4) हज़रत इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी सही की किताबुल मनाक़िब में हदीस शरीफ़ नक़्ल करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : ऐ ख़त्ताब के बेटे ? उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है।

مَا لَقِیَكَ الشَّیْطَانُ سَالِكًا فَجًّا قَطُّ اِلَّا سَلَكَ فَجًّا غَیْرَ فَجِّكَ

यानी शैतान उस राह पर नहीं आता है जो रास्ता हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का होता है। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 520)

ऐ ईमान वालो ! बीस रकअत नमाज़े तरावीह की जमाअत ख़ुदाए तआला के दोस्त प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की मुराद व दुआ और शैतान मरदूद के दुश्मन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने क़ाइम फ़रमाया।

तो साबित यह हुआ कि बीस रकअत तरावीह की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नते मुबारका है और ग़ैर मुक़ल्लेदीन वहाबी कहते हैं कि बीस रकअत तरावीह की जमाअत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हदीस से साबित नहीं है और बीस रकअत तरावीह की जमाअत तो उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने शुरू की है और हम अहले हदीस हैं ! हम लोग वही काम करते हैं जिस का सुबूत सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से साबित होता है। इसी लिये हम ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाले बीस रकअत तरावीह नहीं पढ़ते हैं।

हज़रात ! मज़कूरा हदीस शरीफ़ जो सही बुख़ारी की है। इस को बग़ौर मुलाहज़ा फ़रमा लें इन्शाअल्लाह तआला अहले हदीस कहलाने वालों का हदस व नापाकी ज़ाहिर व साबित हो जाएगी।

हदीस शरीफ़ : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अल्लाह तआला की क़सम खा कर फ़रमाया कि शैतान उस राह पर नहीं आता है जो रास्ता उमर

फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का होता है। (सही बुख़ारी, जि. 1, स. 520)

इस हदीसे मुबारक ने वाज़ेह तौर पर साबित कर दिया कि ग़ैर मुक़ल्लेदीन अहले हदीस कहलाने वाले शैतान हैं।

इस हदीस शरीफ़ को बग़ौर सुन लें और याद कर लें और जब कोई ग़ैर मुक़ल्लिद अहले हदीस कहलाने वाला शख़्स मिल जाए तो उस के सामने इस हदीस शरीफ़ को बयान करें ताकि हक़ व सच ज़ाहिर हो जाए और बातिल व झूट अयां हो जाए अल्लाह तआला ग़ैर मुक़ल्लिदों वहाबियों के शर व फ़ितना से महफ़ूज़ रखे आमीन सुम्मा आमीन।

सूना जंगल रात अन्धेरी छाई बदली काली है
सोने वाले जागते रहियो चोरों की रखवाली है

उमर मुझसे हैं और मैं उमर से हूँ (5) : आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

फ़ारसी...................... यानी उमर फ़ारूक़ मुझ से हैं और मैं उमर फ़ारूक़ से हूँ और उमर जिस जगह होते हैं हक़ उन के साथ होता है। (मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 426)

अगर बाबे नुबुव्वत खुला होता तो उमर फ़ारूक़ नबी होते (6) : हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आख़री नबी हैं और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ

यानी अब क़ियामत तक मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा और इरशाद फ़रमाया :

لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیٌّ لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ यानी अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर इब्ने ख़त्ताब नबी होते। (तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 209, अल मुस्तदरिक, जि. 3, स. 85, मिश्कात, स. 558)

अल्लाहु अकबर ! क्या शान व अज़मत है हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कि अगर मेरे प्यारे नबी ख़ातिमुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद बाबे नुबुव्वत खुला रहता तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु होते।

हज़रत उमर फ़ारूक़ उम्मत के मुहद्दिस हैं (7) : हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया पहली उम्मतों में मुहद्दिस होते थे।

فَاِنْ يَّكُ فِيْ اُمَّتِیْ اَحَدٌ فَاِنَّهٗ عُمَرُ यानी मेरी उम्मत में अगर कोई मुहद्दिस है तो वह उमर हैं।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 521, मिश्कात, स. 556, मदारिजुन्नुबुव्वत, जि. 2, स. 915)

मुहद्दिस किसे कहते हैं : (1) हज़रत अल्लामा इब्ने हजर फ़तहुल बारी में रक़म तराज़ हैं कि मुहद्दिस वह शख़्स होता है जिस को मिन जानिबिल्लाह इलहाम किया जाए। आलमे बाला से जिस के दिल में हक़ाइक़ को इलक़ा किया जाए, बग़ैर इरादे और क़स्द के जिस की ज़बान, हक़ की तर्जमान बन जाए यानी उस की ज़बान से जो बात निकले वह हक़ और सच हो।

हज़रात! ऐसे जामेउल कमालात शख्सियत को मुहद्दिस कहते हैं।

(2) मुफ़स्सिरे कबीर हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तारीख़ुल खुलफ़ा, स. 191 पर तहरीर फ़रमाते हैं कि :

रसूले आज़म, मुअल्लिमे मुअज़्ज़म, नबिये मोहतरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते नूर में सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मुहद्दिस कैसा होता है? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस की ज़बान से फ़रिश्ते बात करें ऐसा शख़्स मुहद्दिस होता है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ की दीन दारी (8) : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिवायत करेत हैं कि आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं वह सब लोग क़मीस पहने हुए हैं, किसी की क़मीस उस के सीने तक है और किसी की क़मीस उस से कुछ नीचे है।

وَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ وَعَلَيْهِ قَمِيْصٌ اِجْتَرَّتْ قَالُوْا فَمَا اَوَّلْتَهٗ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ اَلدِّيْنُ ۝

यानी जब हज़रत उमर फ़ारूक़ को पेश किया गया तो उन की क़मीस इतनी लम्बी थी कि वह क़मीस ज़मीन पर घिसटती जा रही थी, इस ख़्वाब की ताबीर पूछी गई तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : दीन।

(बुख़ारी, जि. 1, स. 8, मुस्लिम मिश्कात, स. 557, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 193)

ऐ ईमान वालो! इस हदीस शरीफ़ से साफ़ तौर पर ज़ाहिर है कि हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दीन व तक़वा बहुत ज़्यादा और बलन्द था।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का इल्म (9) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा, मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब देखा है कि मैं दूध नोश कर रहा हूँ, दूध की ताज़गी मेरे नाख़ुनों से ज़ाहिर हो रही है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं ने बचा हुआ दूध उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पिला कर उन के सीने को इल्म व मअरिफ़त का मदीना व गन्जीना बना दिया और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो दूध अपने महबूब व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से पिया था उस दूध का हक़ अपनी ज़िन्दगी के आख़री लम्हात तक अदा करते रहे और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम में सब से ज़्यादा आप की ज़ात ने दुश्मनाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और मुनाफ़िक़ों को क़त्ल किया और उन के हक़ में क़हरे इलाही बन जाया करते थे।

वह उमर जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

अल्लाह तआला बरोज़े क़ियामत सब से पहले हज़रत उमर से मुसाफ़हा फ़रमाएगा (10) अबी इब्ने कअब से रिवायत है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआला सब से पहले हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सलाम फ़रमाएगा और मुसाफ़हा करेगा और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करेगा। (इब्ने माजह, स. 11, हाकिम, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 192)

जब तक हज़रत उमर हैं इस्लाम में फ़ितना व फ़साद नहीं होगा (11) : हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे मदनी आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की जानिब इशारा फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि यह वह शख़्स है जिस की वजह से फ़ितना व फ़साद के दरवाज़े बन्द हैं और जब तक वह ज़िन्दा रहेंगे उस वक़्त तक तुम लोगों के दरमियान कोई शख़्स फूट और फ़ितना व फ़साद नहीं डाल सकेगा। (अल बज़ार, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 193)

ऐ ईमान वालो ! आज का माहोल इतना ख़राब व बरबाद हो चुका है कि कोई जगह और कोई मकान भी फ़ितना फ़साद से महफ़ूज़ नहीं नज़र आते हैं हत्ता कि इस्लाम व ईमान की जगहें अल्लाह तआला का घर मस्जिदें और रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का घर मदरसे भी फ़ितना व फ़साद की आमाजगाह बन कर रह गए हैं। इल्ला माशाअल्लाह तआला

हज़रात ! ज़रूरत है हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के किसी सच्चे नाइब व ग़ुलाम की, जो मुसलमानों को सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न कर दे और मुसलमानों के दरमियान फ़साद व फूट ख़त्म कर के मुसलमानों को एक और नेक होने का मौक़ा फ़राहम कर दे।

ऐ अल्लाह तआला हमारे रहमान व रहीम रब तआला ! हमारी दुआओं को शरफ़ क़ुबूल अता फ़रमा, हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का और आप के जां निसार ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का वास्ता और हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म और हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ और हमारे मुर्शिदे आज़म हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा व मुफ़्तिये आज़म मुस्तफ़ा रज़ा और हमारे शैख़ तेरे वली हुज़ूर बदरे मिल्लत रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन का सदक़ा व तुफ़ैल सुन्नी मुसलमानों पर रहम फ़रमा, करम फ़रमा और हमारे आपस के इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार को दूर फ़रमा कर हम ग़ुलामाने ग़ौसो ख़्वाजा और रज़ा को दीनो सुन्नियत और मस्लके आला हज़रत की पुर ख़ुलूस ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा दे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत उमर फ़ारूक़ की महब्बत व अदावत (12) : हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे प्यारे आक़ा नबिये रहमत व बरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

مَنْ اَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ اَبْغَضَنِیْ وَمَنْ اَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ اَحَبَّنِیْ ○

यानी जिस शख़्स ने उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से बुग़्ज़ व अदावत रखा उस शख़्स ने मुझ से बुग़्ज़ो अदावत रखा और जिस शख़्स ने उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से महब्बत व उल्फ़त की उस शख़्स ने मुझ से महब्बत की।

(तबरानी शरीफ़, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 194)

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से साबित हो गया कि मुरादे मुस्तफ़ा ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मक़ाम व मरतबा किस क़दर बलन्द और अज़ीम है कि अल्लाह के हबीब उम्मत के तबीब मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुग़्ज़ व इनाद रखना मुझ से बुग़्ज़ व इनाद रखना है और उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से महब्बत व उल्फ़त करना मुझ से महब्बत व उल्फ़त करना है।

हज़रात ! राफ़ज़ी, शीआ, बोहरे वग़ैरह जो लोग भी हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखते हैं और उन की शान में बेहूदा अलफ़ाज़ बोलते नज़र आते हैं गोया वह लोग महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बुग़्ज़ व दुश्मनी का सिला व बदला नारे जहन्नम है तो ज़ाहिर और साबित यह हुआ कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुग़्ज़ व दुश्मनी रखने वाले राफ़ज़ी, शीआ और बोहरे सब के सब नारे दोज़ख़ के हक़दार और जहन्नमी हैं।

हज़रत उमर फ़ारूक़ के लिये इस्लाम रोया (13) : अबी बिन कअब से रिवायत है कि हमारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझ से हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम कहते थे कि उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के विसाल पर इस्लाम रोएगा। (तबरानी शरीफ़, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 194)

फ़ज़ाइले हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ की दुश्मनी कुफ़्र है

(1) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे महबूब व मक़बूल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

حُبُّ اَبِیْ بَکْرٍ وَّعُمَرَ مِنَ الْاِیْمَانِ وَبُغْضُهُمَا کُفْرٌ ○

यानी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की महब्बत ईमान है और उन दोनों से बुग़्ज़ रखना कुफ़्र है। (जामेअ सग़ीर, जि. 1, स. 146)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़ की महब्बत, बख़्शिश का सामान है

(2) हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नक़्ल फ़रमाते हैं कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क़ियामत कब क़ाइम होगी ? तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुम ने क़ियामत के लिये क्या तय्यारी की है तो मैं ने अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते नूर व रहमत में अर्ज़ किया कि मेरे पास क़ियामत के दिन के लिये कोई तय्यारी नहीं है, हाँ, एक तय्यारी मैंने क़ियामत के दिन के लिये कर रखी है कि मैं अल्लाह तआला और उस के महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता हूँ तो मेरे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अनस (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) तुम जिस से महब्बत करते हो क़ियामत के दिन उसी के साथ रहोगे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि इस फ़रमाने ज़ीशान को सुन कर मैं बड़ा ख़ुश हुआ कि मैं अपने आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से महब्बत रखता हूँ और उन की महब्बत की वजह से उम्मीद है कि क़ियामत के दिन मैं उन्हीं के साथ रहूँगा।

(अज़ालतुल ख़ुलफ़ा, जि. 1, स. 177)

हज़रात ! मालूम हुआ कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की महब्बत व अक़ीदत बख़्शिश व नजात का सामान है

मौला अली का क़ौल अबू बक्र सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ के फ़ज़ाइल में

(3) हज़रत सुवेद बिन ग़फ़ला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ के मिम्बर पर खड़े हुए और फ़रमाया : हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से वही शख़्स महब्बत करेगा जो मोमिन मुत्तक़ी होगा और उन दोनों से वही शख़्स बुग़्ज़ व दुश्मनी रखेगा जो फ़ाजिर व बद बख़्त होगा।

और हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं अल्लाह तआला की क़सम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की यह शान व अज़मत थी कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मोमिनीन ज़ोअफ़ा (कमज़ोर) पर नर्मी फ़रमाते और मज़लूमों के मददगार थे और ज़ालिमों पर सख़्त थे। जब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए तो अल्लाह तआला ने उन से इस्लाम को इज़्ज़त दी। (इब्ने जोज़ी, स. 135)

हज़रत मौला अली का इरशाद

(4) हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी शख़्स ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की शान व अज़मत के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दोनों हिदायत के इमाम थे वह दोनों इस्लाह करने वाले और कामयाबी हासिल करने वाले थे, वह दोनों दुनिया से इस तरह तशरीफ़ ले गए कि शिकम सेर न थे। (तबक़ात इब्ने सअद, जि. 3, स. 50)

मौला अली का फ़रमान अबू बक्र व उमर फ़ारूक़ उम्मत में सब से बेहतर हैं

(5) सर चश्मए विलायत अबुल हसन वल हुसैन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम फ़रमाते हैं कि : خَيْرُ هٰذِهِ الْاُمَّةِ بَعْدَ نَبِيِّهَا اَبُوْبَكْرٍ ثُمَّ عُمَرُ ٥

यानी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद इस उम्मत में सब से बेहतर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर और फिर हज़रत उमर फ़ारूक़ हैं। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) (सवाइक़ुल मुहर्रिक़ा इब्ने हजर मक्की, स. 13)

चारों यार की फ़ज़ीलत

(6) मुहद्दिसे जलील हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि इल्म व मअरिफ़त के सफ़ीना सरकारे मदीना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि :

اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَاَبُوْبَكْرٍ اَسَاسُهَا وَعُمَرُ حِيْطَانُهَا وَعُثْمَانُ سَقْفُهَا وَعَلِيٌّ بَابُهَا ٥

यानी मैं इल्म का शहर हूँ और अबू बक्र उस की बुनियाद हैं और उमर फ़ारूक़ उस की दीवार हैं और उस्माने ग़नी उस की छत हैं और मौला अली उस के दरवाज़े हैं। (मिरक़ात शरह मिश्कात, जि. 11, स. 346)

अबू बक्र सिद्दीक़ की निगाह में उमर फ़ारूक़

(7) अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया बित्तहक़ीक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु की निगाह में हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क्या मक़ाम व दरजा है बग़ौर समाअत फ़रमाइये।

एक मरतबा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस तरह पुकारा।

يَا خَيْرَ النَّاسِ بَعْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के बाद तमाम इन्सानों में बेहतरीन !

इस बात को सुन कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मैं ने अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को तुम्हारे बारे में यह फ़रमाते हुए सुना है कि :

مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ عَلٰى رَجُلٍ خَيْرٍ مِّنْ عُمَرَ ۝ यानी सूरज किसी ऐसे शख़्स पर तुलूअ नहीं हुआ जो उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से बेहतर हो। (मिश्कात, स. 558)

मौला अली की नज़र में शाने उमर फ़ारूक़

(8) हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब तुम लोग नेकों का ज़िक्र करो तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्रकरो और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कभी फ़रामोश न करो क्योंकि कुछ बईद नहीं कि उन का क़ौल इलहाम हो और फ़रिश्ते की ज़बानी बयान कर रहे हों।

(तबरानी शरीफ़, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 195)

मौला अली को उमर फ़ारूक़ की बात बहुत पसन्द थी

(9) हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अक़वाल के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के अक़वाल सब से ज़्यादा अज़ीज़ और पसन्द हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 195)

मौला अली ने फ़रमाया उमर फ़ारूक़ की क़ब्र रौशन रहे

(10) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि मस्जिदों में क़न्दीलें जल रही हैं और मस्जिदें रौशन हैं और क़ुरआने पाक की तिलावत की जा रह है तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ उमर इब्ने ख़त्ताब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अल्लाह तआला तुम्हारी क़ब्र को रौशन व मुनव्वर कर दे जिस तरह तुम ने अल्लाह तआला के घर मस्जिदों को रौशन व मुनव्वर किया है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 284, असदुल ग़ाबा, जि. 3, स. 663)

ऐ ईमान वालो ! हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इरशादात व

फ़रमूदात से साफ़ तौर पर जाहिर होता है कि हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को किस दरजा चाहते थे और महब्बत करते थे कि साफ़ और वाज़ेह तौर पर दुआ देते नज़रआते हैं कि अल्लाह तआला उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़ब्र को रौशन व मुनव्वर कर दे और यक़ीनन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते पाक रौशन व मुनव्वर थी और आप के कारनामे और ख़िदमात रौशन व मुनव्वर हैं और आप की क़ब्रे अनवर सरकारे नूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुम्बदे खज़रा में रौशन व मुनव्वर है और राफ़ज़ी, शीआ, बोहरे जो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दुश्मन और गुस्ताख़ हैं वह सब मरते ही उनका चेहरा ख़िन्ज़ीर यानी बद जानवर की शक्ल व सूरत में बदल जाता है और उन की क़ब्र अज़ाबे इलाही का गेहवारा और दोज़ख़ की आग का गढ़ा बन जाती है। यह सब अज़ाब व क़हर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुश्मनी और गुस्ताख़ी का नतीजा है।

हज़रात ! जिन लोगों क़ो शीओं बोहरों के बुरे अन्जाम का यक़ीन न हो उन लोगों क़ो चाहिये कि किसी शीआ, बोहरे की मय्यित को देख ले और उस की क़ब्र को खोल कर हक़ीक़ते हाल का मुशाहदा कर ले जो कुछ बताया गया है इस से बद तर मुआमला का पता चल जाएगा अल अमान वलहफ़ीज़ अल्लाह तआला अपने अमान व पनाह में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

इमाम जअ़फ़र सादिक़ की निगाह में अबू बक्र व उमर फ़ारूक़

(11) बाग़े अली के मेहकते हुए फूल सय्यिदुस्सादात हज़रत इमाम जअ़फ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भलाई के साथ याद न करे तो मैं ऐसे शख़्स से बिल्कुल बेज़ार और अलग हूँ। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 197)

वह उमर जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

तीसरा जुमा .... दूसरा बयान

हज़रत फ़ारुक़े आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

फ़ुतूहात व करामात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ
رُکَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا

तर्जमा : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सज्दे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रज़ा चाहते। (पारा 26, रुकू 12, कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

मुहद्दिसे कबीर हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सियूती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी हयाते ज़ाहिरी ही में 22 जुमादल उख़रा सन् 13 हि. (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 208)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने विसाल शरीफ़ से पहले हज़रत उस्माने ग़नी, हज़रत मौला अली, हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और मुहाजिरीन व अन्सार में से कुछ लोगों को बुलाया और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिक़ मशवरा किया, सब के इत्तिफ़ाक़ राए से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिक़ मशवरा किया, सब के इत्तिफ़ाक़ राए से हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरीन में ऐलान किया कि मैं ने उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया है और उसी में तुम्हारे लिये भलाई और बेहतरी है तो हर शख़्स को चाहिये कि उन की इताअत व फ़रमांबरदारी करे।

(तबक़ात इब्ने सअद, जि. 3, स. 42, तारीख़ इब्ने ख़ुलदून, जि. 1, स. 270)

हज़रत उमर फ़ारूक़ की खिलाफ़त पर ऐतिराज़ तमाम सहाबा पर एतिराज़ है

हज़रत सुफ़ियान सोरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने यह ख़याल किया कि हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से ज़्यादा खिलाफ़त के मुस्तहिक़ थे तो उस शख़्स ने सिर्फ़ अबू बक्र सिद्दीके अकबर और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ही को ख़ता कार नहीं ठहराया बल्कि उस शख़्स ने तमाम मुहाजिरीन व अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को ख़ताकार साबित किया। (तारीखुल खुलफ़ा, स. 196)

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में फ़ुतूहात

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे खिलाफ़त में शाम, इराक़, ईरान, मिस्र, इस्कन्दरिया, दमिश्क़, हम्स, उर्दुन, बैतुल मुक़द्दस, फ़िलिस्तीन, बीसान, तबरिया, खुज़िस्तान, जरबियान, तिबरिस्तान, आज़र बाइजान, खुरसान, मकरान, ब्लूचिस्तान के भी बहुत से इलाक़े फ़तह हुए, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वसीअ व अरीज़ सलतनत का रक़्बा तक़रीबन साढ़े बाइस लाख मुरब्बअ मील से ज़्यादा था।

एक अज़ीम जंग : जंगे क़ादसिया का शुमार दुनिया की अहम तरीन जंगों में होता है। क़ादसिया इराक़ का एक बड़ा और ख़ूबसूरत शहर था। आमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सर बराही में छत्तीस हज़ार का लश्करे जर्रार शहर क़ादसिया को फ़तह करने के लिये रवाना किया।

हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शहर क़ादसिया पहुँच कर यहाँ के हालात के मुतअल्लिक़ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुत्तलअ क़या। हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अमीरे लश्कर को जवाबन ख़त लिखा कि अहले फ़ारस की जंगी तय्यारी और फ़ौज की कसरत को देख कर परेशान न होना। अल्लाह तआला पर भरोसा रखना, फ़तह व नुसरत इस्लाम की होगी। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म के मुताबिक़ चन्द मुसलमानों का वफ़्द बादशाहे फ़ारस यज़्द गर्द के आलीशान दरबार में पहुँचा, बादशाहे फ़ारस यज़्द गर्द बड़ा ज़ालिम और मुतकब्बिर बादशाह था, मुसलमानों के वफ़्द के अमीर हज़रत नोअमान बिन मकरन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बादशाहे फ़ारस के सामने महबूब आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बअसत और आप सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व आलिही वसल्लम की मुबारक तालीम का ज़िक्र किया और बादशाहे फ़ारस को इस्लाम कुबूल करने की दावत पेश की और फ़रमाया ऐ बादशाह सुन ले अगर तुम इस्लाम कुबूल नहीं करते हो तो जुज़या अदा करो और इस्लाम के वफ़ादार बन के रहो और अगर यह दोनों बातें मन्ज़ूर नहीं हैं तो हमारे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला तलवार करेगी।

बादशाहे फ़ारस को मुसलमानों की हक़ व सच बातें बहुत ना गवार लगीं और जंग के लिये तैय्यार हो गया।

बादशाहे फ़ारस ने रुस्तम नाम के शख़्स को कमान्डर बना कर एक लाख बीस हज़ार फ़ोजियों और तीन सो हाथियों के साथ रुस्तम को जंग के लिये क़ादसिया रवाना किया, रुस्तम ने एक बहुत बड़े लश्कर के साथ शहर क़ादसिया पहुँच कर पड़ाओ डाला।

जंगे क़ादसिया का वाक़िआ तफ़सील तलब है

मुख़्तसर है कि मैदान में दोनों फ़ोजें आमने सामने हो गई, लश्करे इस्लाम में अल्लाहु अकबर का नअरा बलन्द हुआ और हक़ व बातिल का मअरका शुरूअ हो गया, तलवारें चलने लगीं जिस्म कटने लगे, ख़ून की नदियाँ बह गईं, कितना ज़बर दस्त हमला था कि एक दिन में दस हज़ार काफ़िर क़त्ल हुए और दो हज़ार मुसलमान शहीद हुए। चन्द रोज़ तक जंग होती रही दुश्मन के हज़ारों फ़ोजी मारे गए और काफ़िरों की फ़ौज का कमान्डर रुस्तम भी मारा गया मुसलमानों को अल्लाह तआला ने शानदार फ़तह व कामयाबी अता की, तमाम अरब की निगाहें इस जंगे क़ादसिया पर लगी हुई थीं और सब से ज़्यादा ख़ुद अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुन्तज़िर थे, रोज़ाना सुबह को ही मदीना तैय्यिबा से बाहर तशरीफ़ लाते और शहर क़ादसिया के रास्ते पर खड़े हो कर क़ासिद का इन्तिज़ार करते।

एक दिन मामूल के मुताबिक़ हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा से बाहर क़ादसिया के रास्ते पर खड़े थे और हालात को जानने के लिये क़ासिद का इन्तिज़ार कर रहे थे कि एक शख़्स ऊंट पर सवार हो कर आता हुआ नज़र आया आप उस शख़्स के पास तशरीफ़ लाए और उस शख़्स से मालूम किया तो पता चला कि वह शख़्स शहर क़ादसिया से आ रहा है और वह हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़ासिद है और फ़तह व कामयाबी की ख़ुशख़बरी ले कर आया है। इस ऊंट सवार से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हालात पूछने शुरू कर दिये। उस शख़्स ने कहा कि अल्लाह तआला ने मुसलमानों को शानदार फ़तह अता फ़रमाई है। अमीरुल मोमिनीन इस ऊंट सवार के साथ साथ दौड़ते जाते थे, हालात पूछते जाते थे और वह ऊंट सवार ऊंट पर बैठा बैठा तमाम सवालों के जवाब दे रहा था, वह शख़्स ऊंट सवार यह नहीं जानता था कि मेरे ऊंट के साथ दौड़ने वाली ज़ात और सवाल करने वाली हस्ती कौन है ? जब मदीना तैय्यिबा में दाख़िल हुए तो लोगों ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म

रज़ियल्लाहु ताला अन्हु को अमीरुल मोमिनीन कह कर सलाम किया। यह सुन कर क़ासिद डर से कांपने लगा और अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप ने मुझे बताया नहीं, मुझ से आप की बे अदबी और गुस्ताख़ी हो गई है। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बड़ी सादगी और बे तकल्लुफ़ी से फ़रमाया : मेरे भाई कोई बात नहीं है। क़ासिद ने आप की ख़िदमत में ख़त पेश किया। जिस में शानदार फ़तह व कामयाबी की बशारत लिखी हुई थी। (इब्ने ख़ुलदून, जि. 1, स. 275)

मदाइन शहर की फ़तह

शहर क़ादसिया की फ़तह के बाद अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरे लश्कर हज़रत सअद अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ईरान के दारुस्सलतनत मदाइन जाने का हुक्म दिया। जब इस्लामी फ़ौज ने मदाइन की तरफ़ रुख़ किया तो बादशाहे फ़ारस यज़्द गर्द अपना शाही महल क़सरे अबीज़ छोड़ कर हलवान की तरफ़ भाग गया। मदान और किसरा के महल में जाने के लिये बीच में दरयाए दजला हाइल था, लश्करे इस्लाम के अमीर हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला का नाम लेकर अपना घोड़ा दरया में डाल दिया, हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देख कर मुजाहिदीन ने भी अपना घोड़ा दरया में डाल दिया, हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देख कर मुजाहिदीन ने भी अपने घोड़े दरया में डाल दिये उस वक़्त हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लश्करे इस्लाम से फ़रमाया : डरो नहीं, मौत का एक वक़्त मुक़र्रर है।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا

तर्जमा : और कोई जान बे हुक्म ख़ुदा मर नहीं सकती। सब का वक़्त लिखा रखा है।
(पारा 4, रुकू 6, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

हज़रात ! लश्करे इस्लाम की हिम्मत व ताक़त और अल्लाह तआला पर तवक्कुल और भरोसे का यह आलम था कि दरया में घोड़े दौड़ाए चले जा रहे थे, ऐसा मालूम होता था, गोया वह ज़मीन पर चल रहे हैं। उन के दिल व दिमाग़ सुकून व इत्मीनान से लबरेज़ थे, उन्हें अल्लाह तआला की नुसरत व ताईद पर पूरा पूरा भरोसा था, उन इस्लामी फ़ौजियों में हज़रत सलमान फ़ारसी और दीगर अकाबिर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम भी थे दरया को पार करते ही इस्लामी लश्कर ने हमला कर दिया और इस्लामी फ़ौज किसरा के महल में दाख़िल हो गई। किसरा का महल दुनिया के अजाइबात में शुमार होता था इस तामीर में रूमी और यूनानी फ़न्ने तामीर की तमाम नज़ाकतें मौजूद थीं। उस के बड़े बड़े गुंबद मीलों दूर से नज़र आते थे जिन्हें देख कर इन्सान हैरान होता, महल के सेहन में हसीन व जमील हरे भरे बाग़ात थे, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने किसरा के अजाइबात व नवादिर को देख कर कुरआने करीम की यह आयात पढ़ीं।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝ وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۝
كَذٰلِكَ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ۝

तर्जमा : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उमदा मकानात और नेअमतें जिन में फ़ारिगुल बाल थे, हम ने यूँ ही किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया, तो उन पर आसमान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।

(पारा 25, रुकू 14, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

किसरा फ़तह हो गया तो हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और इस्लामी लश्कर का किसरा के ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा हो गया जिस में तक़रीबन तीस खरब दीनार और सोने चाँदी के बरतन क़ीमती जवाहरात और बहुत से सामान और माल व दौलत माले ग़नीमत के तौर पर हासिल हुआ।

किसरा पर फ़तह की बशारत और उस के ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा की ख़ुश ख़बरी आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दी थी।

لَتَفْتَحَنَّ كُنُوْزَ كِسْرٰى

यानी यक़ीनन तुम किसरा के ख़ज़ानों को फ़तह करोगे। (बुख़ारी, जि. 1, स. 508)

हज़रात ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में किसरा फ़तह हुआ और किसरा फ़ारस के बादशाह का लक़ब भी था जहाँ बे शुमार ख़ज़ाना, सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात मदीना तैय्यिबा में लाए गए और बैतुल माल में जमा हुए उन्हें ख़ज़ानों में शाह ईरान किसरा का कंगन जो सोने का था वह कंगन भी था। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस सोने के कंगन को हज़रत सुराक़ा बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहनाया। (ख़साइसे कुबरा, जि. 2, स. 113)

और किसरा बादशाह का ताज जिस में हीरे जवाहरात जड़े हुए थे यह ताज और चमकता हुआ शाही लिबास हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक आराबी को पहना दिया।

इस मौक़े पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आसमान की तरफ़ सर उठा कर अर्ज़ किया : या अल्लाह तआला ! तूने यह शानदार फ़तह व कामयाबी और शाही ख़ज़ाने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में नहीं अता फ़रमाए। हालांकि वह दोनों तुझे मुझ से ज़्यादा महबूब थे। यह इनआमात तूने मुझे इनायत फ़रमाए। या अल्लाह तआला ! मैं पनाह मांगता हूँ कहीं यह मेरी आज़माइश व इम्तिहान न हो रही हो। (इब्ने ख़ुलदून, जि. 1, स. 282, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 103)

फ़तह बैतुल मुक़द्दस : हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शाम के इलाक़े को फ़तह करने के लिये

अमीरे लश्कर मुक़र्रर किया हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआलाला अन्हु ने जब शाम के बहुत से इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया तो बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ रुख किया मगर ईसाई मुक़ाबला न कर सके, ईसाइयों ने हिम्मत हार कर सुलह की दरख़्वास्त पेश की और यह शर्त रखी कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुद बैतुल मुक़द्दस तशरीफ़ ले आऐं और सुलह नामा अपने हाथ से लिखें फिर हम लोग मस्जिदे अक़्सा की चाबियाँ उन के हवाले कर देंगे।

हज़रात! अस्ल मुआमला यह है कि ईसाइयों ने आसमानी किताब इन्जील में लिखा हुआ देखा था कि बैतुल मुक़द्दस का सही और सच्चा वारिस वह नेक शख़्स होगा जो नबिये आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का सच्चा जा नशीन और ख़लीफ़ा होगा, पेवन्द लगे कपड़े पहनता होगा और जब बैतुल मुक़द्दस पर फ़तह के लिये आएगा और जब बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हो रहा होगा तो सवारी पर उस का गुलाम बेठा होगा और वह खुद अमीरुल मोमिनीन होते हुए सवारी की रस्सी पकड़ कर चल रहे होंगे, उन निशानियों को देखने के लिये यह तमाम हीले और शराइत ईसाइयों ने रखे थे और यह तमाम निशानियाँ अमीरुल मोमिनीन में देखना चाहते थे।

अल ग़रज़ हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में मदीना तैय्यिबा ख़त लिखा कि बैतुल मुक़द्दस की फ़तह आप की आमद पर मौक़ूफ़ है आप तशरीफ़ ले आएं। जब ख़त दरबारे ख़िलाफ़त में पहुँचा तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और दूसरे सहाबा जो इस वक़्त मदीना तैय्यिबा में मौजूद थे उन से मशवरा किया, हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह मशवरा दिया कि आप बैतुल मुक़द्दस ज़रूर जाएं।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना तैय्यिबा में हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना नाइब मुक़र्रर किया और तमाम उमूरे ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी सुपुर्द कर के तन्हा अपने गुलाम के साथ बैतुल मुक़द्दस के लिये रवाना हो गए। तमाम ममलिकते इस्लामिया के अमीर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक ऊंट सवारी के लिये, ऊंट पर दो थेले थे, एक में जौ का आटा और दूसरे में कुछ खजूरें थीं और एक पानी का मुश्कीज़ा भी साथ में लिया। दुनियाए इस्लाम के बादशाह का कुल सामान यह था न फ़ौज थी न ही ख़ुद्दाम का कोई लश्कर था और आप जो क़मीस पहने हुए थे उस में पेवन्द लगे हुए थे और आप के साथ सिर्फ़ एक गुलाम था चलते वक़्त हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने यह मुआहदा कर लिया था कि एक मन्ज़िल अमीरुल मोमिनीन ऊंट पर सवार रहेंगे और गुलाम ऊंट की रस्सी पकड़ कर चले गा और दूसरी मन्ज़िल पर गुलाम ऊंट पर सवार होगा और अमीरुल मोमिनीन ऊंट की रस्सी पकड़ कर चलेंगे, जब बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल होने के क़रीब हुए और बैतुल मुक़द्दस के पास पहुँचे तो

गुलाम के ऊंट पर सवार होने की बारी थी और अमीरुल मोमिनीन ऊंट की रस्सी हाथ में पकड़े आगे आगे चल रहे थे यह मंज़र जब ईसाइयों ने देखा कि आक़ा पैदल ऊंट की मुहार पकड़ कर चल रहा है और उस का गुलाम ऊंट पर सवार है तो ईसाइयों को यक़ीन हो गया कि बैतुल मुक़द्दस की चाबियों का सच्चा वारिस आ रहा है और जो निशानियाँ इन्जील में पढ़ी थी अपने माथे की आँखों से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात में मुशाहदा कर लिया।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तशरीफ़ आवरी की ख़बर हुई तो अमीरे लश्कर हज़रत उबैदा बिन जराह और हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने अमीरुल मोमिनीन का इस्तिक़बाल किया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल होना चाहा तो आप से अर्ज़ किया गया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन यहाँ ऊंट की सवारी को अच्छा नहीं समझा जाता है इस लिये आप घोड़े पर सवार हो जाएं और आप के जिस्म पर जो लिबास है उस में पेवन्द लगे हैं। ईसाई देखेंगे तो क या खयाल करेंगे इस लिये पेवन्द लगे हुए लिबास को उतार कर अच्छा लिबास ज़ेबतन फ़रमा लें तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया पेवन्द वाले कपड़े पहनना हमारे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की सुन्नत है और इज़्ज़त व अज़मत सुन्नत में है और मोमिन व मुसलमान की इज़्ज़त अल्लाह तआला के हाथ में है और हमें जो इज़्ज़त व बुज़ुर्गी मिली है वह इस्लाम की वजह से है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसी लिबास व हाल में बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुए मेहराबे दाऊद अलैहिस्सलाम के पास कुरआने मजीद की तिलावत की और बारगाहे इलाही में दो रकअत नमाज़ पढ़ी और सज्दए शुक्र अदा किया, ईसाइयों के बड़े बड़े पादरियों ने अमीरुल मोमिनीन से मुलाक़ात की और सुलह नामा लिखा गया इस तरह बग़ैर जंग व जिदाल के बैतुल मुक़द्दस फ़तह हो गया। मुलख़्ख़सन

(अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 104, इब्ने कसीर, इब्ने ख़ुलदून, जि. 1, स. 284)

तर्जमाने नबी हम ज़बाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

वह उमर जिसके आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म का अद्लो इन्साफ़

ग़िसानी बादशाह जुबला के नाम महबूबे ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने ख़त लिखा और अपने क़ासिद हज़रत शुजाअ बिन वहब अल असदी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हमराह रवाना फ़रमाया, ख़त का मज़मून यह था।

إِنِّي أَدْعُوكَ إِلَى أَنْ تُؤْمِنَ بِاللهِ وَحْدَهُ يَبْقَى لَكَ مُلْكُكَ ٥

यानी मैं तुम को सिर्फ़ एक खुदा पर ईमान लाने की तरफ़ बुलाता हूँ अगर तुम ईमान ले आए तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे लिये बाक़ी रहेगा बादशाह जुबला हमारे प्यारे आक़ा रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का खत पढ़ कर ग़ैज़ व ग़ज़ब में आ गया और गुस्से से कहने लगा कि मेरा मुल्क कौन छीन सकता है ? मैं खुद मदीने पर हमला कर के उन को तबाह व बरबाद कर दूँगा और क़ासिद से कहा कि मेरी यह बात अपने पैग़म्बर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) से कह देना।

हज़रत शुजाअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि जब मैं मदीना तैय्यिबा पहुँच कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में जुबला बादशाह की बात को बयान किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : यानी उस का मुल्क तबाह व बरबाद होगा।

अल ग़रज़ जुबला बादशाह ने मुसलमानों से दुश्मनी ज़ाहिर करने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी मगर उस के बावजूद इस्लाम की ख़ूबियों से अच्छी तरह वाक़िफ़ था और बार बार किसी न किसी से इस्लाम की ख़ूबियाँ और अच्छाइयाँ सुनता रहता था हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के सच्चे नबी और बरहक़ रसूल होने की निशानियाँ भी उस के इल्म में थीं, अन्सार हज़रात का मुसलमान होना और अल्लाह तआला के सच्चे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने मकानों में ठहराना और उन की हिफ़ाज़त व हिमायत के लिये जान व माल को कुरबान करना उन तमाम मुआमलात को देख कर जुबला बादशाह इस्लाम के क़रीब होता जा रहा था और वजह यह थी कि जुबला बादशाह अन्सार ही के क़बीला से तअल्लुक़ रखता था बिल आख़िर जुबला बादशाह इस्लाम के बहुत क़रीब हो गया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़बर भेजी कि मैं ख़ुद इस्लाम क़ुबूल करने के लिये मदीना तैय्यिबा हाज़िर हो रहा हूँ

जुबला बादशाह पाँच सो आदमियों के साथ जब मदीना तैय्यिबा के क़रीब पहुँचा तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत के साथ मदीना तैय्यिबा से बाहर निकल कर जुबला बादशाह का इस्तिक़बाल किया, बड़ी शान व शौकत और शाहान जुलूस के साथ जुबला बादशाह मदीना तैय्यिबा में दाख़िल हुआ, जुबला बादशाह की शान के मुताबिक़ शानदान मेहमान नवाज़ी का एहतिमाम हुआ और जुबला बादशाह की आमद की ख़ुशी से मदीना तैय्यिबा की नूरानी गलियों और कूचा व बाज़ार में ईद की तरह फ़रहत व मसर्रत नज़र आती थी, हज का ज़माना क़रीब था अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर साल हज के लिये मक्का मुअज़्ज़मा तशरीफ़ ले जाया करते थे इस साल भी जब हज के लिये अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रवाना हुए तो जुबला बादशाह भी साथ में रवाना हुआ।

जुबला बादशाह की क़िस्मत ही ख़राब थी कि मक्का शरीफ़ में उस के साथ एक हादसा हो गया वह इस तरह कि जब जुबला बादशाह कअ़बा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ कर रहा था, हालते तवाफ़ में जुबला बादशाह की लुंगी ज़मीन पर घिसटती हुई जा रही थी कि तवाफ़ करने वाले एक शख़्स का क़दम जुबला बादशाह की लुंगी पर पड़ गया जिस की वजह से जुबला बादशाह की लुंगी खुल गई, जुबला बादशाह को गुस्सा आया और उस ने उस शख़्स के मुंह पर एक घूंसा मारा कि उस शख़्स की नाक टेढ़ी हो गई, उस शख़्स ने यह मुक़दमा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे अदालत में पेश किया।

मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अद्लो इन्साफ़ का फ़ैसला हर मुसलमान के लिये हिदायत का सर चश्मा है कि बग़ैर तरद्दुद और बग़ैर रिआयत व हिमायत अमीर व ग़रीब के हक़ व सच फ़ैसला करते हुए जुबला बादशाह से इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारे लिये दो रास्ते हैं, पहला यह है कि तुम किसी तरह से मुद्दई को राज़ी कर के मना लो वर्ना बदला देने के लिये तय्यार हो जाओ। जुबला बादशाह जो अपने आप को बड़ी इज़्ज़त व अज़मत वाला समझता था, ख़िलाफ़े उम्मीद यह फ़ैसला सुन कर ग़ज़बनाक हो गया और मुतकब्बिराना अन्दाज़ में कहने लगा कि मैं एक बादशाह हूँ और मुद्दई एक मामूली आदमी है। बादशाह का लिहाज़ किये बग़ैर आप ने यह फ़ैसला सुना दिया।

अमीरुल मोमिनीन अदलो इन्साफ़ के बादशाह हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ जुबला बादशाह कान खोल कर सुन लो ! कि इस्लाम हक़ व सच और अदलो इन्साफ़ का मज़हब है और इस्लाम के मुक़द्दस मज़हब में बादशाह व रिआया और अमीर व ग़रीब दोनों यकसाँ व बराबर हैं और अगर किसी को फ़ज़ीलत हासिल है तो तक़्वा और परहेज़गारी की वजह से।

अल्लाह तआला का इरशादे पाक है : إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

(पारा 26, रुकू 14)

यानी बे शक तुम लोगों में इज़्ज़त व अज़मत वाला वह है जो शख़्स मुत्तक़ी और परहेज़गार है।

जुबला बादशाह हैरान व परेशान हो कर कहने लगा कि मैंने तो यह समझा था कि मुसलमान हो कर पहले से ज़्यादा इज़्ज़त व अज़मत वाला हो जाऊँगा। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि इस्लाम के अद्लो इन्साफ़ का फ़ैसला यही है जिस की पाबन्दी हर अमीर व ग़रीब, बादशाह व रिआया सब पर ज़रूरी है, उस के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं हो सकता। ऐ जुबला बादशाह अगर तुम को अपनी इज़्ज़त प्यारी है तो मुद्दई को राज़ी कर के मना लो वर्ना मजमए आम में बदला देने के लिये तय्यार हो जाओ। जुबला बादशाह ने कहा कि फिर तो मैं ईसाई हो जाऊँगा। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अब इस सूरत में तेरे लिये इस्लाम की सज़ा और सख़्त है कि इस्लाम से फिरने वाला मुरतद होता है और मुरतद की सज़ा क़त्ल है।

जुबला आख़िर बादशाह था हर तरह के हीले बहाने जानता था, बड़ी होशियारी से कहा कि

में एक रात तक के लिये गौर व फ़िक्र की मोहलत चाहता हूँ। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस को मोहलत दे दी जब रात हुई तो जुबला बादशाह छुप कर रात के अन्धेरे का फ़ाइदा उठा कर मक्का मुअज़्ज़मा से फ़रार हो कर कुस्तुनतुनिया चला गया और नसरानी हो गया। (सीरते हलबिया, इब्ने हश्शाम)

ऐ ईमान वालो ! हर दौर में अमीरों और दौलत मन्दों ने ग़रीबों और गिरे पड़े लोगों को ज़लील व ख़्वार समझा है और जब भी इस्लाम का हक़ व सच पैग़ाम बताया जाता है तो गरीब तो बग़ैर हीला व हुजत के इस्लाम के सामने अपना सर झुकाता नज़र आता है मगर आज भी अमीरों और दौलत मन्दों में यह आदत नज़र आती है कि इस्लाम के हुक्म और फ़ैसला के वक़्त तरह तरह के हीले और बहाने पेश करते नज़र आते हैं। अल्लाह तआला अपने पनाह और अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का मज़लूम को इन्साफ़ दिलाना

मिस्र का एक आदमी हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ और उस ने शिकायत पेश की कि मुझे मिस्र के गवर्नर के बेटे ने मारा है। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि वजह किया थी ? उस शख़्स ने बताया कि मैं ने और गवर्नर के बेटे ने घोड़ा दौड़ाया, मेरा घोड़ा आगे निकल गया और गवर्नर के बेटे का घोड़ा पीछे रह गया तो गवर्नर के बेटे ने मुझे कोड़े मारे और कोड़े मारता जाता था और कहता जाता था कि मैं बड़ों का बेटा हूँ और बड़ों से आगे जाने की यह सज़ा है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो आदिल नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के आदिल ख़लीफ़ा थे, मिस्र के गवर्नर के पास ख़त लिखा कि फ़ौरन तुम अपने बेटे के साथ मदीना तैय्यिबा हाज़िर हो जाओ। गवर्नर और उस का बेटा जब दोनों बारगाहे अदलो इन्साफ़ में हाज़िर हो गए तो अदलो इन्साफ़ के बादशाह अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मिस्र के गवर्नर के सामने उस के बेटे को सज़ा देने के लिये उस मिसरी मज़लूम के हाथ में कोड़ा दिया और फ़रमाया उस बड़े बेटे को मारो ! मिसरी शख़्स ने गवर्नर के बेटे को कोड़े से ख़ूब पीटा, जब बदला पूरा हो गया तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया उस बड़े बेटे के बाप गवर्नर को भी मारो क्यों कि उस का यह बेटा हर गिज़ ज़ुल्म नहीं करता अगर उस को अपने बाप के गवर्नर होने का घमण्ड न होता। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस गवर्नर से फ़रमाया, तुम ने लोगों को कब से अपना गुलाम बना लिया है ? उन की माओं ने उन को आज़ाद जना था। मिसरी शख़्स ने बारगाहे अदालत में अर्ज़ किया कि बाप ने बज़ाहिर मेरे साथ कोई ज़ुल्म नहीं किया है उस को मुआफ़ी दी जाए और जिस से मुझे बदला लेना था मैंने उस से बदला ले लिया (कन्ज़ुल उम्माल, जि. 4, स. 420)

हज़रत उमर फ़ारूक़ ने अपनी पीठ पर सामान उठाया

मदीना तैय्यिबा में एक रात ऐसी भी थी कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आबादी से बाहर के इलाक़ों का दौरा करने के लिये निकले तो देखा कि एक औरत है उस के साथ छोटे छोटे बच्चे है जो भूक की शिद्दत की वजह से रो रहे हैं और मां ने आग पर हांडी को चढ़ा रखा था। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा, बहन साहिबा तुम्हारे बच्चे क्यों रो रहे हैं ? उस औरत ने जवाब दिया भूक की वजह से। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया उस हांडी में क्या चढ़ा रखा है। उस औरत ने जवाब दिया कि उस हांडी में कुछ भी नहीं है, यह तो एक बहाना है कि बच्चे समझें कि खाना तय्यार हो रहा है और इन्तिज़ार करते करते सो जाएं और अल्लाह तआला ही हमारे और उमर के दरमियान इन्साफ़ करेगा। उस औरत को यह मालूम नहीं था कि मैं किस से बात कर रही हूँ।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, बहन साहिबा ! अल्लाह तआला तुम पर रहमत फ़रमाए यह तो सोचो कि उमर को क्या मालूम कि तुम किस हाल में हो ? उस औरत ने कहा कि फिर उमर अमीरुल मोमिनीन क्यों बने और मन्सबे ख़िलाफ़त क्यों कुबूल किया ? कि उसे ग़रीबों की हालत का पता नहीं है।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसी वक़्त वापस हुए बैतुलमाल से आटा और घी लिया, ख़ादिम से फ़रमाया कि मेरी पीठ पर आटा लाद दो। ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ, यह सब सामान पहुँचा देता हूँ। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया क़ियामत के दिन भी तुम मेरा बोझ उठाओगे ?

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुद खाने पीने के सारे सामान को अपनी पीठ पर रखा और उस औरत के घर पहुँचे और खाना पकाने में भी मदद की, खाना तय्यार हुआ, बच्चों ने पेट भर कर खाना खा लिया और सो गए। अमीरुल मोमिनीन ने उस औरत से वापस जाने की इजाज़त ली तो उस औरत ने कहा : अल्लाह तआला तुम्हें बहतर जज़ा दे और उमर की जगह तुम्हें अमीरुल मोमिनीन बना दे।

(सीरते उमर, स. 591)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला मौक़ा अता फ़रमाए और नेअमत व दौलत और हुकूमत व ताक़त नसीब फ़रमाए तो ऐश व इशरत की ज़िन्दगी से दूर रहने की जिद्दो जहद करना चाहिये और ग़रीबों, बे सहारों की मदद करते रहना चाहिये।

हज़रत उमर फ़ारूक़ और एक बे सहारा औरत

मदीना तैय्यिबा की रातें बड़ी रहमत व बरकत वली होतीं हैं, चाँदनी रात थी, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा के बाहर गश्त कर रहे थे, आप के गुलाम हज़रत असलम भी साथ थे, अमीरुल मोमिनीन हज़रत

उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक झोपड़ी नज़र आई, उस की जानिब तशरीफ़ ले गए झोपडी में एक औरत बच्चा की तकलीफ़ से कराह रही थी, अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हाल मालूम किया तो पता चला कि वह एक अरबी औरत है इस तकलीफ़ के आलम में उस औरत की मदद करने वाला कोई नहीं है और उस के घर में खाने का कुछ सामान भी नहीं है। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बड़ी तेज़ी के साथ क़दम उठाते भागते हुए घर आए, अपनी बीवी हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्ते मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से फ़रमाया अल्लाह तआला ने एक नेकी तुम्हारे लिये भेजी है उस नेकी को हासिल कर लो। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बीवी के साथ खाने वग़ैरह का सामान लेकर उस झोंपड़ी में पहुँचे हज़रत उम्मे कुलसूम औरत के पास अन्दर चली गई और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस औरत के शोहर के पास बाहर बैठ कर बातें करने लगे और वह शख़्स यह नहीं जानता था कि मैं जिस से बातें कर रहा हूँ वह शख़्सियत कौन हैं, इस लिये वह शख़्स बड़े बे तकल्लुफ़ी से बातें करता रहा।

उस औरत के शिकम से लड़का पैदा हुआ तो आप की बीवी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने आवाज़ दे कर कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मुबारक हो कि लड़का पैदा हुआ है और उस के बाप को भी ख़ुशख़बरी सुना दीजिये कि उस के यहाँ लड़का पैदा हुआ है।

जब यह आवाज़ सुनी तो उस शख़्स को मालूम हुआ कि यह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, वह शख़्स हैरत में डूबा अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखता रहा और दुआएं देता रहा कि अल्लाह वाले ऐसे होते हैं। (कन्जुल उम्माल, जि. 6, स. 343, अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 136)

हज़रत उमर का हुक्म कि कोई सिपाही अपनी बीवी से चार माह से ज़्यादा दूर न रहे

मदीना तैय्यिबा की प्यारी प्यारी रहमत व नूर से जगमगाती रातों का क्या कहना।

इलाही दिखा दे वह मदीना कैसी बसती है
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है

हज़रात ! एक रात की बात है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा के अतराफ़ में गश्त लगा रहे थे कि अपने मकान में एक औरत अपनी शोहर को याद कर के इशक़िया अशआर पढ़ रही थी, जिस से साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि उस औरत का शोहर उस के पास मौजूद नहीं है।

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अशआर को सुन कर उस औरत के मकान पर तशरीफ़ ले गए और उस औरत से मालूम किया कि तेरा मुआमला किया

है ? जो इस क़िस्म के इशक़िया अशआर पढ़ रही थी, तो उस औरत ने बताया कि मेरे शोहर मेरे पास नहीं हैं, कई महीनों से जंग पर गए हुए हैं, अपने शोहर की मुलाक़ात के शौक़ में यह अशआर पढ़ रही हूँ।

सुबह हुई तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस औरत के शोहर को बुलाने के लिये क़ासिद रवाना फ़रमा दिया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी बेटी हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से दरयाफ़्त किया कि औरत कितने अर्से तक शोहर के बग़ैर रह सकती है। आपने अपनी बेटी से यह मस्अला इस लिये दरयाफ़्त फ़रमाया कि आप की बीवी का विसाल हो गया था, बाप के उस सवाल को सुन कर हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने शर्म से अपना सर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला भी हक़ बात को बयान करने से शर्म नहीं क़रता तो हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने हाथ के इशारे से बताया कि तीन महीना या ज़्यादा से ज़्यादा चार महीना। तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुक्म जारी फ़रमाया कि :

لَا يُحْبَسُ الْجُيُوْشُ فَوْقَ اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ٥

यानी किसी सिपाही को चार महीने से ज़्यादा न रोका जाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 223)

हज़रत उमर फ़ारूक़ का ख़ौफ़ : मदीना तैय्यिबा की रातों के हसीन जलवों में गुम्बदे ख़िज़ारा रहमत व नूर में नहाया हुआ नज़र आता है या अल्लाह तआला मेरे रहमान व रहीम रब तआला मदीना तैय्यिबा की पाकीज़ा रातों में दीदारे गुम्बदे ख़ज़रा नसीब फ़रमा दे।

एक रात का वाक़िआ है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना तैय्यिबा के क़ुर्बो जवार में रिआया की ख़बर गीरी के लिये गश्त फ़रमा रहे थे कि एक घर से आवाज़ सुनाई दी मां अपनी बेटी से कह रही थी कि बेटी दूध में पानी मिला दे। दूसरी आवाज़ आई बेटी ने कहा : मां, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुक्म तुझ को मालूम नहीं ? कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुक्म जारी फ़रमाया है ऐलान किया है कि कोई शख़्स दूध में पानी न मिलाए, मां ने बेटी से कहा कि अमीरुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) मेरे घर में क़हाँ देख रहे हैं ? बेटी दूध में पानी मिला दे। बेटी ने अपनी मां से कहा कि मैं ऐसा हर गिज़ नहीं कर सकती कि अमीरुल मोमिनीन के सामने उन की इताअत का इक़रार किया है और पसे पर्दा उन के पीठ के पीछे मैं उन की ना फ़रमानी करूँ और हमारे अमीर, ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने जो कुछ ऐलान किया है वह अल्लाह तआला का हुक्म है और हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का फ़रमान है और अल्लाह तआला से कोई शख़्स और कोई मकान पोशीदा नहीं है वह हर जगह

देख रहा है और महबूबे ख़ुदा हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अल्लाह तआला की दैन व अता से हर घर हर मोमिन के सीने में मौजूद हैं और उन्हीं का जलवा हर घर में है।

तूर ही पर नहीं मौक़ूफ़ उजाला तेरा
कौन से घर में नहीं जलवए ज़ेबा तेरा

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त मकान के बाहर खड़े थे और वह सारी बातें जो मां बेटी की हो रही थीं समाअत फ़रमा रहे थे, उस वक़्त हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ आप के गुलाम हज़रत असलम भी मौजूद थे। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने गुलाम से फ़रमाया उस घर का पता ज़हन में महफ़ूज़ कर लो और सुबह के वक़्त हालात मालूम कर के बताओ। हज़रत असलम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हालात का जाइज़ा लेने के बाद अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो कुछ मालूमात हासिल की थी उस से आगाह किया कि लड़की बहुत नेक व पारसा और जवान व बेवा है। कोई शख़्स उन का सर परस्त नहीं है। मां, बेटी दोनों बेवा और बे सहारा हैं।

अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर तशरीफ़ लाए और अपने तमाम बेटों को जमा फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि तुम में कौन है ? जो एक नेक व पारसा लड़की से शादी कर ले तो आप के साहबज़ादे हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी रज़ा ज़ाहिर की अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस गवालन, दूध बेचने वाली बेवा औरत की नेक व पारसा बेटी से अपने बेटे हज़रत आसिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का निकाह कर दिया। (अशरए मुबश्शरह)

हज़रात ! उलमा फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहबज़ादे हज़रत आसिम का निकाह जिस नेक व पारसा लड़की के साथ हुआ था उन्हीं दोनों के नस्ले पाक से बतनन बाद बतनिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ानदान से एक नेक व सालेह और बर गुज़ीदा बच्चा पैदा होता है जो अपने वक़्त का अमीरुल मोमिनीन और ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन बनता है जिस को आलमे इस्लाम अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नामे नामी इस्मे गिरामी से जानती और पहचानती है। (करामाते सहाबा, स. 42)

फ़ारसी..........................

ऐ ईमान वालो ! अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम आलमे इस्लाम के अमीर व ख़लीफ़ा हैं अगर चाहते तो किसी अमीरे कबीर घराने की लड़की से अपने बेटे का निकाह कर देते लेकिन उन की निगाहों में अमीरे कबीर होना और माल व दौलत का धनी होना कोई मक़ाम व मरतबा नहीं रखता था बल्कि वह ख़ुद नेक व

सालेह थे इसी लिये नेक व सालेह को पसन्द करते थे लेकिन आज का मुसलमान नेक व सालेह को नहीं देखता बल्कि अमीरे कबीर और दौलत मन्द होना देखता है।

साफ़ तौर पर ज़ाहिर व साबित हो गया कि नेकों के लिये नेक और बदों के लिये बद।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का तक़वा : एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तबीअत अलील व नासाज़ थी बीमारी के सबब इलाज के लिये हकीम ने अमीरुल मोमिनीन को मशवरा दिया कि आप इस बीमारी में शहद का इस्तिमाल फ़रमाएं। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों क़ो मस्जिदे नबवी शरीफ़ में जमा किया और मिम्बर पर खड़े होकर लोगों के दरमियान अपनी बीमारी और हकीम के मशवरे का ज़िक्र किया कि मुझे थोड़े से शहद की ज़रूरत है, अगर आप लोग इजाज़त दे दें तो बैतुल माल से शहद ले लूँगा। लोगों ने इजाज़त दे दी तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बैतुल माल से ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा सा शहद लिया। (सीरते उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

अल्लाहु अकबर ! क्या ही शाने तक़वा और परहेज़गारी है। हमारे प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अहु के इस तक़वा और परहेज़गारी का नतीजा था जो इस्लाम ख़ूब फूला और फला और आज तक क़ाइम और दाइम है और क़ियामत तक इस्लाम फूलता और फलता ही रहेगा।

:
इस्लाम तेरी नब्ज़ न डूबेगी हश्र तक
तेरी रगों में ख़ूँ है रवां चार यार का

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उमर फ़ारूक़ हक़ बोलते और हक़ ही सुनते थे

एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में यमन से कपड़े आए जो आप ने तमाम मुसलमानों में बराबर बराबर तक़सीम फ़रमा दिये। एक मुसलमान को एक चादर के बराबर कपड़ा हिस्से में मिला था और अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु को भी एक मुसलमान के बराबर हिस्सा मिला था।

अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद शरीफ़ के मिम्बर शरीफ़ पर ख़ुतबा दे रहे थे और उस यमनी कपड़े का कुर्ता पहने हुए थे, मस्जिद शरीफ़ में एक साहब खड़े हो गए और कहने लगे ऐ अमीरुल मोमिनीन हम ख़ुतबा बाद में सुनेंगे, आप पहले जवाब दें कि हर मुसलमान को कपड़ा एक चादर के बराबर मिला था और इसी के बराबर कपड़ा आप को भी मिला था जिस से कुर्ता नहीं बन सकता है तो आप ने उसी कपड़े का इतना लम्बा कुर्ता कैसे बना लिया है ? इसकी वज़ाहत करें। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह से फ़रमाया बेटा ! इस का

तुम जवाब दो। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और फ़रमाया कि मैं ने अपने हिस्से का कपड़ा अपने वालिदे मोहतरम को दे दिया था, मेरे और वालिदे मोहतरम दोनों के हिस्से का कपड़ा मिला कर कुर्ता बनाया गया है। वह साहब जिन्होंने एतराज़ किया था जब यह खुलासा सुना तो कहने लगे ऐ अमीरुल मोमिनीन अब आप खुतबा दें हम सुनेंगे और उस पर अमल करेंगे। (सीरते उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

हज़रात ! हक़ बात दूसरों को सुनाना तो बहुत आसान है मगर हक़ बात पर अमल करना और हक़ बात सुनना यह आसान नहीं है। अल्लाह तआला हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर लाखों अरबों सलाम व रहमत का नुज़ूल फ़रमाए कि हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जहाँ हक़ बात बोलते थे तो उस पर अमल भी करते नज़र आते थे और अगर आप को कोई शख़्स हक़ बात कहता तो आप अमीरुल मोमिनीन और ख़लीफ़ा (बादशाह) होते हुए भी नाराज़ नहीं होते थे, अगर वह बात हक़ और सच होती थी तो आप उस पर अमल भी करते नज़र आते थे।

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म की ख़िदमते ख़ल्क़

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि वह मदीना तैय्यिबा के बाहर दौड़ते हुए आ रहे हैं। तो हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा। اَيْنَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْن

यानी ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप दौड़ते हुए कहाँ जा रहे हैं ?

तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया। सदक़ा के ऊंटों में से एक ऊंट भाग गया है उस को मैं ढूँढने जा रहा हूँ। हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया : ऐ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) आप ने आप के बाद में आने वाले खुलफ़ा को बड़ी मुश्किल में डाल दिया है। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 136)

हज़रात ! पूरी दुनियाए इस्लाम के अमीर व ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ल्ब व जिगर में किस क़दर ख़ौफ़े खुदा था कि अमानत दारी और दयानतदारी का अहम फ़रीज़ा अदा करते नज़र आते हैं कि बैतुल माल से एक मामूली ऊंट भाग गया तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुद उस ऊंट को ढूँढने और पकड़ने के लिये उस की तलाश में इधर उधर भागते और दौड़ते नज़र आ रहे हैं कि अगर ऊँट नहीं मिला तो अल्लाह तआला की बारगाह में बाज़ पुरस (पकड़, पछ ताछ) होगी।

अफ़सोस सद अफ़सोस ! आज मुसलमान आम तौर से अमानत में ख़यानत की लअनत में गिरफ़्तार नज़र आ रहा है और दयानत दारी का तो कोई पास व लिहाज़ ही नहीं रह गया है। अल्लाह तआला अपनी पनाह व अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का वज़ीफ़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक कामयाब ताजिर थे कसीर माल व दौलत से अल्लाह तआला ने आप को नवाज़ा था। जब और जिस वक़्त महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने इस्लाम के लिये माल व दौलत की कुरबानी का मुतालबा फ़रमाया तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने महबूब आक़ा, मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे अक़दस में कसीर माल व दौलत की कुरबानी पेश की और कसीर हसनात व बरकात हासिल किये मगर जब से अमीरुल मोमिनीन हुए और ख़िलाफ़त का मन्सबे जलीला आप के सुपुर्द किया गया तो तिजारत करने का मौक़ा ही मयस्सर नहीं आता था। दिन व रात कारे ख़िलाफ़त में मशग़ूल रहते थे, घर में तंगी का माहौल पैदा हो गया, लोगों को जमा किया और घर के इख़राजात और बाल बच्चों के गुज़र बसर के बारे में मुसलमानों के सामने मुआमला रखा और लोगों ने राए दी मगर हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह राए पेश की कि बैतुल माल से आप का मुतवस्सित वज़ीफ़ा (तन्ख़्वाह) मुक़र्रर हो जाए जिस से आप के घर वालों और आप के इख़राजात काफ़ी व शाफ़ी हो जाएं। हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस राय को पसन्द फ़रमाया और अमीरुल मोमिनीन के लिये मुतवस्सित वज़ीफ़ा बैतुल माल से मुक़र्रर हो गया।

हज़रात ! मालूम हुआ कि दीनी ख़िदमात पर वज़ीफ़ा मुकर्रर करना सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की सुन्नत है और वज़ीफ़ा लेना अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत है। और सुन्नत में बड़ी बरकत है।

आज कल कुछ बे अदब गुस्ताख़ मुसलमान कहलाने वाले लोग कहते नज़र आते हैं कि तन्ख़्वाह वाले मौलाना हैं,, ज़कात व फ़ितरा खाने वाले आलिम हैं, अगर तुम ने हिम्मत कर ली है जो कहते हो कि मौलाना, इमाम तन्ख़्वाह लेते हैं तो आगे बढ़ कर इतना और कह दो कि अफ़ज़लुल बशर बअदल अम्बिया बित्तहक़ीक़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मुरादे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और शहीदे आज़म हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी तन्ख़्वाह और वज़ीफ़ा वाले इमाम व ख़लीफ़ा थे। ऐसी जुरअत व बे बाकी करना भी मत और अगर ग़लती व गुनाह हो गया है तो तौबह कर लीजियेगा वर्ना ईमान जाने का ख़तरा है।

और जो लोग यह कहते नज़र आते हैं कि मौलाना और इमाम ज़कात व फ़ितरह खाते हैं तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के अहदे पाक में और

सहाबए किराम के दौरे ख़िलाफ़त के वक़्त बैतुल माल में हर क़िस्म के जाइज़ माल व दौलत जमा किये जाते थे और ज़कात व फ़ितह का माल भी बैतुल माल में जमा होता था और बैतुल माल से तन्ख़्वाह व वज़ीफ़ा दिया जाता था।

इसी तरह अइम्मए दीन व मुहद्देसीन और बुज़ुरगाने दीन ने बैतुल माल और मदरसे क़ाइम किये और ज़कात फ़ितरह के रुक़ूम हासिल किये जो मुसाफ़िरे राह क़ुरआन व सुन्नत पर सर्फ़ किये इसी में से मुअल्लेमीन व ख़ादेमीन को तन्ख़्वाहें और वज़ीफ़े अदा किये गए। बहुत से लोग सोचते हैं कि ज़कात की रक़म से तन्ख़्वाह वज़ीफ़ा देना जाइज़ कैसे हो सकता है ? तो मुआमला यह है कि ज़कात व फ़ितरह जब बैतुलमाल या मदरसा में शरई उसूलों से गुज़र जाने के बाद इस्तिमाल किया गया तो हलाल व तय्यिब हो गया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ की दीनी ख़िदमात

हज़रत मुहद्दिस जमालुद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में चार हज़ार मस्जिदें तामीर हुईं और क़ुरआने मजीद की तालीम और उस की नशरो इशाअत का पूरी सलतनत में एक ऐसा निज़ाम क़ाइम फ़रमाया जिस की बदौलत हज़ारों हुफ़्फ़ाज़ और मुहद्देसीन व फ़ुक़हा और उलमा आलमे वुजूद में आ गए और दस साल तक हर साल ख़ुद अमीरुल मोमिनीन ही अमीरुल हज रहे और अपने ख़ुतबात और ख़ुतूत व फ़रामीन के ज़रीए इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाते रहे। (रौज़तुल अहबाब)

हज़रत उमर फ़ारूक़ से वसीला का सुबूत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में सख़्त क़हत पड़ा कि शादाब बाग़ात और हरी भरी खेतियाँ सूखने लगीं, जानवर मरने लगे, हर तरफ़ तबाही व बरबादी का आलम था, लोगों ने जमा हो कर क़हत की शिकायत की और अपनी तबाही व बरबादी का क़िस्सा बारगाहे अदालत में पेश किया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दुआ की दरख़्वास्त की, अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े इस्तिस्क़ा अदा फ़रमाई और अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ कर आसमान की तरफ़ बलन्द किया और इस तरह दुआ मांगी।

اَللّٰھُمَّ اِنَّا کُنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّنَا فَسَقِیْنَا وَاِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَیْکَ بِعَمِّ بِنَبِیِّنَا فَاسْقِنَا فَیُسْقَوْنَ0

यानी या अल्लाह तआला हम तेरी बारगाह में हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला पेश करते थे और तू बारिश बरसा देता था। अब हम अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का वसीला पेश करते हैं तू बारिश अता कर दे।(बुख़ारी, जि. 1, स. 526, मिश्कात, स. 132)

और यह भी रिवायत है कि दुआ मांग कर अभी वापस भी नहीं हुए थे कि बारिश शुरूअ हो गई और कई दिनों तक बरसात होती रही। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 201)

आशिक़े मदीना हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीले से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दुआ मांगे थे तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ करते, या अल्लाह तआला ! अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मेरे वसीले से तेरी बारगाह में इस लिये दुआ मांग रहे हैं कि मुझे तेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से निस्बत हासिल है यानी मैं तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का चचा हूँ या अल्लाह तआला बारिश अता फ़रमा दे और मेरी लाज रख ले।

(अशिअतुल लमआत शरह मिश्कात, जि. 1, स. 969)

हज़रात ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीले से अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला अपने अल्लाह तआला रहमान व रहीम रब तआला की बारगाह में पेश करते तो चारों तरफ़ बादल छा जाते और ख़ूब बारिश होती।

मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की बारगाह में महबूबे ख़ुदा हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का और महबूबे ख़ुदा हमारे प्यारे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का वसीला अल्लाह तआला की बारगाह में पेश कर के दुआ मांगना अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सुन्नत है।

हज़रात ! इस्लाम में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कितने सख़्त और मज़बूत थे कि सहाबए किराम में भी उन का कोई सानी नहीं नज़र आता है और बिदआत व मुनकिरात उमूर के बारे में आप का मिज़ाज शरीफ़ कितना सख़्त था और नाजाइज़ व हराम कामों से आप की पाक तबीअत किस क़दर बेज़ार थी मगर अपने महबूब नबी, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का वसीला और अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की निस्बत व तअल्लुक़ का वसीला देकर अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ मांगना आप को बे हद पसन्द और महबूब था।

इस हदीस शरीफ़ की रोशनी में साफ़ तौर पर ज़ाहिर और साबित हो गया कि अल्लाह वालों क़े वसीले से दुआ मांगना बिदअत व नाजाइज़ नहीं है बल्कि हलाल व जाइज़ और सुन्नत है मगर मोमिन सुन्नी मुसलमान के लिये है। और मुनाफ़िक़ मुसलमान, बद अक़ीदा

शख़्स को इतनी वाज़ेह हदीस शरीफ़ समझ में नहीं आती है इस लिये कि जब अल्लाह तआला दीन लेता है तो अक़्ल छीन लेता है।

मेरे मुर्शिदे आज़म कुतबे आलम हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वस्ले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो ! हर गिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म की करामात

(1) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक अज़ीम लश्कर ईरान के शहर नहावन्द में भेजा था और नहावन्द शहर मदीना तैय्यिबा से सेकड़ों मील की दूरी पर है। और इस्लामी लश्कर के अमीर हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन मदीना तैय्यिबा की मस्जिदे नबवी शरीफ़ में जुमा के ख़ुतबा दे रहे थे, अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बीच ख़ुतबा में ख़ुतबा बन्द कर के तीन मरतबा फ़रमाया।

يَاسَارِيَةُ الْجَبَلْ۔ يَاسَارِيَةُ الْجَبَلْ۔ يَاسَارِيَةُ الْجَبَلْ۔

यानी ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ देखो ! ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ देखो ! ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ देखो !

मस्जिदे नबवी शरीफ़ के तमाम नमाज़ी हैरान व परेशान हो गए कि मुआमला किया है कि अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ुतबा के बीच में ख़ुतबा को बन्द कर के हज़रत सारिया को आवाज़ दे रहे हैं ज़ब कि हज़रत सारिया मदीना तैय्यिबा से सैकड़ों मील दूर मुल्क ईरान के नहावन्द शहर में दुश्मनाने इस्लाम से जंग कर रहे हैं कुछ अर्सा के बाद नहावन्द से एक क़ासिद आया, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस क़ासिद से जंग का हाल दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि क़रीब था कि हम इस्लामी लश्कर शिकस्त खा जाते और हमारे दुश्मन का लश्कर हम पर कामयाब व कामरां हो जाता कि हम को एक आवाज़ सुनाई दी जो अमीरुल मोमिनीन की आवाज़ में थी कि ऐ सारिया पहाड़ की तरफ़ देखो ! इस आवाज़ को हम ने तीन मरतबा सुनी। इस आवाज़ को सुन कर मैं ने पलट कर अपने पीछे पहाड़ की तरफ़ देखा तो दुश्मनों का एक लश्कर जो बहुत क़रीब था कि पहाड़ की तरफ़ से इस्लामी फ़ौज पर हमला करने वाला है और उस वक़्त तक हम बे ख़बर थे। हम ने पहाड़ की तरफ़ भी हमला कर दिया, दुश्मन की फ़ौज मारी गई और कुछ भाग गए और अल्लाह तआला ने इस्लामी लश्कर को फ़तह व ज़फ़र से सर फ़राज़ फ़रमाया और शहर नहावन्द पर इस्लाम का झन्डा बलन्द हो गया और दुश्मन का सारा

मन्सूबा और प्लान अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत से नाकाम हो गया। (मिश्कात, स. 546, तारीखुल खुलफ़ा, स. 202)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाह व नज़र को किस क़दर दूर दराज़ मक़ाम को देखने की कुव्वत व ताक़त अता की है कि मदीना तैय्यिबा की मस्जिद शरीफ़ से मुल्के ईरान के शहर नहावन्द को देख रहे हैं और मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं ज़ब कि शहर नहावन्द मदीना तैय्यिबा से सैकडों मील की दूरी पर वाकेअ है और यह नूरानी वाक़िआ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के सामने ज़ाहिर हुआ मगर किसी एक सहाबी ने भी ऐतराज़ नहीं क़िया और न ही यह कहा कि दूर दराज़ के मक़ाम को देखना तो अल्लाह तआला की शान है, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो दूर दराज़ के मकान व मक़ाम को देख ही नहीं सकते हैं बल्कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन अपने महबूब व पसन्दीदा ख़लीफा व अमीर की यह करामत देख कर खुश हो रहे थे कि अल्लाह तआला ने हमारे ख़लीफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ग़ुलामी व वफ़ादारी के सदक़े मक़ामे रफ़ीअ की इज़्ज़त व अज़मत और इल्मे ग़ैब की नेअमत व दौलत से मालामाल फरमाया है और गोया सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का यह ईमान व अक़ीदा था कि जब गुलाम व उम्मती और ख़लीफ़ा की निगाह व नज़र और उन के इल्मे ग़ैब का यह आलम है तो अल्लाह तआला की बख़्शिश व अता से शाने ख़ुदा, जाने ईमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेही वसल्लम की निगाह व नज़र और इल्मे ग़ैब की शान व अज़मत का क्या आलम होगा।

क्या ही सच और हक़ फ़रमाया आशिक़े मुस्तफ़ा प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा, इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहाँ हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

हज़रात ! मिश्कात शरीफ़ की हदीस आप हज़रात ने बग़ौर सुन ली कि अल्लाह तआला के अता कर्दा इल्मे ग़ैब से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना तैय्यिबा से सैकड़ों मील दूर मुल्के ईरान के शहर, नहावन्द में होने वाली जंग में लश्करे इस्लाम का हाल और मुआमला और दुश्मनाने इस्लाम के नापाक मन्सूबे और प्लान का हाल व मुआमला भी मालूम कर लिया और देख लिया और يَاسَارِيَةُ الْجَبَلَ फ़रमा कर और हज़रत सारिया को आगाह करके लश्करे इस्लाम को फ़ायदा और नफ़ा भी

पहुँचाया और लश्करे इस्लाम को भारी नुक़सान से भी बचा लिया।

अब चलते चलते बे ईमान व बद अक़ीदा मुसलमान कहलाने वालों का भी हाल मालूम कर लिया जाए।

वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा

वहाबी, देवबन्दी जमाअत के इमाम व पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं कि: नबी और वली को न अपना हाल मालूम है न दूसरे का। (तक़वीयतुल ईमान, स. 62)

नबी और वली को न कुछ क़ुदरत है न कुछ ग़ैब दानी

नबी की ताक़त का हाल तो यह है कि अपनी जान तक के भी नफ़ा और नुक़सान के मालिक नहीं तो दूसरे का क्या कर सकेंगे। ग़ैब दानी अगर नबी के बस में होती तो पहले हर काम का अन्जाम मालूम कर लेते। अगर भला मालूम होता तो उस में हाथ डालते और अगर बुरा मालूम होता तो काहे को उस में क़दम रखते। ग़रज़ यह कि नबी में कुछ ताक़त और इल्मे ग़ैब नहीं। (तक़वीयतुल ईमान, स. 58)

अल्लाह तआला बे ईमान व बद अक़ीदा से दूर रखे और ईमान के साथ अपनी पनाह और अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

अब भी न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ सुन्नी मुसलमानो!

हज़रत उमर की फ़रमां रवाई दरया पर

(2) अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने मिस्र को फ़तह किया तो मिस्र लोगों ने हज़रत उमर व बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि हमारे बीच क़दीम ज़माने से एक रस्म चली आ रही है कि हर साल हम लोग एक कंवारी नो जवान लड़की को क़ीमती ज़ेवरात और अच्छे कपडे पहना कर दरयाए नील में गाड़ देते हैं तो साल भर तक दरयाए नील पानी से भरा रहता है और दरयाए नील जारी रहता है। वर्ना दरयाए नील सूख जाता है। हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने सख़्ती के साथ मना फ़रमाया और फ़रमाया कि इस्लाम इस तरह की जाहिलाना और बे हूदा रस्म की इजाजत नहीं देता और यह तमाम बातें बातिल और बे हूदा हैं।

मिस्र के लोग वापस चले गए कुछ दिनों के बाद वाक़ई दरयाए नील बिल्कुल सूख गया। जिस की वजह से बहुत से लोग नक़्ले मकानी (घर बार छोड़ने) पर मजबूर हो गए। गवर्नर मिस्र हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब दरयाए नील के ख़ुश्क हो जाने और लोगों को मिस्र छोड़ कर दूसरे शहर जाते देख कर एक ख़त लिखा। मदीना तैय्यिबा में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़त पढ़ा और तमाम हालात से मुत्तलअ हुए तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाबन एक ख़त दरयाए नील के नाम तहरीर फ़रमाया और गवनरि मिस्र हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रवाना फ़रमाया और यह हुक्म दिया कि तुम मेरे इस ख़त को दरयाए नील में डाल देना। ख़त का मज़मून यह था।

مِنْ عَبْدِ اللّٰہِ اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ اِلٰی نِیْلِ مِصْرَ ٥

यानी यह ख़त अल्लाह के बन्दे अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की जानिब से मिस्र के दरयाए नील के नाम।

दरयाए नील को मालूम हो कि तू अगर अपनी मर्ज़ी से बहता है तो मत जारी हो और अगर अल्लाह तआला खुदाए क़हार के हुक्म से जारी होता है तो मैं अल्लाह तआला वाहिदे क़हार से अर्ज़ करता हूँ कि वह तुझे जारी फ़रमा दे। हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरुल मोमिनीन के वक़्त को रात के वक़्त दरयाए नील में डाल दिया मिस्र के लोग जब सुबह हुई तो देखा कि अल्लाह तआला ने दरयाए नील को जारी कर दिया है और दरयाए नील पानी से भरा हुआ है और पहले से ज़्यादा सोलह हाथ पनी दरया में बह रहा है फिर दरयाए नील कभी नहीं सूखा और आज तक पानी भरा हुआ है और जारी है।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 203, जमालुल औलिया, स. 70)

ऐ ईमान वालो ! क्या शान है हमारे बुज़ुर्गो की, कि उन अल्लाह वालों का क़ब्ज़ा व इख़्तियार समन्दर व दरयाओं पर भी नज़र आ रहा है।

जब उन के गदा भर देते हैं शाहाने ज़माना की झोली
मोहताज का जब यह आलम है मुख़्तार का आलम क्या होगा

हज़रत उमर फ़ारूक़ का क़ौले सादिक़

एक दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक शख़्स से दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारा नाम और वालिद का नाम और पता क्या है ? तो उस शख़्स ने कहा मेरा नाम जमरह यानी चिंगारी है और मेरे वालिद का नाम शहाब यानी शोअला है और मेरे क़बीला का नाम हरक़ा यानी आग है और मेरे गांव का नाम हर्रह यानी गर्मी है। आप ने पूछा कि हर्रह यानी गर्मी वाला गांव कहाँ है तो उस शख़्स ने कहा लज़ा यानी शोअला वाली जगह में। यह सब कुछ सुनने के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। ऐ शख़्स अपने घर जा और घर वालों को क़बर ले कि तेरे सब घर वाले आग में जल कर मर चुके हैं और तेरा घर जल कर तबाह व बरबाद हो चुका है। वह शख़्स घर गया तो देखा कि वाक़ई घर में आग लगी हुई है और घर के तमाम लोग जल कर मर चुके हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 202)

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मक़ाम व मरतबा को कितना ऊंचा और बलन्द किया है उस की हक़ीक़त का सही पता तो अल्लाह तआला ही जानता है फ़र्श व अर्श वाले जो कुछ जानते हैं वह बहुत ही मुख़्तसर और कम है।

मेरे आक़ाए नेअमत इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुसरवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा

और जब महबूबे आज़म मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के गुलाम हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जो बात फ़रमा दी वाक़ई में वैसा ही नज़र आया। जब अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़बान की शान का यह आलम है तो इमामुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़बाने नूर की बरकत व अज़मत का आलम क्या होगा।

तेरे मुंह से जो निकली वह बात हो के रही
फ़क़त इशारे में सब की नजात होके रही
जो शब को कह दिया दिन है तो दिन निकल आया
जो दिन को कह दिया शब है तो रात हो के रही

दुरूद शरीफ़

हज़रत उमर फ़ारूक़ के हुक्म से ज़लज़ला जाता रहा

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दौरे खिलाफ़त है और मदीना तैय्यिबा में ज़लज़ला आया। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तआला की हम्द व सना की और अपने दुर्रह से ज़मीन को मारा और फ़रमाया।

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला ने अपने नेक बन्दों को कितना ऊँचा मक़ाम व मरतबा अता फ़रमाया है और ज़मीन को महबूब बन्दों के ताबेअ फ़रमा कर दिया है। देखिये कि हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से ज़मीन ठहर गई और ज़लज़ला ख़त्म हो गया।

यह शान व अज़मत हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की है तो हमारे प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की शान व अज़मत को कौन समझ सकता है ? मौलाना हसन रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

अल्लाह, अल्लाह क्या शाने जलालत तेरी
फ़र्श किया अर्श पे जारी है हुकूमत तेरी

हज़रत उमर फ़ारूक़ और मौला अली

मौलाए कायनात हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद ख़्वाब देखा कि मैं अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हूँ नमाज़ ख़त्म हो गई तो मैं ने देखा कि एक शख़्स खजूर का तबक़ ले कर

आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अकदस मे पेश किया और अर्ज किया कि इन खजूरों को नमाज़ियों में तकसीम फरमा दें। सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने खजूर का तबक़ लिया और नमाज़ियों के दरमियान तक़सीम फ़रमाना शुरू किया। हजरत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि जब मेरी बारी आई तो मैं ने खयाल किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ करूँ कि मैं तीन दिन से फ़ाक़ा कर रहा हूँ। इस लिये मुझे ज़्यादा खजूरें अता हो जाएं तो बहतर होगा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ को ज़्यादा हिस्सा नहीं दिया। मैं ख़्वाब से बेदार हुआ नमाज़े फ़ज्र के लिये मस्जिद शरीफ़ में गया और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पीछे नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद एक साहब खजूर से भरा हुआ तबक़ ले कर आए और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खजूरों को नमाज़ियों के दरमियान तक़सीम फ़रमाना शुरूअ किया और जब मेरी बारी आई तो मैं ने हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज़ किया कि मैं तीन दिन से भूका हूँ और फ़ाक़े से हूँ। इस लिये आप मुझे ज़्यादा खजूरें अता फ़रमा दें तो क्या ही अच्छा होगा। तो हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया। ऐ अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अगर रात को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम आप को ज़्यादा खजूरें अता किये होते तो मैं भी आप को ज़्यादा खजूरें दे देता। हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं मैं हैरान हुआ कि मैं ने जो कुछ ख़्वाब की हालत में देखा था वह सब हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम नमाज़ियों के बीच मस्जिद शरीफ़ में बयान फ़रमा दिया।

(नुजहतुल मजालिस , स. 365)

दिलों की बात निगाहों के दरमियान पहुँची
कहाँ चिराग़ जला और रोशनी कहाँ पहुँची

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म और मौला अली के दरमियान तअल्लुक़ व महब्बत

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरमियान बड़ा गेहरा तअल्लुक़ और सच्ची महब्बत थी। इसी तअल्लुक़ व महब्बत की वजह से हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ कर दिया था। इस तरह से हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सुसर हैं हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दामाद हैं

हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 139)

हज़रात ! हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की निगाह व नज़र में हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किस क़दर महबूब और अच्छे थे कि अपनी प्यारी बेटी का निकाह उन के साथ कर दिया और हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना दामाद बना लिया मगर राफ़ज़ी, शीआ पर लअ़नत हो जो यह बकते नज़र आते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरमियान बुग़्ज़ो इनाद और दुश्मनी थी। यह क़ौल बातिल और सरासर झूट और गढ़ी हुई बात है इस लिये कि दुश्मन व मुख़ालिफ़ को दामाद नहीं बनाया जाता है।

महब्बत व तअल्लुक़ की शानदार मिसाल : अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने तीन साहबज़ादों के नाम तीनों ख़ुलफ़ा के नाम पर रखा।

एक बेटे का नाम अबू बक्र। दूसरे बेटे का नाम उमर। तीसरे बेटे का नाम उस्मान रखा।

(अल बिदाया वन्निहाया, जि. 7, स. 332)

हज़रत इमाम हसन का तअल्लुक़ व महब्बत हज़रत उमर फ़ारूक़ के साथ

नवासए रसूल बाग़े जन्नत के फूल इब्ने मौला अली व सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने अपने एक बेटे का नाम अबू बक्र और दूसरे बेटे का नाम उमर रखा था। जो मैदाने करबला में शहीद हुए। (तफ़रीहुल अज़किया, जि. 2, स. 541)

हज़रात ! हर शख़्स अपने बेटों का नाम उन्हीं लोगों के नाम पर रखता है जिस से क़ल्बी तअल्लुक़ और जिगरी महब्बत होती है।

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अपने तीनों बेटों के नाम और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अपने दो साहबज़ादों के नाम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन के नाम पर रखा इस बात की वाज़ेह और क़वी सुबूत है कि इन बुज़ुर्गों के दरमियान अच्छे तअल्लुक़ात और सच्ची महब्बत थी।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का हाकिमों और गवर्नरों का एहतिसाब

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के दौरे ख़िलाफ़त में मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में हाकिम और गवर्नर थे अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अद्ल व इन्साफ़ की हैबत से हर वक़्त लरज़ा बरन्दाम रहते थे।

एक मरतबा तमाम हाकिमों और गवर्नरों को बुलाया और उन के तमाम असबाब व सामान और माल व दौलत का जाइज़ा लिया तो जूतों के एक जोड़े को छोड़ कर बाक़ी तमाम सामान और माल बैतुल माल में ज़मा कर दिया। मिस्र के गवर्नर हज़रत अम्र बिन अल आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाम फ़रमान भेजा कि गवर्नर होने से पहले तुम्हारे पास जो सामान और माल था उस को रख लो और उस के अलावा तमाम सामान और माल जो तुम ने हासिल किया है सब को बैतुल माल में जमा कर दो।

मिस्र के हाकिम अयाज़ बिन ग़नम के बारे में मालूम हुआ कि बड़े ऐश व इशरत की ज़िन्दगी बसर करता है और वह रेशम के कपड़े पहनता है और अपने दरबार में दरबान और ख़ादिम रखता है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुहम्मद बिन मुस्लमह को हुक्म दिया कि अयाज़ बिन ग़नम को जिस हालत में पाओ गिरफ़्तार कर के अपने साथ लाओ! अयाज़ बिन ग़नम मिस्र के हाकिम को गिरफ़्तार कर के अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने हाज़िर किया गया तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मिस्र के हाकिम को बाल के कम्बल का एक मामूली कुर्ता पहनाया और बकरियों का एक रीवड़ उस को चराने के लिये दिया और अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया। इन्सानों पर हुकूमत करने के क़ाबिल नहीं हो। जाओ! और बकरियों को चराओ।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने गवर्नरों और हाकिमों से अहद लिया करते थे कि कोई गवर्नर और हाकिम तुर्की घोड़े पर सवार नहीं होगा। बारीक कपड़ा नहीं पहनेगा, छना हुआ आटा नहीं खाएगा। दरबान और ख़ादिम नहीं रखेगा और हाजत मन्दों के लिये हमा वक़्त अपना दरवाज़ा खुला हुआ रखेगा। इन शराइत के ख़िलाफ़ अगर कोई बात किसी गवर्नर या हाकिम में पाई जाती तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस को फ़ौरन मअज़ूल फ़रमा देते।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 205)

हज़रत उमर फ़ारूक़ की दुरवेशी और सादगी

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अल्लाह तआला ने इस क़दर इज़्ज़त व बुज़ुर्गी की नेअमत और ताक़त व कुव्वत की दौलत से नवाज़ा था कि पूरा आलम और तमाम दुनिया आप की हैबत से कांपती थी। उस के बावजूद भी आप की दुरवेशी और फ़क़ीरी की ज़िन्दगी में कोई फ़र्क़ नहीं आया। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ौफ़े ख़ुदा का यह आलम था कि आप रात व दिन ख़ौफ़े इलाही से रोते रहते थे जिस की वजह से आप के रुख़सारों पर आंसुओं के निशान पड़ गए थे।

सादगी और ख़ाकसारी का यह हाल था कि आप के पैरहन मुबारक में तीन पेवन्द लगे हुए देखे गए। अबू उस्मान नहदी बयान करते थे कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े

आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कपड़े में चमड़े का पेवन्द लगा हुआ देखा है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर साल हज के लिये जाते थे मगर कभी अमीरुल मोमिनीन की हैसियत से किसी मन्ज़िल पर ख़ेमा नहीं लगाया बल्कि किसी दरख़्त पर चादर डाल कर उस के साए में बेठ जाते थे।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स 206)

ऐ ईमान वालो ! यह थे कल के मोमिन व मुसलमान जो ख़िलाफ़त की कुर्सी पर बैठ कर और अमीरुल मोमिनीन हो कर इस क़दर सादगी और ख़ाकसारी की ज़िन्दगी बसर करते थे कि मस्जिदे नबवी की ख़ाली ज़मीन पर सो जाया करते थे और मदीना तैय्यिबा के बाहर तशरीफ़ ले जाते तो ख़ेमा नहीं लगाते थे एक मामूली कपड़ा दरख़्त पर डाल कर उस के साए में बैठते थे और उस के नीचे ज़मीन पर तलवार का तकिया लगा लेते और बे ख़ौफ़ सोते थे मगर एक मुसलमान आज के दौर में भी हैं जो दौलत व नेअमत पाते ही हर क़िस्म के ऐश व इशरत के सामान से उन के घर सजे धजे नज़र आते हैं और ऐसा लगता है कि मरना नहीं है बल्कि यही दुनिया की ज़िन्दगी सब कुछ है। अल अयाज़ बिल्लाहि तआला।

ऐ मुसलमानो ! एक दिन मरना ज़रूर है और क़ब्र की अन्धेरी कोठरी में ज़रूर ब ज़रूर सोना है। अल्लाह तआला की बख़्शी हुई ज़िन्दगी के सुबह व शाम अल्लाह तआला की अमानत हैं और अमानत को अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ सर्फ़ करना अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़ुशी और रज़ा का सबब है। इस लिये जाग जाओ और आज ही क़ब्र की तय्यारी कर लो। क़ब्र के बिस्तर का इन्तिज़ाम कर लो। क़ब्र की रोशनी मुहय्या कर लो।

अल्लाह व रसूल की ख़ुशी और रज़ा क़ब्र का बिस्तर है और अल्लाह व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर पुख़्ता ईमान क़ब्र की रोशनी है और नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और तमाम नेक व भले काम क़ब्र का सामान हैं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ की शहादत : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा यह दुआ किया करते थे :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ فِیْ بَلَدِ رَسُوْلِكَ

यानी या अल्लाह तआला मुझे अपनी राह में शहादत नसीब फ़रमा और मुझे अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब शहर मदीना तैय्यिबा में मौत अता फ़रमा। (बुख़ारी शरीफ़, जि. 1, स. 253)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की इस दुआ पर सहाबए किराम को तअज्जुब होता था कि शहादत तो मैदाने जंग में तलवारों के साए में मिला करती है और अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हु का हाल यह है कि मदीना तैय्यिबा के बाहर मरना भी नहीं चाहते हैं और शहादत की तमन्ना और आरज़ू भी रखते नज़र आते हैं।

मगर सच्ची बात तो यह है कि आप की इख़्लास से लबरेज़ दुआ बारगाहे रब तआला में शरफ़े

क़ुबूल पा चुकी थी कि आप को अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के महबूब शहर, मदीना तैय्यिबा में शहादत नसीब होनी थी।

एक मजूसी ग़ुलाम अबू लू लू फ़ीरोज़ अपने मौला हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़ एक मुक़दमा ले कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अदालत में हाज़िर हुआ। अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक में फ़ैसला दे दिया।। अबू लू लू फ़ीरोज़ उस फ़ैसले से नाराज हो कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जानी दुश्मन हो गया और मजूसी ग़ुलाम अबू लूलू फ़ीरोज़ ज़हर में बुझा हुआ खन्जर ले कर फ़ज्र के वक़्त अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के क़रीब सफ़े अव्वल में खड़ा हो गया जैसे ही अमीरुल मोमिनीन ने नमाज़ शुरू की। अबू लूलू फ़ीरोज़ मलऊन ने आप के कन्धे और पहलू पर ख़न्जर से दो वार किया। अमीरुल मोमिनीन ख़ून में नहा गए और ज़मीन पर गिर पड़े। ज़ालिम अबू लूलू फ़ीरोज़ भागने लगा और लोगों ने उस ज़ालिम को पकड़ना चाहा तो वह ज़ालिम तेज़ी से ख़न्जर चलाता हुआ भागा और तेरह लोगों को ज़ख़्मी कर दिया जिन में से छः की वफ़ात हो गई। आख़िर एक इराक़ी ने अबू लूलू फ़ीरोज़ के सर पर चादर डाल कर पकड़ लिया तो उस ख़बीस ने फ़ौरन वही ख़न्जर अपने पेट में मार कर ख़ुद कुशी कर ली और मर गया।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई और लोग अमीरुल मोमिनीन को उठा कर मकान पर लाए ज़ख़्म इतना गहरा था कि लोग आप की ज़िन्दगी से ना उम्मीद हो गए तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि आप अगर कुछ वसियत करना चाहें तो फ़रमा दीजिये।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब से पहले यह दरयाफ़्त फ़रमाया कि मेरा क़ातिल कौन है ? लोगों ने बताया मजूसी ग़ुलाम अबू लूलू फ़ीरोज़ ! आप ने फ़रमाया, अलहम्दु लिल्लाह ! किसी मुसलमान का दामन मेरे ख़ूने ना हक़ से दाग़दार नहीं हुआ, और मुझे एक काफ़िर के हाथ से शहादत मिली। फिर आप ने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह से फ़रमाया कि बताओ ! हम पर क़र्ज़ कितना है ? हज़रत अब्दुल्लाह ने बताया छियासी हज़ार क़र्ज़ है। आप ने फ़रमाया यह क़र्ज़ मेरी जाईदाद से अदा कर देना वर्ना मेरे ख़ानदान बनू अदी से मदद ले कर मेरा क़र्ज़ अदा कर देना और अगर फिर भी मेरा क़र्ज़ अदा न हो सके तो कुरैश से मदद लेना।

एक शख़्स ने आप को राए दी कि अपने बेटे अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को अपना खलीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा दें। अमीरुल मोमिनीन उस शख़्स पर इस क़दर नाराज़ हुए कि फ़रमाया अल्लाह तआला तुझे ग़ारत करे। तुम मुझे ऐसा ग़लत मशवरा देते हो। जो शख़्स अपनी बीवी को सही तरीक़ा से तलाक़ देने का सलीक़ा नहीं रखता। ऐसे शख़्स को ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दूँ ?

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्मान, हज़रत मौला अली, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत सअद बिन वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को ख़लीफ़ा चुनने के लिये मुक़र्रर फ़रमाया और फ़रमाया कि इन्हीं छः लोगों में से किसी को ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया जाए और इन छः लोगों के अलावा में किसी को ख़िलाफ़त का हक़दार नहीं समझता हूँ। यह लोग हैं जिन से मेरे आक़ा नबिये करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ख़ुश हो कर दुनिया से तशरीफ़ ले गए और मेरा बेटा अब्दुल्लाह ! राए मशवरा में तो शरीक रहेगा मगर ख़िलाफ़त से उस को कोई तअल्लुक़ नहीं होगा। उस के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया अब तुम उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में ज़ाओ ! और मेरा सलाम अर्ज़ करो और मेरी तमन्ना और आरज़ू ज़ाहिर करो कि उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अपने दोनों साथियों, दोस्तों के पास दफ़्न होने की इजाज़त तलब करता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उम्मुल मोमिनीन रो रही थीं लेकिन जब अमीरुल मोमिनीन की तमन्ना और दरख़्वास्त सुनी तो उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया कि यह जगह तो मैं ने अपने लिये महफ़ूज़ कर रखी थी मगर अल्लाह तआला की क़सम ! अजाज मैं अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपनी ज़ात पर तरजीह देती हूँ।

हज़रत अब्दुल्लाह वापस लोटे और आकर हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़ुश ख़बरी दी कि उम्मुल मोमिनीन ने आप को रोज़ए अनवर व अक़दस में दफ़्न होने की इजाज़त दे दी है तो अमीरुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और फ़रमाया कि मेरी ज़िन्दगी की यही सब से बड़ी तमन्ना और आरज़ू थी जिस की इजाज़त मुझे मिल गई।

26 ज़िल हिज्जा सन् 23 हि. चहार शम्बा यानी बुध के दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ख़्मी हुए और तीन दिन के बाद दस साल छः महीना चार दिन मस्नदे ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ रहे और 63 साल की उम्र में विसाल फ़रमाया और मुहर्रम शरीफ़ की एक तारीख़ को रोज़ए अनर व अक़दस में मदफ़ून हुए हज़रत सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और हज़रत उस्माने ग़नी, हज़रत मौला अली, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने क़ब्र में उतारा और अद्ल व इन्साफ़ और फ़ज़्लो कमाल, अमानत व दयानत और तक़वा व तहारत के बादशाह, मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लेमीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु अपने महबूब नबी, मुशफ़िक व महरबान रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के पास और अपने करीम साथी हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के क़रीब हमेशा के लिये आराम से सो गए। मुलख्खसन

(अल इस्तीआब, जि. 3, स. 44, अल बिदाया वन्निहाया, जि 7, स. 145, तारीखुल खुला, स 211)

मशहूर मुहद्दिस इमाम मुहम्मद इब्ने सअद बयान फ़रमाते हैं कि अमीरुल मोमिनीन हजरत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को गुस्ल व कफ़न दिया गया तो हज़रत मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चेहरे से कफ़न की चादर हटाई और आप के चेहरे की ज़ियारत करते हुए इरशाद फ़रमाया ! इस वक़्त रूए ज़मीन पर हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा किसी का नामए आमाल नहीं । हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ! मेरी तमन्ना यह है कि मैं भी हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा अच्छा नामए आमाल ले कर अल्लाह तआला की बारगाह में जाऊँ। (तबक़ात इब्ने सअद, जि. 3, स. 50)

या अल्लाह तआला ! रहमान व रहीम रब तआला ! मेरी जानिब से और तमाम मुसलमानों की जानिब से अरबों अरब और खरबों खरब बल्कि उन से ज़्यादा दुरूद सलाम मेरे मुशफ़िक व महरबान आक़ा तेरे महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर और तेरे नबी के महबूब खलीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर और तेरे महबूब के महबूब हज़रत अबू बक्र के महबूब व प्यारे खलीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु पर ता क़ियामत नाज़िल फ़रमा। आमीन सुम्मा आमीन।

इन आक़ाओं के करम का मोहताज
अनवार अहमद कादरी, बरकाती, रज़वी

वर्क़ तमाम हुआ, और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

चौथा जुमा .... पहला बयान

हज़रत उस्मान ग़नी ज़ुन्नूरैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

के फ़ज़ाइलो कमालात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ ۝ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ۝

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَی الْکُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُکَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ز

तर्जमा : मुहम्मद अल्लाह के सूल हैं और उन के साथ वाले काफ़िरों पर सख्त हैं और आपस में नर्म दिल, तू उन्हें देखेगा रुकूअ करते, सज्दे में गिरते अल्लाह का फ़ज़्ल व रज़ा चाहते। (पारा 26, रुकू 12, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म दीनो मिल्लत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान व अज़मत को बयान फ़रमाते हैं :

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

हज़रात ! हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हमारे नबी ख़ातिमुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम तक किसी के निकाह में नबी की दो बेटियाँ नहीं आईं, लेकिन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में इमामुल अम्बिया महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दो साहबज़ादियाँ यके बाद दीगरे निकाह में आईं, पहले हज़रत रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से निकाह हुआ जब उन का विसाल हो गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी दूसरी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में दिया। यह शरफ़ व फ़ज़ीलत सिर्फ़ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हासिल है किसी दूसरे सहाबी को हासिल नहीं कि जिन के निकाह में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की दो बेटियाँ आई हों। (इब्ने माजह, स. 11)

हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी दूसरी बेटी हजरत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के इन्तिक़ाल के वक़्त हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया ऐ उस्मान ! अगर मेरे चालीस बेटियाँ भी होतीं तो यके बाद दीगरे मैं उन सब का निकाह तुम्हारे साथ कर देता। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, स. 104)

बैहक़ी ने अपनी सुनन में लिखा कि हजरत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर कियामत तक हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा किसी शख़्स के निकाह में किसी नबी की दो साहबज़ादियाँ नहीं आई इसी लिये हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ुन्नुरैन कहते हैं यानी दो नूर वाले।

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

दुरूद शरीफ़ :

ऐलाने नुबुव्वत व रिसालत से पहले हमारे आक़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी बेटी हज़रत रुक़य्या का निकाह हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमा दिया था। हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी बीवी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को साथ लेकर हब्शा को हिजरत फ़रमाई। फिर जब आप हब्शा से हिजरत कर के मदीना तैय्यिबा वापस तशरीफ़ लाए तो हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बीमार हो गईं, जंगे बद्र के लिये जब हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम रवाना होने लगे तो उस वक़्त हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की बीमारी बहुत शदीद हो चुकी थी इसी सबब से हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जंगे बद्र में शिरकत से रोक दिया था ताकि हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तीमार दारी कर और उन की देख भाल करें। अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम जंगे बद्र से तशरीफ़ नहीं लाए थे कि हजरत रुक़य्या का इन्तिकाल हो गया और जिस वक़्त क़ासिद जंगे बद्र की फ़तह मुबीन का मुज़दा लेकर मदीना तैय्यिबा आया तो उस वक़्त हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को जन्नतुल बक़ीअ क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया जा रहा था।

लेकिन इस के बावजूद कि हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जंगे बदर में शरीक नहीं हुए फिर भी महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को माले ग़नीमत में से एक मुजाहिद के बराबर हिस्सा अता फ़रमाया। और जंगे बद्र में शरीक होने वाले सहाबा के बराबर अज्रो सवाब की आप को बशारत दी। इसी लिये हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु अस्हाबे बद्र में शुमार किये जाते हैं। हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के इन्तिक़ाल फ़रमा जाने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपनी दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ कर दिया और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का भी विसाल सन् 9 हि. में हो गया।

हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक साहबज़ादे हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे। जिन का नाम अब्दुल्लाह था वह अपनी मां के इन्तिक़ाल के बाद छः साल की उम्र पाकर विसाल फ़रमा गए और हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कोई औलाद नहीं हुई।

हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़रीबी रिश्ते दार और दामाद हैं और कुरैश के इज़्ज़त दारों में आपका शुमार है और इस्लाम में साबेक़ीने अव्वलीन में से हैं। (बुख़ारी, जि. 1, स. 523)

आप शैख़ैन के बाद अफ़ज़लुन्नास हैं : और रहमते आलम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ख़लीफ़ा बरहक़ और जा नशीन हैं और अशरए मुबश्शरह में शामिल हैं और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद अकरमुल ख़ल्क़ व अफ़ज़लुन्नास हैं।

इब्ने सअद की रिवायत है जब हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ा और ग़ज़वए ग़तफ़ान में तशरीफ़ ले गए तो उन दोनों मौक़ों पर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अहु को मदीना तैय्यिबा में अपना ख़लीफ़ा बना कर गए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

नाम व नसब : आपका नाम उस्मान, कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब ज़ुन्नूरैन है।

विलादत : हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहु तआला अन्हु कुरैश के मशहूर ख़ानदान में वाक़िआ फ़ील के छः साल बाद मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए और आप के वालिद का नाम अफ़्फ़ान बिन अल आस बिन उमय्या बिन अब्दे शम्स बिन अब्दे मुनाफ़ यानी पाँचवी पुश्त में आप का नसब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है।

आप की वालिदा का नाम अरवा बिन्ते कुरैज़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हक़ीक़ी नवासी हैं। (इस्तीआब, जि. 3, स. 1038)

आप का इस्लाम : हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्लाम की दावत दी तो हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम ले आए। आप क़दीमुल इस्लाम हैं।

इब्ने इस्हाक़ बयान करते हैं कि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस्लाम लाने के बाद सब से पहले मुसलमान हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

आप की इस्लाम के साथ सच्ची वाबस्तगी

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मुसलमान हुए तो आप का पूरा ख़ानदान आप का दुश्मन बन गया और आप का चचा हकम बिन अबी अल आस तो इस क़दर बिरहम और नाराज़ हुआ कि उस ने आप को एक रस्सी में जकड़ कर बाँध दिया और कहने लगा कि जब तक तुम इस्लाम को छोड़ नहीं देते हो मैं तुम्हें हर गिज़ नहीं छोड़ूँगा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने चचा से फ़रमाया : वल्लाह ! अगर तुम मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालोगे जब भी मैं मुक़द्दस मज़हबे इस्लाम को नहीं छोड़ूँगा। आप के चचा ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सच्ची और पक्की वाबस्तगी इस्लाम के साथ देख कर रस्सी खोल दी और आप को आज़ाद कर दिया। (सवानेह करबला, स 34)

हज़रत ! इस नूरानी वाक़िआ से मालूम हुआ कि मुसलमान अगर अपने सच्चे और प्यारे मज़हबे इस्लाम के साथ सच्ची और पक्की वाबस्तगी रखे तो अल्लाह तआला एक न एक दिन हर तरह के ग़मों और परेशानियों से आज़ादी नसीब फ़रमा देता है।

आप का हुलया : हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरमियानी क़द के ख़ूबसूरत शख़्स थे, हाथ लम्बे थे जिन पर काफ़ी बाल थे, दाढ़ी बहुत घनी थी।

आप साहिबे हिरतैन हैं : हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मरतबा हिजरत की। एक मरतबा हिजरत फ़रमा कर हबशा तशरीफ़ ले गए और दूसरी मरतबा हिजरत फ़रमा कर मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ लाए और इस्लाम में सब से पहले हिजरत फ़रमाने वाले भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

आप से फ़रिश्ते हया करते हैं : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है वह फ़रमाती हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम अपने मकान में लेटे हुए थे और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की रान या पिन्डली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था, उसी हाल में कि मेरे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लेटे रहे, उस के बाद हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए इसी हाल में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम लेटे रहे फिर जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए तो हमारे सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम उठ कर बैठ गए और

अपने कपड़ों को दुरुस्त फ़रमा लिया। हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब मेरे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वापस तशरीफ़ ले गए तो मैं ने अपने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से दरयाफ़्त किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या वजह है कि जब मेरे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए तो आप लेटे रहे लेकिन जब हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर हुए तो आप उठ कर बैठ गए।

आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जवाब इरशाद फ़रमाया :

اَلَا اَسْتَحِیْ مِنْ رَّجُلٍ تَسْتَحِیْ مِنْهُ الْمَلَائِکَۃُ○

यानी क्या मैं उस शख़्स से हया न करूँ जिस शख़्स से फ़रिश्ते भी हया करते हैं।

(मुस्लिम शरीफ़, जि. 2, स. 277)

सुब्हानल्लाह ! हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मक़ाम व मरतबा कितना बलन्द व बाला है कि आप से फ़रिश्ते भी हया करते हैं और खुद महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम भी हया करते नज़र आते हैं।

उस्मान का हाथ नबी का हाथ : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मक़ामे हुदैबिया में बैअतुर्रिज़वान के मौक़े पर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से बैअत ले रहे थे तो उस वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्ल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़ासिद व नुमाइन्दा की हैसियत से मक्का शरीफ़ गए हुए थे। जब सारे सहाबा बैअत कर चुके तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि उस्मान अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह के काम से गए हैं और फिर अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मार कर फ़रमाया यह उस्मान का हाथ है और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ से खुद बैअत फ़रमाई।

आशिक़े मदीना हज़रत अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि इस हदीस शरीफ़ से ज़ाहिर और साबित होता है कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने दस्ते अक़दस को हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ क़रार दिया यह शान व फ़ज़ीलत ऐसी है जो हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ ख़ास है किसी दूसरे सहाबी को हासिल नहीं है। (अशिअतुल लमआत)

दावत में हर क़दम के बदले एक गुलाम आज़ाद किया

एक मरतबा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपने घर पर खाने की दावत दी और जब महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर की तरफ़ तशरीफ़ ले चले तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के क़दमे मुबारक गिनने लगे फिर हर क़दम के बदले एक एक गुलाम आज़ाद किया।

(जामिउल मोअजिज़ात, स. 65)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मरतबा जन्नत ख़रीदी

एक मरतबा बेरूमा की ख़रीदारी के वक़्त : हजरत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जब हमारे सरकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मदीना तैय्यिबा तशरीफ़ ले गए तो मदीना तैय्यिबा में बेरूमा के अलावा और किसी कुंए का पानी मीठा न था यह कुंवा वादिये अक़ीक़ के कनारे एक बाग़ में है जो मदीना तैय्यिबा से तक़रीबन चार किलो मीटर की दूरी पर है। उस कुंएं का मालिक यहूदी था जो उस का पानी बेचा करता था और मुसलमानों को पानी की सख़्त तकलीफ़ थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के कहने और तरग़ीब दिलाने से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आधा कुंवा बारह हजार दिरहम में ख़रीद लिया और मुसलमानों पर वक़्फ़ कर दिया और तय यह पाया कि एक दिन मुसलमान पानी भरेंगे और दूसरे दिन यहूदी मगर जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक दिन में दो दिन का पानी भर लेते हैं और मेरा पानी हमारी मर्ज़ी के मुताबिक़ नहीं बिकता है तो यहूदी परेशान हो कर आधा कुंवा भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। उस कुंएं को आज की तारीख़ में बीरे उस्मान के नाम से जाना जाता है। (हाकिम)

दूसरी मरतबा जंगे तबूक के वक़्त

जंगे तबूक का वाक़िआ ऐसे वक़्त में पेश आया जब कि मदीना तैय्यिबा में सख़्त क़हत पड़ा हुआ था और आम मुसलमान बहुत ज़्यादा तंगी और परेशानी में मुब्तला थे। यहाँ तक कि लोग दरख़्त की पत्तियाँ खा कर ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे इसी लिये उस जंग के लश्कर को जेशे उसरह कहा जाता है यानी तंग दस्ती वाला लश्कर।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़ुबाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि वह बयान फ़रमाते हैं कि मैं महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में उस वक़्त मौजूद था जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही

वसल्लम जेशे उसरा की मदद के लिये सहाबए किराम को जोश दिला रहे थे। उस वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की पुर जोश तक़रीर सुन कर खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम में सो ऊंट तमाम साजो सामान के साथ राहे खुदा में पेश करता हूँ। उस के बाद फिर महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के दरमियान जोश व जज़्बा दिलाने वाली तक़रीर फ़रमाई और मदद व तआवुन की तरफ़ तवज्जोह दिलाई तो फिर दूसरी मरतबा भी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खड़े होकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं दो सो ऊंट साजो सामान के साथ राहे खुदा में पेश करता हूँ उस के बाद फिर तीसरी मरतबा अल्लाह के हबीब उम्मत के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने जंगी साजो सामान के हुसूल के लिये सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को रग़बत दिलाने के लिये खिताब फ़रमाया तो फिर तीसरी बार हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम मैं तीन सो ऊंट मुकम्मल जंगी सामान के साथ राहे खुदा में हाज़िर करता हूँ।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ख़बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं मैं ने देखा कि महबूबे ख़ुदा नबिये रहमत व बरकत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम मिम्बर शरीफ़ से उतरते जाते थे और फ़रमा रहे थे :

مَاعَلٰی عُثْمَانَ مَاعَمِلَ بَعْدَ هٰذِهٖ
مَا عَلٰی عُثْمَانَ مَاعَمَلَ بَعْدِ هٰذِهٖ

यानी अब उस्मान को उस के बाद कोई अमल नुक़सान नहीं पहुँचा सकता है यानी अब उस्मान को उस के बाद कोई अमल नुक़सान नहीं पहुँचा सकता है।

मुराद यह है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कुरबानी और ईसार का यह अमल जो उन्हों ने अपने महबूब रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ईमा व इशारे पर राहे ख़ुदा में किया है वह इतना मक़बूल और महबूब हो चुका है कि अब और कोई नफ़्ल इबादत न करें तब भी उन के दरजात की बलन्दी के लिये काफ़ी है और उस मक़बूल व महबूब अमल के बाद उन के लिये किसी नुक़सान का कोई ख़तरा बाक़ी नहीं रहा। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 211, मिश्कात शरीफ़, स. 561)

एक और रिवायत तफ़सीरे ख़ाज़िन और मुआलिमुत्तन्ज़ील में इस तरह है कि जंगे तबूक के वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक हज़ार ऊंट जंगी साजो सामान के साथ महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया था और एक हज़ार दीनार अपने कुरते की आस्तीन में छुपा कर लाए

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के दामन में डाल दिया और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सदका के चार हजार दिरहम खिदमते अक़दस में पेश किये तो उन दोनों हजरात के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥

यानी जो लोग कि अपने माल को अल्लाह की राह में खर्च करते हैं, फिर देने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ़ देते हैं तो उन का अज्रो सवाब उन के रब के पास है और न उन पर कोई ख़ौफ़ तारी होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (पारा 3, रू. 4)

तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफान में हज़रत सदरुल अफाज़िल सय्यद नईमुद्दीन मुराद आबादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तहरीर फ़रमाया है कि यह आयते मुबारका हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में नाज़िल हुई।

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सख़ावत

हज़रत अल्लामा इस्माईल हक्की रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि मदीना तैय्यिबा में एक मुनाफ़िक़ की जगह में एक दरख़्त था और वह दरख़्त एक अन्सारी के मकान पर झुका हुआ था। जिस का फल अन्सारी सहाबी के मकान में गिरता था। अन्सारी सहाबी ने अपने आक़ा रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में उस मुनाफ़िक़ के दरख़्त का फल गिरने का ज़िक्र किया। उस वक़्त उस मुनाफ़िक़ मुसलमान का निफ़ाक़ ज़ाहिर नहीं हुआ था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस मुनाफ़िक़ मुसलमान से फ़रमाया कि तुम अपना दरख़्त अन्सारी सहाबी के हाथ बेच डालो। उस के बदले तुम्हें जन्नत का दरख़्त मिलेगा। मगर मुनाफिक मुसलमान ने दरख़्त बेचने से इनकार कर दिया। जब उस वाक़िआ की ख़बर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु को हुई कि मुनाफ़िक़ मुसलमान ने हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान को मन्ज़ूर नहीं किया और दरख़्त बेचने से इनकार कर दिया तो हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दरख़्त के बदले में पूरा बाग़ देकर दरख़्त को उस मुनाफ़िक़ मुसलमान से ख़रीद लिया और अन्सारी सहाबी को दे दिया। उस पर हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की तारीफ़ और मुनाफ़िक़ मुसलमान की ज़िल्लत व बुराई में यह आयते करीमा नाज़िल हुई : سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ٥

यानी अन क़रीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उस से वह बड़ा बद बख़्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में जाएगा। (पारा 30, रूकू 12)

इस आयते करीमा में मंय्यख़्शा से मुराद हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और अल अश्क़ा से मुराद उस दरख़्त का मालिक मुनाफ़िक़ मुसलमान है।

(तफ़्सीर रूहुल बयान, जि. 10, स 408)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जन्नती हैं

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि वह फ़रमाते हैं कि मैं मदीना तैय्यिबा के एक बाग़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के साथ था कि एक साहब आए और बाग़ का दरवाज़ा खोलने के लिये कहा तो रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

यानी दरवाज़ा खोल दो और आने वाले शख़्स को जन्नत की बशारत दे दो। मैंने बाग़ का दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह शख़्स हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। मैं ने उन को जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दी। उस पर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उस की हम्दो सना की फिर एक साहब आए और दरवाज़ा खोलने के लिये कहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उन के बारे में भी फ़रमाया :

اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ यानी उन के लिये भी दरवाज़े खोल दो और उन को भी जन्नत की ख़ुशख़बरी सुना दो। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह शख़्स हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं मैंने उन को भी जन्नत की बशारत दी, तो उन्होंने भी अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उस की हम्दो सना की।

फिर एक तीसरे शख़्स आए और दरवाज़ा खोलने के लिये कहा तो आक़ाए कायनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया :

اِفْتَحْ لَهٗ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ عَلٰى بَلْوٰى تُصِيْبُهٗ यानी दरवाज़ा खोल दो और उन को मुसीबतों पर जो उन को पहुँचेगी जन्नत की बशारत दे दो।

हज़रत मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं ने तीसरी मरतबा जब दरवाज़ा खोला तो देखा कि आने वाले शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं :

मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इरशाद के मुताबिक़ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जन्नत की बशारत दी और उन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमान ज़ीशान से आगाह किया तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जन्नत की बशारत दी और उन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के फ़रमाने ज़ीशान से आगाह किया तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उस की हम्दो सना की और फ़रमाया : اَللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ यानी आने वाली मुसीबतों पर

अल्लाह तआला मुईन व मददगार है।

(बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, जि. 2, स. 277, तिर्मिज़ी, जि. 2, स. 212)

उहद पहाड़ का ज़लज़ला : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आफ़ताबे नुबुव्वत, माहताबे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़े अकबर, हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम उहद पहाड़ पर जलवा अफ़रोज़ थे कि यका यक उहद पहाड़ हिलने लगा तो सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उहद पहाड़ को क़दमे मुबारक से मारा और फ़रमाया : فَاِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَصِدِّيْقٌ وَشَهِيْدَانِ ०

यानी ऐ उहद पहाड़ तू ठहर जा कि तुझ पर एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(सही बुख़ारी, जि. 1, स. 523, मुसन्निफ़, अब्दुर्रज्ज़ाक़, जि. 11, स. 229)

आशिके मदीना इमामे अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

एक ठोकर में उहद का ज़लज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अकबर एड़ियाँ

ऐ ईमान वालो ! इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि आक़ाए कायनात मुख़्तारे दो आलम, मुस्तफ़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की हुकूमत पहाड़ों पर भी जारी और सारी है।

ख़ूब फ़रमाया मेरे आक़ाए नेअमत हुज़ूर आला हज़रत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने :

वह ज़बां जिन को सब कुन की कन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

और दूसरा मस्अला यह भी साबित हुआ कि अल्लाह तआला की देन व अता से हमारे प्यारे आक़ा महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ग़ैब के जानने वाले हैं जभी तो बरसों बाद शहीद होने वाले हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को उन के रू बरू शहादत की ख़बर दी और यह दोनों हज़रात शहीद किये गए।

इमामे अहले सुन्नत हुज़ूर आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

दुरूद शरीफ़ :

उस्मान हिदायत पर होंगे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने आने वाले वक़्तों में होने वाले फ़ितनों

का ज़िक्र किया तो इतने में एक साहब सर पर कपड़ा डाले हुए उधर से गुजर रहे थे तो आका करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया यह शख़्स उस दिन हिदायत पर होगा। गुज़रने वाले शख़्स के बारे में मालूम किया गया तो वह शख़्स हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे और सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया यह शख़्स हिदायत पर होगा उस फ़ितने पर ज़ुल्म से क़त्ल किया जाएगा। (तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 211, इब्ने माजह शरीफ़, स. 11)

नबी के साथी जन्नत में उस्माने ग़नी हैं

हज़रत तलहा इब्ने अब्दुल्लाह से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : لِكُلِّ نَبِيٍّ رَفِيْقٌ وَرَفِيْقِيْ يَعْنِيْ فِي الْجَنَّةِ عُثْمَانُ

यानी हर नबी का कोई साथी होता है और मेरे साथी यानी जन्नत में उस्मान हैं।

(मिश्कात, स. 591, तिर्मिज़ी जि. 1, स. 210, इब्ने माजह, स. 11)

उस्मान का दुश्मन नबी का दुश्मन : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हमारे मालिको मुख़्तार नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में एक जनाज़ा लाया गया कि आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा दें मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने उस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी तो सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान ने अर्ज़ किया : مَارَأَيْنَاكَ تَرَكْتَ الصَّلٰوةَ عَلٰى اَحَدٍ قَبْلَ هٰذَا

या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैका व आलिका वसल्लम ! हमने आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को किसी की नमाज़े जनाज़ा छोड़ते नहीं देखा।

तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنَّهٗ كَانَ يَبْغَضُ عُثْمَانَ बे शक यह शख़्स उस्मान से बुग़्ज़ रखता था।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, जि. 2, स. 212)

हज़रत उस्माने ग़नी बरोज़े क़ियामत सत्तर हज़ार गुनाहगारों की बख़्शिश कराएंगे

अल्लाह के हबीब हम गुनाहगारों के तबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया जब उस्मान (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) शहीद होंगे तो आसमानों फ़रिश्ते उन की नमाज़े जनाज़ा में शरीक होंगे और उस्माने ग़नी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) क़ियामत के दिन ऐसे सत्तर हज़ार गुनाहगारों की बख़्शिश करा के जन्नत में दाख़िल कराएंगे जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी थी। (नूरुल अबसार, स. 243)

हज़रत उस्माने ग़नी सहाबए किराम में सब से ज़्यादा मालदार थे : हज़रत अमीर ख़ुसरो रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने राहतुल मुहिब्बीन में जो आप के पीरो मुर्शिद हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मलफ़ूज़ात का मजमुआ है, तहरीर फ़रमाया है कि मेरे

शैख़ हजरत महबूबे इलाही रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सहाबए किराम अलैहिमुर्रिज़वान में सब से ज़्यादा माल व दौलत वाले थे और आप बे दरेग़ माल व दौलत को हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के इशारे पर राहे ख़ुदा में ख़र्च किया करते थे, चुनाँचे हदीस शरीफ़ में आया है कि एक मरतबा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मुशफ़िक़ व महरबान नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम कीबरगाहे अक़दस में अर्ज़ किया कि माल व दौलत से तंग आ गया हूँ आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दुआ फ़रमाएं कि मेरे माल व दौलत में क़मी हो जाए, क्यों कि माल व दौलत की करारत की वजह से अल्लाह तआला की इबादत व इताअत में ख़लल वाक़ेअ हो रहा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने दुआ करने का इरादा फ़रमाया ही था कि हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हो गए और अल्लाह तआला का फ़रमान सुनाया कि ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के माल व दौलत के कमी की दुआ न फरमाइयेगा, क्यों कि उस्माने ग़नी हमारे राह में माल व दौलत ख़र्च करते हैं और हम उस्माने ग़नी के माल व दौलत को कम नहीं होने देंगे बल्कि मज़ीद बढ़ाते रहेंगे। (राहतुल मुहिब्बीन, अमीर ख़ुसरो)

हजरत उस्माने ग़नी का इत्तिबाए रसूल : एक मरतबा हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने वुज़ू फरमाया और वुज़ू के बाद मुस्कुराने लगे, लोगों ने मुस्कुराने की वजह मालूम की तो आप ने फ़रमाया कि एक दफ़ा मैंने वुज़ू के बाद अपने रहीम व करीम नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को मुस्कुराते हुए देखा तो मैं ने भी मुस्कुरा दिया। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम वुज़ू के बाद मुस्कुराए तो उस वक़्त मुस्कुराना तो सुन्नत थी अपने महबूब की इत्तिबाअ और महब्बत में हम भी मुस्कुरा दिये।

हज़रत उस्माने ग़नी ने एक मरतबा कअ़बा का तवाफ़ तक नहीं किया

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना क़ासिद बना कर मक्का मुकर्रमा में कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन से गुफ़्तुगू करने के लिये भेजा तो कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप से कहा कि आप ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ और सफ़ा व मरवा की सई कर के अपना उमरह अदा कर लें मगर हम मक्का वाले आप के नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) को हर गिज़ हर गिज़ कअ़बा के क़रीब नहीं आने देंगे तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुफ़्फ़ारे मक्का को जवाब दिया कि ऐ मक्का वालो ! भला मेरी यह मजाल है कि मैं बग़ैर महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को साथ लिये ख़ुदाए तआला के घर का तवाफ़ कर लूँ, यह मुझ से हर गिज़ हरगिज़ नहीं हो सकता। (नुज़हतुल मजालिस, जि [illegible])

निस्बत व तअल्लुक का एहतिराम : हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु ने जिस दिन से अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से बैअत की थी उस रोज़ से दमे आखिर तक अपना दाहिना हाथ को कभी अपनी शर्मगाह को नहीं लगाया
(सवानेह करबला, स 37)

हजरात ! हजरत उस्माने गनी जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने महबूब आका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के निस्बत व तअल्लुक का एहतिराम किस दरजा करते नज़र आते हैं उन की जिन्दगी एक और नूरानी वाकिआ मुलाहज़ा फ़रमाइये।

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत प्यारे रज़ा, अच्छे रज़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं : कि (मस्जिदे नबवी शरीफ़ में) मिम्बर के तीन ज़ीने थे अलावा ऊपर के तख्ते के जिस पर बैठते हैं, हुज़ूर सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम दरजए बाला पर खुतबा फरमाया करते, सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरे (ज़ीने) पर खुतबा पढ़ा फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीसरे (ज़ीने) पर (खुतबा पढा) जब ज़माना जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का आया फिर अव्वल पर खुतबा फरमाया, सबब पूछा गया तो फ़रमाया अगर दूसरे पर पढता तो लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीके अकबर रजियल्लाहु तआला अन्हु का हमसर हूं और तीसरे पर पढता तो वहम होता कि फ़ारूके आज़म रजियल्लाहु तआला अन्हु के बराबर हूँ। लिहाज़ा वहाँ (पर खुतबा) पढा जहाँ यह एहतिमाल मुतसव्वर ही नहीं।
(फतावा रज़विया, जि 3, स 700)

ऐ ईमान वालो ! हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु जैसे अजीमुश्शान सहाबी और खलीफ़ा का यह ईमान व अकीदा था कि मैं अमीरुल मोमिनीन हजरत अबू बक्र सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हमसर और बराबर नहीं हूँ तो महबूबे खुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अपना जैसा और अपना बड़ा भाई खयाल करें यह मुहाल व ग़ैर मुमकिन है।

मगर वहाबी, देवबन्दी, मुनाफ़िक़ मुसलमान का ईमान व अक़ीदा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हमारे बड़े भाई और हमारे जैसे एक बशर हैं, वहाबी, देवबन्दी के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

वहाबियों, देवबन्दियों का अक़ीदा

औलिया अम्बिया इमाम ज़ादा इमाम, पीर व शहीद यानी जितने अल्लाह के मुकर्रब बन्दे हैं वह सब इन्सान ही हैं और बन्दए आजिज़ और हमारे भाई, मगर अल्लाह ने उन को बड़ाई दी वह बड़े भाई हुए। (तकवीयतुल ईमान, स 131)

ऐ ईमान वालो ! हजरत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सहाबी का ईमान व अक़ीदा ! और मुनाफ़िक मुसलमान देवबन्दी वहाबी का ईमान व अक़ीदा !

दोनों आप के सामने है। फ़ैसला आप को करना है कि जन्नत में जाना है या जहन्नम में। हदीस शरीफ़ से साबित है कि सहाबा का रास्ता जन्नत का रास्ता है और मुनाफ़िक मुसलमान यानी देवबन्दी और वहाबी का रास्ता दोज़ख का रास्ता है।

सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

तेरे गुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वह क्या बहक सके जो यह सुराग़ ले के चले
लहद में इश्क़े रुखे शह का दाग़ ले के चले
अन्धेरी रात सुनी थी चिराग़ ले के चले

दुरूद शरीफ़ :

हज़रत उस्माने ग़नी का जज़्बए इश्क़ : जब बाग़ियों ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान को घेर लिया उस वक़्त आप से बाग़ियों के मुक़ाबले के लिये अर्ज किया गया तो आप ने मुक़ाबला करने से इनकार कर दिया जब कि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ताक़त व क़ुव्वत बाग़ियों के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा थी। आप की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि आप बाग़ियों से मुक़ाबला करने की इजाज़त भी नहीं देते हैं तो आप मदीनः तैय्यिबा से मक्का मुकर्रमा या और किसी मक़ाम पर तशरीफ़ ले जाएं, तो हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना तैय्यिबा से दूर किसी और शहर में जाना मन्ज़ूर न फ़रमाया और आप ने इरशाद फ़रमाया कि मैं मदीना तैय्यिबा में अपने महबूब व मुशफ़िक आक़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम का कुर्बो जवार छोड़ने की ताब व ताक़त नहीं रखता। (सवानेह करबला, स. 37)

ऐ इश्क़ तेरे सदक़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वह आग लगाई है
दो आलम से करती है बेगाना दिल को
अजब चीज़ है लज़्ज़ते आशनाई

हर जुमा के दिन गुलाम आज़ाद फ़रमाते : हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस दिन इस्लाम में दाख़िल हुए उस रोज़ से विसाल शरीफ़ तक कोई जुमा ऐसा नहीं गुज़रा कि आप ने कोई गुलाम आज़ाद न किया हो। (सवानेह करबला, स. 37)

हजरत उस्माने गनी की करामतें : (1) आशिक़े रसूल हज़रत अल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फरमाते हैं कि एक शख़्स ने अपनी आँखों का गलत इस्तिमाल किया। गैर औरत की तरफ देखा फिर वह शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया तुम लोग हमारे पास इस हाल में आते हो कि तुम्हारी आँखों में ज़िना के असरात होते हैं। वह शख़्स गुस्सा में आकर हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहने लगा, क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

आलिही वसल्लम के बाद भी वही का सिलसिला जारी है ? आप को कैसे मालूम हुआ कि मेरे आँखों में जिना के असरात हैं, तो हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मुझ पर वही तो नहीं आती है मगर मैं ने जो कुछ देखा है वह हक और सच है और यह सब कुछ जो मैं ने देखा है अपने ईमान के नूर से देखा है।

(जामेअ करामात, जि. 1, स. 150, करामाते सहाबा व हवाला हुज्जतुल अलल आलमी, जि. 2, स. 862)

हदीस शरीफ़ : اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ o

मोमिन की फ़रासत व दानाई से डरो कि बे शक वह अल्लाह तआला के नूर से देखता है।

(2) हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है वह फ़रमाते हैं कि जहजा गिफारी नाम का बद बख्त शख्स मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आकर खड़ा हो गया उस वक़्त आप मिम्बर पर खुतबा दे रहे थे। उस बद बख्त शख्स ने अमीरुल मोमिनीन के हाथ से आप का असा शरीफ ले कर अपने रान पर मार कर तोड़ दिया, आप बहुत हलीम और बा हया थे, उस शख्स से कोई मुवाखज़ा न फ़रमाया लेकिन अल्लाह तआला ने उस बद बख्त शख्स को उस की बे अदबी और गुस्ताखी की यह सज़ा दी कि उस शख्स के हाथ और पांव में कैंसर का मरज़ हो गया और उस का पूरा जिस्म सड़ गया और वह बद बख्त साल के अन्दर ही मर गया।

(हुज्जतुल्लाहि अलल आलमीन, जि. 2, स. 862, करामाते सहाबा, स. 52)

ऐ ईमान वालो ! आप हजरात ने देख लिया कि अल्लाह वालों की बे अदबी और गुस्ताखी करने वाला शख्स कैंसर जैसे मोहलिक बीमारी में मुब्तला नज़र आ रहा है। यह है अल्लाह वालों की बे अदबी और गुस्ताखी का अन्जाम।

अल्लाह तआला अपने महबूब और नेक बन्दों की बे अदबी व गुस्ताखी से महफ़ूज़ रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

हज़रत उस्माने ग़नी मुस्तजाबुद्दावात थे : हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाहि अलैह फ़रमाते हैं कि हजरत अबू कलाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि मैं मुल्के शाम के सफ़र में था कि अचानक मैं ने एक शख्स की आहो बका की आवाज़ सुनी वह शख्स कह रहा था : يَاوَيْلَاهُ النَّارُ यानी हाए अफसोस मेरे लिये जहन्नम है। मैं उस शख्स के पास गया तो देखा कि उस शख्स के दोनों हाथ और दोनों पैर कटे हुए हैं और दोनों आँखों से अन्धा है और अपने मुंह के बल ज़मीन पर औन्धा पड़ा हुआ है और बार बार यही कह रहा, हाए अफ़सोस मेरे लिये जहन्नम है। मैंने उस शख्स का हाल मालूम किया तो उस शख्स ने मुझ से बताया कि मैं आज़ाद लोगों में हूँ जो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान में हमला कर के दाखिल हुआ और आप को कत्ल के इरादे से करीब हुआ तो आप की बीवी साहिबा ने शोर मचाया तो मैं ने उन को एक थप्पड़ मारा। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : क्या करता है। अल्लाह तआला तेरे दोनों हाथ और दोनों पैर काटे और तेरी दोनों आँखें अन्धी कर दे और तुझे आग में डाले तो मैं घबरा कर भाग गया। फिर

मेरा हाल जो हुआ वह आप के सामने है और उन की दुआ की आखरी चीज़ बाकी है। हज़रत अबू क़लाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बद बख़्त शख़्स से फ़रमाया तू हलाक व बरबाद हो जाए

हज़रात ! यह रिवायत हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला की मुस्तजाबुद्दावात होने की शान ज़ाहिर करती है। (करामाते सहाबा, स. 53, इज़ालतुल खिफ़ा, स 227)

हज़रत उस्माने ग़नी के बाग़ियों का बुरा अन्जाम

इब्ने अबी हबीब से रिवायत है कि मुझे ख़बर मिली है कि वह लोग जिन्होंने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हमला किया और आप के क़त्ले नाहक़ में शरीक हुए थे वह सब ख़तरनाक अमराज़ में मुब्तला हुए और उन में से अकसर पागल हो कर मरे।

(अस्सवाइकुल मुहर्रिक़ा, इज़ालतुल ख़िफ़ा, शवाहेदे करबला, स 37, करामाते सहाबा, स 54)

आप की ख़िलाफ़त : हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने के वक़्त से शहीद होने तक अल्लाह तआला और महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सची वाबस्तगी और महब्बत और आप के इस्लामी कारनामे क़ाबिले ज़िक्र हैं और सुबह क़ियामत तक याद किये जाते रहेंगे। जब हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुस्नदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मदफ़ून होने के बाद तीसरे दिन ही वह छः अकाबिर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिन को हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़िलाफ़त का मुआमला सुपुर्द किया था। वह सब जमा हुए और सब सहाबए किराम ने बिल इत्तिफ़ाक़ हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अमीरुल मोमिनीन और ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया और आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की और आप के दौरे ख़िलाफ़त में भी इस्लामी फ़ुतूहात का दाइरा बहुत ज़्यादा वसीअ हुआ।

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के पहले साल ही 24 हिजरी में मुल्क रे जो फ़तह होने के बाद इस्लाम हुकूमत के क़ब्ज़े से निकल गया था, दोबारह उस को आप ने फ़तह किया।

26 हिजरी में अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुछ मकानात ख़रीद कर मक्का मुकर्रमा की मस्जिदे हराम को तौसीअ किया और उसी साल साबुर का क़िलआ फ़तह हुआ।

27 हिजरी में हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से मुल्के शाम के गवर्नर हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहरी बेड़ा तय्यार कर के समन्दरी जहाज शुरू किया और क़बरस पर हमला कर के उस जज़ीरा को फ़तह किया और उसी साल अरजान और दारे बजरद पर भी क़ब्ज़ा हुआ। और उसी साल हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मिस्र के गवर्नर हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को माज़ूल कर के उन की जगह अब्दुल्लाह इब्ने अबी सुरह को गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाया और उसी साल अफ़रीक़ा के पहाड़ी और जंगली और उस के दूसरे इलाक़ों को फ़तह कर के

इस्लामी सलतनत में शामिल कर लिया गया और उस फ़तह में कसीर माले ग़नीमत हासिल हुआ कि हर सिपाही को एक एक हज़ार दीनार और बाज़ का क़ौल है कि तीन तीन हज़ार दीनार सब को हिस्सा मिला।

29 हि. में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिदे नववी शरीफ़ को वसीअ किया और नक़्शो निगार वाले पत्थरों से मस्जिदे नबवी शरीफ़ की दीवारों और सुतूनों की तामीर फ़रमाई और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की छत को सागोन की लकड़ी से मुज़य्यन फ़रमाया और मस्जिदे नबवी शरीफ़ की लम्बाई एक सो साठ गज़ और चोड़ाई एक सो पचास गज़ कर दी और उसी साल अस्तखव वग़ैरह बहुत से मुल्क फ़तह हुए।

(तारीखुल खुलफ़ा, स. 106)

सन् 30 हिजरी से 35 हिजरी तक खुरासान के अकसर शहर और नीशापूर, तूस, सरखस वग़ैरह ममालिक फ़तह हुए। उन फ़ुतूहात से इस क़दर माले कसीर दारुल ख़िलाफ़त मदीना तैय्यिबा में आया कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उन मालों की हिफ़ाज़त के लिये कुछ महफ़ूज़ ख़ज़ाने बनवाने पड़े और आप ने इस्लामी फ़ौज में इस क़दर माल व दौलत तक़सीम फ़रमाया कि हर सिपाही दौलत मन्द हो गया।

सन् 35 हि. में आप को शहीद कर दिया गया जिस से इस्लाम के उरूज व तरक़्क़ी में बहुत बड़ा रख़्ना पड़ गया। उसी वक़्त से इस्लामी सलतनत में बे शुमार इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार पैदा हो गया जिस से इस्लामी सलतनत की बुनियादें क़मज़ोर हो कर हिल गईं।

(तारीखुल खुलफ़ा, 106)

आप की शहादत : अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत इस्लाम की तारीख़ में दर्दनाक हादिसा है। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारह साल तक मस्नदे ख़िलाफ़त को ज़ीनत बख़्शी।

ख़िलाफ़त के शुरू के छः सालों में तो किसी शख़्स को भी आप से कोई शिकायत नहीं हुई बल्कि कुरैश में हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी ज़्यादा महबूब व मक़बूल थे। मगर छः साल के बाद कुछ वुजूहात के सबब आप की मक़बूलियत व महबूबियत में कुछ कमी आई।

इसी ज़माने में अब्दुल्लाह बिन अबी सुरह को आप ने मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमा दिया था। उस ने मिस्र में ज़ालिमाना हरकतें शुरू कीं यहाँ तक कि मिस्र के कुछ लोग उस के बद अफ़आल की शिकायत को ले कर दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर हुए और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अब्दुल्लाह बिन अबी सुरह को ज़जर व मलामत का फ़रमान भेजा मगर फिर भी वह अपनी बे हूदा हरकतों से बाज़ नहीं आया बल्कि उस ज़ालिम ने शिकायत करने वाले मिसरियों को बुला कर क़त्ल कर दिया। इस क़त्ल व ग़ारत के वाक़िआ ने मिस्र वालों के दिलों को बे चैन व बे क़रार कर दिया। और सात सो आदमियों का काफ़ला मिस्र से मदीना तैय्यिबा आया और अकाबिरे सहाबा से इस ज़ालिम की हरकतों को बयान किया और उस की शिकायत की। हज़रत तलहा, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और उन के अलावा बड़े बड़े सहाबा ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाक़ात की और सारी दास्तानें सुनाई और मिस्र के लिये दूसरा गवर्नर मुक़र्रर करने का मशवरा दिया और अमीरुल मोमिनीन को आमादह भी कर लिया।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मिस्र के लोग अपनी पसन्द से गवर्नर का इन्तिख़ाब कर लें मैं उन के मुन्तख़ब शख़्स को गवर्नर मुक़र्रर कर दूँगा।

चुनाँचे मिस्र के लोगों ने मुहम्मद बिन अबू बक्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को मुन्तख़ब कर लिया और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन की गवर्नरी का परवाना लिख दिया और अब्दुल्लाह बिन अबी सुरह को मिस्र की गवर्नरी से माज़ूली का हुक्म नामा भी तहरीर फ़रमा दिया।

मुहम्मद बिन अबू बक्र सात सो मिसरियों और कुछ अन्सार व मुहाजिरीन को लेकर मिस्र के लिये रवाना हो गए।

मुहम्मद बिन अबू बक्र का क़ाफ़ला मदीना तैय्यिबा से तीसरी मन्ज़िल पर ही पहुँचा था कि एक हब्शी ग़ुलाम अपनी सांडनी पर सवार बड़ी तेज़ी से जाता हुआ नज़र आया। क़ाफ़ला वालों को इस हबशी शख़्स पर शक हुआ तो लोगों ने उस को पकड़ लिया और जब उस की तलाशी ली गई तो उस की सूखी मुश्कीज़ा में एक ख़त मिला जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ से मिस्र के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अबी सुरह के नाम था और उस ख़त का मज़मून यह था कि जिस वक़्त मुहम्मद बिन अबू बक्र और फ़लां फ़लां शख़्स तुम्हारे पास पहुँचें तुम फ़ौरन उन लोगों को क़त्ल कर देना और तुम अपने मन्सब पर बर क़रार रहना।

इस ख़त को पढ़ने के बाद सारे लोग हैरान रह गए और सभी लोग जो मुहम्मद बिन अबू बक्र के साथ थे वापस मदीना तैय्यिबा लोट आए और हज़रत मौला अली, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुम और अकाबिर को जमा किया और यह ख़त दिखाया सब के सामने ख़त पढा गया और हबशी ग़ुलाम का वाक़िआ बताया गया उस पर सारे लोग सख़्त नाराज़ हुए और तमाम सहाबा ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए अपने घरों को चले गए। मगर मुहम्मद बिन अबू बक्र अ पने कबीला बनू तमीम और मिसरियों को लेकर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान को घेर लिया। हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह सूरत देखी तो अपने साथ बहुत से सहाबा को लेकर और वह ख़त हब्शी, ग़ुलाम और ऊंटनी के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अ्हु की ख़िदमत में तशरीफ़ लाए और हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से दरयाफ़्त किया कि यह ग़ुलाम आप का है ? अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया कि हाँ ! फिर ऊंटनी के बारे में पूछा कि क्या यह ऊंटनी आप की है ? अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया हाँ यह ऊंटनी मेरी है फिर ख़त पेश किया गया और दरयाफ़्त किया गया कि यह ख़त आप ही का है ?

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैं

क़सम खा कर कहता हूँ कि यह ख़त न मैंने लिखा है। न किसी को उस के लिखने का हुक्म दिया है न मुझे इस के बारे में मालूम है। फिर ख़त पर जो मोहर लगी थी उस के बारे में सवाल किया गया कि यह मुहर किस की है ? तो अमीरुल मोमिनीन ने मुहर देख कर फ़रमाया कि हाँ मुहर मेरी ही है। मगर मुहर किस ने लगाई मुझे मालूम नहीं है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान सुन कर हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि बड़े तअज्जुब की बात कि ग़ुलाम आप का। ऊंटनी आप की मुहर आप की मगर आप को कुछ भी नहीं मालूम कि ख़त किस ने लिखा ? अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फिर अल्लाह तआला की क़सम खाकर फ़रमाया कि वल्लाह न मैं ने उस ख़त को लिखा न किसी से लिखवाया न उस के बारे में मुझे कुछ मालूम है न मैं ने उस ग़ुलाम को मिस्र की तरफ़ भेजा।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़सम खाने को सुन कर सब को यक़ीन हो गया कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दामन उस गुनाह से पाक व साफ़ है और हर शख़्स को इस बात का यक़ीन हो गया कि यह सारी शरारत ज़ालिम मरवान की है जो अमीरुल मोमिनीन का मुन्शी है और मरवान बड़ा ही शरीर और मक्कार है। इसी बद बख़्त व ख़बीस मरवान के पास अमीरुल मोमिनीन की मुहर रहती है और बद बख़्त मरवान ने ही यह ख़त लिखा है और अमीरुल मोमिनीन की मुहर लगा दी है।

चुनाँचे हर शख़्स यह मुतालबे करने लगा कि बद बख़्त मरवान ही उस अज़ीम जुर्म का मुजरिम है इस लिये आप मरवान को हमारे हवाले कर दें अगर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मरवान ख़बीस को लोगों के हवाले कर दिया होता तो सारा फ़ितना व फ़साद ख़त्म हो जाता और कोई शख़्स हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़िलाफ़ नहीं होता।

मगर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह सोचा कि मरवान ख़बीस ख़ानदान बनू उमय्या का आदमी है और ममलकते इस्लामी के अकसर गवर्नर ख़ानदान बनू उमय्या ही के हैं अगर मैं मरवान को उन लोगों के हवाले कर देता हूँ तो यह लोग उस को क़त्ल कर डालेंगे फिर पूरा ख़ानदान बनू उमय्या बदला लेने के लिये तय्यार हो जाएंगे और मुसलमानों के आपस में बहुत बड़ी जंग शुरूअ हो जाएगी इसी लिये आप ने मरवान को उन लोगों के सुपुर्द करने से इनकार कर दिया।

बस इसी बात पर मिस्र के लोग इस क़दर ग़ुस्सा में आए कि अमीरुल मोमिनीन के मकान का मुहासरा कर लिया और पानी को भी बन्द कर दिया।

एक दिन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सख़्त प्यासे हो गए तो आप ने मकान के ऊपर से झांक कर फ़रमाया कि क्या तुम में से कोई शख़्स जाकर हज़रत मौला अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बता दे कि हम प्यासे हैं हम को पानी पिला दें। जब हज़रत

मौला अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खबर हुई तो आप ने मीठे पानी के तीन मुश्कीजे भिजवा दिये मगर यह पानी भी बड़ी मुश्किल से मकान में पहुँचा कि बनू हाशिम और बनू उमय्या के चन्द गुलाम बागियों के हाथ से जख्मी हो गए फिर हजरत अली शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दोनों शहज़ादों हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म दिया कि तुम दोनों नंगी तलवारें लेकर अमीरुल मोमिनीन की हिफाज़त के लिये उन के दरवाजे पर खड़े रहो और हर गिज़ किसी बागी को मकान के अन्दर दाख़िल न होने दो इसी तरह हजरत तलहा और हजरत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा और दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने भी अपने साहबज़ादों को आप की हिफ़ाजत के लिये मुकर्रर फरमाया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

हज़रात ! चालीस दिन तक यह मुहासरा काइम रहा। एक दिन मुहम्मद बिन अबू बक्र दो बागियों को साथ लेकर मकान के पिछले हिस्से से अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में दाख़िल हो गए और गुस्सा इतना ज्यादा था कि मुहम्मद बिन अबू बक्र ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दाढ़ी पकड़ ली। उस वक्त अमीरुल मोमिनीन के पास सिर्फ़ आप की बीवी हजरत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी हुई थीं बाकी और लोग मकान के छत पर थे। हजरत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया! कि ऐ मुहम्मद बिन अबू बक्र! तुम क्या कर रहे हो! अगर तुम्हारे बाप हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुम्हारी इस हरकत को देखते तो उन का क्या हाल होता ? यह सुनते ही मुहम्मद बिन अबू बक्र शर्मिन्दा हो कर आप की दाढ़ी को छोड़ दी और मकान से भाग कर चले गए मगर वह दोनों मिसरी बागी आ गए और उन्होंने बड़ी बे रहमी और सफ़्फ़ाकी के साथ अमीरुल मोमिनीन हजरत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ०

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नेक बीवी हजरत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बहुत चीख़ा और चिल्लाया और आवाज़ लगाई मगर बागियों ने मकान के बाहर इस क़दर शोर व गुल मचा रखा था कि आप की आवाज़ किसी ने नहीं सुनी। आख़िर हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने मकान के छत पर जाकर लोगों को बताया कि अमीरुल मोमिनीन शहीद कर दिये गए हैं और कातिल फरार हो चुके हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

हज़रात ! बाज़ रिवायतों में यह भी आया है कि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जिस वक़्त शहीद किया गया तो आप उस वक़्त कुरआने मजीद की तिलावत फरमा रहे थे और आप को जब शहीद किया गया तो ख़ून के कुछ कतरे فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللّٰهُ की आयत पर पड़े और आप की प्यारी व नेक बीवी हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब तलवार के वार को अपने हाथों से रोका तो उन की उंगलियाँ भी कट गई। इब्ने असाकिर ने नक़्ल किया है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का कातिल अहले मिस्र में से हम्मार नाम का एक शख़्स था जिस की आँखें नीली और सुर्ख़ थीं और दूसरे

मुफ़स्सेरीन ने बयान किया है कि हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु अन्हु का कातिल जिस का नाम असवद तजीबी था जो मिस्र का रहने वाला था। वल्लाहु तआला अअलम।

अमीरुल मोमिनीन हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु अन्हु की शहादत की खबर जब हजरत मौला अली शेरे खुदा रजियल्लाहु अन्हु। हजरत तलहा रजियल्लाहु अन्हु, हजरत जुबैर रजियल्लाहु अन्हु, हजरत साअद रजियल्लाहु तआला अन्हु और उम्मुल मोमिनीन हजरत आएशा सिद्दीका रजियल्लाहु अन्हा और सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन को पहुँची तो सब के सब गमों से निढाल हो गए और हजरत मौला अली रजियल्लाहु तआला अन्हु को इतना गुस्सा आया कि एक तमांचा हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु अन्हु को और एक घूंसा हजरत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु के सीने पर मारा और मुहम्मद बिन तलहा और अब्दुल्लाह बिन जुबैर को भी बहुत सख्त लफ्ज़ों मे डांटा कि तुम लोगों के होते हुए अमीरुल मोमिनीन हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु किस तरह शहीद कर दिये गए ? लेकिन जब हकीकते हाल का पता चला कि कातिल दरवाज़े से नहीं दाखिल हुए थे बल्कि मकान के पीछे हिस्से से दूसरे मकान से कूद कर आए थे तो हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रजियल्लाहु तआला अन्हु अमीरुल मोमिनीन की जौजा मोहतरमा से हाल मालूम किया तो उन्हेंाने हक़ीक़ते हाल से आगाह किया।

हज़रात ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत वस्ते अय्यामे तशरीक़ माह ज़िल हिज्जा सन् 35 हि. में हुई और बाज़ मुफ़स्सेरीन का क़ौल है कि 18 ज़िल हिज्जा सन् 35 हि. आप की शहादत की तारीख़ है और यही। शहादत के वक़्त आप की उम्र शरीफ़ बयासी साल की थी। आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई और आप जन्नतुल बक़ीअ शरीफ़ में मदफ़ून हुए और यही आप की वसियत भी थी। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

ऐ ईमान वालो ! अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जिस सफ़्फ़ाकी और बे रहमी के साथ शहीद किया गया है उस की मिसाल मिलना ना मुमकिन है।

इमामे इश्क़ो महब्बत सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

दुर्रे मन्सूर क़ुरआं की सिल्क बही
ज़ौजे दो नूर इफ़्फ़त पे लाखों सलाम
यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा
हुल्ला पोश शहादत पे लाखों सलाम

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

(12)

ज़िल हिज्जा शरीफ़

चौथा जुमा .... दूसरा बयान

दुआ के फ़ज़ाइलो बरकात

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ ٥ اَمَّا بَعْدُ!
فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ٥
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥
اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ

तर्जमा : दुआ कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।

(पारा 2, रुकू 7, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

दुरूद शरीफ़ :

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही जो दुआएं नेक मैं तुझ से करूँ
कुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदार इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

तमहीद : अल्लाह तआला रहमान व रहीम है, अपने बन्दों की दुआ पर لَبَّیْكَ عَبْدِیْ फ़रमाता है। दिली मुराद अता फ़रमाना दूसरी चीज़ है, कभी बन्दे का नफ़ा दूसरी चीज़ में होता है वह अता की जाती है, कभी बन्दा महबूब होता है इस लिये उस की हाजत रवाई में देर की जाती है कि वह अरसए दराज़ तक दुआ में मशग़ूल रहे। और कभी दुआ करने वाले में सिद्क़ व इख़्लास यानी कुबूलियत के शराइत नहीं पाए जाते इस लिये दुआ कुबूल नहीं होती

(तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

हज़रात ! हमारे पीरे आज़म हुज़ूर ग़ौसे आज़म, शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं कि मदीना तैय्यिबा के एक यहूदी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से सवाल किया कि जब आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम फ़रमाते हैं कि एक आसमान से दूसरे आसमान तक पाँच सो बरस का रास्ता है और हर आसमान की मोटाई भी पाँच सो बरस का रास्ता है तो फिर हमारा रब तआला हमारी दुआ कैसे सुनता है तो उस वक़्त यह आयते करीमा नाज़िल हुई।

और ! हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि बाज़ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम क्या हमारा रब तआला हम से क़रीब है ? कि हम चुपके चुपके उस से कलाम करें या ज़ोर से उस को पुकारें तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने यह आयते करीमा नाज़िल फ़रमाई :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ؕ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ (पारा 2, रुकू 7)

यानी ऐ महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम जब तुम से मेरे बन्दे मेरे बारे में सवाल करें (तो उन को बता दो) कि मैं क़रीब हूँ, दुआ कुबूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे। (ग़ुनयतुत तालिबीन, स. 412)

और अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ

तर्जमा : और हम दिल की रग से भी उस से ज़्यादा नज़दीक हैं।

(पारा 26, रुकू 16, तर्जमाकन्ज़ुल ईमान)

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद हुज़ूर मुफ़्तिये आज़म अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

साझी न उस का कोई शरीक
वही मलिक है वही मलिक
पाक मकान से और नज़दीक
देखे सुने परखे बारीक

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ اٰمَنَّا بِرَسُوْلِ اللهِ

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह तआला बन्दों की दुआओं को अपनी रहमत से कुबूल फ़रमाता है

कुबूले दुआ के लिये चन्द शर्तें हैं

एक यह है कि इख़्लास के साथ दुआ की जाए दूसरे यह कि दिल ग़ैर की तरफ़ मशगूल न हो। तीसरे यह कि दुआ किसी ममनूअ (यानी हराम) चीज़ के लिये न हो। चोथे यह कि अल्लाह तआला की रहमत पर यक़ीन हो। पांचवीं यह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ मांगी

और कुबूल न हुई। जब इन शर्तों के साथ दुआ की जाएगी तो दुआ कुबूल की जाती है।

हदीस शरीफ़ : में है कि दुआ करने वाले की दुआ क़ुबूल होती है या तो उस की मुराद दुनिया ही में उस को जल्दी दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है। (तफसीरे ख़ज़ाइनुल इरफान)

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है : اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ط

तर्जमा : मुझ से दुआ करो मैं कुबूल करूँगा। (पारा 24, रुकू 11, तर्जमा कन्ज़ुल ईमान)

कुबूलियते दुआ में ताख़ीर की वजह : इमामे अहले सुन्नत सय्यदी आला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत यहया बिन सईद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला को ख़्वाब में देखा, अर्ज़ की, इलाही मैं अकसर दुआ करता हूँ और तू कुबूल नहीं फ़रमाता। हुक्म हुआ, ऐ यहया ! मैं तेरी आवाज़ को दोस्त रखता हूँ (यानी पसन्द करता हूँ) इस वास्ते तेरी दुआ के कुबूल करने में ताख़ीर करता हूँ। (अहसनुल विआ लिल आदाबिद्दुआ)

हज़रात ! मज़कूरा वाक़िआ से हमें सबक़ हासिल करना चाहिये कि हम को कभी भी ऐसा ख़याल और तसव्वुर भी नहीं करना चाहिये कि हमारी दुआएं, हमारा मांगना, हमारी गिरया व ज़ारी बेकार हो गई, ऐसा हर गिज़ नहीं बन्दे का काम है दुआ मांगते रहना और रहमान व रहीम रब तआला ज़रूर बज़रूर अपने बन्दे की दुआ कुबूल फ़रमाता है। या अल्लाह तआला हम को ख़ूब दुआ मांगने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा आमीन सुम्मा आमीन।

शाहे तैबा का इरशाद : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ दुआ इबादत का मग़ज़ है।

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. , स. 490)

(2) اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۝

यानी दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून है और आसमान व ज़मीन का नूर है।

(अल मुस्तदरिक लिल हाकिम, जि. 1, स. 491)

(3) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَيْسَ شَيْءٌ اَكْرَمُ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ مِنَ الدُّعَاءِ ۝

यानी अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से बढ़ कर कोई चीज़ बुज़ुर्ग तर नहीं।

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 362, मिश्कात शरीफ़, स. 94)

(4) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

لَا يَرُدُّ الْقَضَاءَ اِلَّا الدُّعَاءُ

यानी क़ज़ा को दुआ के अलावा कोई चीज़ नहीं लौटाती। (मिश्कात शरीफ, स. 195)

(5) हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया :

اِنَّ رَبَّكُمْ حَيٌّ كَرِيْمٌ يَسْتَحْيِيْ مِنْ عَبْدِهٖ اِذَا رَفَعَ يَدَيْهِ اِلَيْهِ اَنْ يَرُدَّهُمَا صِفْرًا

यानी बे शक तुम्हारा रब हया और बख़्शिश वाला है, इस बात से हया फ़रमाता है कि बन्दा उस की बारगाह में हाथ उठाए और वह उन्हें ख़ाली लौटा दे। (तिर्मिज़ी, मिश्कात, स. 159)

दुआ के आदाब (1) : दुआ के लिये अच्छे औक़ात का ख़याल रखना जैसे साल में यौमे अरफ़ा (नवीं ज़िल हिज्जा) महीनों में रमज़ान मुबारक का महीना, हफ़्ते में जुमा मुबारका का दिन और रात की साअतों में से सेहरी का वक़्त। (अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 765)

(2) नमाज़ को अच्छे औक़ात में मुक़र्रर किया गया है तो तुम्हें नमाज़ों के बाद दुआ मांगनी चाहिये। (अहयाउलू उलूम, जि. 1, स. 765)

(3) اَلدُّعَاءُ بَیْنَ الْاَذَانِ وَالْاِقَامَةِ لَا یُرَدُّ

(मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, जि. 2, स. 504, अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 765)

यानी अज़ान और इक़ामत के दरमियान मांगी जाने वाली दुआ रद नहीं होती।

सज्दे की हालत में दुआ : आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया बन्दा सज्दे की हालत में अपने रब तआला के ज़्यादा क़रीब होता है।

فَاَکْثِرُوْا فِیْهِ مِنَ الدُّعَاءِ

यानी सज्दे की हालत में कसरत से दुआ मांगो।

(शरहुस्सुन्नह, जि. 3, स 151, अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 766)

दुरूद शरीफ़ से दुआ मक़बूल हो जाती है

(1) मौलल मोमिनीन हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ अल्लाह तआला से हिजाब में है जब तक मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और उन की अहले बैत पर दुरूद न भेजा जाए। (बैहक़ी)

(2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं :

اِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوْفٌ بَیْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ لَا یَصْعَدُ مِنْهَا شَیْءٌ حَتّٰی تُصَلِّیَ عَلٰی نَبِیِّكَ

यानी बेशक दुआ आसमान और ज़मीन के दरमियान मुअल्लक़ रहती है और उस से ऊपर नहीं जाती, यहाँ तक कि तू अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद पढ़े। (मिश्कात शरीफ़, स. 87)

आला हज़रत का इरशाद : ऐ दोस्त दुआ परिन्दा है और दुरूद शरीफ़ परिन्दा का पर (जिस से परिन्दा उड़ता है) पर न हो तो परिन्दा क्या उड़ सकता है ? (अहसनुल विआ)

दुआ में दुरूद का मक़ाम : एक बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ते हुए जब तशह्हुद में बैठते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना भूल गए, रात में जब सोए तो ख़्वाब में आक़ा करीम मुस्तफ़ा रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए, तो आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे उम्मती ! तू ने मुझ पर दुरूद क्यों नहीं पढ़ा। तो उन साहिब ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका व आलिका वसल्लम

मैं अल्लाह तआला की हम्दो सना में ऐसा महव और मशगूल हो गया कि दुरूद शरीफ पढना याद नहीं रहा। यह सुन कर महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम ने मेरी यह हदीस नहीं सुनी कि सारी नेकियाँ, सब इबादतें और सारी दुआएं रोक दी जाती हैं जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढा जाए। सुन ले अगर कोई बन्दा क़ियामत के दिन दरबारे इलाही में सारे जहान वालों की नेकियाँ ले कर हाज़िर हो जाए और उन नेकियों में दुरूद शरीफ़ न हुआ तो सारी की सारी नेकियाँ उस के मुंह पर मार दी जाएंगी उन में से एक भी नेकी क़ुबूल न होगी। (दुर्रतुन्नासेहीन, स. 17)

हज़रात ! इस हदीस शरीफ़ को बार बार पढिये और सबक़ हासिल कीजिये कि बग़ैर दुरूद शरीफ़ के हमारी कोई नेकी क़ुबूल न होगी। अब उन लोगों का क्या हश्र होगा जो बज़ाहिर अल्लाह तआला का ज़िक्र करते हैं मगर महबूबे खुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के ज़िक्र शरीफ़ को नाजाइज़ व बिदअत कहते हैं।

आशिक़े मुस्तफ़ा इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

जिक्रे खुदा जो उन से जुदा चाहो नजदियो
वल्लाह ज़िक्रे हक़ नहीं कुन्जी सक़र की है

बे उन के वास्ते के खुदा कुछ अता करे
हाशा ग़लत ग़लत यह हवस बे बसर की है

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न हाजत अगर की है

आला हज़रत तहरीर फ़रमाते हैं : आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं कि :

दुआ मांगने वाला बहुत अदब के साथ अपने दोनों हाथों को आसमान की तरफ उठाए और सीना या शानों, या चेहरे के मुक़ाबिल करे या पूरा हाथ उठाए यहाँ तक कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने लगे, हाथ खुले रखे, चादर वग़ैरह से न छुपाए।

और फ़रमाते है कि दुआ नर्म, आहिस्ता आवाज़ से हो। मेरे आक़ा सय्यदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि आहिस्ता दुआ करना, बलन्द आवाज़ दुआ से सत्तर मरतबा बहतर है।

और फ़रमाते हैं कि आंसु के साथ रोने की कोशिश करें अगरचेह एक ही क़तरह हो कि मक़बूलियत की अलामत है। अगर रोना न आए तो रोने जैसा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक है

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ ۝

और फ़रमाते हैं : जब अपने लिये दुआ मांगे तो तमाम मुसलमानों को दुआ में शरीक करे। ख़ास कर अपने मां, बाप और पीर व मुर्शिद के लिये भी ज़रूर दुआ करे।

सुन्नत यह है कि पहले अपनी ज़ात के लिये दुआ मांगे फिर दूसरों के लिये दुआ मांगे क्या ख़बर कि कौन सी दुआ क़ुबूल हो जाए। दुआ आमीन पर ख़त्म करे कि आमीन दुआ की मोहर

है सुनने वाले को भी आमीन कहना चाहिये।

और फ़रमाते हैं : दुआ ख़त्म कर के दोनों हाथों को चेहरे पर मल ले कि ख़ैरो बरकत है। (तलख़ीस : अहसनुल विआ)

हदीस शरीफ़ : मुरादे मुस्तफ़ा, अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि हम ग़रीबों के आक़ा, हम फ़क़ीरों की सरवत मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम की आदते मुबारका थी कि जब दुआ के लिये हाथ उठाते तो जब तक चेहरे पर न फेरते वापस नहीं लाते थे। (अहयाउल उलूम शरीफ़, जि. 1, स. 767)

और फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को उस के महबूब अस्मा से पुकारे।

يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ـ يَارَبَّنَا कहे दुआ मक़बूल होगी।

आले नबी, औलादे अली, हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं : जो शख़्स आजिज़ी से पाँच मरतबा या रब्बना कहेगा अल्लाह तआला उस को हर ख़ौफ़ से नजात अता फ़रमाएगा, अमान बख़्शेगा और जो चाहता है अता फ़रमाएगा। (तलख़ीस : अहसनुल विआ)

जामेअ व काफ़ी दुआ : رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

तर्जमा : ऐ रब ! हमारे हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा। (कन्ज़ुल ईमान)

नेकों की दुआ : मुरादे मुस्तफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदीना शरीफ़ के बच्चों से अपने लिये दुआ कराते कि उमर के लिये दुआ करो कि उमर बख़्शा जाए। (अहसनुल विआ)

हज़रात ! यह वह लोग हैं जिन को अल्लाह व रसूल जल्ला शानहू व सल्लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम ने नेकी व बुज़ुर्गी का पैकर बनाया है मगर वह भी बच्चों से दुआ कराते हैं।

मन्ज़िले इश्क़ में तस्लीमो रज़ा मुश्किल है
जिन के रुतबे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है

दुरूद शरीफ़ :

चुग़ल ख़ोर की वजह से दुआ क़ुबूल नहीं हुई

हज़रत कअब अहबार रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में लोग सख़्त क़हत में मुब्तला हो गए, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इसराईल को ले कर आबादी से बाहर दुआ मांगने की ख़ातिर निकले तो उन्हें बारिश अता नहीं हुई। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ वही भेजी कि मैं दुआ क़ुबूल नहीं करूँगा क्यों कि आप के साथ एक चुग़ल ख़ोर है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से फ़रमाया तुम सब चुग़ल ख़ोरी से तौबह करो, जब उन्होंने तौबह की तो अल्लाह तआला ने उन पर बारिश नाज़िल फ़रमाई। (अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 772)

गुनाहगारों की वजह से बारिश रोक दी गई

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद गज़ाली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तलबे बारिश के लिये बाहर निकले और बारिश की दुआ की मगर बारिश नहीं हुई, तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों से फरमाया तुम में से जिस ने गुनाह किया है वह वापस घर चला जाए। चुनाँचे वह वापस चले गए और आप अलैहिस्सलाम के साथ जंगल में सिर्फ एक आदमी बाकी रह गया, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उस शख़्स से पूछा : क्या तुम ने कोई गुनाह नहीं किया ? उस शख़्स ने कहा अल्लाह तआला की क़सम ! मुझे कुछ मालूम नहीं अल बत्ता एक दिन मैं नमाज़ पढ़ रहा था तो मेरे पास से एक औरत गुज़री, मैं ने उसे अपनी इस आँख से देखा, जब वह चली गई तो मैं ने अपने उंगली को उस आँख में डाल कर उस आँख को निकल कर उस के पीछे फेंक दिया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उस शख़्स से फ़रमाया तू अल्लाह तआला से दुआ मांग, मैं तेरी दुआ पर आमीन कहूँगा। फ़रमाते हैं कि जब उस शख़्स ने दुआ मांगी तो आसमान पर बादल छा गए औ बारिश बरसने लगी। (अहयाउल उलूम, जि. 1, स 774)

अल्लाह वालों की दुआ : हज़रत मौलाना रूम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि अल्लाह वालों की दुआ को अपनी दुआ की तरह न समझो। अल्लाह वालों की दुआ को अल्लाह तआला कुबूल फरमाता है। (मसनवी शरीफ)

वसीले से दुआ मांगना सुन्नत है : मुरादे मुस्तफ़ा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में सख़्त क़हत पड़ा। बारिश नहीं हो रही थी तो हज़रत उमर फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास खड़े हुए और यूँ दुआ की :

اِنَّا نَتَوَسَّلُ اِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّنَا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاسْقِنَا

यानी या अल्लाह तआला ! हम तेरी बारगाह में वसीला पेश करते हैं अपने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कि तू बाराने रहमत भेज। दुआ ख़त्म भी नहीं हुई थी कि बारिश होने लगी।

(सही बुखारी, अहयाउल उलूम, जि. 1, स. 775)

हज़रात ! हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सिर्फ़ सहाबी ही नहीं बल्कि मुरादे मुस्तफ़ा और ख़लीफ़ए रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम हैं मगर वह भी आक़ा करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वसीले से दुआ मांगते हैं और उन की दुआ कुबूल होती है।

मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम और आप सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के तअल्लुक़ और निस्बत से दुआ मांगना

नाजाइज़ व बिदअत नहीं बल्कि सहाबा की सुन्नत है।

मुजद्दिद इब्ने मुजद्दिद, हुज़ूर मुफ़्तिये आज़मे हिन्द अश्शाह मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

वसले मौला चाहते हो तो वसीला ढूँढ लो
बे वसीला नजदियो हर गिज़ ख़ुदा मिलता नहीं

हज़रात ! वहाबियों देवबन्दियों का अक़ीदा मुलाहज़ा फ़रमाइये :

अहले हदीस कहलाने वालों के इमाम और वहाबियों , देवबन्दियों, तब्लीगियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी लिखते हैं :

अक़ीदा ! अल्लाह की बारगाह में नबी को सिफ़रिशी और वकील जानने वाला मुशरिक है।
(तक़वीयतुल ईमान, स 64)

ऐ ईमान वालो ! सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम और औलियाए किराम, महबूबे ख़ुदा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम को अल्लाह तआला की बारगाह में सिफ़ारिशी और वकील जानते थे और आक़ा करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के वसीले से दुआ मांगते थे और अल्लाह तआला उन की दुआओं को क़ुबूल फ़रमाता था।

लिहाज़ा ! हर सुन्नी मुसलमान को वहाबी, देवबन्दी, तब्लीगी से हर हाल में दूर रहना चाहिये वर्ना ईमान की बरबादी का खतरा है।

अल्लाह तआला ईमान के साथ अपने हिफ़्ज़ो अमान में रखे। आमीन सुम्मा आमीन।

अल्लाह वाले के कुरते की बरकत : अज़ीमुश्शान वली हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का एक पुराना कुरता सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास था और सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस कुरते को बड़ी अक़ीदत व महब्बत के साथ अपने पास रखता था। चुनाँचे जब सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने लश्करे जर्रार के साथ सोमनाथ पर मुतअद्दिद बार हमला किया, मगर फ़तह व कामयाबी हासिल न कर सका। ज़ाहिरी क़ुव्वतें जवाब दे गईं। इन्सानी तदबीरें नाकाम हो गईं। तो सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दिल में ख़याल आया कि आज दुआ के हथियार को भी आज़मा कर देख लें। इस लिये कि दुआ, मोमिन का हथियार है फिर सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो रकअत नमाज़ नफ़्ल अदा की और हज़रत अबुल हसन ख़िरक़ानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कुरता मुबारक सामने रखा और अल्लाह तआला की बारगाह में अर्ज़ की कि या अल्लाह तआला ! यह कुरता तेरे वली हज़रत अबुल हस ख़िरक़ानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का है मैं इसी कुरते के वसीले से तेरी बारगाह में दुआ करता हूँ कि तू मुझ को फ़तह व नुसरत अता फ़रमा। इस दुआ के बाद जब सोमनाथ के मन्दिर पर हमला हुआ तो अल्लाह तआला ने सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को फ़तह अता फ़रमा दी।

और रात को सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब में हज़रत अबुल हसन खिरक़ानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि आप फ़रमा रहे हैं कि ऐ महमूद! तूने इस क़दर मामूली चीज़ के लिये मेरे ख़िरक़ा के वसीले में दुआ की, अगर तू उस वक़्त यह दुआ मांगता कि तमाम आलम के कुफ़्फ़ार इस्लाम क़ुबूल कर ले और दुनिया से कुफ़्र का ख़ातिमा हो जाए तो यक़ीनन तेरी दुआ क़ुबूल होती। (तज़किरतुल औलिया, स. 289)

हज़रात ! जब अल्लाह तआला के वली के कुरते की यह शान है तो महबूबे ख़ुदा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के मूए मुबारक और जुब्बा शरीफ़ की बरकत व अज़मत का आलम क्या होगा।

ख़ुदा के पाक बन्दों की तो यह तासीर होती है
कि उन की ठोकरों की ख़ाक भी इकसीर होती है

हमारे ख़्वाजा की दुआ : सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी हिन्दूस्तान में छः मरतबा शिकस्त पर शिकस्त खा चुका था। एक रात की बात है कि सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी ने ख़्वाब में एक नूरानी सूरत बुज़ुर्ग यानी हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देखा कि आप फ़रमा रहे हैं। ऐ शहाबुद्दीन ! अल्लाह तआला तुम को मुल्के हिन्द की बादशाहत अता करेगा, मेरी दुआ है तुम्हारे साथ, तुम मुल्के हिन्द की तरफ़ तवज्जोह करो। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी ख़्वाब में इस बशारत को सुनने के बाद बड़ा ख़ुश हुआ कि अल्लाह वाले ने मेरी कामयाबी की दुआ दे दी है और उस को यक़ीने कामिल हो गया कि अब हिन्दूस्तान पर जंग कर के कामयाब व कामरान हो जाऊँगा। चुनाँचे जब सातवीं मरतबा सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ोरी ने मुल्क हिन्दूस्तान पर हमला किया तो अल्लाह तआला ने उस को कामयाब किया।

(तलख़ीस सियरुल अक़्ताब, स. 132, मुईनुल अरवाह, स. 67, सवानेह ग़ौसो ख़्वाजा, स. 59)

हज़रात ! जो बात बादशाह के सिपाह व लश्कर में नहीं होती वह अल्लाह वाले की दुआ में होतीं है

न पूछ उन ख़िरक़ा पोशों को, इरादत हो तो देख उन को
यदे बेज़ा लिये बैठे हैं अपनी आस्तीनों में

दुरूद शरीफ़ :

मक़ामाते मक़बूला में दुआ : कअ़बा मुअज़्ज़मा के चारों तरफ़, मस्जिदे हराम में, सफ़ा मरवा पर और दोनों के दरमियान हरे खम्बे के बीच में, अरफ़ात के मैदान में, मुज़दलफ़ा में, जुमराते सलासा वग़ैरह पर, मदीना तैय्यिबा, गुम्बदे ख़ज़रा के पास, मस्जिदे नबवी शरीफ़, जन्नत की क्यारी में, मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतून के पास, अस्हाबे सुफ़्फ़ा पर मवाजहे अक़दस में, मिम्बरे अतहर के पास, जन्नतुल बक़ीअ शरीफ़ में, (इस से ज़ाइदा मक़ामाते मदीना शरीफ़ के हैं जहाँ दुआ क़ुबूल होती है)

और ! हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे शरीफ़ के पास और ख़ैरो बरकत व राहत वाली तुरबत हुज़ूर सय्यदना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु के वहाँ जो भी दुआ मांगे कुबूल हो।

और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फ़रमाते हैं कि (हिन्दूस्तान में) मरक़दे मुबारक हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन चिश्ती रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यानी हिन्द के राजा, हमारे प्यारे ख़्वाजा हुज़ूर ग़रीब नवाज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ार शरीफ़ पर जो भी दुआ मांगी जाती है अल्लाह तआला कुबूल फ़रमाता है (तलखीस अहसनुल विआ)

हज़रत मौलाना रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :

ख़्वाजए हिन्द वह दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

वर्क़ तमाम हुआ और मदह बाक़ी है
एक सफ़ीना चाहिये इस बहरे बे करां के लिये

याद्दाश्त

याद्दाश्त